॥ श्रीहरिः ॥

वीरविनोद

अथवा

कर्णपर्व

बलूंदा ठाकुरके पोलपात पातावत
शाखाके चारण जगरामजीके पुत्र

पद्मसिं[illegible]

विरचि[illegible]

ग्रन्थकर्तृस्वामीश्रीगणेशपुरीजीमहाराजनिर्मिततात्पर्यप्रकाशिकाख्य[illegible]
सहित

आसोपा दाधीच पण्डित बलदेवात्मज

पण्डित रामकर्ण

जयपुर वास्तव्य कासल्या दाधीच पण्डित माधवलालात्मज
जोधपुरवैदिकपाठशालाप्रधानाध्यापक

पण्डित भगवतीलाल

प्रकाशित

जोधपुर-प्रतापप्रैस यन्त्रालय
मुद्रित

सं० १९६२ मूल्य रु० ३)

॥ श्रीः ॥

भूमिका

विदित होकि इस संसारमें आजकल जैसी लोकोंकी रुचि सुगमता पर है वैसी कठिनता पर नहीं. जैसे कविता के विषय में देखिये. संस्कृत कविता चाहे सर्वोत्कृष्ट चमत्कार युक्त क्यों न हो परन्तु वैसा संस्कृत का ज्ञान व परिपाटी बिलकुल उठजाने के कारण लोक सुगमता समझकर भाषा कविता को ही परमप्रिय और हृदयानन्ददायिनी नव वधूवत् अंगीकार करते हैं; क्योंकि वो संस्कृत कविता व्याकरण साहित्यादि अनेक शास्त्रों की सहायता के बिना सुबोध नहीं, इसी से प्रौढा स्त्री के समान कठिन साध्य और दुष्करतया सेव्य है. इसलिये परमदयालु भाषाकवि स्वामिजी महाराज श्रीगणेशपुरीजी ने बडे परिश्रम के साथ महाभारत के कर्णपर्व का भाषा के दोहा कवितों में ललित और ओजगुण विशिष्ट वीर रस सूचक कविता में वीरविनोद नामक ग्रन्थ निर्माण करके चारण कुलोत्पन्न मरुस्थलान्तर्वर्त्ति मेड़ता प्रान्तगत चारणावास नामक ग्राम में जन्म पाये हुए अपने स्वर्गवासी पिता पद्मसिंहजी के चरण कमलों में अर्पण कर जगत् में अलौकिक पितृभक्ति प्रकट की और वीर रस को प्रत्यक्ष दिखाया.

यद्यपि यह ग्रन्थ पहिले संवत् १९५२ में अजमेर निवासि राजस्थान नामक समाचार पत्र के संपादक समर्थदानजी को छापनेकेलिये दिया गया था और

उन्होंने ४फार्म छापकर निकाले भी थे परन्तु खुद उक्त स्वामिजीको ही कहीं कहीं पदों में संदेह होनेके कारण फिर दुबारा हम लोकों की सहायता का आलम्बन कर संस्कृत कर्णपर्व से ठीक ठीक मिलाकर उन पदोंको बिलकुल बदल कर ठीक ठीक करदिया बल्कि कहीं कहीं छन्दके छन्दही बदल दिये और स्वमुखसे ही बहुत अच्छी टीका रूप टिप्पणी बनाई जिसमें कि कोई गूढ विषय अलग्न कहीं नहीं रहे और कहीं कहीं विशेष विषय भी रक्खा है जैसे हेमकोश से घोड़े और हाथियों के भेद और बसन्तराजसे शकुनका विषय इत्यादि कई विषय दिखाये हैं.

प्रकाशक पण्डित रामकर्ण
और पण्डित भगवतीलाल.

॥ श्रीरामो जयतितराम् ॥
॥ श्रीदधिमथी विजयते॥
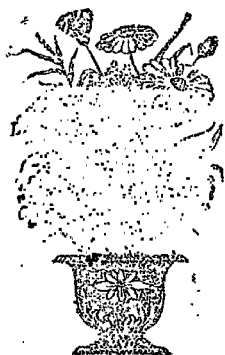
एतद्ग्रन्थप्रकाशकपण्डित
रामकर्णशर्म-संक्षिप्त-वंशवर्णनम्॥

परोपकारैकपरायणोऽभू-
दथर्वसूनुर्भगवान्दधीचिः ॥
तदन्वयेऽभावि महोत्तमेन
ज्योतिर्विदा श्रीरघुनाथनाम्ना ॥१॥

तदात्मजः श्रीबलदेवनामा
विद्वान्महान्भागवतैकनिष्ठः ॥
स्वधर्मपालोऽतिपरोपकारी
विराजते योधपुरेऽतिरम्ये ॥ २ ॥

पतिव्रतामूर्धमणिर्वदान्या
धर्मे रता दीनदयार्द्रचेताः ॥
शृङ्गाररूपा सदनस्य साक्षा-
त्तद्धर्मपत्नी सिणगारनाम्नी ॥ ३ ॥

तयोः सुताः सन्ति पञ्च प्राणा इव सुसंमताः॥
रामकर्णाभिधस्तेषां ज्येष्ठो हरिपदे रतः ॥ ४ ॥

श्रीमद्भारतभास्करेतिपदभाग्वेदान्तभट्टाञ्चिता
नानाकाव्यकलाकलापकुशलाःसद्धर्मसंस्थापकाः
विद्यासिंधुसुधांशवोऽतिकरुणाःश्रीगट्टुलालाभिधा

स्तत्पादाम्बुरुहेषु यस्य सततं चेतो मिलिंदायते ॥
तस्मादवरजास्तेषु श्यामकर्णो महामतिः।
अंते संसेव्य मथुरां जगाम परमां गतिम् ॥६॥
लक्ष्मीनारायणस्तस्मादनुजोऽस्ति सहोदरः ॥
अनुजौ तस्य गोविन्दकृष्णनारायणाभिधौ ॥७॥
पुत्रवत्स्नेहसंयुक्तौ ज्येष्ठाज्ञावशवर्तिनौ ॥
जगदीशप्रसादेन लभेतां सततं शुभम् ॥ ८ ॥
गुणरसनवचन्द्रेऽब्दे पौषे शुक्ले त्रयोदशीदिवसे ॥
मुद्रितमेतत्पुस्तं प्रतापयन्त्रालये स्वीये ॥ ९ ॥

॥ श्रीरामो जयतितराम् ॥
॥ श्रीदधिमथी विजयते॥

एतद्ग्रन्थप्रकाशकपण्डित
भगवतीलालशर्म-संक्षिप्त-वंशवर्णनम् ॥

श्रीदाधीचकुलेऽभवच्छिरहरग्रामेऽभिरामेश्रिया
गीतागीतिसुगीतकीर्त्तिरनघःश्रीरामवत्सोद्विजः॥
जातास्तस्यचपाण्डवाइवसुताःपञ्चापिचैकासुता
तेषुज्येष्ठउदारबुद्धिरजनिश्रीमाधवःसत्कविः॥१॥
येनश्रीजयपत्तनेकिलनिजासंस्थापितास्वस्थितिः
तद्राजार्पितपाठकास्पदजुषादत्तास्वकीयास्वसा
नाम्नाचन्द्रकुमार्युराजगुरवे श्रीचन्द्रदत्ताय च
दत्तोदत्तकभावतोऽनुजघनश्यामश्चयोधेपुरे॥२॥
इदृस्त्वस्यचचन्द्रिकोदरभवंतस्यास्त्यऽपत्यत्रयं
ज्येष्ठो योधपुरीयवैदिकमहापाठाऽऽलयाऽध्यापकः
एतद्ग्रन्थप्रकाशकोभगवतीलालोऽस्मिमेचानुजा
दत्ताभैरववत्सनामभिषजेसास्तेगुलाबाभिधा॥३॥
तस्याआशुकवीतिचारुपदवीभाग्वर्त्ततेचानुजो
नित्यानन्दकशास्त्र्यसौममहाशिष्यःसुपुत्रोपमः
चत्वारोजयदेव-रामक-घनश्यामा-हरिस्तातका
एतद्वंशविवर्णनंखलुमयासंक्षेपतो वर्णितम्॥४॥

(१) "उ" इति पादपूरणाय. (२) अल्पेतातास्तातकाः पितृव्या इत्यर्थः ॥

॥ श्रीहरिः ॥

कवि-काव्यप्रशस्तिः ।

भुविविजयतां स्वामी विद्वत्कुले स यथा रविः
क्षितिभृदुदितः पद्मोल्लासी गणेशपुरीकविः ॥
बहुकृतिसुधां पीत्वा यस्याऽनिमेषमिमे पवि-
प्रमुखविबुधा मन्ये नैव स्मरन्ति निजं हविः१
अहमिति सदाऽऽशासे ग्रन्थं सुवीरविनोदकं
सकलपुरुषाः सेविष्यन्तेऽमुमेव नृमोदकम् ॥
क्षुधिततृषितो लोकः कोऽग्रेस्थितं ननु सोदकं
त्यजति मधुरं नेत्राऽऽकर्षि प्रदत्तमु मोदकम्।२।
श्रीगणेश कविराजहे धन्यं त्वां कथयाम ॥
कृत्वा ग्रन्थं प्रकटितं येन पद्मपितृनाम ॥३॥

इतिप्रशंसको दाधीच
आशुकवि पं० नित्यानन्दशास्त्री
पद्मसरघाटी-जोधपुर.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

वीरविनोदके विषयोंकी अनुक्रमणिका ॥

प्रथमयाम

द्वितीययाम

तृतीययाम

चतुर्थयाम

पंचमयाम

षष्ठयाम

सप्तमयाम

इति अनुक्रमणिका समाप्ता ॥

अथ वीरविनोदप्रारम्भः ।
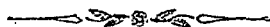
श्री समित्रनंदनंदनस्तुति ॥

सोरठा ॥

पेखि पत्थ पर प्यार, वंदि चरन जदुबीरके ॥
सुभट करन रन सार, कह्यो चहैं पदमेस कवि[१]

श्री सक्रुंदनंदनंदनस्तुति॥

मनोहर छंद ॥

पाहनं[२] ससुरं[३] चोरे सत्यभामा चोरे तरुं[४],
चोरी वंसी राधिकानैं कह्यो फेर डरको[५] ॥
चोरी[६] कहौं रावरी तौ जीभ[७] नाँहिं लंबी चोरी,

---

(१) अर्जुन पर श्रीकृष्ण का प्यार देखकर, कवि ने स्तुति की. इसका तात्पर्य यह है कि अपनी भगिनी सुभद्रा के देने रूप न करने योग्य अर्थात् निन्दा हो वैसा कार्य्य प्यार के वश होकर श्रीकृष्ण ने करदिया तो स्तुति हो ऐसा ग्रन्थ के अमंगल का नाश करने रूप कार्य्य क्यों नहीं करेंगे ? ॥ १ ॥

(२) पाषाण विशेष अर्थात् मणि. (३) जामवन्त. (४) तरु विशेष अर्थात् कल्पवृक्ष(५.भला आदमी चोरी करता है वह दबता है यहां राधिकाजी नहीं डरी और कहा कि क्या डर है(६)दूध घृतादि की चोरी७मेरी जीभ.

चोरचो दधि दूध जामैं हिस्सा हलधरको॥
चोरनके चोर बसुदेव नंदराय चोर,
चोरन कौं जैने पारे मात चोर पैरको॥
जानों हरि! ग्रन्थ के अमंगल हू चोरे जैहैं,
जैहैं कित चोरीका स्वभाव सब घरको॥२॥

श्री गणेशस्तुति॥

रीति॰ रोम रोमकी पिछानैं मति तोम तैं तूं,

---

(१)दूध दही चुराने में बलदेवजीका हिस्साथा सो वे भी चोर हुए.(२)चोरों के चोर श्रीकृष्ण बलदेव रूप चोरों को चोरनेवाले.(३)देवकी ने(४)पाले यशोदाने (५) माता (६)इनसे दूसरा चोर कौन अर्थात् ये जामवंत आदि सब चोर हैं.॥२॥(७)इस कवित्त का प्रयोजन यह है॥कवि कहता है कि हे गणेश! तू "मतितोमनैं" नाम बुद्धियों के समूह से हमारे रोम रोम की रीति को जानता है. हम सोम नाम कपूर उसके जैसे शीतल और असोम नाम तद्विरुद्ध अग्नि अर्थात् गर्म अर्थात् तुझमें श्रद्धालु हैं या नहीं सो हम अपने मुख से नहीं कहेंगे। जन्म भर से जंगल में रहनेवाले ऋषि उनकी जिव्हा का जाप नाम यह कथन कि "गणेश के मंगल से अमंगल गल जाते हैं" सो "जो" नाम उस मंगल को हम लेंगे. जो कदाचित् तुम यह कहो कि हरि नाम विष्णु ने गरुड़ को छोड़ कर चक्रचलाकर नक्र नामग्राह को मारा उनकी बराबरी मुझ से नहीं होसकती क्योंकि मूष मेरा वाहन, मेरा पेट बड़ा इस से मैं नहीं दौड़ सकता

सोम कै? असोम? हम वक्रतैं न वोलैंगे ॥
मंगल तिहारेतैं अमंगल गलत जन्म,
जंगल निवासी ऋषि जीह जप जो लैंगे ॥
वैनतेय छोरि हरि चक्र छोरि नैंक मारयो,
आखु यित तुन्दी हाँ न डोलौं तो न डोलैंगे॥
ऋद्धिवंत हैं न वहैं सिद्धिवंत हैं न वहैं,
एकदंतवंत हैं असंत ऐसैं तोलैंगे ॥ ३ ॥
वेंहैं नाग सीस नच्यो नाग नचैं मेरे सीस,

"न तो डोलैंगे" नाम आप की भक्ति से हम न हटेंगे । परन्तु असन्त अर्थात् नास्तिक यह कहेंगे कि गणेश न तो ऋद्धिवाला है और न सिद्धिवाला है किन्तु एक दांतवाला है। एक दांतवाला कहने का यह प्रयोजन है कि एक समय रावण की सभा में देवता खड़े थे उस समय रावण ने गणेश का एक दाँत उखेड़ लिया और कहा कि यह बड़ा कुरूपवान् है।प्रयोजन यह है कि जिसने अपना ही दांत उखड़वा लिया तो दूसरे को ऋद्धि सिद्धि देना और अंमगल का नाश करना कहां है?॥३॥

ग्रंथ के रचना समय में प्रथम कवित्त खोया गया तब यह दूसरा कवित्त बनाया गया। फिर वह निकला जिससे दो मंगल लिखे हैं।

(१) कवि के मन में सन्देह हुआ कि यदि गणेश ऐसे कहैं कि "वहैं" नाम विष्णु (कृष्णावतार में) नाग (काली) के सिर पर नचा और मेरे उदर को शिर

लक्ख नौ उतैं गो इतैं एक वृष धारौं मैं ॥
नागान्तक आखु यान नाग हर नाग सिर,
नामतैं त्रिविक्रम त्यों लम्बोदर हारौं मैं ॥
जसोमत काली मात वज्री सक्तिधारी भ्रात,
विष्णु लौं अमंगलकौ व्रात कैसें टारौं मैं ॥

पर मेरे पिता महादेवजी के सर्प नचते हैं "उतैं" नाम उधर अर्थात् विष्णु (कृष्णावतारमें) के पिता नंदजी के नौ लाख गाएं और "इतैं" नाम इधर अर्थात् मेरे पिता के एक नन्दिकेश्वर बैल है उसका मैं पोषण करता हूं। विष्णु के नागों का अन्त करनेवाला गरुड़ यान है और मेरे चूहा यान है जिस को नाग खा जाते हैं, विष्णु तो "नाग" नाम हाथी अर्थात् कुवलयापीड़ उस का "हर" नाम मारनेवाला है और मैं "नाग" नाम हाथी के शिरवाला हूं अर्थात् मेरे हाथी का शिर है, विष्णु 'नामतैं' कहिये संज्ञा से 'त्रिविक्रम' तीन पैंड़वाला है कि जिसने ब्रह्मांड के तीन पैंड़ किये और मैं नाम से लम्बोदर हूं अर्थात् लम्बे पेटवाला इस से "हारौं मैं" नाम विष्णु की बराबरी नहीं कर सकता. विष्णु की माता (कृष्णावतार में) "जसोमति" नाम जसवाली अर्थात् यश की देनेवाली, यश का रंग उज्वल है इस से वह भी उज्वल हुई और मेरी माता 'काली' (कालेरंगवाली देवी) है विष्णु के भाई 'वज्री' अर्थात् हाथ में वज्र रखनेवाला इन्द्र, और मेरे शक्तिधारी नाम शक्ति [बर्छी] रखनेवाला स्वामिकार्तिक भाई

ऐसी आनाकानी तूं करै जो बक्रआनन तो,
काननपै पानन दैं कौनपैं पुकारौं मैं ॥४॥

श्रीमहादेवस्तुति ॥

अस्व गज पारिजात रंभा वैद्य अमृत ए,
सहस्राक्ष लीने कहि मो बिनु निहारैको?॥
कौस्तुभ रमा त्यौं धनु संख लीने केशवनैं,

है, भाइयों में अन्तर और उन के शस्त्रों में भी बड़ा अन्तर है तो फिर मैं विष्णु की नांई अमंगल का समूह कैसे टाल सकूं ? । कवि कहता है कि हे गणेश! कानों के हाथ लगा कर तू "ऐसी आनाकानी" कहिये ऊपर कही हुई टालमटोल करे तो मैं कानों पर हाथ धरके किसके पास पुकार करूं ? । कोई किसी काम के लिये नटता है तो अपने कानों पर हाथ लगाता है उस से यह सूचना करता है कि अब मैं नहीं सुनता, और बहुत बल से पुकारनेवाला कानों पर हाथ रखता है उस का यह प्रयोजन जान पड़ता है कि बल से पुकार सकै. लोग झूंठे बहाना बनाकर भी नट जाते हैं तो गणेश के तो उक्त सच्चे बहाने हैं तो भी भक्त [कवि] पर कृपा करेहीगा यह व्यङ्ग्यार्थ है ॥ ४ ॥

(१)अश्व श्यामकर्ण घोड़ा, गजऐरावत हाथी, पारिजात देवताओं का वृक्ष, रंभा अप्सराविशेष, वैद्य धन्वन्तरि और अमृत, ये सहस्राक्ष नाम हजार आंखोंवाले इन्द्र ने यह कहके लिये कि मुझ बिन इनको कौन देख सकता है ? प्रयोजन यह है कि इन को देखने योग्य हजार आंखें मेरे ही हैं। केशव अर्थात् विष्णु ने कौस्तुभ नाम की

राखे गर बच्छ कर लरकैं निकारैं को ॥
धाइ ऋषि लीनी धेनु सुरा पीनी दैत्य गन,
काकी मति थाकी रम्य वस्तुकौं बिसारैं को॥
लोकन असोक कीवे महर लहर कीवे,
जहर हरोली चंद्रमोली बिनु जारैं को॥५॥

॥ दोहा ॥

इंद्रादिक स्तुति सुनि उठे, विष पीवे वृषकेतु॥
बिधवा व्हैहौं याहिविधि, हरा डरी इहिं हेतु॥६॥

अन्यप्रकारसे स्तुति ॥

मणि; रमा लक्ष्मी , धनु शार्ङ्ग धनुष और शंख पांचजन्य ले लिये और क्रम से गले, छाती और दोनों हाथों में धारण कर लिये उन को लड़ कर कौन निकाल सकता है? । ऋषियों ने दौड़ कर कामधेनु ले ली, सुरा (मद्य) दैत्यों [दानवों] के समूह ने पी ली, ऐसी किसकी बुद्धि मन्द होगई है? उत्तम वस्तु को कौन भूलता अर्थात् छोड़ता है ? लोगों को शोक रहित करने के लिये, कृपाकी लहर करने के लिये, जहर (विष) की हरोली नाम आगे की ज्वाला चन्द्रमौली नाम चांद है शिखा में जिस के ऐसे महादेव बिना कौन पचावै ? समुद्र मथने से चौदह रत्न निकले उनमें से बारह तो औरों ने लिये और विष और चन्द्रमा ये दो महादेवजी ने लिये । चन्द्रमा का ग्रहण चन्द्रमौली शब्द से हुआ । विष का पीना तो प्रसिद्ध ही है ॥ ५ ॥

मनोहर छंद ॥

हेरि हहराय हाय हाय कैं कहत हरा,
ससुरा न सास कौन मेटैं दुखमालाकौं? ॥
थान है मसान ता विकान कौं धरैं को कान,
लैहैं कौन लाला सिंहछाला गजछाला कौं?
वृश्चिक भुजंग गोधिकात्मज से भव्य भव्य,
भूषन भरे हैं कैसैं काटि हौं कसाला कौं?॥
वाकौं दुख चीनौं नांहि चीनौं दुख देवनकौं,
लीनौं ह्यां अमोल जस पीनौं हर हालाकौं।७।

श्रीचंडिकास्तुति ॥

---

(१) "हरा" नाम पार्वती महादेवजी को विष पीने के लिये तय्यार हुए देखके "हहराय" नाम घबरा कर हाय हाय शब्द करके कहती है कि मेरे सुसरा और सास कोई नहीं है आप के न रहने पर मेरे दुःखोंकी माला को कौन मेटेगा ?। आप के स्थान तो श्मशान है उसकी विक्री को कौन सुनेगा? सिंहछाला (सिंह का चमड़ा) और गजछाला (हाथी का चमड़ा) ये आप के वस्त्र हैं इन को कौन "लाला" नाम लाडला बालक लेगा? वृश्चिक (बिच्छू) भुजंग (सांप) गोधिकात्मज (गोहिरे) ऐसे उत्तम उत्तम आभूषण भरे हैं उन से मैं अपना कसाला (दारिद्रय) कैसे काटूंगी? "वाकौं" नाम उस पार्वती का दुःख तो नहीं पहचाना और देवताओंका दुःख पहचाना और "हर" नाम महादेवजी ने हाला नाम

पापनं तपत तन तपन जपत तुच्छ,
अमृतांशु छीन डरि दीननसौं दूर हैं ॥
सोहनी निहारि छबि मोहनी बने हे हरि,
ता छबि असोहनी के बाजे बडे तूर हैं ॥
बैनी वक्र श्रोनी जंघ अंग अनुहार ईश,
सर्प शशि सिंघ गज चर्म प्रिय पूर हैं ॥

जहर को पिया इस से अमोल यश लिया. जहर का नाम हालाहल है सो यहां "नामैकदेशेनामग्रहणम्" इस न्याय से हाला शब्द से हालाहल का ग्रहण है। जैसे सत्यभामा को सत्या कहते हैं ॥ ७ ॥

(१) पापों से शरीर तप रहे हैं और "तपन" नाम सूर्य को उस के भक्त जपते हैं सो तुच्छ हैं अर्थात् बुद्धिहीन हैं क्योंकि ठंढी वस्तु से तापों का नाश होता है और गर्म वस्तु से ठंढ का, सो इस से वे लोग विपरीत करते हैं. "अमृतांशु" जो चन्द्रमा है सो क्षीण है अर्थात् क्षय रोग युक्त है आपही अमृत पीकर रोग की निवृत्ति नहीं करता सो डर कर दीन लोगों से दूर हो गया कि मुझ से कुछ मागेंगे इस हेतु से डरकर सब यहां से परे चला गया। "हरि" जो विष्णु हैं वे मोहनी रूप बने तब देवी की सुहावनी छवि देखकर बने, तब 'ता" नाम उस विष्णु की निज की (असली) असोहनी छवि के बडे तूर नाम नगारे बजे हैं, अर्थात् विष्णु के बुरे रूप को सभीने जान लिया। जो उनका सुहावना रूप होता तो वे स्त्रीका मोहनी रूप क्यों धारण करते?

तव तनु स्वेद रेनुजात गननाथ अम्ब !,
इनहि भजौं तो कहि तोमैं का कसूर हैं।८।
श्री सूर्यस्तुति ॥
घोटक पुरानौ एक चक्र रु पुरानौ रथ,
चक्रिनकी रज्जु वैल्गा देखि दुख पावौं मैं॥
पायन विहीन सूत नर्क अधिकारी पूत,
दारिद अभूत देखि घूमि घबरावौं मैं ॥
रीझकौं चहौं तो शिर बीज परौ पद्मकवि,
खीज कैं अंधेरो करैं कौन ढिग जावौं मैं?॥
आन सुरँ सोहैं कर ताही छिन वन्दौं त्वर,
नाँ तौ वक-वृत्ति धरि मिहिरँ मनावौं मैं॥९॥

आप के वेनी, वक्त्र (मुख), श्रोनी (कटि), जंघा (जांघ) इन अंगों का सादृश्य होने से महादेवजी को अनुक्रम से सर्प, चंद्रमा, सिंह और हाथी का चर्म ये पूर्ण प्रिय हैं। क्योंकि आप की वेनी से सांप का, मुख से चन्द्रमा का, कटि से सिंह की कटि का और जंघा की चाल से हाथी की चाल का सादृश्य है। ये यथासंख्या हैं। गननाथ जो गणेशजी हैं सो तेरे शरीर के पसीने और रेणु कणकों से उत्पन्न हुए हैं तो हे अम्ब ! मैं इन को ही भजूं तो तुझ में क्या अपराध है? ॥ ८ ॥

(१) सर्प। (२) घोड़े की बाग। (३) पुत्र यहां यमराज (४) देवता (५) हाथ पकड़ें वा सहायता करें (६) शीघ्र (७) सूरज ॥ इस कवित्त का प्रयोजन यह है कि

सुभटशिरोमणि कर्णस्तुति ॥

दोहा ॥

कुण्डल जिय रक्षा करन, कवच करन जयवार॥
करनदान आहव करन, करनकरन बलिहार१०

श्रीभाषागुरु मिश्रण चारण सूर्यमल्लस्तुति ॥

मनोहर छंद ॥

मित्र सनमान, सत्यवान, स्वर ज्ञान मध्य,
इक न समान, कहौं का सम करेरो मैं? ॥
प्राकृत, पिसाची, सौरसेनी, अपभ्रंस पूर्न,
होसु हैं न, हैं न हर हायन लौं हेरो मैं ॥

मनुष्य को लाभ पर गौण दृष्टि रखनी चाहिये और हानि से बचने पर मुख्य दृष्टि. जैसे यहां कवि ने सूर्य के प्रसन्न होने से उत्तम वस्तुओं की प्राप्ति हो उसको गौण समझ कर क्रोध में आकर सूर्य अन्धकार करदे इस हानि को मुख्य समझा ॥ ६ ॥

(१) जी की रक्षा करनेवाले कुण्डल, और जय करने वाला कवच, इनका दान करनेवाले और युद्ध करनेवाले कर्ण के हाथों की बलिहारी है ॥१० ॥

(२) मित्र का सत्कार करना, सच बोलना, स्वरों का ज्ञान अर्थात् राग में समझना, इतने विषयों में एक मनुष्य सूर्यमल्लजी के बराबर नहीं. मैं यों कहता हूं सो किसके बराबर कहाहूं? अर्थात् नम्र हूं. प्रयोजन यह है कि सूर्यमल्लजी हमारी समझ में वास्तव में ऐसे ही थे. इन

देख्यो मुहि दीन विद्या दीन्ह त्यौं विवेक दीन्ह,
दिग्ध वर दीन्ह, घन आनंद को घेरो मैं ॥
वारन बदन वर चारन बरन बीच,
तारन तरन रविमल्ल चर्न चेरो मैं ॥ ११ ॥

दोहा ॥

सूर्यमल्लके अष्ठ शिष, अष्ठ ग्रहन सम ओर ॥
मैं सबहिनमैं मंदमति, जांनहु जिगनू जोर॥१२॥

में से एक बात में तो कई इनके बराबर वा इनसे अधिक होसके हैं परन्तु सब में एक मनुष्य ऐसा मिलना कठिन है। और प्राकृत, पिशाची, शौरसेनी और अपभ्रंश इन चारों भाषाओं में पूर्ण थे, जैसे वे थे ऐसे इस समय नतो कोई है, न कोई होगा, क्योंकि नित्यप्रति विद्या की हानि होती जाती है, मैंने आर्यावर्त्त में 'हर हायन' नाम ग्यारह वर्ष तक ढूंढा (परन्तु कोई नहीं मिला) मुझ को दीन देख कर विद्या दी, ऐसे ही विवेक दिया, बड़ा वर दिया कि अब तू किसी काव्यवेत्ता को जीतेगा नहीं तो उससे हारेगा भी नहीं. इससे मैं दृढ़ आनन्द को लपेटा हुआ हूं. रविमल्ल, नाम वे सूर्य्य मल्लजी कैसे थे? कि चारण जाति के बीच में 'वारन बदनवर' नाम श्रेष्ठ गणेश थे, दूसरों को तारनेवाले और स्वयं तरनेवाले थे, ऐसे सूर्य्यमल्लजी के चरणों का मैं किंकर हूं अर्थात् शिष्य हूं ॥ ११ ॥

(१) आठ ग्रहों के समान सूर्यमल्लजी के आठ शिष्य थे उन सब के बीच में खद्योत के समान अल्प

अथ नृपवंशवर्णन ॥

घनाचरी ॥

दलपति नृपति महेसदास रत्नसिंह,
रामसिंह सिवसिंह केसोदास त्रासहर ॥
त्यौंही गजसिंह फतेसिंह राजसिंह त्यौंही,
त्यौं भवानीसिंह त्यौंही बहादुरसिंह वर ॥
त्यौंही भौ शार्दूलसिंह रामप्रतिनिधि राम,
मालव मुलकपाता सीतामऊ नग्रनर॥

बुद्धि में ही हूं। उन आठों के नाम ये हैं:—कृष्णगढ़ के राज्य में गोयाथी ग्राम के रहनेवाले वल्लभजी बारहट१, जयपुर के राज्य में किशनपुरे के रहनेवाले सीताराम जी बारहट२, श्यामपुरे के हरदानजी बारहट३, गंगावती के रहनेवाले विजयनाथजी खिड़िये४, जोधपुर मारवाड़ राज्य के धानणावे ग्राम के रहनेवाले मोतीरामजी रत्नु५, बड़े धानणावे के रहनेवाले बखशीरामजी बारहट६, बूंदी राज्य के हीलेड़े ग्राम के रहनेवाले धूंकलजी महडू७, और एक सूर्यमल्लजी के पुत्र ठाकुर मुरारिदानजी८, ये आठों आठ ग्रहों के समान और नवें सूर्य्यमल्लजी सूर्य्य के समान थे ॥१२॥ (१) दीनों का भय मिटानेवाला. (२) वैसा ही. (३) कितनेक गुणों से रामचन्द्रजी के तुल्य (४) महाराज रामसिंह (५) मालवा मुल्क में सीतामऊ नगर के मनुष्यों की रक्षा करनेवाला.

दयावीर¹ धर्मवीर दानवीर जुद्धवीर,
भोजसम² विद्यावीर पञ्चम सुधीरधर॥१३॥
॥ अथकविवंशवर्णन ॥ मनोहरछंद ॥
मरुदेश मेरता जिलेमें चानवास गांव,
पाताकवि³ पुत्र रतनेस लक्ष्मीदास भौ।
त्यौं कल्यानदास रघुनाथदास सोभाराम,
ताके जगराम पद्मसिंह सुत तासैं भौ॥
बुंदीवासी सूर्यमल्ल मिश्रन सौं पायौ गुरु,
विद्यारत्न पायौ वर पायौ सुख खास भौ।
रामसिंह जसघन मायौ नांहि मोर मन,
वह पृथु पृथिवीपे प्रचुर प्रकास भौ॥१४॥
दोहा-धीर करन कातरन पटु, मन धीरन घनमोद
वीरनराधिप राम वर, वरनौं वीरविनोद॥१५॥

---

(१) दयावीर आदि चार वीर शास्त्र में प्रसिद्ध हैं (२) पांचवां भोजके समान विद्यावीर महाराजा रामसिंह है॥ १३॥ (३) पाता नामक कविका पुत्र (४) उस जगरामसिंह का मैं पद्मसिंह पुत्र हुआ. (५)जैसा(६) वह जस बड़ी पृथ्वी पर बहुत प्रकाशवाला हुआ ॥१४॥ (६)धीर और मोद ये दोनों विरोधी धर्म लेने. [७]महाराजा रामसिंहजी वीर पुरुषों के स्वामी हैं और वर अर्थात् श्रेष्ठ हैं। और श्लेष से वर आज्ञाविशेष। यहां वर शब्द के श्लेषसे शाब्दी व्यंजनाहै। (८) वीरों का विनोद अर्थात् क्रीड़ा है जिसमें ऐसा एतन्नामक ग्रन्थ बनाता हूं॥१५॥

छप्पय ॥

जगे छत्रिय निज जीह आप जस कहैं अनीतिय,
दीने द्विजकौं दसन प्रबल जस कथन सुप्रीतिय॥
द्रोन परब संग्राम-सार कुलपति भल कीन्हौं,
द्विजकुल कवि द्विजद्रोन दिग्घ जस दुंदुभि दीन्हौं।
छितिपर चारन छत्रीनको नातो प्रबल निहारिकैं,
बारहट पद्म कीनौं बिदित "वीरविनोद" विचारिकैं

अथ कथा प्रारंभ ॥

कवि वचन ॥

सोरठा ॥

---

(१) संसार में क्षत्रिय का अपनी जिव्हा से अर्थात् क्षत्रिय के मुख से अपना अर्थात् क्षत्रिय का यश कहा जाना अनुचित प्रवृत्ति है, और कर्ण की प्रबल जस कराने में प्रीति थी इसलिये प्राण निकलते समय ब्राह्मण वेष धारी श्रीकृष्ण को ब्राह्मण समझ कर याचना करने पर चूँपों सहित अपने दांत दे दिये. द्रोण पर्व पर भाषा में "संग्रामसार" ग्रंथ कुलपतिमिश्र ने बहुत अच्छा किया परन्तु यह कवि जाति का ब्राह्मण और वर्णनीय द्रोण भी ब्राह्मण, सो उसने उस के यश के बड़े नगारे बजाये अर्थात् ब्राह्मण ही का यश किया क्षत्रिय का नहीं किया. विचार से देखते हैं तो द्रोण की अपेक्षा कर्ण का युद्ध प्रबल है, इसके अतिरिक्त कर्ण क्षत्रियथा और मैं बारहट पद्मसिंह जातिका चारण हूं, हमारा और क्षत्रियों का परस्पर जैसा

लखि द्वै दिन रन क्रूर, संजय बोल्यौ नृप! सुनहु।
सज्यौ करन रनसूर, द्रोन-मरन-डर हरनकौं।१७।

संजय वचन ॥

छंद चकोर ॥

नृप!तोरिमति मनुतूल,तुहि जारिकिय दुख मूल
ज्यौं होत नर तियजीत,त्यौं भयौ तूं सुतजीत१८
वह भयौ कर्न अधीन,तिँहिं कुमतिकौ गृहकीन
सुत बचन, तैं श्रुति कीन, कर्नादि बच स्मृति चीन
बिदुरादि जुत हित बैंन, निरखेसु नास्तिक नैंन
तिँहिंज्ञान फल मिलिश्राज,रुचि सौं अरोगहुराज

मनोहर छंद ॥

बुरो करैं ताकौ बुरो करैं बुरो कहैं कौंन,

सम्बन्ध है वैसा और जाति का क्षत्रियों के साथ नहीं दीखता,इस बात को विचार कर मैंने "वीरविनोद" प्रकट किया ॥ १६ ॥ १७ ॥ (१) रूई. (२) स्त्री से जीताहुआ ॥१८॥ (३) दुर्योधन [४] कर्ण ने दुर्योधन को । [५] वेद । [६] आदि शब्द से शकुनि और दुश्शासनादि॥१६॥[७]आदि शब्द से श्रीकृष्ण और व्यासादि । (८) नास्तिक के नेत्र अर्थात् दृष्टि से उनके वचनों को देखा । प्रयोजन यह है कि उन के कहने को तैंने तुच्छ समझा ॥२०॥

(९) हे राजा! जगत् में चार प्रकार के मनुष्य होते हैं, एक तो अपना बुरा करै उस का पीछा बुरा करै, उस

भलो करैं ताको भलो करैं भलो जोरयौ तैं॥
बुरो करैं ताको भलो करैं ऐसी चहैं कौन?,
तीननकौं तोलि तिनकौं न मन मोरयौ तैं॥
राज हित भ्रात तात खात रीत राजन की,
तोरन अनेक अरे पैं न पन तोरयौ तैं॥
भ्रात हित, तात हित, गात सुख छोरयौ, भुव-
जात सुख छोरयौ तिँहिं पात नहिं छोरयौ तैं२१

को बुरा कौन कहै? ॥ दूसरा अपना भला करै उसका भला करै, उसको 'भलो जोरयोतैं' नाम तैंने खूब एकत्र किया. लक्षणा से आता है कि कुछ भी ग्रहण नहीं किया। तीसरा अपना बुरा करै उसका भला करै, ऐसी इच्छा ही कौन करै? ॥ "तीनन कौं तोलि" कहिये इन तीनों को विचारिके अपने विचार से "तिन कौं न मन मोरयौ तैं" नाम एक तृण जितना भी तैंने चित्त को पीछा नहीं फेरा ॥ राज के लिये भाई और पिता को खाते हैं यह राजाओं की रीति है अर्थात् तुझ जैसे निकृष्टों की। इस रीति को तोड़ने के लिये अनेक जन [प्रकरण से विदुरादि] अड़े [हठ करके कहा] परंतु तैंने अपना पन नहीं तोड़ा. अब अपना भला करै उसका बुरा करै यह जो मनुष्यों का चौथा प्रकार है सो संजय धृतराष्ट्र से कहता है कि भाई [विचित्रवीर्य] के लिये, पिता [शन्तनु] के लिये, अपने शरीर का सुख छोड़ा अर्थात् स्वविवाह रूप सुख नहीं लिया

तोरे पिता, तोर, तोर पुत्र, तोर पौत्र मुख,
निज कर धोये ताहि रुधिर धुवायौ तैं ॥
चंद सु खिलोना देहु, रोय रोय माँग्यौ, तिन्हैं,
ज्यौं त्यौं तुष्ट कीने सोक अँसुन रुवायौ तैं।
जिनकी अनीति जान स्वप्न हूमैं क्रोध आन,
पान न छुवायौ नर बानन छुवायौ तैं ॥

'भुवजात' नाम पृथिवी से उत्पन्न हुआ जो राजरूप सुख वह भाई विचित्रवीर्य से नहीं लिया अर्थात् तेरे बाप और दादे से भीष्म ने यह भलाई की "तिहिं पात नहि छोर्यौ तैं" नाम उस भीष्म को मारके गिराना तैंने नहीं छोड़ा ॥२१॥ (१) तेरे पिता का, तेरा, तेरे पुत्रों के और तेरे पौत्रों के मुख अपने हाथों से धोये "ताहि मुख" नाम उस भीष्म का मुख तैंने उसीके लोहू से धुवाया। यहाँ मुख शब्द का चारों के साथ सम्बन्ध है। ऊपर कहे तेरे पिता ही ने कहा कि "चांद जैसा अच्छा खिलौना हमें दो" और रो रो कर और हठ करके मांगा उनको जैसे तैसे प्रसन्न किया अर्थात् उनका जी नहीं दुखाया और रोने तो काहे को दे? उस भीष्म को तैंने शोक के आंसुओं से रुलाया। जिन [तेरे पिता विचित्रवीर्यादि] की अनीति को समझ कर स्वप्न में भी क्रोध लाकर हाथ नहीं छुवाया अर्थात् अति हलका भी प्रहार नहीं किया उस भीष्मको तैंने अर्जुन के बाणों से छुवाया. हे राजा! जिस भीष्म ने स्नेह एकत्र करके अपनी छाती रूप

जानैं हित जोर उर सेजपै सुवायौ भूप!,
तौको हित तोर सर-सेज पै सुवायौ तैं।२२।

छंद चकोर ॥

हम सत्य भाखैं नाँहिं। मरि परैं नर्कन माँहिं ॥
वह[2] अमृतको सर आज। अपि! सूकि गो न इलाज
नृप! द्रोन भो नहिं नास। यह नास भो जय आस
धनुर्वेद भो अँनु धीर॥ व्याख्यान गो उठ वीर२४
सुभ सोध अर्थन सार। है को पढावनहार ? ॥
गंधर्व वेद वितीत। गन[3] तीय गावहिं गीत॥२५॥
बड-पुत्र[4] मेरु विख्यात। वर बात[5]-जायौ बात ॥
द्विज[6]नाथ हो द्विज[7]नाथ॥किय नार्थ[8]पूनअनाथ२६
निज[10]पुत्र मंत्र न दीन। नैर[11] दीन्ह कीन्ह प्रवीन॥
नर दच्छना[12] वैर दीन्ह, तिहिं मंत्र रन जियै[13] लीन्ह२७

शय्या पर तुझे सुलाया उस भीष्म को वा उस भीष्म से हित तोड़ कर तैंने तीरों की शय्या पर सुलाया ॥ (१)"तासों" पाठ भी है ॥२२॥(२) कर्ण ॥२३॥२४॥ (३)स्त्रियों का समूह ॥२५॥ (४)दुर्योधन (५) वायु से उत्पन्न हुआ, अर्थात् भीम (६) द्रोणाचार्य [७] गरुड़ [८] परमेश्वर ने (९) दुर्योधन ॥२६॥ [१०]अपना पुत्र, अर्थात् अश्वत्थामा (११)अर्जुन, इसको अधिकारी देख कर द्रोण ने विद्या दी। (१२) "भल" पाठ भी है। (१३) प्राण, अर्थात् द्रोणाचार्यका ॥२७॥

धृतराष्ट्र वचन ॥

हुव मोर गृह बड हाँन, जिंहिं जान गहिय जिहाँन
है हान और न हेर, जिय जान ठहैं मन जेर२८
गुरु पै पठैं कछु कोउ, तिंहिं गुरु न मानैं सोउ
वह अधमजोनिय बीच, जड़ जन्म पावैं नीच२९
इम धर्म्मशास्त्र उचार, सुनि कह्यौ मैं श्रुतिसार॥
एनिठहैं जु शिष्य कुपात्र,जिन देहु अक्षर मात्र३०
लें रम्य विद्या साथ, मरनों भलो ? मेमनाथ? ॥
वरवचनशास्त्रन बीच,क्यौंगिन्यौद्विजयहकीच३१
भ्रम होय अपनी भूल, तिंहि ठहैं न क्यौं दुख शूल
सुमरीनद्रोनसलाह,हठ उपजि तिंहिं उरदाह३२
हम मरे सब तिंहिं हेतु, कहि! कीन्ह का वृष-केतु
हा होहि कैसो हाल,क्यौं भाग्य मोर कँगाल३३

कवि वचन ॥

सिटि अंध धूनिय सीस, चित विकल मारिय चीस

धृतराष्ट्र वचन ॥

वय तुल्य मित्र विख्यात, जँन्यौ जु निज जामात
ठहैं तात मैं का कीन्ह, उहिं तात विद्या दीन्ह ॥

।२८।२९।३०।(१)हे मेरे स्वामी?।३१।(२ उस सलाह का याद नहीं करने रूप अग्नि उत्पन्न हुई।३२।(३ शिव,धृतराष्ट्र के शिवजीका इष्टथा इसलिये ऐसा कहा।३३।३४।(४)मैं पिता

ममम्रृत्युक्रियक्यौं गौन,हुत मृत्यु लिय क्यौं द्रौन
हहरातं हौं! वय हेर, अब फिरहिं का दिन फेरै॥
स्रष्टाँ रच्यौ जग मीत, शुभ रचि न छत्रिन रीति
सुत मरैं पितु हिय सीत,पितु मरैं सुत हिय मीत
घन द्रौन मृति घबरौंन, ठहैं छत्रिपनकी हाँन३७
गुरु द्रोनक्रियदिवगौन,कहिकरनरनविधिकौन

कवि वचन ॥

उर जरनि मेटन वर्न,कहि जुद्ध किय जिम कर्न

संजय वचन ॥

कुपि कर्न बर्न कराल,हनि कीन्ह सेन निहाल॥
द्विज वर्न आसिषलीन,त्रिवरन दुरासिष लीन३९
नित गढैं दातन चित्त,वह बच मृषा हुव मित्त?

था जिसने तो अपने पुत्रों का कुछ भला नहीं किया. यह द्रोण पिता था कि जिसने विद्या दी॥३५॥(१)मैं घबराता हूं (२) अच्छे दिनों का फिरना क्या पीछा आवेगा ? अर्थात् नहीं आवेगा. (३) ब्रह्मा॥३६॥(४) द्रोण के मरने से हद घबराने का समय है परन्तु मैं घबराऊं तो मेरे क्षत्रियपन का नाश होता है ॥३७॥ (५) स्वर्ग ॥ (६) वर्न शब्द का सम्बन्ध अगले पद के साथ है कि संजय ने अक्षर कहे॥३८॥(७,एक ब्राह्मण वर्ण की आशिष ली और शेष तीन वर्णों की दुराशिष ली. (८)"आशिषलीन"और"राशिषलीन"यह अन्त्यानुप्रासहै॥३९॥

सब समयआसिष पाय,हा!अंत दिनलिपहाय४०
द्विज अग्ग बचि देत आइ,खिजि अर्ध कर्न खपाइ
आभर्न[2] सजि सुरबाम,जिन इक्क इक लगि जाम
उत पूर्न हुव आभर्न,कट परिय इत भट कर्न॥

कवि वचन ॥

सुनि असह्य बच श्रुति बीच,अररा[3]य परि धर सींच
इम रोय तित थित ओर, रनवास हुव हा? सोर॥
बिसिखा बजार रु हट्ट,घर घर्न नर तिय थट्ट४३
करि महई लहरिहिं याद,बढि रुदन ध्वान बिसाद
को कर्न सम धन दीन्ह,संकल्पजलसर कीन्ह४४
उपमा मिली नहिं ओर,किय रुदन जल सर जोर
गंधारजा तित आइ,घन दुखित पति घबराइ४५
खिति परिय मुरछा खाइ, उत विदुर देवर आइ

---

(१) पांडवों की सेना. (२) आभरण बारह हैं उनके सझने में बारह प्रहर लगे उनकी सझावट पूर्ण होते ही आठ प्रहर युद्ध करके कर्ण मरा, अर्थात रात्रि के चार प्रहरों में कर्ण ने युद्ध नहीं किया. (३) अरड़ाय करके. [४]भिगोर्दी अर्थात् आंसुओं से [५] गली. (६) समस्त घरों में (७) समूह. [८) दया. (९) शब्द. [१०] संकल्पजल के सरोवर के जोड़का अर्थात् घरा वरी का आंसुओं का सरोवर हो गया.

सौगंध[1] जल दृग सींचि, लिय दुहुँन[2] मुरछा खींचि
उत अंध सोक अमान, गुनि[3] दीन्ह संजय ज्ञान

संजय वचन ॥

वर रीति करहु विचार, संसार सार[4] असार ४७
घन करन मरन सुघोग, को अमर इहिँ घर ओर

कवि वचन ॥

नृपकहिय उर तरु लाप, मतिपच्छि क्यों ठहराय[5] ४८
मम सुतन तन मन नेह, गो बगर जिन जय गेह[6]
हुव द्यूत पंडुन हार, कहि गोसदृस सिरदार ४९
कहि द्रोपदिहिँ ए क्लीव[7], तजि भज अपर कोउ पीव
जब किय युधिष्ठिर जज्ञ, उहिँ सुनि रु कहि सुत अज्ञ
भल भ्रात[8] पार अभीति, जिन च्यार दिस लिय जीति
सुन पुत्र बचन सुजान[9], कहि करन मूछन तान
किय बिजय भ्रात अनेक, इत करहिँ किंकर[10] एक

[१] विदुरजीने गुलाबजल छिड़का. (२) धृतराष्ट्र और गांधारीको (३) समझ करके. ४) संसारमें अच्छी चीज है वह भी बुरी है. [५] हृदय रूप वृक्ष में अग्नि लगने पर बुद्धि रूप पक्षी कैसे ठहर सकता है? [६] कर्ण रूप विजयका घर. (७) कर्णने द्रौपदी को कहा था कि ये युधिष्ठिरादि नपुंसक हैं सो तू कोई दूसरा पति करले (८) भाई युधिष्ठिर के (९) यह कर्ण का विशेषण है. (१०) तेरा किंकर कर्ण विजय करेगा.

ज्यौं कहिय वत्तजयान, त्यौं कीन्हकर धनुतान ५२
करि विजय जक्करराय, जिहिंवालअग्निजराय
सुरऋषिपिनक्षीर्यासिराय, किसुपत्थ दीन्हगिराय ५३

संजय वचन ॥

भूपतिहिं संजय भाखि, रथ चक्रमहि सुख राखि
हढचक्रादिसचिनदीन्ह, हनि पत्थ सर सिरलीन्ह ५४

कवि वचन ॥

कहि नृपति करिअन्याय, पांडवन लिय जय पाय
धर्म्मज अनृत कहतो न, कहि अनृतमारयौद्रोन ५५
हिकैं चून अनर्थ हमार; वहु अनय नर जदुवार
भट भीस्म द्विजभटमोर, पहकरनमरनसुओर ५६

कवित्त ॥

कुन्ती कृष्ण राज दैन कह्यौ पैं न लह्यौ कर्न
कह्यौ जुद्ध भार काके सीस धरि जाओं मैं?॥

(१) देवता मुनियों का जिसने आशीर्वाद लिया उस जयद्रथ को पृथा के पुत्र अर्जुन ने मार गिराया. यहां "पत्थ" पद श्लेष के अभिप्रायगर्भ है. (२) युधिष्ठिर झूंठ नहीं कहताथा (३) एक (४) अनीति ॥ (५) कुन्ती और श्रीकृष्ण ने कर्ण को राज देनेकेलिये कहा, परन्तु कर्ण ने नहीं लिया और उसने कहा कि "मैं युद्ध का बोझा किसके सिर पर रख कर जाऊं"। उस कर्ण को बलवान् जान कर सुत (मेरा पुत्र दुर्योधन) बलवानों से बलवान् था, सो

ताकौं बलि चीन सुत बलिन बलीन हो वे,
दीनन सौं दीन भयो जी न लरजाऔं मैं ? ॥
सब जग चेरो हो व कौन हितु मेरो घन,
दुक्खनकौ घेरौ घूमि कौन घर जाऔं मैं ॥
कैसें टरि जाऔं ज्वलदग्नि जर जाऔं कैधौं,
कूप परि जाऔं विष खाय मर जाऔं मैं॥५७॥
निज जन हाल हो रु द्विज जन पाल हो रु,
काल हो [२]अरीन अब पैंतरे दिखाये हैं ॥
उद्यममैं दीन्ह ध्यान भावीकौ न कीन्ह ज्ञान,
कौन धर पानि गये कान्ह अब आये हैं ॥
दान रु कृपान दयासांच सौच सीलता त्यौं,
लाज रु अजाद गुरु भक्ति गुन गाये हैं ॥
अंग सु उपांग जुक्त आज जंग अंगन मैं,

(१)अब दीनों से दीन होगया, तो क्या मैं जी को नहीं लचाऊं? सारा संसार अनुचर था, परन्तु अब मेरा हित चाहनेवाला कौन है ? प्रबल दुःखों का घेरा हुआ मैं घूमता हुआ किस के घर जाऊं ? । जलती हुई अग्नि में जल जाऊं? अथवा कुए में पड़ जाऊं ? अथवा मैं विष खाकर मरजाऊं? इन तीनों से मैं कैसे टल सकता हूं? अर्थात् नहीं टल सकता । [२] अरीन शब्द अर्थ करने में दो बार लेना चाहिये ।

एते गुन अंग ईस संगही सिधाये हैं ॥५८॥

संजय वचन ॥

काई छवि छाई कौच ओपी करवाल ऊर्मि,
पन्नग प्रभाकौं पूर्न सारसन पोखगो ॥
कच्छप विसाल ढाल लाल वड्वाग्नि कोप,
मुच्छ सु मरोर जोर भौंर जोर तोखगो॥
वेलाजुत व्यापैं वहैं वेला तजि यहैं वीर,
उभ्कलि अमल जस इंदुकौं अदोखगो ॥

---

(१) " अंग " देश विशेष, जिसका स्वामी कर्ण था ॥५८॥ (२) कवच ने काई (सेवाल) की छवि को छालिया, तरवार रूप लहर दिपी, "सारसन" नाम जो कमरबन्धा है सो सर्पकी प्रभाको पूर्ण पुष्ट कर गया, वड़ी ढाल कछवा रूप थी, लाल कोप वाड्वाग्नि था, अच्छी मरोड़वाली मूछों की जोर नाम जोड़ा उसके जोर नाम वल ने भँवर के वल को तुष्ट कर दिया, वह समुद्र तो " वेलाजुत " नाम मर्यादा युक्त व्याप्त हो रहा है और यह वीर कर्ण मर्य्यादा अथवा समय को छोड़ कर व्याप्त था, प्रयोजन यह है कि युद्ध में वृद्ध और श्रान्त आदि को न मारने रूप मर्य्यादा और रात और दिवस रूप समय के नियम को नहीं रखता था, समुद्र तो उभ्कल कर जस जैसे उज्वल चांद को और कर्ण उभ्कल कर जस रूप दूषण रहित चंद्रमा को

भीम इन्द्र भीत तव सुत मयनाक सर्न,
आज कर्न अर्नव अगत्थ पत्थ सोखगो ॥५९॥
साँतनुज सेनप भो वासर दिखायो बर,
राका छबि छाई साँतनुजके सिधाये तें ॥
द्रोन दल नाथ भायो द्विगुन दिखायो द्यौस,
छाई सिनिवाली छबि द्रोनहिं गिराये तें ॥
रविज चमूप भयो रविकों दिखायो रम्य,
भारी भई कारी कुहू रविज बिलाये तें ॥
सुजोधन चक्रवाक चक्रवाकी वाकी जय,
अब न मिलेंगे भूप कोटि कल्प आये तें॥६०॥

दोहा ॥

प्राप्त हुआ। भीम रूप जो इन्द्र उसके डर से तेरे पुत्र दुर्योधन रूप मैनाक (पर्वत विशेष) ने शरण या आसरा लिया था जिसका, ऐसा कर्ण रूप "अर्णव" जो समुद्र उसको पत्थ जो अर्जुन वही अगस्त्य (मुनि विशेष) सोख गया अर्थात् पीगया ॥ ५९ ॥ (१) भीष्म। (२) षोड़श कला युक्त चांदवाली पूर्णिमा। (३) चन्द्रमा की एक कलावाली अमावास्या। (४) कर्ण। (५) जिस अमावास्या में चन्द्रमा सर्वथा न हो। (६) कवियों की सम्प्रदाय में रात्रि को चकवे चकवी का मिलाप नहीं माना गया, दिन ही को माना है, यहां कवि ने दुर्योधन को चकवा और उसकी विजय को चकवी माना

हौं जानौं जानत तुँही, जानत सर्व जिहांन ॥
ईश्वर अकरन-करन हैं,करन मरन मन मान६१

धृतराष्ट्र वचन ॥
छप्पय ॥

मेरु मरुत मति नहिंन मेरु मति मरुत न मानिय

इन का मिलाप होने योग्य तीन अवसर रूप तीन दिन हुए, एक तो भीष्मजी सेनापति हुए थह, इनके मरने पर पूर्णिमा की रात्रि होगई, पूर्णिमा की रात्रि कहने का यह प्रयोजन है कि द्रोण और कर्ण दोनों विद्यमान थे. दूसरा अवसर द्रोणाचार्य सेनापति हुआ तब आया, उसके मरने पर सिनिवाली अमावास्या हुई, क्योंकि कर्ण विद्यमान था. तीसरा अवसर कर्ण सेनापति हुआ तब आया, फिर कर्ण के मरने पर कुहू अमावास्या हुई । ये तीनों ही अवसर चले गये अब करोड़ कल्पों में भी इन चकवा चकवी का संयोग नहीं होगा, अर्थात् दुर्योधन की जय होवेगी ही नहीं ॥ ६० ॥

(१)संजय ने कहा कि हे राजा! ईश्वर "अकरन-करन" अर्थात् अनहोनी करनेवाला है इसलिये तू कर्ण का मरना निस्सन्देह मान ले । इसके उत्तर में धृतराष्ट्र ने कहा कि जो ईश्वर अकरन-करन हैं तो उसने नीचे लिखे कार्य्य क्यों नहीं किये? ॥ ६१ ॥ (२) सुमेरु पर्वत के तो पवनकी बुद्धि नहीं हुई अर्थात् उसने चलना धारण नहीं किया, और पवन ने अचलता नहीं धारण की, सूर्य

भानु हिमाकर भौ न हिमाकर भानु न जानिय
वारिध मरु नहिं बनिय मरुनवारिधविधिठानिय
गगन नभुवसिरगिरियभुवनासिरगगनपिछानिय
इनविचनइक्कइतकीउतैंकरनसक्यौअकरनकरन
कहिकरनमरननरकरनतैंमानैंकिहिंबिधिमोरमन

दोहा ॥

नीति युधिष्ठिर की निरखि,अरु ममतनयअनीति
करन मरन अरि सुख करन, पूरन भई प्रतीति ६३

संजय वचन ॥

चन्द्रमा नहीं हुआ, उसने शीतलता नहीं धारण की. चन्द्र सूर्य न हुआ कि जिसने उष्णता नहीं धारण की. समुद्र मारवाड़ देश नहीं हुआ अर्थात् वर्त्तमान कालमें जल रहित होकर रेता धारण नहीं किया और मारवाड़ देश समुद्र नहीं हुआ, अर्थात् रेत को छोड़कर जल युक्त नहीं हुआ। ऊपर छत जैसा दीखनेवाला आकाश पृथिवी पर नहीं पड़ा और उसी आकाश पर पृथिवी नहीं पिछानी अर्थात् जानी नहीं जाती। वह अकरन-करन ईश्वर इन वस्तुओं में से एक भी वस्तु नहीं कर सका तो बतला? मनुष्य के अथवा अर्जुन के हाथों से कर्ण का मरना मेरा मन कैसे माने? अर्थात् नहीं मानता। परन्तु नीचे के दोहे में कहे कारणों से मेरा मन भी मानता है ॥६२॥६१॥

गंगासुत पै सरन हित,हिलौं सिखंडी हाथ ॥
धृष्टद्युम्न द्रोनहिं हनैं, निरखहु भावी नाथ!॥६४

धृतराष्ट्र वचन ॥

छप्पय ॥

मारत कुरु सु मयंद मयंद सु कुरु कित मारिय॥
गज्जहिं गारत सिंघ गजब गज सिंघहिं गारिय
केरिये पर गज केहर कहर गज पर हुव केरिय
पित्त जँभ्भरत केरि केरिकौं पित्त जँभ्भोरिय ॥
इमकरनपत्थहारकअवनिहा?करनहिंपत्थजुहनिय
सुरअसुरनागनरधूनिसिरभावीगतअद्भुतभानिय

मनोहर छंद ॥

दुस्सासन मृत्यु देखि सुत बिनु सक्थि भयौ,
जाके जोर दीर्घ लंगराईकौं दुराय दी ॥

---

(१) इसमें चमत्कार यह है कि तीर लेनेकेलिये शिखंडी के हाथों का हिलना भी संभव नहीं दीखता था, तस भीष्म पर शिखंडी ने तीर चला दिये और धृष्टद्युम्न ने ध्यान में बैठे हुए भी द्रोणाचार्य्य का सिर काटा यह भावी की प्रबलता है। संजय के कथन और नीचे लिखे कारणों से धृतराष्ट्र भी भावी को स्वीकार करता है॥६४॥ (२)सिंह को मारनेवाला हिंसक जन्तु विशेष।(३)केला (कदली) । [४] भयानक (५) तीनों दोषों में का दूसरा दोष, जिसके उष्णता आदि गुण हैं ॥ ६५॥

भीस्म[1] भगदत्त द्रोन गदा असि सक्ति भग्न,
जाके जोर गिरी गैंद वीरता गुराय ली ॥
जाके जोर और[2] रनकुल्या[3] लाँघ पार भयो,
जाके जोर घोर जय नौबत घुराय ली ॥
अंध न करैंगो अंध अंध ह्वैगो बिधि यातें,
आज सुत अंध कर्न छरिया छुराय ली॥६६

कवि वचन ॥

दोहा ॥

संजय कहि नृप पीर लखि,बीर! धरहु मन धीर
सल्य करहिं दलचीरकौं,चीरि चीरकी चीर६७

---

(१)यहां अनुक्रम से भीष्मादि का गदादि के साथ अन्वय समझना. (२) अन्ध । (३) युद्ध रूप नहर । (४) अपने पूर्व पापों के फल से मैं और गांधारी दोनों अन्धे हैं सो अपने पापों का फल भोग चुके. अब जो ब्रह्मा हम अन्धों को अन्धे करेगा तो उसका हम पर अन्याय होगा उस अन्याय के पलटे में ब्रह्मा को अन्धा होना पड़ेगा॥ अन्धे को प्रज्ञाचक्षु कहते हैं और मेरे पुत्र दुर्योधन के मरने से हमारी बुद्धि (प्रज्ञा) नष्ट हो जायगी तो हम अन्धों से अन्ध होंगे. ब्रह्मा अन्धा होगा तब उसको हाथ में रखने के लिये लकड़ी चाहियेगी इसीलिये मेरा पुत्र दुर्योधन कि जो बुद्धि का अंधा है उसके हाथ की कर्ण रूप लकड़ी छीन ली ॥६६॥ (५)सेना रूप वस्त्र को

धृतराष्ट्र वचन ॥

छप्पय।

हा हा सुरतरु हाँस कहा पूरहि तरु कीकर? ॥
सुधा समुद्र सु आस संपदि टारहि कित सीकर
चिन्तामनिकी चाह संगमरमर कित साजिय
पारसकी परवाह हरी गैरिक कित पाजिय ॥
जोगींद्र देत वरदान जिमजाचकवचकिमजानियैं
इमकरनसोकदूरीकरनमद्रधरनिपतिमानियैं६८

कवि वचन ॥

दोहा ॥

द्रोन मरनडर पौन ध्वज, कंपित मति दृग भूप॥
करन मरनतैं करन विनु,क्यौं न परैं दुख कूप६९

छप्पय ॥

घन घवरावन घूमि भूप संजय प्रति भाखिय॥
कटिकैं रनमैं कर्न रीत सुभटन घन राखिय॥

'चीरि' नाम फाड़कर 'चीर की चीर' नाम बारीक लंबे टुकड़े के उससे भी बारीक लंबे टुकड़े कर देगा ॥ ६७ ॥
(१)बबूल।(२)शीघ्र।(३)अत्यन्त छोटी बून्दें[फुहार]॥६८॥
(४)द्रोणके मरणरूप पवनसे ध्वजारूप प्रज्ञाचक्षु(अन्धा) कंपायमान था वह कर्ण के मरने से कानों बिना अर्थात् बहरा होगया सो अब दुःखरूप कुएमें क्यों नहीं पड़े।६९।

कोको तिहिं भट कटिग परनभटकोकोकट्टिप
जेजे जियत जवान जिनहिँ जाचत धुज्जट्टिप॥
सुन संजय तिनसबहीनकीसंज्ञामोहिसुनापहैं॥
पैहैं न फेर वैभव प्रबल पुनरजन्म जो पाप हैं॥७०

अर्द्धहरिगीतिका छंद॥

धृतराष्ट्र कहि मति ध्यान कैं,
जपि जीह संजय जान कैं॥
जे मरे मोर रु ओरके,
जे अरत इत उत जोरके॥७१॥
सब के सुनाम सुनाइयैं,
गिनि हरष सोक गुनाइयैं॥
महिपाल की मति मान ह्वां,
जपि बत्त संजय ज्वान ह्वां॥७२॥
दस दिवस कर रन घोर जो,
सर सेज भीस्म सजोर जो॥
दिन पंच बहु भट मारिकैं,
कटि द्रोन सेन पसारिकैं॥७३॥

---

(१)महादेव। पुराण प्रसिद्ध बात है कि महादेवजी वीरों से सिर मांगा करते हैं। [२]नाम। [३]धृतराष्ट्र पश्चात्ताप करता है कि इस जन्म में तो ऐसा प्रबल वैभव कहां था परन्तु दूसरे जन्म में भी नहीं मिलेगा।७०।७१।७२।७३।

आनर्त देसिनसौं अरयौ,
नृप बिबिंसति तितही मरयो ॥
बिंद रु तथा अनुबिंद द्वे,
गन अरिन गारि रु स्वर्ग गे ॥७४॥
सिंधुप जयद्रथ कौं हन्यौ,
भट पत्थनैं तिनुका गन्यौ ॥
तव पौत्र लछमन नाम हौ,
अभिमन्यु हनिय ललाम हौ ॥७५॥
सुत दुसासन मजबूत हौ,
तिंहिं हन्यौ द्रौपदि पूत हौ ॥
वर नाथ भिल्लन वर्ग कौ,
मरि एकलव्यहु स्वर्ग गौ ॥७६॥
भगदत्त भट बल भीर कौ,
भख भयो पारथ तीर कौ ॥
सुन नृप श्रुतायुहि सूर कौ,
नर हन्यौ लखि पन पूर कौ ॥७७॥
सुन सुदच्छन नरनाह हौ,
उहिं हनिय पत्थ उछाह भौ ॥
कौसलाधिप अति क्रूर हौ,

अभिमन्यु निरख्यौ सूर ह्वौ ॥७८॥
जित सल्य के सुत जाय कौं,
अभिमन्यु मारयौ दाय कौं ॥
वृषसेन सुत वर करन कौ,
नर हन्यौ तिँहिं सम अरन कौ? ॥७९॥
नृप! हौ श्रुतायु नरेस व्हाँ,
घेरि पत्थ पठयौ स्वर्ग घराँ ॥
भट वृहतक्षत्रहु भग्न भौ,
रु[1] भगीरथहु सर लग्न भौ ॥८०॥
हौ रुक्मरथ[2] सुत सल्य कौ,
सहदेव काटयौ कैल्प[3] कौ ॥
भगदत्त सुत कृतप्रज्ञ हौ,
उहिँ हत्यौ नकुल न अज्ञ हौ ॥८१॥
बाल्हिक पितामह रावरौ,
भिरि भीम मार्यौ बावरौ ॥
जुटि जयत्सेनहु चाह लै,
अभिमन्यु मार्यौ वाह लै ॥८२॥
रु कालिंगदेस नरेस है,

॥ ७८ ॥ ७९ ॥ (१) पञ्चर ॥ ८० ॥ (२) रुक्मरथ जो सहदेव के मामा का बेटा भाई था। (३ कलह ॥८१॥८२॥

जुरि जुद्ध पहुँचे स्वर्ग द्वै ॥
तब मंत्रि बृषवर्मा तितैं,
हनि भीम भनि जावत कितैं ॥८३॥
पौरव अयुत गज जोर कों,
भिरि पत्थ मार्‌यौ भोर कों ॥
सुन सूरसेन महीप ह्वां,
नर हन्यौ निज दल दीप ह्वां ॥८४॥
हि हजार वीर वसंति जे,
अरु सक रु सिविय कलिंग ते ॥
मालव रु संसप्तक जिते,
तिन हने पारथ गिन तिते ॥८५॥
कृपभ्रातलहु तब मित्त हौ,
उहिँ हन्यौ पत्थ अमित्तहौ ॥
नृप सल्य भूरन सीम हौ,
भट भीम मार्‌यौ भीम हौ ॥८६॥
अरु क्रोधवंत छहंत द्वै,
भट भीम भेजे स्वर्ग मे ॥
भट क्षेमधूर्ति मर्‌यौ भन्यौ,

॥ ८३ ॥ ८४ ॥ (१) बसन्त देश के ॥८५॥८६॥

जलसंधकौं सात्यकि हन्यौ ॥८७॥
भूरिश्रवा बलपूर हो,
तिंहिं हन्यौ सात्यकि सूर हो ॥
पुनि सोमदत्तिहि पायगौ,
खिजि ताहि सात्यकि खायगौ ॥८८॥
राछस अलंबुक हू रुप्यौ,
करि कटि घटोत्कचसौं कुप्यौ ॥
कति भ्रात हे भट करनके,
ति अहार भे नर सरन के ॥८९॥
द्राविड़ रु मद्र कलिंत्थ जे,
सावित्र क्षुद्रक व्रात के ॥
प्राच्यहु प्रतीच्यहु पूर हे,
दत्तन उदीच्यहु सूर हे ॥९०॥
विकरन रु दुर्मुख वीर हां,
सल दुसासन धृत धीर व्हां ॥
दुर्विजय दुस्सह देखियैं,
दुर्मुख रु दुर्विष पेखियैं ॥९१॥
दुर्जयादिक सुत तोर जे,

॥ ८७ ॥ ८८ ॥ (१) युद्ध ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥

भट भीम मारे भोर जे ॥
इन मरन दुख अति आपकौं,
प्रभु! लखहु पत्थ प्रतापकौं ॥९२॥
भट कर्न मारन भूख ही,
किल फैलगी वह कूक ही ॥
जब मरैं सूम जिहाँनके,
हिय जरैं तीय सुजाँनके ॥९३॥
कहुँ जरैं हीय सुमात के,
कहुँ जरैं निज गृहजात के ॥
जब मरैं दानिय हेर ह्वां,
गृह जरैं धोबिनकेर ह्वां ॥९४॥

धृतराष्ट्र वचन ॥

दोहा ॥

सुन संजय! मेरे मरे, जिनकौं लिन्हे जान ॥
अब जे धर्म्मजके मरे, तिन्हैं[२] चहत मम कान९५

संजय वचन ॥

अर्द्ध हरिगीतिका छंद ॥

नृप सत्यजित वड नाम भौ,

॥९२॥९३॥(१)जैसे धोबी का घर जलने से कइयों के कपड़े जलते हैं उनको दुःख होता है वैसे दोनों के मरने पर कवि आदि अनेक गुणियों को दुःख होता है ॥९४॥
[२]मेरे कान ॥९५॥

तिंहिं मारि द्रोन ललाम भो ॥
पंचाल गन गुन पूर हे,
सुन हनिय द्रोन सु सूर हे ॥ ९६ ॥
नृप मच्छ के भट केक ही,
उन हने हो द्विज एक ही ॥
नृप द्रुपद भूप विराट हैं,
तिन द्रोन मारे पौन व्हैं ॥ ९७ ॥
तिन के जिते सुत हे तहां,
संखादि द्विज मारे तहां ॥
उत्तर हि सल्य हन्यौ तितैं,
जित स्वेत भीष्महिसौं वितैं ॥ ९८ ॥
अभिमन्यु कौं दुस्सासनी,
भिर मार लीन्ह विभा भनी ॥
अंबष्ठ नृप कौ पूत हौ,
लच्छमन हनिय सुपूत भौ ॥ ९९ ॥
नृप हौ विहंत सुबीर ही,
तिंहिं हनि दुसासन तीर ही ॥
मनिमान नृप अति नूर कौं,
द्विज हन्यौ ता सम सूर कौ? ॥ १०० ॥

॥ ९५ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

नृप दंडधर हु प्रचंड हौ,
वह द्रोन रन तैं खंड भौ ॥
नृप अंसुमान प्रवीन हौ,
तिँहिँ हन्यौ द्विज नहिँ दीन हौ ॥१०१॥
नृप चित्रसेन विचित्र हौ,
दधिसेन मार पवित्र भौ ॥
नृप नील रनजयकील हौ,
तिँहिँ मार द्रौनिय वीर भौ ॥ १०२ ॥
नृप व्याघ्रदत्त सुनीर व्हां,
चित्रायुध हु जस चीर व्हां ॥
चित चित्र यौं धिय चानिएं,
विकरन हने अहु दानिएं ॥ १०३ ॥
केकय नृपहु अति क्रूर हौ,
हनि तोर केकय सूर हौ ॥
जगधेजय हु नृप जानकौ,
वह पर्वतीश[2] पिछानकौ ॥१०४॥
जाहर करयौ भुज जोर व्हां,

॥१०१॥१०२॥१०३॥ (१ केकय दो थे एक पांडवों की ओर और दूसरा कौरवों की ओर. कौरवों की ओरवाले ने दूसरे को मारा ॥ २) पहाड़ शब्द की जगह पर्वती शब्द रक्खा है, उसका स्वामी ॥१०४॥

दुर्मुख पछार्‌यौ दोर व्हा ॥
इक नाम के द्वे भ्रात हे,
नृप रोचमान विख्यात हे ॥१०५॥
तिँहिँ जुग्म कौं तित तोर कैं,
जित द्रोन जय लिय जोर कैं ॥
पुरुजित नराधिप इष्ट हौ,
तिँहिँ कुंतिभोज कनिष्ट हौ ॥१०६॥
कलि बीच तिन सम कौन व्हां?,
दुहुँ बीर मारे द्रोन व्हां ॥
अभिभू बनारस पति लरे;
बसुदान सुत मारे परे ॥१०७॥
नृप मित्रवर्मा नीति कौ,
पटु द्रोन हनि बिनु प्रीति कौ ॥
जिँहिँ क्षत्रदेव सुनाम हौ,
सु सिखंडि पुत्र ललाम हौ ॥१०८॥
तव पौत्र लछमन ताहिकौं,
हनि पूर्न किय चित चाहि कौं ॥
रु सुचित्र नृप मजबूत हौ,

॥१०५॥१०६॥ (१) अभिभू और बनारस के राजा इन दोनों को बसुदान के बेटे ने मारा ॥१०७॥१०८॥

तिंहिं चित्रवर्मा पूत हो ॥१०९॥
हुँहुँ सीस तोरन डार कैं,
लुभि द्रोन हनि ललकार कैं ॥
नृप वर्द्धक्षेम निहारियैं,
अमितौज द्युति धर धारियैं॥११०॥
वर पुत्र सेना वृन्द कौ,
अरि सास्लवान अरिंद को ॥
तिंहिं हन्यौ वाल्हिक नैं तितैं,
मनहैं पखान कहूं चितैं ॥१११॥
सिसुपाल कौ सुत बाम हौ,
तिंहिं धृष्टकेतु सुनाम हौ ॥
रु सुकेतु बीरन वीर भौ,
लरि मरिग उत न अधीर भौ ॥११२॥
नरनाह सेनाबिंदु हू,
अरु सास्त्रवान जसिंदु हू ॥
अति प्रबल हे निज ओज तैं,
मरिगे ति द्विज सर मोज तैं ॥११३॥
नृप सत्यधृत नरनाह हौ,

॥१०९॥११०॥१११॥११२॥११३॥

मद्रिराज नृप सउछाह हौं ॥
नृा सूर्यदत्त नरेस ह्वाँ,
हनि द्रोन भय कृत भेस ह्वाँ ॥११४॥
सुन स्रोनमान सुहावनौं,
बसुदान स्वजस बधावनौं ॥
उत जुग्म जुरवै आपगौ,
खिजि द्रोन दोहुन खापगौ ॥११५॥
अरि मरे जे उत आयकैं,
गुन कहैं कतिक गिनायकैं ॥
कति आपने कति आनके,
जे रहे ते मरिजानके ॥११६॥

धृतराष्ट्र वचन ॥

दोहा ॥

जान परे जेजे अरे, जेजे मरे जवाँन ॥
भरत लरत इतके सुभट, जेजे कहहु जवाँन ११७

संजय वचन ॥

अर्द्धहरिगीतिका छंद ॥

॥११४॥ (१)युग्म अर्थात् जोड़ा ॥११५॥११६॥ (२) मरे हुए वीरों का भूतकाल का वृत्तान्त तो होचुका अब वर्त्तमान काल का वृत्तान्त है ॥११७॥

अब नृपति इत चित आनियैं,
छवि जियत तिनहिं पिछानियैं ॥
वर वीर द्रोनिय वीर ¹ह्वां,
तकि तीर मारत तीर ह्वां ॥११८॥
रु हृदीकसुत आनर्तहू,
²अहुटयौ न अरिगन अर्तहू ॥
जित लरत कृतवर्मा जुर्‌यौ,
अरि हननतैं जस अंकुर्‌यौ ॥११९॥
मद्रेस सल्यहि मोदमैं,
सैंधव नरेस विनोदमैं ॥
कांबोज किलकत कालसौ,
सुन भी³ष्म अरि उर सालसौ ॥१२०॥
भट पार्वती जय भूखमैं,
भट वनायुज सु पियूखमैं ॥
उत सकुनि सत्रुनसौं अरैं,
पुनि कृपाचार्य लरैं परैं ॥१२१॥

---

(१) समीप में ॥ ११८ ॥ (२) पीछा न फिरा ॥ ११९॥
(३) गांगेय स्वच्छन्द मृत्यु होने से मोजूद थे ॥ १२० ॥
(४)पार्वती नाम के(५)विजय की क्षुधा वाला (६)अमृत पान से अमर होना ॥ १२१ ॥

केकय नरेस तनूज ऊहां,
चित्रायुधहु जस बूझ ऊहां ॥
जित भूप श्रुतवर्मा जुरैं,
सल्ल दुसल्ल दुँहूँ मन क्यौं मुरैं ॥१२२॥
रु श्रुतायु नृप जस छंदमैं,
नृप चित्रसेन अनंदमैं ॥
चित्रांगदहु चित चैनमैं,
सु धृतायुधहि भट सेनमैं ॥१२३॥
तिन रिपुंतृननमैं तोर ऊहां,
सुत अगनिगोला जोर हां ॥
कहि वचन संजय ऊहै ऊहां,
धृतराष्ट्र धूनिय मूंडुं ऊहां ॥१२४॥

सोरठा ॥

भारतदर्पन ग्रंथ, कासीनृप कारित विपुल ॥
पकर वाहिकौ पंथ, सुभट नाम इत संग्रहे १२५
चित संदिग्ध पिछानि, नाम कतिक भाखे नहीं

---

(१) कीर्ति की कदर करनेवाला अथवा समझनेवाला ॥ १२२ ॥ (२) इच्छा ॥ १२३ ॥ (३) ये सब शत्रु तृण हैं (४) उनमें तेरा पुत्र अग्नि का गोला है (५) मस्तक ॥१२४॥ ॥ १२५ ॥

मोरग्रंथलघुमानि,कतिककथातावधतजिय१२६

घृतराष्ट्र वचन ॥

दोहा ॥

सुन संजय सब सुन चुके, बीते रनकी बात ॥
करनहिंसेनापतिकियो,सुनश्रोमनश्रकुलात१२७
कथा पूर्व तैंनैं कही, सूमन दान समान ॥
करनदानसमकरनकी,मन चाहतमतिमान१२८
आहवबिचकिंहिंधाअरयौ, लग्यौकौनविधलाग
पारथपरकिंहिंधापर्यौ,मर्यौकौनछलमाग१२९

सोरठा ॥

करन पैरन उर पीर, दीनन दुख दूरिकरन ॥
करन देहु वर वीर,करन जुद्धजुट्टिय करन१३०

छन्द मौक्तिकदाम ॥

झर्यौ रन द्रोन अरातिन भूमि,
मुरे तब द्वै दल डेरन घूमि ॥

॥ १२६ ॥ १२७ ॥ (१) सूमों के दान के समान अर्थात् संक्षिप्त (२) कर्ण के दान के समान अर्थात् विस्तृत ॥ १२८ ॥ (३) कौन से कपट के रस्ते से ॥१२९॥ (४) शत्रुओं के हृदय में पीड़ा करनेवाला (५) हे धृतराष्ट्र तू कान दे अर्थात् सुन (६) कर्ण युद्ध करने लगा ॥१३०॥

भयौ इत सोक उतैं सुख भाव,
दुहूँ दल घूमनकौ इढ दाव ॥१३१॥
सुयोधन और सुभट्टन ठट्ट,
सरे थित द्रोनिय सोक सकट्ट ॥
पृथू कृप द्रोनियकी गिरि पीर,
वहायदई नृप नैनन नीर ॥१३२॥
भयौ नृप व्याकुल व्हां इहि भाय,
जरैं लखि जीय कह्यौ नहिं जाय ॥
विचार कियैं इमही वह वेर,
करैं नृप खातर विप्रन केर ॥१३३॥
बन्यौ निहिं ठां प्रतिलोमँ विधान,

---

(१)इधर कौरवों की सेना में तो दुःख से घूमना अर्थात् सिर पीटना हुआ (२) उधर पांडवों की सेना में सुख की चेष्टा सिर हिलाने रूप अनुभाव हुआ ॥१३१॥(३) चले(४)शकट अर्थात् गाड़ा (५)अश्वत्थामा और कृपाचार्य की द्रोण के मरने रूप पर्वत जैसी भारी पीड़ा को (६)राजा दुर्योधन ने आंसुओं से बहा दिया अर्थात् राजा के अश्रु आनेसे उनको अति सान्त्वना होगई ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ (७) उलटा करना. लोकरीति यह है कि अपने मुलाहिजेवाले की मृत्यु होने पर उसके घर पर जाकर दूसरे घरवालों को विश्वास देते हैं परन्तु यहां दुर्योधन

दयो तिंहिं भूपहिं विप्रन ज्ञान ॥
दई जु पितृव्यै दई मतिगेर,
बन्यो अति आश्रव आरन वेर ॥१३४॥
बड़े जन भाखत हैं यह बानि,
समैं नहिं चूकत धीर सुज्ञानि ॥
उठे सब आपुन डेरन आय,
जबैं किय पितॄपगू कृत जाप ॥१३५॥
दुसासन सौबल कर्न ससोक,
अटे दुरजोधन धां दुख ओक ॥
गई निस द्रान गुनावलि गात,
भयो नहिं मंत्र भयो परभात ॥१३६॥
परे तिँहुँ पूर्न महार्नव पीर,

ऐसा घबराया कि अश्वत्थामा और कृपाचार्य ने उलटा दुर्योधनको विश्वास दिया यही प्रतिलोम विधान हुआ (१) चचा विदुर ने जो उद्योगपर्व में बुद्धि दी थी वह इसने गेर दई अर्थात अंगीकार न करी (२) वही दुर्योधन युद्ध के समय अत्यन्त आश्रव अर्थात् कहना माननेवाला होगया ॥१३४॥ (३) पिता भीष्मकी माता गंगा पर जाकर संध्या का कृत्य किया ॥१३५॥ (४) शकुनि (५) दुःख का घर (६) सलाह समाप्त न हुई ॥१३६॥ (७) तीनों अश्वत्थामा, कृपाचार्य और दुर्योधन (८) महासमुद्र

बनैं जु जहाज सु कर्नहि वीर ॥
यहौं बिच ताहि बड़ा अवचाट,
घनो रन भार कितैं जयघाट ॥१३७॥
जथा जहरी अहि फूंक प्रकास,
सु प्रश्न रु उत्तर सास उसास ॥
सह्यौ न पर्यौ घबराहट सैंन,
लगी मिरचैं बनि नींद सु नैंन ॥१३८॥
परैं निसमैं सिर नाँ अरि आय,
छटा द्विज द्वै दल दष्षिय छाय ॥
पर्यौ कटि द्रोन खरो मनु पास,
बिलावत फूल जथा थिन बास ॥१३९॥
बचावहु द्रोन हनैं पटु तीर,
बकैं इम पाण्डव बाहनि बीर ॥
रही जमि ग्रीसमलौं बड़ रात,

(१) बड़ी नौका (२) अत्यन्त चिन्ता (३) विजय रूप तट ॥ १३७ ॥ (४) सर्प का फुंकार (५) नेत्रों में नींद मिरचें बन के लगी जिससे नेत्र मिलते नहीं। यहां परिणाम अलंकार है ॥ १३८ ॥ (६) द्रोण की छवि ॥ १३९ ॥ (७) द्रोण पटु (तीक्ष्ण) तीरों से मारता है (८) सैना (९) रात्रि ग्रीष्म के समान जमगई

मिरे हरि भूल भयो परभात ॥१४०॥

दुर्योधन वचन ॥

गहो वर मंत्र रु मौन गहो न,
करें अब सेनप सो भट कौन ॥

कविवचन ॥

बिचारिय द्रोनिय है मम बैर,
करो मुंहि कौन कहै मुख टेर ॥१४१॥
चह्यो चित भीतर हान चमूप,
भनो मन ऊपरसों मन भूप ॥
करें कुरुसेनप त्यों भट कर्न,
बनावहु भूप सुने मम बर्न ॥१४२॥
हुलो चित चाह मनं हम सैन,
मिलो मनु ऊधनहारहि सैन ॥
सुभ्यो सुमुहूर्त करावन स्नान,

---

(१) फिर जैसे श्रीकृष्ण ने भ्रम से युद्ध के नाते चक्र ज्ञान सें लिया वैसे रात्रि की भूल से प्रभात हुआ ॥ १४० ॥ (२) सलाह को ग्रहण करो (३) सेनापति (४) अश्वत्थामा ने विचारा कि मेरे पिता के पीछे बारी मेरी है (५) परन्तु "मुझको सेनापति करदो" यह मैं नहीं कहता ॥ १४१ ॥ (६) राजा ने अश्वत्थामा के शुभ वचन सुनकर कहा कि कर्ण को सेनापति बना दो ॥ १४२ ॥ (७) शय्या

सुकंचन[1] कुंभ झुक्यौ सिर आन ॥१४३॥
उठी उपमा हिय यौं हरखात,
जथा सुतकौं सिर सूँघत तात[2] ॥
इतैं घट है उपमेय अनूप,
रह्यौ उपमान कवी रविरूप[3] ॥१४४॥
प्रभू पहराय पटांबर प्रीति,
रचे बहु रत्नन जेवर रीति ॥
हिये पर पुष्पनके बर हार,
विठाय उदुंबर[4] पट्ट[5] उदार ॥१४५॥
चढी मति देन चमूपति चाह,
दिये बहु दान सराहि सराहि ॥
बढ्यौ चित चैन सबैं थित सैन,
निहारत ज्यौं ससि ओसभ नैन[6] ॥१४६॥
चढ्यौ निज चाक्रँ[7] उछाह चमूप,
रुप्यौ दल देखि दलाधिप रूप ॥

(१) सुवर्ण का कलश ॥१४३॥ (२) पिता सूर्य मानों कर्ण का सिर सूंघ रहा है (३) सूर्य रूप ॥ १४४ ॥ (४) गूलर (५) पाटा ॥१४५॥ (६) जैसे औषधि नेत्रों से (शास्त्रों में औषधियों के नेत्र कहे हैं इससे नेत्र कहा है) चन्द्र को देखकर सुखी होती है वैसे एककर्णको देखकर सब सेना सुखी हुई ॥ १४६ ॥ (७) रथ

सजे हय स्वेत ध्वजा पुनि स्वेत,
मनोहर हाटक हेल समेत ॥१४७॥
भये सुख सञ्जुन स्वेत रु पीत,
अलंकृति तञ्जुनकी रुचि रीत ॥
धरयौ धनु हत्थ रु सत्थ तुनीर,
भरयौ रथ सञ्जनकी वर भीर ॥१४८॥
चल्यौ दल व्योम लयौ रज छाय,
अपाप सु गंग अपाप लखाय ॥
विभा घन संखन व्यूढ विराव,
चमक्किय सस्त्र सु बीज प्रभाव ॥१४९॥
भई रस वीर त्रिभा झर भाय,
कटे कुपि सोक अने दरसाय ॥
जहाँ कुरुराज कुदिष्ट जबान,

(१) सुवर्ण की कलई ॥ १४७ ॥ (२) भाथा (तरकस) ॥ १४८ ॥ (३) पाप रहित गंगा है वह अपाप (नहीं है आप नाम जल जिसमें ऐसी) होगई (४) सेना की शोभा मेघ की सी है (५) शंखों का बड़ा शब्द मेघ की गर्जना के तुल्य है ॥ १४९ ॥ ६) शोक झड़ी सें तृण समान बह गया. और वे क्रोध में आकर कट गये ७) दुर्योधन की वाणी है सोही दुष्प्रारब्ध है उससे

अछ्यौ अति उग्र अवग्रह आन ॥१५०॥
भयौ दुरभिच्छ घनो रन घोर,
जन्यौ कृषि जुग्म पिता गुरु जोर॥
चमूप भुजा नभ भाद्रव चाल,
बनें जय रूप सुभिच्छ विसाल ॥१५१॥
ग्रहग्रह बज्जिय लंबक तूर,
सुने रव सैंधव जहाँ गन सूर ॥
भये भट उन्मुख सत्रुन ओर,
मनौं लखि मेघन मोदित मोर ॥१५२॥
सत थित सामित साख प्रसाख,
अगे घन नच्चनकी अभिलाख ॥
थरत्थर कंपिय भूधर भूमि,
ति चिक्किय दिग्गज सुंडिन चूमि॥१५३॥
सराहिय सेस सु कच्छप पिट्ठि,

---

(१) अवग्रह अर्थात् वर्षा का रुकना हुआ ॥१५०॥ (२) उससे सांवणू ऊनाळू दोनों कृषि (खेती) नष्ट होगई जो भीष्म और द्रोण रूप हैं ॥१५१॥ (३) वाद्य विशेष (४) रागिनी विशेष ॥१५२॥ (५) बड़ी खांप (६) उसमें से फटी हुई छोटी खांप (७) शूर पक्ष में मजबूत. मयूर पक्ष में मेघ (८) पर्वत और वराह (९) चीत्कार किया॥१५३॥ (१०) शेष ने

दई तित तुंडि फनावलि दिट्ठि ॥
अटे उत वीर सुवक्र अवक्र,
मनोहर व्यूह रच्यौ छवि मंक्र ॥१५४॥
उतैं हुव अग्रिम कर्न अचूक,
अरे दुहुँघां सकुनी रु उलूक ॥
बन्यौ सिर थांनक द्रोनि सुवेस,
दिपैं नृप भ्रात तितैं गल देस ॥१५५॥
वढ्यौ कृतवर्म दिसा वरवाम,
विभा लख ठेई रिपु वाम अवाम॥
दिसा जम दीह दिपी कृप दाय,
जनौं जम एवज सज्जिय जाय ॥१५६॥
चह्यौ चित व्यास सजीव सुमक्र,
वन्यौ विचजीव सुयोधन वक्र ॥

कच्छप की पीठ की प्रशंसा की जिसका तात्पर्य यह है कि तुम्हारी पीठ बड़ी कठोर है और वराह ने शेष के फणों की ओर देखा जिसका तात्पर्य यह है कि मेरे तो एक ही तुंड है और तेरे हजार फण हैं (१) मकर व्यूह ॥ १५४ ॥ (२) स्थान ॥१५५॥ (३)वाम अर्थात् टेढे जो शत्रु हैं वे अवाम अर्थात् सीधे होजाते हैं (४) कृपाचार्य के विभाग की बड़ी दक्षिण दिशा शोभा देने लगी ॥ १५६ ॥ (५) यहां व्यास भगवान् की इच्छा

सुषेन रु सल्य पिले दल पिठि,
दलाधिप पिठि मनों दुवे दिठि ॥१५७॥
धरी नहिं देखि युधिष्टिर धीर,
न रोम उछाह सरोम सरीर ॥

युधिष्ठिर वचन॥

अरे दुव भीसम द्रोन अभीत,
अन्यौ इक कर्न अगाति अजीत ॥१५८॥
सुनौ सब भ्रात सलाह सुसार,
बनावहु व्यूह विधान बिचार ॥
चल्यौ दल बाम वृकोदर वक्र,
चल्यौ दिस दच्छिन सोम्प सचक्र॥१५९॥
अट्यौ भट पत्थ भुजाबल अग्र,
सज्यौ सु युधिष्ठिर मध्य समग्र ॥
पटू भट माद्रिज द्वै दिपि पिठि,

जीवित मकर से है सो जीव दुर्योधन है (१) मानों दोनों वीर सेनापति के पीठ के नेत्र हैं ॥ १५७ ॥ (२) उत्साह तो रोम भर भी नहीं और शरीर रोमाञ्च सहित होगया ॥ १५८ ॥ (३) धृष्टद्युम्न (४) सेना सहित ॥ १५९ ॥ (५) यद्यपि महाभारत में अर्जुन का व्यूह के अगाड़ी रहना नहीं लिखा है तथापि योग्यता से आगे होना अर्जुन का संभव है ॥ १६० ॥

दई छुत दुर्जन दावन दिट्ठि ॥१६०॥
जथाविधि जंपिय व्यास जबान,
इहां परमेस कवी मति आन ॥
रच्यौ नर अर्द्धससी दल रूप,
भई रनभूमि त्रिलोचन भूप ॥१६१॥
जुरे सुत द्रोपद नैनन जोर,
मिख्यौ द्रग पारथ भो भत मोर ॥
जहां रिस जागि रही जल ज्वाल,
अरै परि कर्न सु काम करालं ॥१६२॥
जग्यौ भट भीम हलाहल जग्र,
अनोपम गंग युधिष्ठर अग्र ॥
कहै कवि पद्म सु सात्यकि रूप,
सज्यौ वर भस्म करा छवि सूर ॥१६३॥

---

(१) अर्जुन ने अर्द्धचन्द्र व्यूह बनाया (२) त्रिलोचन के राजा धृतराष्ट्र युद्धभूमि महादेव रूप लागे ॥१६१॥ (३) महादेव का रूपक दिखाते हैं. महादेव के तीन नेत्र हैं जैसे यहां द्रुपद के दोनों पुत्र हैं सो तो सूर्य और चन्द्र नेत्र हैं (४) और अर्जुन तीसरा आग्नेय रूप नेत्र है (५) अर्जुन का क्रोध नेत्र की ज्वाला है (६) कर्ण है सो कामदेव है ॥ १६२ ॥ (७) और भीम विष अर्थात् जहर है (८) और सात्यकि याद्व भस्म कड़ी छवि से भरा हुआ है अर्थात् सात्यकि भस्म कड़ा रूप है (९) वीर

बन्यो दल कोरुन मक्र सु व्यूह,
उलट्टत ईक्खन हारन ऊह ॥
गन्यो दल पंडुनकों गजमत्त,
बचावनहार हरी हितरत्त ॥१६४॥
सुयोधन आदिक दंतन डोल,
चमूपति पुच्छ चहं सु चँदोल ॥
इला बनि अर्नवके अनुकार,
सुधा सम वीर विकर्न बिचार ॥१६५॥
हय द्विप अच्छरे लक्खन हेर,

॥ १६३ ॥ (१) यहां से मकर व्यूह का वर्णन है. कौरव सेना ग्राह रूप है (२) देखनेवालों को पीछो पड़ रहा है (३) पांडवों की सेना उन्मत्तगज रूप है. यहां गज और ग्राह का रूपक अलंकार है ४] दोनों पक्ष में बचानेवाले श्रीकृष्ण ही हैं [५] त में तत्पर ॥ १६४ ॥ [६] दुर्योधन आदि सो भाई वे शत दन्त रूप हैं (७) कर्ण पुच्छ रूप है (८) फौज के पिछाड़ी का भाग. कर्ण के चढने के समय कर्ण को सेनाअग्रगामी कहा है. यहां चन्दोल से कहने का तात्पर्य यह है कि मकर पुच्छ से मारता है (९) पृथिवी (१०) समुद्र के सदृश (११)अमृत के समान विकर्ण है (१२) भाई और बहादुर ॥ १६५ ॥ (१३) अश्व उच्चैःश्रवा (१४) ऐरावत हस्ती (१५) अप्सरा इस संग्राम मि

फबैं धनु[1] संख[2] तथा विधि[3] फेर ॥
पर्‌यौ मनिव्रात[4] बिथार[5] अपार,
कर्‌यौ कवि कौस्तुभके अनुकार॥१६६॥
बने द्विज[6] द्वै सुरगो[7] सुरवृच्छ[8],
अरी[9] मृति इच्छन पूरन अंच्छ[10] ॥
धनंतर कृष्ण रमा[11]जय धार,
बन्यौ बर[12] वारुनि[13] कर्न बिहार ॥१६७॥
दिपे सब[14] रत्न दुहूँ दल दीह[15],
जपे[16] कवि पद्म जथामति[17] जीहँ[18] ॥
दलाधिप[19] सत्रुनकौ दल देखि,
प्रकोपित अंचिय चापहिँ पेखि ॥१६८॥

रूप समुद्र में अनेक हैं और उस समुद्र में एक २ थे. (१) शार्ङ्ग धनुष (२) पांचजन्य (३) वैसे ही जान लेवैं (४) मणियों के समूह का (५) विस्तार. वहां कौस्तुभमणि एक थी यहां मणि बहुत हैं ॥१६६॥ (६) दोनों ब्राह्मण कृपाचार्य और अश्वत्थामा (७) कामधेनु (८) कल्पवृक्ष (९) शत्रुओं को मरने की इच्छा को पूर्ण करनेवाले [१०] श्रेष्ठ [११] लक्ष्मी रूप विजय (१२) श्रेष्ठ (१३) कर्ण का श्रेष्ठ फिरना है वह वारुणी अर्थात् मदिरा है ॥१६७॥ (१४) चौदह रत्न(१५)दीर्घ (बड़े) (१६) कहे (१७) बुद्धि के अनुसार (१८)जिव्हा से (१९) सेनापति ॥ १६८ ॥

बढ्यौ वह शब्द[1] जु हौं गुन[2] गैन,
समाय स क्यों नहिं गैन अचैन[3] ॥
जुटे जित भट्ट असंकुल जुद्ध,
किरैं[4] तिन रोमन रोमन क्रुद्ध[5] ॥१६९॥
निहार[6] सुरत्रिय[7] नेह[8] नवीन,
मरक्कति[9] व्रात निछावर कीन ॥
भयौ फिर संकुल जुद्ध कुभाय[10],
जहाँ थिन अच्छर पास न जाय ॥१७०॥
अथअसंकुलजुद्धकोअरुसंकुलजुद्धकोअनुक्रमसौंलच्छन॥
छंद मुक्तादाम ॥
औरैं मरजाद असंकुल[11] उद्ध,
जितैं मरजाद न संकुल[12] जुद्ध ॥
भयौ रन घोर भटावलि[13] भाय,

---

(१) सिंहनाद रूप शब्द (२) शब्द आकाश का गुण है परन्तु आकाश उसको नहीं धारण कर सकता (३) सुख रहित (४) बरस रहा है (५) बाल रमें ॥१६९॥ (६) देखकर (७) अप्सरा (८) स्नेह से (९) मरकत मणि के समूह. यहां पूर्वोक्त योद्धाओं के रोमाञ्चों में मरकतमणि की गम्योत्प्रेक्षा है (१०) कुत्सित चेष्टावाला युद्ध ॥१७०॥ (११) जिसमें मर्यादा के साथ योद्धा भिड़ें वह असंकुल युद्ध है (१२) और जहां मर्यादा छोड़कर भिड़ें वह संकुल युद्ध है (१३) योद्धाओं

जितैं डारि जीह कह्यौ नहिं जाय॥१७१॥
रहे रुपि मस्तक मध्य कटार,
तिन्हैं तकि वीर हसैं सजि तार ॥
करी कवि पद्म सु ओपम पेल,
खिंजैं नरसिंघ करैं मनु खेल ॥१७२॥
त्रयत्रय बान जवानन सीस,
कही उपमा भल पद्म कवीस ॥
अनोपम जुद्ध त्रिसिंघ हि एक,
अरे इत उद्ध त्रिसिंघ अनेक ॥१७३॥
भिरे तित भीम कुलूत सु भूप,
रचे निस सैन चिराकन रूप ॥
करी चढि भीम करी चढि केक,

की पंक्ति ॥१७१॥(१)ताली बजा कर(२)गमन(३)क्रोधित हुए दो नरसिंह भगवान् मानों क्रीड़ा कर रहे हैं. यहां नरसिंह भगवान् की उत्प्रेक्षा वीरों में है. थंभों की उत्प्रेक्षा वीरों की कटारों की नाड़ियों में है ॥ १७२ ॥ (४) जिस युद्ध में एक दो त्रिसिंघ हों तो भी प्रशंसा योग्य होता है, इस युद्ध में तो अनेक त्रिसिंघ अड़ रहे हैं इसलिये यहां व्यतिरेक अलंकार है ॥ १७३ ॥(५)सेना रूपी रात्रि में भीम और कुलूत देश का राजा दोनों चिराक रूप हैं (६) भीम एक हाथी पर सवार हुआ

अटे इत कौरव वीर अनेक ॥१७४॥
इभस्थित भूप कुलूत सु आय,
भिरे कटुवादि निषादि कुभाय ॥
जहाँ गन बान लगे गज जोर,
धसे मनु विन्ध्य अहीगन घोर ॥१७५॥
जनौं जनमेजय भाविय जज्ञ,
उडे कारि याद जिये इम अज्ञ ॥
मिली कवि पक्षहिं तर्क सु मोरँ,
जनौं रिषि लोमसकी गज जोर ॥१७६॥
किते लगि कुन्त दुहूँ करि क्रूर,
परैं रत धार रनांगन पूर ॥
बसे गिरि गैरिकके बिच वास,

(१)कौरवों के वीर कितने ही हाथियों पर सवार हो चले ॥१७४॥ (२)हाथियों के सवार (३) समूह (४) जोड़ा [५] मानों विन्ध्याचल में सर्पों का समूह घुसा ॥१७५॥ (६) होनेवाले जनमेजय के यज्ञ में हम जलेंगे, मानों इसको याद करके ही बाण रूप सर्प उड़े (७) मोड़ [सेहरा] (८) जैसे लोमशऋषि का शरीर रोमों से ढका है वैसे दोनों हाथियों के शरीर तीर रूपी केशों से ढके हैं ॥ १७६ ॥ (९)रुधिर से रंगे हाथियों के लगेहुए भाले कैसे दीखते हैं कि मानों गेरू पर्वत में रहनेवाले

समुच्छन रक्त अही जिम भास ॥१७७॥
भग्यौ इभसत्रु खरौ भट भीम,
सज्यौ फिर भूप निसादिन सीम ॥
अटे सर वारन फोरि अनेक,
छुहे भुव तीडि तमालहिं छेक ॥१७८॥
कढ्यौ रत यौं सु गदारन कीन,
दिसागज कुम्भन नागर्ज दीन ॥
फिर्यौ सिसु कोयलज्यौं गज फेर,
जहाँ भट भीम भयौ नहिं जेर ॥१७९॥
सर्जा कवि तर्क घसीहियँ सानु,
मथ्यौ दधि सौं गिरि औ हरिभानु ॥
भई रनभूमिय अर्नव भाय,
सुरासुर संघ हि सेन सुहाय ॥१८०॥

(१)मूछोंवाले लाल सर्प हैं ॥१७७॥ (२) शत्रु का हाथी (३)हाथियों को फोड़कर तीर ऐसे पड़े कि मानों शलभ [टीड] तमाल को छेद कर पृथ्वी पर बैठे हैं ॥ १७८ ॥(४) सिंदूर(५)बालकके कोयल (खिलौनाविशेष)कीनांई(६) फिरा१७९॥(७)हृदय रूप सान पर घिसीहुई अर्थात् तीक्ष्ण यह तर्कका विशेषण है (८ हाथी तो दधि अर्थात् समुद्रको मंथन करनेवाला मंदराचलहै(९)उस पर चढाहुआभीम मानों विष्णु है (१०)सेना को और सुरासुर समूह क

सुपर्व युधिष्ठिर आदि सँभार,
सुयोधन आदिक दानव सार ॥
जितैं मति कर्न सु कच्छप जान,
सलाह हरी अहिराज समान ॥१८१॥
लई दिस जीति मिले सुभ रत्न,
जहां विंस क्रोध जरे बिनु जत्न ॥
भनौं कहा भाविपकी छवि भूप,
रचैं सुभ मित्रहु सत्रु सुरूप ॥१८२॥
उहां सु महेस्वरकौं बिरदाइ,
हलाहल दैं जन लीन बचाइ ॥
इतैं हरि पारथकौं बिरदाइ,
किये कृति बंस कुनास कुभाइ॥१८३॥
मऱ्यौ गँज उच्छल भीम महीस,
गदा गहि झारिय वारन सीस ॥
मिली कवि तर्क सु हर्ष अमाप,

रूपक है ॥ १८० ॥ (१) देवता (२) कर्ण की मति का कच्छप से रूपक है (३) हरि की सलाह का वासुकि से रूपक है ॥ १८१ ॥ (४) जहर रूप क्रोध से जलगया ॥ १८२ ॥(५)उस समुद्र मथन में (६)इस युद्ध में ॥१८३॥ (७)भीम का हाथी मरा(८)हे धृतराष्ट्र[९]शत्रु के हाथी

परयौ भट्टु हेर गेदा कृत पाप ॥१८४॥
दशरथ्थ कैं सु गदा फिर दीन्ह,
कुलूत सु देस विना प्रभु कीन्ह ॥
गिरयौ गज जुक्क कुलूत सु नाथ,
भये भटके हलके कछु हाथ ॥१८५॥
गई रज व्योम लयों रवि छाइ,
दई वह वानन भीम उडाइ ॥
भली रवि किंकरता भट कीन्ह,
कह्यौ ऋषि भीमहिं यौं हसि दीन्ह॥१८६॥

दोहा ॥

इस कुलूत सु देसकौ, क्षेमधुर्ति तिहिं नाम॥
कर्यौ क्षेम ताकै सु कुपि, फिर अक्षेम न काम

छंद मुक्तादाम ॥

जुरे अनुहिंद सु विंद सजोर,
ति केकयनाथ महाभट मोर ॥

मरेहुए हाथी में गदा के पापको उत्पन्न
के सिर पर (२)
है ॥१८४॥ (२) शंख का शब्द (३)करके (४)जयमल्ल युद्ध
करते हैं तब पहिले थोड़ी कसरत करते हैं उसको हल-
का हाथ करना कहते हैं सो भीम के थोड़े हलके हाथ
हुए ॥ १८५ ॥ (५) ऋषि जो युद्ध देखते थे उन्होंने भीम
से कहा कि हे भट तूने सूर्य की सेवा अच्छी की और
हंस दिया ॥ १८६ ॥ (३) मरे पीछे दुःख का काम नहीं

परे दुहुँ घायन ह्वैं भरपूर,
उठ्यौ अनुविंद कि रुद्र[1] अँकूर ॥१८८॥
महाभट सात्यकिसौं रन मच्च,
नच्यौ अनुविंद कबंध[2] सु नच्च ॥
विदारिय सात्यकिकौ धनु विंदु,
अन्यौ रन तेजस[3] जोर न इंदु ॥१८९॥
परस्पर कट्टिय बाह[4] रु बान,
कढे दुहुँ ले कर ढाल कृपान ॥
ठसे दुहुँ भट्ट के[5] ठट्टिय ढल्ल,
उड्यौ भट सात्यकि जुद्ध अचल्ल १९०
अलग्ग[6] किये धर सीस अनीह,
जथा जुग मित्र करै खल जीह[7] ॥
भन्यौ भट भीमहिं दानिय[8] भर्म,
घनौ मन तोर गदा बल घर्म[9] ॥१९१॥

॥ १८७ ॥ (१) रौद्र रस का अंकुर ॥ १८८ ॥ (२) मस्तक कटने से कबन्ध भया हुआ अनुविंद कबन्ध का नाच नचा (३) उस विन्द के जस के बराबर चन्द्र उज्वल नहीं ॥ १८९ ॥ (४) घोड़ा (५) ढालें कर्णी ॥ १९० ॥ (६) विंद के सिर और धड़ को जुदा कर दिया (७) जैसे पिशुन की जीभ दो मित्रों को जुदा करदेती है (८) सुवर्ण देने वाला [कर्ण] (९) तेजी ॥ १९१ ॥

पढ्यौ न गदारन हौं विधि पूर,
सिखावहु आज बनौं रन सूर ॥
कही इम कोप भिर्‍यौ कलि कर्न,
वहै रन वर्न सकौं नहि वर्न ॥१९२॥
सुनैं कति सूम लहैं यह सर्न,
करैं पखपात जिते कवि कर्न ॥
कहौं मम बुद्धियलौं रनछेह,
बनैं मिझमान समान न गेह ॥१९३॥
फटे करि मत्थ गदा परि कर्न,
बिभा वह देख करौं कछु वर्न ॥
गिरे गज मुत्तिय उच्छर गैन,
कहैं रविकौं सुत कीन्ह अचैन ॥१९४॥
उडे कटि कुंभिन कुंभ अपार,

(१)मैं गदा युद्ध पूर्ण नहीं पढ़ा हूं तू सिखादे तो मैं भी शूरोंकी गिनती में होजाऊं(२)युद्धमें ३)कर्ण ने वर्ण(अक्षर कहे उनका वर्णन मैं नहीं कर सकता हूं ।१९२।(४)कितनेक सूम यह शरण लेते हैं कि(५)जितने कवि हैं वे सब कर्णका पक्षपात करते हैं ॥१९३॥ (६)स्तुति (७) गजमोतियोंका सूर्य से कथन है कि तुम्हारे पुत्र ने हमारा गजकुम्भ रूप घर छुड़वा कर हमको दुःखित किया है ॥१९४॥(८)हाथियों के

निहारत चक्रित[1] है सुरनार[2] ॥
कटे कुच मोर किधौं परबार[3],
उडे उरू[4] के उडि सुंडि उदार ॥१९५॥
बन्यौ गज ग्रातन[5] मृत्यु विथार[6],
निसादि[7] विसादि[8] बनैं सु विचार ॥
कटे भट ठठ्ठ प्रकोपित कर्न,
विभा वह व्यास सकै कछु वर्न ॥१९६॥
जु हो रविमंडल छेकन जोग,
सु गो नहिं पुष्ट सुरस्तुति[9] भोग ॥
प्रसूनन[10]के गन अर्प[11] अपार,
इहा सुरवृच्छ[12] गये सब हार ॥१९७॥
वरे पति डारिय जे वरमाल,
तिन्है लहि ग्रान[13] वरैं सुरबाल ॥

(१) चक्राकार इकट्ठी होकर (२) अप्सरा (३)दूसरी बाला के (४)उरू[ऊरु]साथल ॥१९५॥ [५]समूह (६) विस्तार (७) हाथियों के सवार (८) हाथियों के मरने से विष खाने की इच्छावाले अथवा दुःखी ॥१९६॥ (९) देवताओं की कीहुई स्तुति के भोगने से पुष्ट ऐसे होगये कि जिससे सूर्य मंडल में नहीं समाये(१०) पुष्पों के (११) देकर (१२)कल्पवृच्च ॥१९७॥ (१३,दूसरी अप्सराएं उन्हीं वरमालाओं को लेकर पतियों को वरती हैं

मच्यौ रन कर्न सु और मचैंन,
सुमीलितनैंन अरातिन सैंन ॥१९८॥
भग्यौ दल पंडुन और भगैंन,
निहारत माधव दच्छिन नैंन ॥
परी कित वंसुरि पीरहिं पेरि,
कहा गति धोरिय धूमर केरि ॥१९९॥

सोरठा ॥

ऋषि चारन गंधर्व, रीते सुम धरि करन सिर ॥
रवि ससिहू तिंहिं पर्व, पुप्फवन्त दाखे प्रगट२००

प्रथमयामका सूचीपत्र॥

छप्पय ॥

पंच सुरन मंगल रु करन रविमल्ल सु कित्तिय
नृप वंश रु कविवंश दीप्तिजुत ग्रंथ नाम दिय॥

॥ १९८ ॥ (१) वाम नेत्र स्त्री का है और दक्षिण नेत्र निज का है. श्रीकृष्ण ने यह विचार किया कि मेरी मुरली मेरी तरफ पीड़ा को भेजकर किधर पड़ गई और धोरी धूमरी गय्या की क्या गति होगी पूर्वानुभूत यह बात याद आई और कोई भी स्मृति न रही ॥ १९९ ॥ (२) खाली होगये (३) उस समय सूर्य चंद्रमा भी (४) पुष्पोंवाले हुए. सूर्य और चन्द्रमा दोनों को एक उक्ति में पुष्पवन्त अमरकोश में कहा है। उक्तं च "एकयोक्त्यापुष्पवन्तौदिवाकरनिशाकरौ"इत्यमरः२००

करन मरन अरु उपालंभ संजयसौं नृप सुनि॥
नृप पिछतावन जुद्ध प्रश्न दिय विदुर ज्ञान गुनि
करनजसभावीप्रबलताजियतमृतकसुभटनकथन
करनरनप्रश्नसेनपकरनव्यूहरचनदुवदललरन॥

दोहा॥

कलह भीम रु कुलूतकौ,सात्यकि विंद सँभार॥
भीमकरनरनप्रथमकी, पद्दर सुवस्तु विचार२०२

इतिश्रीमच्चंडीचरणारविंदचंचरीकचारणवा साभिधेयचारुसम्वसथवास्तव्यचारणचक्रचक्र-वाकचंडांशुजाज्वल्यमानकाव्याज्ञत्वज्वालाज्वल ज्जगज्जीवजुष्टजयजीवनबलूंदाख्यग्रामठक्कुर-जीवनसिंहप्रतोलीपालवंशभास्करप्रबंधप्रणेतृमि

---

(१) समझा (२) धृतराष्ट्र का संजय प्रति कर्ण के युद्ध का प्रश्न (३) कर्ण को सेनापति करना ॥२०१॥२०२॥

इति श्रीमती चंडी के चरणारविंद में है चित्त रूप भ्रमर जिसका, चारनवास नामक सुंदर ग्राम का निवासी, चारण समूह रूप चकवों के लिये सूर्य रूप, जाज्वल्यमान काव्यकी अज्ञता रूप ज्वालाओं से जलतेहुए जीवों करके सेवित, विजयके जीवन रूप बलूंदा नामक ग्रामके ठाकुर जीवनसिंह का पोलपात, वंशभास्कर ग्रंथ के रचयिता मिश्रण कुलमें प्रकट हुए श्रीसूर्यमल्लका शिष्य, पातावत

श्रगाकुलोद्भूतश्रीसूर्यमल्लशिष्यपातावतशाखा-प्ररूढजगरामात्मजपद्मसिंहप्रभाषितकर्णपर्वविभाविभूषितवीरविनोदे प्रथमयामयुद्धंसंपूर्णम्॥१॥

शाखावाले जगरामका पुत्र, जो पद्मसिंह उससे रचेहुए कर्णपर्वकी शोभा करके विभूषित वीरविनोद में प्रथम याम का युद्ध सम्पूर्ण हुआ ॥ १ ॥

इति प्रथमयाम ॥

अथ द्वितीययाम प्रारम्भ ॥

दोहा ॥

जानहु दूजिय जामकौ, अब आरन विधि ओर॥
छैलकैं कातरयौं छिपहिं,ज्यौं झखरविकरगौर१
जुद्ध जु दूजिय जामकौ, दूजिय वस्तु न जत्र ॥
मारहु मारहु अरनमैं, एकहि आरव अत्र ॥२॥
कवित्त-रागको समागम चहत नित मैत्तचित्त,
सुवरनै परन धरन पैच्छ रनके ॥

---

(१) युद्ध (२) रीति (३) कपट करके (४) कायर (५) मच्छी (६) सूर्य की किरणों के (७) विचार से॥१॥ (८) भिड़ने में (९) शब्द ॥२॥(१०)तीन तरहके श्लेषोंमें से यहां कवि ने प्रकृतों का श्लेष अलंकार दिखाया है ॥ अप्सराओं की तानें और अप्सराओंके पतियों के बाण ये दोनों प्रकृत हैं जिन दोनों के क्रम से विशेषण दिखाते हैं. राग(भैरवादिक और सिंधु)के समागम(अच्छाआना) को नित्य चाहते हैं (११) और दोनों ही सदा मुदित चित्त हैं। अर्थश्लेष से ये दोनों विशेषण बराबर हैं. (१२)अप्सरा पक्ष में अच्छे हैं अक्षर जिनमें ऐसा और परन (तिरवट के बोलों का समूह इसको गवैये जानते हैं) धारण करनेवाले तान. और बाण पक्षमें सुवरन(सोना) उससे जड़ाऊ तीरों के परन (पक्ष) को धारण करनेवाले. ऐसे ही अगाड़ी दोनों पक्षों में जान लेना (१३) रणका पक्ष दोनों के समान

ग्रामनमैं नेह अति श्रुतिनमैं नेह अति,
कवि पद्मेस नभ धरनि भरनके ॥
लच्छै अवगाहैं अच्छ आहैं अति चाहैं स्वच्छ,
नागनँ घुमावैं रव विकृति करनके ॥
मानमैं समान आनजानमैं समान मान,

---

(१)मंद्रादिकों में अत्यन्त स्नेह है जिनका ऐसे तान, ग्राम (गांवों में)अत्यन्त स्नेह है जिनका ऐसे बाण (२) श्रुति (तीव्रकादिक) इनमें अत्यन्त स्नेह है जिनका ऐसे तान, श्रुति (कानों) में है अत्यन्त स्नेह जिनका ऐसे बाण (३) आकाश और पृथ्वी को भरनेवाले दोनों पक्ष में समान (४) लक्ष निशाना सदृश अच्छे राग के समझनेवाले उनको अवगाहैं अच्छी तरह से व्याप्त होते हैं ऐसे तान, अभ्यास के समय निशानों पर व्याप्त हुए थे वे इस वक्त लक्ष्य निशाने सदृश वीरों में अच्छी तरह व्याप्त होते हैं ऐसे बाण (५) आहैं (वाह वाह) अत्यन्त चाहते हैं ऐसे तान, आहैं (आह इस तरह के शब्द) वि शेषों को चाहते हैं ऐसे बाण (६) निर्मल दोनों पक्ष में समान. (७) नागन सर्पों के शिरों को हिलाते हैं ऐसे तान, नागन हाथियों के सिरों को हिलाते हैं ऐसे बाण [८] रव शब्द उस में विकार करनेवाले अर्थात् श्रोता आनन्दसे और भय से गद्गद् कंठवाले होजाते हैं. दोनों पक्षों में समान [९] मान जिस समय पर मृदंगादिकों की सम ताल आती है उसी समय पर उनकी तानें पड़ती हैं ऐसे तान, मान धनुर्वेदोक्त अंगुलादि पांखें

अच्छरन तान बान अच्छर बरनके ॥३॥

छन्द मुक्तादाम ॥

समट्टिय द्वै दल अग्गिम सूर,
निरक्खिय अच्छर सूर सुनूर ॥
बरे रथ रत्थ रु पत्तिय पत्ति,
अरे गज गज्ज सपत्ति सपत्ति ॥४॥
परस्पर बान चले नभ पूरि,
भई घसि घोर चिनंगिय भूरि ॥
कटी रविकी किरनैं रन क्रूर,
परैं नभतैं मनु चूरन पूर ॥५॥

सांठी भल्ल इनके प्रमाण में समान ऐसे बाण. आन जान में अवरोह आरोह में सातों स्वरों का उतरना और चढ़ना उसमें समान ऐसे तान, आन जान अपने बाणों का जाना प्रतिपक्षियों के बाणों का आना उसमें समान ऐसे बाण हे राजा धृतराष्ट्र तू मान. यद्यपि लोक में गवैये तान शब्द को स्त्रीलिंग कहते हैं परंतु हमने संगीतशास्त्रानुसार पुल्लिंग कहा है ॥ ३ ॥ [१] सजे (२) अगाड़ी चलनेवाले (३) अप्सराओं ने (४) अच्छा है स्वरूप जिनका (५) पैदलों से पैदल (६) घोड़ों से घोड़े यहां "अपत्ति अपत्ति" यह अन्त्यानुप्रास है ॥ ४ ॥ [७] आपस में [८]बहुत चिनगारियें [९]बाणों की रगड़ से सूर्य की किरणें कट गईं [१०]भयानक[११] मानों आकाश से किरणों का चूर पड़ता है ॥ ५ ॥

चले गन[1] बाननके तिंहिं[2] चालि,
मनौं भट[3] छत्तनतैं भ्रमरालि[4] ॥
उभै दल भूपन[5] तेज अनूप[6],
जु स्वेद[7] सु छोनिय[8] स्नानिय रूप ॥६॥
छई तित श्रोनितकी[9] छिछकार,
अनोपम कुंकुम[10] आड अपार ॥
प्रभौ[11] इहिं रंगमैंही[12] किय पूज,
दियैं ललकार[13] सुई स्तुति कूँज[14] ॥७॥
कही बहु केसर क्यौं दर[15] आप,
मरूपति[16] आवनकौं परताप ॥
लगे उर[17] बान कढे तनु पार,
भलो पर ज्यौं खल[18] छत्तिय फार ॥८॥

---

(१)समूह(२)उस रीति से(३)बीरों रूप मधुमक्खियों के छातों से(४)भँवरों[ततैयों]की पंक्ति(५)राजाओं की (६) उपमा रहित(७)पसीना(८)मानों पृथिवी के लिये स्नान करने योग्य जल है ॥ ६ ॥ (९) रुधिर की धारें छागईं (१०)केसर(११)शोभा से ऐसी(१२)युद्ध भूमि की पूजा की (१३) सिंहनाद है यही स्तुति है (१४)कु नाम पृथिवी से ज नाम उत्पन्न हुई ॥ ७ ॥(१५)थोड़ा जल (१६)मारवाड़ के राजाओं के आने के कारण से (१७) छाती में (१८) जैसे दुष्ट की छाती फाड़कर पार जावै ॥ ८ ॥

परे कति कातर भल्ल कपार,
पखौंवन पंकति पिछ्छि अपार॥
चढी तित तर्क लई कवि चीन्ह,
मरे उडिंजान मनौं मन कीन्ह ॥९॥

छप्पय ॥

श्रुतकर्मा अरु चित्रसेन जुट्टिय रन सायकं॥
कट्टि कृपान कवान बानलखिहसिपितृनायक॥
श्रुतकर्मा स्थिंतसेन चित्रसेनहिं द्रुत दब्बिय ॥
देखि दीह रन दुसह देहल परि कुरुदल दब्बिय
तदब्बिय१ लदब्बिय२ अंत्यानुप्रासः॥१॥
प्रतिबिंध्यचित्रजुट्टियप्रबलधनुषतीरतोमरकटिय
प्रतिबिंध्य सार्थि हय कटिग लखि कुपि चित्रहिँ
लिनु प्रान किय ॥१०॥

छंद मोतीदाम ॥

सुनी इम भीम जप्यौ रिस ज्वाल,
कुप्यौ हग लाल किये मनुँ काल ॥
कहे कटु बैंन गुरू सुत ओर,

---

(१)कितने ही कायर पड़गये(२)तीरों में लगी हुई पांखें (३) उड़जाने का मन किया ॥ ९ ॥ (४)भिड़े (५) युद्ध में बाणों से (६) यमराज (७) स्थिर है सेना जिसकी (८) जल्दी से दबाया (९)घबराहट(१०)युधिष्ठिर से द्रौपदी में पैदा हुआ पुत्र (११) भाले कट गये ॥ १० ॥

सुन्यौं कृपिके घर वेदन सोर ॥११॥
अनोपम ही उपवेद उदार,
धनुर्व गान सुने चित धार ॥
सुन्यौं नहिं मैं कृपि रोदन तत्र,
मचैं वह आज रचूं रन अत्र ॥१२॥
भन्यौं तब भूसुर संभर भीम,
दई वड रोदन कुंतिय नीम ॥
न रोयसकैं तिँहिं लौं मम मात,
वडी विधि रोवन कुंति विख्यात ॥१३॥
भये पति पांच भई इक भाम,
कहा नहिं रोवनकौ तित काम ॥
लई तिँहिं छीन सभा बिच लाज,
सुन्यौं विनु वस्त्रन पांडु समाज ॥१४॥
लई वनमैं गहि द्रौपदि फेर,
वनी विध रोवनकी तिँहिं वेर ॥
हस्यौ गहि कीचक द्रौपदि हत्थ,
नच्यौ तित क्लीब बन्यौ सुन पत्थ॥१५॥

(१) अश्वत्थामाकी माता के घर वेदघोष सुना॥११॥१२॥ (२)ब्राह्मण अश्वत्थामा (४)हे भीम तू (३)सुन ॥१३॥(५) स्त्री(द्रौपदी)(६)उस द्रौपदी की ॥१४॥ (७)नपुंसक॥१५॥

सुनी इतनी जब कुंतिय श्रौंन,
कह्यौ जग तासम रोवहि कौंन ॥
न रोवत या हितत्तैं मम मात,
कही कहा भीम असंभव वात ॥१६॥

कविवचन ॥

सुनी द्विजकी इम बांनिय श्रौंन,
कुप्यौ अति भीम परैं मुख कौंन ॥

भीमवचन ॥

वनैं नहिं वातनतैं रन वीर,
हनैं मुहि हातन हौं हमगीर ॥१७॥
सुनी दल जाविध वानि समानै,
जुरी रन ताविधि जोर जवान ॥
मिली धुंनिसौं धुनि नैंनन नैंन,
मिले गुनसौं गुन वैंनन वैंन ॥१८॥
मिली तति वाननसौं तति वान,
मिली गुनवान कवान कवान ॥
मिले उरसौं उर हत्थन हत्थ,

॥ १६ ॥ (१) अगाड़ी (२) होशियार हूं ॥१७॥ (३) अभिमान सहित (४) ध्यान से ध्यान ॥ १८ ॥ (५) प्रत्यंचावाली अर्थात् चढ़ीहुई कमान से चढ़ीहुई कमान मिली.

सजैं हित क्यौं न सतीर्थ समर्त्थ॥१९॥
बढ्यौ तन स्वेद मिले भरपूर,
परस्पर कौच किये दुँहुँ दूर ॥
सझैं जुग संगिन संगिन स्नान,
सुश्रोन जुजोग्गिय खोर समान ॥ २० ॥
सु मल्लन जुद्ध तथा रन जुद्ध,
ज्यौं कविके हिय रूपक उद्ध ॥
तहां मुरछाँ हुव नींद सुतेज,
छिनावधि सोयरहे रन सेज ॥२१॥

छप्पय-संसप्तकनसरालियसौं पारथ समुझाये
भिरि द्रोनियें नर भनिय भये तब मम मनभाये

(१)एक गुरु के शिष्य (२)बलवान् ऐसे बाथ भर कर मिले कि दोनों को पसीना होगया ॥ १९ ॥ (३) दोनों ने कवच इसलिये दूर करादिये कि मानों प्रस्वेद सूखकर सुखी होजावैं (४)प्रस्वेद मे स्नान की उत्प्रेक्षा है. मानों अश्वत्थामा के संगवालों ने भीम को स्नान कराया और भीम के संगवालों ने अश्वत्थामा को स्नान कराया. अथवा संगिन अर्थात् बरछिया से आपसमें युद्ध हुआ (५) मिट्टी लगाना ॥ २० ॥ (६ उदय हुआ (७ उन दोनों को मूर्छा आगई है वही उत्कट (गाढ) नींद है ॥२१॥ (८) समय मुकर्रिर करके युद्ध से पीछे न मुड़ने की प्रतिज्ञावाले (९) धावों की पंक्तियों से(१०)अश्वत्थामा औ

कान्है कहिय मनैं मान ठानि रन दुहुँ सुद मानहु
दुहुँ कवान दिय बान पेखि द्विजं दोनिय पखानहु
वर वीर पत्थसर पीरसौं धीरज किमि छिय धरधरिय
भिरिसंसप्तकगनभटअभय कुपि पार्थ औरनकरिय

छंद मुक्तादाम ॥

कुप्यौ पुनि द्रोनसिसू मनुँ काल,
जँभोरिय पत्थ तरू सर जाल ॥
इतैं उत श्रोनित धार अपार,
श्रवैं मनुँ आसिसँ औ नतिसार ॥२३॥
कही हरि पत्थहिं द्रोनिहिं मार,
बढैं विषँ आसिष वार विथार ॥
मरैं दुहुँ आपुन तूं द्विज मार,
हसैं सब लोक निहार निहार ॥२४॥
चले सर दोहुँन चंचल चाल,
हसे दुहुँ ए दुहुँ सेन विहाल ॥

अर्जुन भिड़कर बोले (१) श्रीकृष्ण बोले (२) यथेच्छ (३) हर्ष (४) अश्वत्थामा को देखकर (५) पत्थर भी पिघल गये तो कायर क्यों नहीं घबरावें (६) अश्वत्थामा का हृदय धूजने लगा ॥ २२ ॥ (७) अश्वत्थामा (८) अर्जुन रूप वृक्ष को कंपाया (९) रुधिरकी धाराएं (१०) आशीर्वाद और नमस्कार ॥२३॥ (११) आशीर्वाद रूप जहरका विस्तार ॥२४॥

परे कटि दोहुँनके विच तीर,
प्रपा पर प्यासिनकी जनुँ भीर ॥२५॥
घरी इकलौं हुव आहवं घोर,
अरयौ करि नर्म अरैं नहि ओर॥
विदारिय भूसुर बाजिन बग्ग,
मिले कुरुफोज ति बाजि अमग्ग ॥२६॥

दोहा ॥

इत जुट्ठिय नर उत सुन्यौ,निज दल कातर सोर॥
दंडधार मगधप आगि,घेरिय घन रन घोर॥२७॥
इन दुँहुं भ्रातन संग ह्वां, रन सिसुभारत रीत ॥
वडभारतमैं प्रथम फिर,रक्खिय व्यास प्रतीत२८
दंडधार अरु दंड नृप, सह्मन संपति सत्थ ॥
कह्यौ पत्थ कित पत्थ कित, आन जुंहारे पत्थ२९

छंद मोतीदाम ॥

अटयौ हसि पारथ भूपन ओर,

---

(१) जल की प्याऊ (ग्रीष्मकाल में जल पिलाने की जगह) ॥ २५ ॥ (२) भयानक युद्ध (३)हांसी (४) अश्वत्थामा के (५) घोड़ों की बागडोर (६) रस्ते विना ॥ २६ ॥ २७ ॥ (७) बालभारत नामक ग्रन्थ के अनुसार (८) महाभारत में ॥ २८ ॥(९) लक्ष्मी (१०)मुजरा किया अर्थात् दूसरों को जवाब देने की जरूरत न रक्खी॥२९॥

मिली मनुँ मल्लहिं मुद्गर जोर ॥
भ्रमावत पेचनसौं भट भूप,
रुप्यौ तित पत्थ सु जेठिय रूप ॥३०॥
फिरैं दुहुँ पारथके चहुँ फेर,
मनौं रवि चंद प्रदच्छन मेर ॥
हरुयौ कवि तर्क फुरी हिय हेर,
प्रदच्छन सूर ससी सनिकेर ॥३१॥
हरुयौ कवि हीय सु तर्क हुलास,
कि चंड रु मुंड मृडानिय पास ॥
वढ्यौ अति पारथ कै रसबीर,
कढ्यौ मग रोमन व्याप्त सरीर ॥३२॥
बनैं रँग पीत बिवाद बनैं न,
सुबुद्धि कविंद कुतर्क सनैं न ॥
लिखी बहु तर्क उठी हिय लोल,

---

(१) मानों मल्ल को मोगरी की जोड़ी मिली (२) दावों से घुमाता है. मोगरियों को और राजाओं को (३) वहां अर्जुन ज्येष्ठ मल्लरूप हुआ॥३०॥(४)परिक्रमा(५) सूर्य चंद्रमा शनि के चारों तरफ़: यहां अर्जुन का श्यामवर्ण होने से शनैश्चर को उपमान रक्खा है॥ ३१ ॥ (६)कालिका रूप अर्जुन [७] वीर रसका रंग पीला है ॥३२॥[८]खोटी तर्क से भीजते नहीं (९) चंचल हृदय में ॥ ३३ ॥

वहाँ कवि वाँच्छित धर्म अडोल ॥३३॥
फुलिंगनसें[1] उनके[2] सरसार,
अनादर कैं नर दीन उछार ॥
भये विनु तेज रनांगन गाज,
गये[3] रविमंडल जाचन काज ॥३४॥
मरे तिनकौं लखि[4] भो दल मोद[5],
गिरे हम[6] काल धरे गहि गोद ॥
विदारत जो न इन्हैं[7] नर वीर[8],
सुकात सबै दलौं सोच[9] सरीर ॥३५॥
उभै[10] भट तीरैं[11] जहाँ जैय[12] नीर,
वनी तटनी[13] वैर वीखत[14] वीर ॥
धर्यौ विधि[15] धीर भिजोवन धर्म,

(१)चिनगारियों से(२)इन दोनों राजाओंके(३)मानों तेज मांगने के लिये सूर्य मंडलको गये. यहां मरना व्यंगार्थ है ॥३४॥(४)छुआ(५)हर्ष(६)यमराजा ने पकड़कर गोद में धर लिये थे (८) अर्जुन (६) बहादुर (७)दंड और दंडधारको (१०) सोच सेना के शरीर को सुखादेता है ॥३५॥(११) अविंद अनुविंद रूपी(१२)नद(१३)विजय रूप जल है (१४) यह एक नदी बनी है(१५)अच्छे बहादुर देख रहे हैं (१६) नदी में ब्रह्मा ने भिगोने रूप धर्म रक्खा है, परन्तु यहां शरीर को सुखाने का धर्म कहां से आगया ॥ ३६ ॥

परयौ कित आय सुकावन पर्म ॥३६॥
अटैं विधि वंक जहाँ छवि उर्द्ध,
वनावत वीज जु काज निरुद्ध ॥
विभादि वना इत पंचमि धार,
सज्यौ सु अलंकृति जानहु सार ॥३७॥

दोहा ॥

उग्रायुध सुत उछरिकैं, भेद्यो हरि नर हीय ॥
जाहि बचावैं कौनजो, दैंनहार लैं जीय ॥३८॥
उग्रायुध सुत नर हन्यो, हरि कहि होइ उदास
दुरजोधनके दोषतैं, होत भरत कुलनास ॥३९॥
पांड्यदेशकौ नृपति हौ, नाम प्रवीर प्रवीर ॥
रोकलयौ रन करन दल, जनुँ पँप परिग जँभीर

छंद मोतीदाम ॥

---

(४)ऊर्द्ध शोभावाला (२)भाग्य(३)टेढा होके (१)चले तो (५) विरुद्ध कारण कार्य को उत्पन्न करना है जैसे यहां जल रूप भिगोनेवाले विरुद्ध कारण से सूचना रूप कार्य हुआ इसलिये पांचवीं विभावना रूप अलंकार जानो ॥ ३७ ॥ (६) श्रीकृष्ण और अर्जुन के (७) वक्षःस्थल में (८) जो जीव का देनेवाला श्रीकृष्ण ही जीव लेवे तो, उस देहधारी को कौन बचा सकता है ॥३८॥३९॥ (९)नाम (१०)बहुत बलवान् शूर(११)पग में (१२)सांकल पड़गई

अरयौ नृप पांड्य उहां छवि अच्छ,
सिरोमनि पांडु चमूतिय स्वच्छ ॥
कुरू दलको मनुँ काल महेस,
सभी भयकार भुजा जनुँ सेस ॥ ४१ ॥
सिखी द्रग ह्यां अरिक्रोध उतंग,
गिनौ पघिया इतकौं उत गंग ॥
जटाजूट तीर लगे सिर जत्र,
उमा तनु वाम विजै छवि अत्र ॥४२॥
ससी उत स्वामिय धर्म सु सीस,
चलावत सूल वहैं रु गिरीस ॥
छुहैं छवि भूतिय जुग्मँ अछेक,
कपाल धरैं रु किरैं इत केक ॥४३॥

है ॥४०॥ (१) पांडवों की फौज रूप स्त्री का शिरोभूषण और (२) कौरवों की सेना को वह पांड्य प्रलय काल का महादेव है ॥ ४१ ॥ (३) अग्निनेत्र यहां शत्रु का ऊँचा क्रोध है, महादेव पक्ष में तृतीय नेत्र है (४) डांवा शरीर जो यहां विजय की शोभा है वह डांवा शरीर उमा है ॥ ४२ ॥ (५) जो सिर पर स्वामिधर्म है वही चन्द्रमा है (६) जोद्धार का शूल है वह महादेव का शूल है (७) महादेव और वीर. महादेव पक्ष में विभूति और वीर पक्ष में कई कपाल बिखर रहे हैं ॥ ४१ ॥

भले वृष[1] संजुत जुग्म[2] विभात,
सुधा जुत जुग्म क्रुधा सरसात ॥
भनैं सरवंज्ञ[3] उभैं कृति आन,
इहां पदमेस समान वखान ॥४४॥
जुरौं[4] जिंहिं साथ सुई भजि जांहिं,
कहैं[5] बच गर्ब[6] महा मन मांहिं ॥
सुन्यौ श्रुति[7] सूतजनैं[8] यह सोर,
मुरयौ[9] मनुं देख अही दिस मोर ॥४५॥
गन्यौं तिंहिं[10] कर्न अही ऐलगर्द[11],
सज्यौ वनि सेसैं[12] करयौ तिंहिं सर्द ॥
परयौ रन कर्न व्यथातुर[13] प्रान,
अरयौ तब उच्छरि द्रोनियैं[14] आन ॥४६॥

---

(१)पुण्य और बैल(२)दोनों, महादेव पक्षमें चन्द्रके अमृत युक्त है, वीर पक्षमें अच्छे प्रकार शोभित और दोनों क्रोध सहित(३) महादेव सबको जाननेवाला और वीर को सब जानते हैं॥४४॥ (४) यह पांड्य का वाक्य है, जिस के साथ भिड़ता हूं वह भगजाता है (५)अब कविवचन (६) अभिमान (८)कर्ण ने (७) कानों से सुना (९) कर्ण ऐसा पलटा मानों सर्प को देखकर मोर पलटे॥ ४५ ॥ (१०) उस पांड्य को(११)जलसर्प (१२) पांड्य शेष होकर सजा और कर्ण को शीतल कर दिया(१३)पीड़ित प्राणों वाला(१४)अश्वत्थामा आकर॥४६॥

मिल्यौ मलयध्वज मुच्छ मरोर,
जुर्‌यौ भट द्रोनिय उप्फनि जोर ॥
जनौं [१]मलयध्वज ह्वां जजमान,
जहां क्रतुकारक द्रोनिय ज्वान ॥४७॥
पुरोहि[२]तकौ अपनौ नहिं और,
गिनैं नहिं यौं जिन धी नहिं गोर ॥
हने द्विज के हय हेर प्रवीन,
कमानहि काट निछावर कीन ॥४८॥
जुर्‌यौ द्विज ह्वां पर बाजिय जोर,
कमांन नवीन तजे सर सोर ॥
प्रवीर रु तासँग जे रनवीर,
तमारन झुक्किय तिच्छन तीर ॥४९॥
करी ललकार सु पाठ हि क्र,

(१) मलय पर्वत है ध्वजा में जिसके ऐसा ॥ ४७ ॥ (२) पुरोहित के और अपने धनको भिन्न नहीं समझैं अर्थात् पुरोहित के धनको अपना धन समझैं उन की बुद्धि उज्वल नहीं अर्थात् मलिन है ॥४८॥ (३) शब्द (४) तीक्ष्ण तीर लगने से मूर्छा से झुके ॥ ४९ ॥ पंचमहायज्ञ का रूपक दिखाते हैं (५) ललकार रूप वेदका पाठ हैं

सुरी कृत तोस सपर्यक सूर ॥
पलादिन दीन्ह बलीपन पूर्न,
तितैं रत धार सुतर्पन तूर्न ॥५०॥
तबैं मलयध्वज तीरन तोम,
कर्‍यो द्विज चक्र रछकन होम ॥
भये मिलि पंच महाक्रतु मल्ल,
इला रनवारि सभा सु अचल्ल॥५१॥
सभासद हे ऋपि देखन पूर,
वेद धनुर्विधि यज्वन सूर ॥
रच्यो मृतवारन वेदिय रूप,
जहां जुग जूप भये दुहुँ भूप ॥५२॥
उतैं द्विज छंडिय दीर्घ उसास,
पढ्यो मनुँ सो श्रुति मंत्र प्रकास ॥
हने हय व्हां हयमेध भयो सु,

(१)अप्सराओं का जो संतोष किया है वही सपर्या है (२)मांसाहारियों को आहार दिया है सोही बलि है ॥ ५० ॥(३)समूह(४)जो उसके चक्र रक्षक थे उनको मारने रूप होम किया(५)श्रेष्ठ(६) रणभूमि ही सभा है ॥ ५१ ॥ (७) मलयध्वज और अश्वत्थामा के युद्ध को देखनेवाले ऋषि सभासद हैं (८) धनुर्वेद ही वेद है (९) वीर यज्ञ करनेवाले हैं(१०)यज्ञस्तंभ ॥ ५२ ॥(११)अश्व-

मरे खट संगिय पुन्य नयो सु ॥५३॥

परस्पर ऋषिवचन ॥

मरे भट जो क्रतु यों फल दीन,
प्रथा क्रतुकी रहिहैं न प्रवीन ॥
जु लैं द्विजकौ धन आपुन जांनि,
मिलैं फल याविधि हैं नहिं हांनि ॥५४॥
करयौ वह चक्र रछक्कन होम,
सु भो फल.ह्यां मन मानहु सोमं ॥

कविवचन ॥

रच्यौ रिस द्रोनिय रच्छस रूप,
रन क्रतु सौंक विगारि अनूप ॥५५॥
भग्यौ मलयध्वज निंदित भाग,

मेधयज्ञ(१)संगके छः मनुष्य मरे यही पुण्य हुआ ॥५३॥ (२)यज्ञ का फल आयु बढना है सो भटोंका मरना.फल कहा यह उलटी रीति हुई इसलिये यज्ञ की प्रथा न रहेगी(३) पुरोहित का धन अपना जानैं उनको यही फल मिलता है ॥ ५४ ॥ (४) शीतल मन से(५)युद्ध को राक्षस बिगाड़ते हैं इसलिये अश्वत्थामा को राक्षस कहा(६) युद्ध रूप यज्ञ की सामग्री हाथी रथी रथादिक ॥ ५५ ॥ (७) निंद्य भाग्यवाले मलयध्वज की ध्वजा में प्रीति थी अर्थात् ध्वजा चंचल है जैसे उसका मन चंचल हुआ. ध्वजा में मलय पर्वत का चिन्ह था उस में भ्रांति नहीं

ध्वजा बिच प्रीति रु चिन्ह विराग ॥
गयंद चढ्यौ पुनि सो कहिँ गेर,
फिर्‌यो द्विज घां फिर तोमर फेर ॥५६॥
तबैं वह तोमर कट्टिय बिप्र,
मनौं इकैं पुत्र मर्‌यो सुइ छिप्र ॥
लये पुनि द्रोनि चतुर्दस बान,
चतुर्दस भोनन दानिय जान ॥५७॥
सुवीर प्रवीर चतुर्दस संग,
चतुर्दस लोक लये रन रंग ॥
अरातियकों इभ द्रोनिय ईख,
सज्यौ सरजालन दौं वड सीख ॥५८॥
हनैं पैंद बाननसौं पद हेर,
जहां हिक मार्गन सुंडहि फेर ॥

थी; क्योंकि वह अचल है (१) और (२) बरछी ॥५६॥ (३) मलयध्वज के केवल एक बरछी ही रही थी वह भी अश्वत्थामा ने काट डाली उसमें एकाकी पुत्र के मरने की उत्प्रेक्षा है (४) अश्वत्थामा ने चौदह बाण यों लिये कि इनसे जो चौदह वीर मरेंगे उनको मैं चौदह ही लोक देवूंगा ॥ ५७ ॥ (५ अश्वत्थामा ने और विचारा कि इसको शरसमूह से बड़ी सीख दूं अर्थात् मार डालूं ॥ ५८ ॥ (६) चार बाणों से चारों पैर काट डाले (७) एक बाण से

द्विपै रत ताल रु कातर फेरु[1],
मर्यौ द्विपि द्वौनिहि आसिष दे रु॥५९॥
रुषा मलयध्वजकौं रन रोक,
सँभारहु आसिष ह्यां सरसोक[2] ॥
द्वि बाननसौं भुज द्वै किय दूर,
कर्यौ सर इक्क विना सिर सूर ॥६०॥
जुरैं द्विजसौं रन जो जिंहिं जाम,
लहैं अपवर्ग[4] चतुर्थ[5] ललाम ॥
महारथि हे बहु या नृप संग,
तिन्हैं बहु बानन कीन्ह निषंग[6] ॥६१॥
लगे सर जाल ति संजुत ज्वाल,
मिली कवि पद्महिं तर्क सु माल ॥
कहा द्विजनैं उलटी गति कीन्ह,

(१) शृगाल (२) हाथी प्रहार से कायर होता है इसलिये इसको आशिष देना कहा है कि मैं दुःख से छूटा और तलाव मेरे प्रिय होने से तैंने भी तलाव दिया इससे प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया ॥ ५९ ॥ (३) बाणों का सरड़ाट ही आशीर्वाद है ॥६०॥ ॥(४) मोक्ष (५) पुरुषार्थों में चौथा (६) महारथी बाणों से ऐसे भरगये कि जैसे बाणों से भाथा भराजाय ॥ ६१ ॥ (७) जगत् में यह रीति है कि पहले जीव नि

पुरा छिप लांप पुनर्जिय लीन्ह ॥६२॥
मरयौ मलयध्वज पांडव चीन,
भये मलयाद्रिज वायु विहीन ॥
अनूप सुमंगल भा उफनात,
वहैं सुख ज्हां मलयाद्रिज वात॥६३॥
अमंगल भा इत व्यापिय आन,
प्रवीर कियो रन स्वर्ग प्रयान ॥
परैं विपदा जब होइ कुपर्व,
सुखप्रद होत दुखप्रद सर्व ॥६४॥
भयौ वस काल प्रवीर सु भूप,
कले परि पांडव आहर्व कूप ॥

कहता है पीछे लांपा दियाजाता है इसने उलटा किया कि अग्न्यस्त्र रूप लांपा पहले दिया और पीछे जीव लिया. मुर्देको जलाने के लिये दर्भ घासादि के पूले को जलाकर चिता प्रज्वलित करते हैं उसको लांपा देना कहते हैं ॥ ६२ ॥ (१) मलयाद्रि पर्वत का वायु शीतल होता है सो मलयध्वज के मरने से पांडव उस शीतल वायु से हीन होगये अर्थात् शोक रूप उष्णवायु युक्त हुए (२) जहां मंगलीक वार्ता होती है वहां शीतल वायु आता है ॥ ६३ ॥ (३) बुरा समय आता है तब सुखदायी भी दुःखदायी होजाते हैं ॥ ६४ ॥ (४) युद्ध रूप

फिरी यवनानिय पंडुज फौज,
भज्यो सुतसूरज ज्यों सर मोज ॥६५॥

द्वितीयधाम का सूचीपत्र

छप्पय ॥

छिद्दग लरन श्रुतकर्म चित्रसेन सु तिंहिं विधि रन
प्रतिविन्ध्य रु चित्ररन वृकोदर अश्वत्थामन ॥
संसप्तकन लरन नर रु द्रोनिय को पुन रन ॥
दंडधार अरु दंड हुँहुँनसौं नरँ रन हुव घनँ ॥
अर्जुन सुसरनवर्नँ कहिकैं उग्रायुध सुत मरनलिय
पुन पांड्य देशर्प मवीरनैं अर्जुनसों रन क्रूर किय

दोहा ॥

मलय ध्वज नृपअतिसचिव,उतद्रोनियअरिकाल
पहरद्वितीयसुपद्मकवि, वरनियजुद्धविशाल ६७

इतिश्रीमच्चंडीचरणारविंदचंचरीकचारणवा
____

छग में कूच गये(१)सूरज का पुत्र बाणोंकी मौजसे वन्म
 त होकर फिरा ॥६५॥ (२) युधिष्ठिर का पुत्र (३)भीम
 (४) अश्वत्थामा (५) अर्जुन (६) दंड (७) श्रेष्ठ घा-
 वों से कटकर (८) पांड्य देश के मालिक मवीर नाम-
 क राजा ने ॥ ६६ ॥ (९) बड़ा ॥ ६७ ॥

इति श्रीमती चंडी के चरणारविंद में है चित्त रूप भ्र

साभिधेयचारुसम्वसथवास्तव्यचारणचक्रचक्र-वाकचंडांशुजाज्वल्यमानकाव्याज्ञत्वज्वालाज्वल-ज्जगज्जीवजुष्टजयजीवनवलूंदाख्यग्रामठक्कुर जीवनसिंहप्रतोलीपालवंशभास्करप्रबंधप्रणेतृमि-श्रणकुलोद्भूतश्रीसूर्यमल्लशिष्यपातावतशाखा प्ररूढजगरामात्मजपद्मसिंहप्रभाषितकर्णपर्ववि भाविभूषितवीरविनोदे द्वितीययामयुद्धं संपूर्णम्॥२

भर जिसका, चारनवास नामक सुंदर ग्राम का निवासी, चारण समूह रूप चकवों के लिये सूर्य रूप, जाज्वल्यमान काव्यकी अज्ञता रूप ज्वालाओं से जलते हुए जीवों करके सेवित, विजयके जीवन रूप वलूंदा नामक ग्रामके ठाकुर जीवनसिंह का पोलपात, वंशभास्कर ग्रंथ के रचयिता मिश्रण कुलमें प्रकट हुए श्रीसूर्यमल्लका शिष्य, पातावत शाखावाले जगरामका पुत्र, जो पद्मसिंह उससे रचे हुए कर्णपर्वकी शोभा करके विभूषित वीरविनोद में द्वितीय याम का युद्ध सम्पूर्ण हुआ ॥ २ ॥

इति द्वितीययाम ॥

अथ तृतीययामप्रारंभ॥

दोहा॥

युद्ध जु तीजी जामकों, तीजीप्रकृतिय तंत्र॥
तीजी तिन तिन तोममें, तीजी वनि हैं अत्र॥१॥
जुद्ध तीसरी पहरकों, सूरन सेहर सुभाय॥
जहां जहरकी नहरसों, कातर लहर कुभाय२

छंद मोतीदाम॥

कही फिर पंडुज भिक्षुक फेर,
फिरैं गजं वाजि लियें सँग हेर॥
गजादिक धारन जोग इन्हैं न,
नदंड्यनें दंड नृनाथ अचैंन॥३॥
हने वढि वाजिय हत्थि हरोलें,

(१) नपुंसक (२) और जो ब्याहे हुए हैं उनमें (३) ती अर्थात्स्त्रियों में जिनका जी है ऐसे (४) तृण सदृश उन कायरों के समूह में तीसरी ही होवेगी॥१॥(५) जी का बहलाना (६) अच्छी क्रिया (७) कायरों के लिये (८) खोटी क्रिया की॥२॥(९) कर्ण ने कहा कि पांडव भिक्षुक तो हैं (१०) तोभी हाथी घोड़ों के लिये फिरते हैं (११) दंड योग्य को दंड न देवै तो राजा को पाप लगता है और उसका फल दुःख है॥३॥ (१२) आगे बढकर हरोल के घोड़े हाथियों को

लरे सँग आय मरे भट लोल ॥
हिलैं रथकेतु रथीन विहीन,
हाहा रथिहैं रथ सारथि हीन ॥ ४ ॥
इतैं वर तर्क कुती उर आत,
परी फॅरभूमि मनों रन बात ॥
भगी कटि पांडव फौज बिहाल,
मनों लखि डंकनि बालक माल ॥५॥
भख्यौ अभिमन्यु सिसू छलभाइ,
इहां वह सूतज डक्कनि आइ ॥
कह्यौ हरि पत्थहिं व्यूह विवेक,
डरैं थित मांत्रिक तूं इत एक ॥६॥

मारवाला (१) चंचल भट लड़े और मरे (२) ध्वजा (३) रथवालों के रथ टूट गये और सारथि मारे गये ॥ ४ ॥ (४) पाबूजी के पुजारे कनात में मंडेहुए हाथी घोड़ों के चित्र रखते हैं उस कनात को पाबूजी की या देवधर्मराज की फड़ कहते हैं. वहकभी पवन से गिरभी जाती है उसकी मरेहुए हाथी घोड़ों सहित रणभूमिमें उत्प्रेक्षा है (५) मानों डाकण को देखकर बालकों की माला भागै ॥ ५ ॥ (६) बालक (७) कपट की क्रिया से (८) कर्ण रूप डाकण आई (९) बहुत ज्ञानवाले श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा (१०) मन्त्रवादी ॥ ६ ॥

डुलैं इमं वान बिभूतिय डारि,
[2]अजै खर पै धर देहु निकारि ॥
बन्यौ सुन पारथ मांत्रिक वीर,
[3]ततच्छन प्रेरिय मासक तीर ॥ ७ ॥
रुक्यौ नहिं कर्न गयो दल पार,
[4]यथा कहि मच्छि सु संमुह धार ॥
[5]
[6]भर्यौ उत म्लेच्छ महीपति आय,
[7]सभ्यौ इत सात्यकि सौंज सवाय ॥८॥
कर्यौ रन तीरनकौ रिर्न सीस,
उतार दयौ सु मलेच्छ अधीस ॥
भयो सर स्पर्श भयो अपवित्र ॥
करी [11]बलि पुष्ट पिसाचन चित्र ॥९॥

---

(१) इसप्रकार की बाण रूपी विभूति (भस्म या राख) को डालदें (२) अजय (हार) रूप गधे पर बिठा कर निकाल दें (३) तत्काल उड़द रूप तीर चलाये ॥ ७ ॥ (४) जैसे (५) साम्हने ऊपर से पड़ती हुई जलधारा में मच्छी चली जाती है (६) यवनों का राजा [७] युद्ध सामग्री ॥ ८ ॥ (८) बाणों का कर्ज (ऋण) म्लेच्छपति के सिर पर किया (९) वह ऋण [कर्जा (१०) सात्यकि म्लेच्छ के बाणों से अशुद्ध हुआ (११) उस अशुद्धि को दूर करने के लिये पिशाचों को जलाकर अनेक तरह

घेरयौ तनु बानन तिच्छन धार,
बड़ी लघु[2] बुत्थन बुत्थ बगार ॥
अरातिन प्रानन[3] भार उतार,
सिनिसुत उज्जल भौ जिमि तार[5] ॥१०॥
मच्यौ रन पुंड्र महीप मलेच्छ,
सज्यौ इतकौं सहदेवहु स्वेच्छ[6] ॥
जॅरे बहु तिच्छन बान जुवान,
परे कटि हस्ति निसादि[8] अप्रान ॥११ ॥
हन्यौ जिहिं म्लेच्छहिं सात्यकि हेरि[9],
बढ्यौ तिंहिं पुत्र विलच्छन बेर ॥
चल्यौ सहदेव करूं [10]इहिं चैन,
बरज्जिय हां नकुल प्रथु[11] बैन ॥१२ ॥
अट्यौ[12] इत म्लेच्छ तनूज[13] अचल्ल,

की बलि दी ॥ ९ ॥ (१) शरीर को घड़ दिया (२) छोटी मांस की बोटी बोटी बिखेरदी (३) शत्रुओं के जो प्राणों का भार था वह उतार कर (४) सात्यकि (५) चांदी के जैसे उज्वल हुआ ॥ १० ॥ (६) अपनी इच्छा से (७) तरुण भट ने बहुत तीक्ष्ण बाण जड़ दिये (८) हाथी पर चढ़ने वाले प्राण रहित कट कर पड़ गये ॥ ११ ॥ (९) ढूंढकर (१०) इसके सुख करूं इस विचार से (११) मोटे वचनों से नकुल ने मना किया ॥ १२ ॥ (१२) चला (१३) पुत्र.

मिल्यौ उततैं नकुल प्रतिमल्ल[1] ॥
हन्यौं तिँहिँ[2] भूगत माद्रिज बान,
गये[3] तल गंग सजैं जनु स्नान ॥१३॥
जुरे सहदेव दुसासन ज्वान,
पुरातन[4] प्रीतिहिँ लीन पिछान ॥
परस्पर पूछि कुसी भरपूर,
सजी नवछावर बानन सूर[5] ॥१४॥
तजे सर[6] तीन दुसासन तांन,
दये सहदेवहु सत्तर बांन ॥
दुसासनकौ द्रढँ[7] दावन दाटि,
किये रंज[8] सूत धनू हय काटि ॥१५॥
बरक्खिय पंडु महा झर बान,
दुसासन देह सु[9] घास समान ॥

---

१) शत्रु (२) नकुल के बाण जमीन में घुसगये (३) पाताल गंगा में मानों उनका स्नान सिद्ध होवै ॥ १३ ॥ (४) पुरानी प्रीति को पहिचान ली (५) बहादुरों ने ॥ १४ ॥ (६) बाण (७) मजबूत पेचों से दबाकर (८) सारथि, धनुष और घोड़ों को काटकर चूर्ण कर दिये ॥ १५ ॥ (९) वह दुःशासन का शरीर जवासे के समान है

मर्‌यौ रथि यौं मन सारथि मान,
गयौ दल पार रथी थितयान ॥१६॥
तहां थित कर्न महाधनु तीर,
वढ्यौ लखिकैं नकुल प्रति वीर ॥
उपज्जिय तौ हिय चीन्ह अचैन,
सुनाय कहे वच सूतज सैन ॥१७॥
वढैं इतकौं इक को इँहि वेर,
भटालिय मोसँग लैं भट मेर ॥
जहां कहि कर्न दुहूं कर जोर,
खरौ इक हौं नहिं तो सम ओर ॥१८॥
कह्यौ कित आगम कोमल गात,
करैं कहा बाल कह्यौ कहा मात ॥
मिल्यौ नहिं भोजन का मुख म्लानि,

(१) सारथि मन में रथी को मराहुआ जानकर सेना के पार गया (२) रथ में स्थित है दुःशासन रथी जिस में ॥ १६ ॥ (३) बडे हैं धनुष और तीर जिसके (४) उस नकुल के हृदय में दुःख को जान कर ॥ १७ ॥ (५) मेरी तरफ बढ़कर आवै ऐसा वीर कौन है (६) योद्धाओं की पंक्ति मेरे साथ भिड़ा ले सके (७) दोनों हाथ जोड़ कर (८) खड़ा हूं (९) तेरे जैसा दूसरा नहीं ॥ १८ ॥ (१०) हे कोमल शरीर वाले तेरा किधर से आना हुआ (११) मुख बिगड़ा क्यों है

गिरैं कर सस्त्र भई कहा ग्लानि[1] ॥१९॥
कह्यौ तब पंडुज[2] आँखिन घोर,
इतौ दल तोसम वीर न और ॥
खरौ वर धीरज को वड खास[3],
गिनैं नहि भूख गिनैं नहि प्यास॥२०॥
खरक्किय[4] नग्ग विराट सु खग्ग[5],
अनोपम भग्गि भयो नर[6] अग्ग ॥
परे पग केतक काँटक पूर[7],
छुरे कति तू न मुरयौ रन सूर ॥२१॥
भई सिर्ल[8] कृच्छ्रनतैं[9] भट भेर,
जहां न रुक्यौ रु भयो नहि जेर[10] ॥
पर्यौ अकुलाय[11] लगी तित प्यास,
पियौ नहिं नीर[12] हु हो अतिपास ॥२२॥

---

(१) हाथों से शस्त्र गिरते हैं और थकेला (परिश्रम) क्यों हुआ ॥ १९ ॥ (२) नकुल ने आँखों को फिराकर कहा (३) बड़ा भंडार ॥ २० ॥ (४) खरराहट किया. (५) अच्छे खड्गों का (६) अर्जुन के अगाड़ी (७) पैरों में कितने ही कांटे पूरे अगगये (चुभगये)॥२१॥(८) पत्थर (९) बड़ा (अत्यन्तअधीन)(१०) व्याकुल हो कर पड़गया (११) जल की तृष्णा (इच्छा) लगी (१२) जल अत्यन्त पास नहीं था॥ २२ ॥

परैं कहुँ श्रोनन[1] पारथ नाम,
जवैं न अरोगत[2] नौ दस जाम ॥
सुने हम आप समान न सूर,
गिनौं नहि भूख रु प्यास गरूर[3] ॥ २३ ॥
सुजोधनकौं पकरयौ चित्रकेतु,
उरःछद सस्त्रहु हे वहु हेतु[4] ॥
हिल्यौ नहिँ दीन्ह हजारन हांक[5],
ततच्छिन खाय लई कि तलाक[6] ॥२४॥
धरी बिधि[7] या विधि तो विच धीर,
सहैं[8] फटि जात न तोर सरीर ॥
व्यथाकर[9] पंडुजके सुनि वर्न,
दयो नहिँ जाव[10] कह्यो कुपि कर्न ॥२५॥
बडे हम कातर[11] तूं वड वीर,

---

(१)कानोंमें(२)नहीं खाता है नौ या दश प्रहर तक(३)अभिमानमें आया हुआ॥२३॥(४)जिस वक्त चित्रकेतु नामक गन्धर्वने दुर्योधन को पकड़ा था उस वक्त बकतर और शस्त्र भी थे(५)दुर्योधन ने अनेक वार तुझको बुलाया तो भी रक्षा के लिये नहीं चला(६)क्या सोगन खाली॥२४॥(७)ब्रह्माने इस तरह (८) तेरा ही शरीर सहता है फटता नहीं(९)पीड़ा देनेवाले नकुल के अक्षर सुनकर(१०)उत्तर न दिया और क्रोध करके कहा ॥ २५ ॥ (११) कायर

खरो रह देहु सु हत्थ सु खीरं ॥
भर्यौ मुख भल्ल विहीनन बान,
प्रभा सु जुहारन कुंडिप्रमान ॥२६॥
व्यथाकर अर्कजके लगि बान,
कुप्यो पुनि पंडुज कर्षि कवान ॥
कहै कटुबोल दुहों दल बीच,

नकुलवचन ॥

निहार हनूं इहिं ठोरहिं नीचं ॥ २७ ॥
कहां तुव भूख सु पुच्छिय बात,
कहूं तिंहिं उत्तर ही हरखात ॥

---

(१)खड़ारह (२)युद्ध रूप उष्ण खीर में हाथ दे (३) फल रहित पाणों से मुख भरदिया (४) जवारों के कूंडे के जैसी कान्ति हुई. जवारों के बोने के पात्र को मरुस्थल में कुंडी कहते हैं सो मुख में कुंडी की उत्प्रेक्षा है॥२६॥ ५)कर्ण के(६)नकुलने धनुषको खैंचकर(७)पाण्डव और कौरवों की सेना में [८] तू देख(९)हे दुष्ट कर्ण तुझको इसी जगह मारता हूं. यहां कर्ण की प्रशंसा है कि अर्जुन रहित चारों भाइयों को नहीं मारने की प्रतिज्ञा को निबाहता है. और नकुल की भूल है कि जो बडे भाई अर्जुन की कर्ण को मारने रूप प्रतिज्ञा पर अमल नहीं करता ॥ २७ ॥ (१०) और कहा कि जो तूने पहले भूख की बात पूछी थी (११) उसका जवाब ऐसा देता हूं कि तेरा चित्त प्रसन्न

भली तुव प्राननकी मम भीख,
विजै रस पीवहु गोरस ईख ॥२८ ॥
दये गन बान गए सब व्यर्थ,
अरैं खलकै न करैं श्रुति अर्थ ॥
गदा गहि हत्थ पटक्किय भट्ट,
कटी बिच वत्त मनौं वतकट्ट ॥२९॥
हने धनु वाजिय स्यंदन सूत,
परयौ निसकिंचर्न पंडु सपूत ॥
कटे सब सस्त्र कटे सब वास,
परयौ ततकाल जन्यौं सुत पास॥३०॥
जथा मत संकर द्वैत उडाइ,

हो जाय (१) यद्यपि जगत् में भीख मांगना बुरा है तथापि तेरे प्राणों की भीख मुझको बड़ी प्यारी है(२) सेलड़ी [सांठा] के रस के तुल्य विजय रूप रस पीऊंगा ॥ २८ ॥ (३)निष्फल [४] दुष्ट के साम्हने वेदका अर्थ(५) बीच में ही कट गई (६) मानों बात काटने की आदत वाले पुरुष की बात कट जावै ॥ २९ ॥ (७) रथ और सारथी (८) सब वस्तु रहित [६] वस्त्र (कपड़ा) (१०)उस वक्त पैदा हुआ बालक माता के पास पड़ा अर्थात् रण भूमि रूप माता के ऊपर पड़ा ॥ ३० ॥(११)जैसे शंकराचार्यजी का मत सब द्वैत वस्तु को उड़ाकर एक ब्रह्म को रखता है ऐसे एक कर्ण रहा और कुछ न रहा

उहाँ इक्क ब्रह्महिं शस्त्रत लाइ ॥
बडे नर भाखत हैं सु जवान ॥
जबैं थिरै चित्त तबैं सब ज्ञान ॥ ३१ ॥
दयौ वर कर्न दुरी स्मृति दूरि,
भयौ भ्रम भूलि भयातुर भूरि ॥
पछारहिँ कर्न रहैं नहि मान,
मही छिन द्वै छिनके मिजमान ॥३२॥
प्रँथा वच कर्न गयो नहिँ पार,
तज्यौ तिंहिँ जीवत बानन टार ॥
लरौं कित पत्थ उतैं ललकारि,
हरथौ दल पंडुजकौ हलकारि ॥३३ ॥
गयौ सहदेव गिरयौ तित भ्रांत,
विलोकत मुक्ख न आवत वात ॥

---

(१)बडे आदमी(२)जब स्थिरचित्त रहता है तब सब ज्ञान रहते हैं ॥ ३१ ॥(३)जो चारों को न मारने का वर दिया था उसकी यादगिरी छिपगई (४) संदेह से (५) मरने के भय से बहुत व्याकुल हुआ(६)एक क्षण के या दो क्षण के पाहुने हैं॥३२॥(७)जो कुन्ती को वचन दिया था उस का उल्लंघन नहीं किया(८)अर्जुन उधर है अब ललकार वाला मैं किधर लडूं(९)बुलाकर॥३३॥(१०)नकुल(११)नकुल के मुख को देखता है और इसके मुख से बात नहीं निक-

संभारहिँ अर्जुन यौं चित धारि,
लयौ निज भ्रातहिँ स्यंदन डारि ॥३४॥

करन वचन ॥

इहाँ भट पंडुज हौ मम अग्ग,
खिस्यौ कहुँ हेरन खेटक³ खग्ग ॥
परयौ श्रम कर्न तकैं मन रोक,
गयौ गडि भूमि किधौं सुरलोक ॥३५॥
किधौं सर वारन धारन लग्गि,
गरयौ इतमैं कि जरयौ रिस अग्गि ॥
उडै सर पौंन सु पंख विहीन,
कह्यौ कुपि कर्न कुतर्क न कीन॥३६॥
खरौ इहिं ठोर करौं इक ख्याल,
सज्यौ भुवतैं नभ लौं सर जाल ॥
हनौं नहिं आँन चढै कहुँ हत्थ,

लर्ता (१) इस कर्ण को अर्जुन स्हालेगा (२) रथ में ॥ ३४ ॥ (३) कहीं ढाल तलवार ढूंढने गया है (४) मन को रोककर देखता है (५) क्या स्वर्ग में गया ॥३५॥ [६] क्या तीरों के प्रहारों से भालों के लगगया अथवा [७] लोहू में गलगया [८] क्या क्रोध रूप अग्नि में जलगया [९] क्या बाणों के पवन से उड़गया, क्योंकि वह पंख रहित था इससे ॥ ३६ ॥ [१०] फंदा

रहैं [1]बच कुंतियके सिर सत्थ ॥३७॥
उतै सर [2]पारथ पौंन अचैन,
सहैं न [3]महाज्वर संजुत सैंन ॥
परी सब सेन [4]त्रिगंर्तनकेर,
रह्यौ नहिं इक्क फिरैं रन फेर ॥३८॥
गही [5]टुक्क गांजिवकी गुन मौंन,
कह्यौ [6]हरि पत्थ चलैं पथ कौंन ॥
कहैं [7]इम कँर्न खरौ रन बीर,
पियैं कित [8]प्यास दुखी मम तीर ॥३९॥

॥ दूतवचन ॥

कर्यौ [9]बहु माद्रिजकौ अपमान,
पर्यौ रन बीच [10]व्यथातुर प्रान ॥

---

(१)कुंती के वचन सिरके साथ रहते हैं॥३७॥(२)अर्जुन के वाणौं रूप पवन दुःख देनेवाला है(३)उसको बड़े ज्वर वाली सेना कैसे सहै (४) त्रिगर्त्त देश के राजाओं के अगाड़ी॥३८॥(५)गांडीव धनुष की प्रत्यंचा ने मौन ली अर्थात् कुछ तीर चलने बंद हुए (६) अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा हे हरि अब किस मार्ग से चलैं (७) तब हरि ने कहा कि यह कर्ण खड़ा हुआ कहता है कि (८) मेरे तीर प्यार... हैं कहां पीवैं ॥ ३९ ॥ (९) नकुल का कर्ण ने अपमान किया (१०) यह नकुल युद्ध भूमि में पड़ा है

॥ कविवचन ॥

कही इँहिं दूत सुनी नर कांन,
गहे कर यौं बर गंजिव बांन ॥ ४० ॥
हरुयौ नर ठ्हां हरिकौ सुख हेर,
फिराक लई हय वग्गहि फेर ॥
अरयौ नहिं पत्थ जहाँ भट आन,
गयौ थित कर्न तहां सु गुमान ॥४१ ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

॥ घनाक्षरी ॥

द्रौपदीके ऐंचे बार जंघाकौं पसार कही,
यहां बेठ ऐसेनकौं को नहि धिकार देत॥
जेतेजेते नीच काम कीन्हें दुरजोधननैं,
तेते सब रावरी सलाहकौं पसार देत ॥
जुद्धमैं न छत्री भजैं तू न छत्री सूतज है,
कोऊ छत्री कहैं तो विचार लेहु गार देत ॥
पत्थपैं गरी न दार मंत्र लीनो पुत्र मार,

और उस के प्राण पीड़ा से व्याकुल हैं. (१) अर्जुन ने ॥ ४०॥ (२)फिराक श्रीकृष्ण ने घोड़ों की वाग को फेरी (३) जहां दूसरे भट खड़े थे वहां अर्जुन अड़ा हो नहीं(४)जहां अभिमान सहित कर्ण खड़ा था वहां गया ॥ ४१ ॥ (५) फैलाव(६) भागते हैं (७) अर्जुन के पास आपकी दाल नहीं गली. (८) द्रोण के पास अर्जुन के

मा द्विजकौं मान मार कुर्यो हसि तार देत॥४२॥

छंद मुक्तादाम ॥

अरे रन कर्न रु पारथ उद्ध,
जहाँ जुग सैंन बिसारिय जुद्ध ॥
कढे दुहुँ बान समान कराल,
कढी जुग जीहँ मनौं अहि काल॥४३॥
कठढ्ढिय वीरन जोरि कबान,
अरे अहि ओठ उभै अपमान ॥
भये दल द्वै अरराहट भाव,
छिपी तिहिं फौज जरैं दल दाव ॥४४॥
उभै भट छुट्टिय बान अपार,
बढै वर बीरन पीर बिथार ॥
लगे नरके तिहिं ताँ नर बान,
अरी नहि फूलछरी कित आन ॥४५॥
जथाविध भक्षक मात रु तात,

पुत्र को मारने की सलाह की ॥४२॥ (१) दोनों के बाण समान निकले जिस में उत्प्रेक्षा है कि (२) मानों यमराज रूप सर्प की दोनों जीभें निकलीं ॥ ४३ ॥ (३) खैंची (४) काल रूप सर्प के दोनों ओष्ठ उपमान हैं (५) दोनों धनुषों की अरराट है वोही फुंकारा है ॥ ४४॥ (६) कर्ण के लगे (७) उस फाल्गुन के ॥ ४५ ॥

भखैं भख बाल रहैं बिललात ॥
कह्यौ हरि पारथकौं करि कोप,
खिसैं नहिं कर्न खरौ पग रोप ॥४६॥
हकारिय[2] सूतहिं पारथ वीर,
तमार[3] दई लगि तिच्छन तीर ॥
धुं[4] घायन घूम रह्यौ रन सूर,
जनौं वड बात बिहाल खजूर ॥ ४७॥
भये भल खोरिय[5] तिच्छन भाल,
श्रवैं तिहिं स्वेद[6] सु साधु सुचाल ॥
परैं तित श्रोनित धार अपार,
अनूप फलावलिके अनुहार ॥४८॥
मरयौ नहि कर्न मरयौ[7] तिहिं मोह,
छुटा लखि पत्थहि भौ अति छोह[8] ॥

---

(१)परस्पर बाण न लगने में उपमा है कि जैसे माता पिता चटोकड़े होवैं वे खाने लायक वस्तु आप खाजाते हैं और बालक रोते रहजाते हैं॥४६॥ (२) कर्ण को ललकारा (३) तीक्ष्ण तीरों ने लगकर कर्ण को मूर्छित किया (४)वह कर्ण॥४७॥(५) तीक्ष्ण भाले ही खजूर के खोड़ अर्थात् लम्बी डांडी के नीचे के अवयव हैं(६)पसीना यही सीधू नामक (खजूर का मद) मदिरा या सामान्य मद है ॥४८॥ (७) मूर्छा मिटगई(८)अत्यन्त क्षोभ हुआ

बरक्खियं हाटक हेल सु बान,
हरे हुव कृष्ण उभै उपमा न ॥ ४९ ॥
दुहूँन कह्यौ करि हास्य चमूप,
रचे कित नील सु बंदर रूप ॥
भए भुव साहितके कवि भूप,
रह्यौ रँग स्याम हस्यौ इक रूप॥ ५० ॥
कह्यौ कुपि पारथनैं ततकाल,
खरौ रहि खूब करौं दिक ख्याल ॥
भस्यौ तनु साँमल बानन भीर,
न बीच जु एक रुपैं कच चीर ॥ ५१ ॥
जुहारहु मो सरकौ यह जोग,
रुप्यौ रिन रिच्छ लखैं सब लोग ॥
परयौ खिति कर्न सु विस्मृति पूरि,

---

(१) सुनहरी कलई के बाण थे (२) उन बाणों से दोनों कृष्ण (अर्जुन और श्रीकृष्ण) हरे रंगवाले हो गये. पीला और नीलारंग मिलने से हरा रंग होता है ॥ ४९ ॥ (३) यहां नील बंदर रूप कैसे हैं? इसका अभिप्राय यह है कि (४) साहित्य के कविराजों ने हरा और नीला रंग एक ही कहा है (५) श्याम वर्ण ॥ ५० ॥ (६) बाणों के दृढ संयोग से केश की फाड़ ॥ ५१ ॥ (७) सलाम लो मेरे तीरों का यह जोग है (८) रोम रोम में बाण लगने से रींछ की उपमा है (९) बेहोशी.

भग्यौ दल पारथसौं भय भूरि[1] ॥५२॥
अरी उपमा उत सोचित आय,
परैं मनु ठूँठ[2] चिनंगिय माय ॥
लख्यौ तव पुत्र कह्यौ ललकार,
दियौ न भगौ वट[3] वीरन डार ॥ ५३ ॥ ॥

सेनावचन ॥

लरैं लुभि पारथसौं ललकार,
रचैं रुपि जो जमसौं कुपि रार[4] ॥
जिमावहिं[5] ती सुतकौं घर जांहिं,
इहाँ इक बानहिसौं मरिजांहिं[6] ॥ ५४॥

॥ अपर सेनावचन ॥

मरैं नहि हेतु परयौ इक दीठ,
परैं नहिं पत्थ[7] भगैं पर पीठ ॥
घनी तब फौज भगी घबराय,

---

(१)बहुत॥ ५२ ॥(२) लोगों के एक साथ भगने में ठूंठ के पड़ने में चिनगें उठने की उत्प्रेक्षा है (३) मरोड़ (टेढ़ाई) को छोड़कर दियो याने खड़ेरह कर शोभा युक्त होआ यह वीरों से दुर्योधन कहता है ॥ ५३ ॥ (४) जो रुपकर यमराज से युद्धकरै वह अर्जुन से लड़ै (५) स्त्री (६) जो तुम्हारा कहना माने वह एक बाण से माराजावै ॥ ५४ ॥(७) अर्जुन भगे हुओं की पीठ पर नहीं लगता

अर्यौ उत ठौं[1] फिर पारथ आय॥५५॥
करी कति कर्न बुलावन कूकैं[2],
चलैं जिम चारन त्यागहिं[3] चूक ॥

॥ सेना वचन ॥

लयौ इस त्याग चले सब लोग,
जु हैं इत कर्न बडाइय जोगं ॥ ५६ ॥
इतैं इभ आवहिं अँर्व[4] अनेक,
किते रथ बस्र रु जेवर केक ॥
इहाँ बगरे फिरहैं विधि[5] अग्ग,
सँभारहि ओर न कर्न समग्ग[6] ॥५७॥
महा मनुहार वनैं नहि मूक,
चरैं इत काल फिरैं कित चूक ॥
कलत्र[7] उडाय रही यह काग,
भिरैं[8] नहिं भाग भयो कहि राग ॥५८॥

---

(१)इसलिये अर्जुनों की बाजू में हो कर उधर साम्हने आ खड़ा हुआ है ॥ ५५ ॥ (२) पुकार (३) त्याग बंटे पीछे प्रतिष्ठित कवियों को घोड़े हाथी दिये जाते हैं ॥ ५६ ॥ (४) इधर हाथी और घोड़े अनेक आते हैं (५)भाग्य के अगाड़ी बिखरे हुए (६) यहां प्रतिष्ठित कर्ण ही है इसलिये यह सबको सम्हालेगा ॥५७॥(७) स्त्री घर पर पति के घर आने के लिये कागको उड़ारही है (८) हम भिड़ैं नहीं हमको भाग्य ने स्नेह से

इस्यौ कहि पारथ जोर सुहात,
रहौ इक रात पधारहु प्रात ॥
इहँ घर रावर वात न ओर,
कृपा कर हेरहु नैंनन कोर ॥५९॥
दुरे सुन भाखियं नैंनन ढेर,

सेनावचन ॥

फिरैं ति फिरैं जम जाठर फेर ॥
दयौ नहि व्यास सु उक्ति स्वदाव,
सज्यौ कवि पद्म स्ववंस स्वभाव ॥६०॥

संजय वचन॥

इहा हुवतो दलको अपहास,
परयौ तित कर्न सु पुन्यहि पास ॥
कुती पदमेस रवीसुत क्रुद्ध,
जुट्यौ जु महाबल उत्कट जुद्ध ॥६१॥

॥ चंद्रशेखर ॥

उड्डिय उलूकँ अराति सूक रु,

कहा तुम भागजाओ ॥ ५८ ॥ (१)प्रातःकाल(२) हम को देखो ॥ ५९ ॥ (३) यमराज के पेट में फिरता है वो पीछा फिरता है(४)अच्छी कल्पना पर वेदव्यासजी ने अपना पेच न दिया॥६०॥(५)ठट्ठा(६)केवल कर्ण और उसका पुण्य रहा और कोई न रहा॥६१॥(७)शकुनि का पुत्र वही

कूक काकनलौं करैं कति ॥
तित पंखलौं अतिपंख जुक्त,
प्रहार मार्गन तिग्मकी तति ॥
धृतराष्ट्रपुत्र जुजुत्सु संक्रुद्ध,
धाय दाय वतायकैं घन ॥
पृथु कोप पेचकैं पै पर्यौ कहि,
रोप पद छलैं लोपकैं मन ॥ ६२ ॥
पटु बांन कांनन पास आनि,
उलूक पांनिनमैं दये कुपि ॥
मनु सीख लिन्हिय ईखतैं तनु,
खेतमैं धसिकैं रहे छुपि॥

घूक यानी उल्लू उड़ा, यहां उलूक शब्द में श्लेष है. और शत्रु शुष्क हो गये और कितने ही कौओं के माफिक कूका करते हैं (१) यहां घूघूके पांखों के जैसे पांखों सहित इसके तीखे तीरों की पंक्ति है (२) धृतराष्ट्र का बेटा युयुत्सु नामक (३) दृढ (४) बड़े क्रोध वाला उलूक नामक शकुनि के पुत्र पर पड़ा (५) और कहा कि चित्त के कपट को दूर करके युद्ध में पैरों को रोप ॥ ६२ ॥ (६) तीखे तीरों को (७) हाथों में (८) मानों इन्होंने ईख (सेलड़ी या सांठा) से यह शिक्षा ली (९) शरीर रूप खेत में घुसकर छिप रहे. किसानों

धनुजोरि तोरि रु जोरि घोरन,
फोरि फोरि जुजुत्सुकौ हिय ॥
दुहुँ ओर नैंनन चोरि गो,
रनैं छोरि दोरि जुजुत्सु हा लियँ॥६३॥
अब कोपिकैं पद रोपि,
श्रुतंकर्म्मा अलोपं समहिकैं उत ॥
रथ सारथि बाजि हनैं तबैं कुपि,
सतानीक अनीकँ किय द्रुत ॥
भल लीन्ह अर्गल अरवगल दलि,
सूत दलमलिकैं दल्यौ दल ॥

की यहां यह परिपाटी है कि सांठे के एक २ हाथ भर के अंदाजन टुकड़े करके उनको भीजी हुई हल की धांस में पैर से दबा देते हैं (१) धनुषों की जोड़ी (जोरि पहिला और दूसरा लिया हुआ) को तोड़कर और घोड़ों की जोड़ी को फोड़कर और युयुत्सु के हृदय को फोड़कर (२) दोनों तरफ के नेत्रों को चोरकर अर्थात् लज्जित होकर चलागया (३) युद्ध छोड़कर और दौड़कर (४) युयुत्सु ने हाहा कार किया अर्थात् उसको देखनेवालों ने हायरे हायरे ऐसा कहा ॥ ६३ ॥ (५) श्रुतकर्मा नाम (६) प्रकट सजकर (७) जल्दी युद्ध किया (८) अच्छी आगल हाथ में ली (९) घोड़ों के कण्ठों को दलकर और सारथि

रतखालै चल भल भूमि हुव चल,
पापके बल ज्यौंहि दूवमल ॥६४॥
सुतसोमनें सर तीन दिय,
सकुनी कुनी रु मुनी भयौ तब ॥
जिय सोमन्हैं सुतसोमकी,
सुकृपान अर्द्ध कटी दटी जब ॥
तब खंड खग्गँ उठायकैं,
सुतसोमकौं पकस्यौ लस्यौ रन
श्रुतकीर्ति रथ सुतसोम गौ,
सकुनी लरयौ दल घोरसौं घन ॥६५॥
कुपि धृष्टद्युम्न कुरू चमू,
पर जातहौ कृपं डट्टयौ कुपि ॥

को मरोड़कर सेना को चूर्ण की (मारी) (१) श्रेष्ठ रुधिर का प्रवाह चला और जमीन धूजी (२) जैसे पाप के बल से धर्म का बल कांपजावै ॥ ६४ ॥ (३) सुतसोम नामक भीम के पुत्र ने तीन बाण दिये जिससे शकुनि (४)लँगड़ा (लूला) हुआ और मौनवाला अर्थात् बोलने से रहित हुआ (५) जीव में हीनक होकर (६) अच्छी तलवार आधी कटगई (७) टूटी हुई तलवार (८) अर्जुन के पुत्र श्रुतकीर्त्ति के रथ पर सुतसोम गया (९) भयानक सेना से निरन्तर लड़ा ॥ ६५ ॥ (१०) सेना पर (११)कृपाचार्य ने क्रोध कर डाटदिया

जनु सांति छोभहिं[1] त्यागें[2] लोभहिं,
कीर्ति दोषहिं दट्टयौ रुपैं[3] ॥
धनु तांन बांन कृसानुं[4] सत्रुन,
मान मान जरावने गनि ॥
धैर[5] धूज धूजिय धृष्टद्युम्न सु[6],
त्याग शस्त्र विराग जसँजनि[7] ॥६६॥
द्विज[8] मोर प्रानन दच्छना,
लीन्ही चहैं चल भीमपैं द्रुत ॥
सुनकैं[9] चल्यौ लहि सारथी,
कप भाखि[10] छत्रिन गार यौं श्रुत ॥
मत भाग आग अँगार[11] मो हिय,
जाग जंग सुखग्ग लै कर ॥

॥ कविवचन ॥

---

(१)क्रोध को(२)दान(३)ठहरकर(४)तीरों सम्बन्धी अग्नि. शत्रुओं के माया और अभिमान को जलाने के लिये समझ कर(५)पृथिवी(६)वह धृष्टद्युम्न(७)जसके जन्ममें है वैराग्य जिसका॥६६॥(८)कृपाचार्य मेरे प्राणों की दक्षिणा लेना चाहता है (९) हे सारथि तू जल्दी भीम के पास चल (१०)कृपाचार्य ने कहा यह क्षत्रियों को भागने की गा-ल लगती है ऐसा मैंने सुना है (११) मेरे हृदय में अग्नि बखेरकर युद्ध में अच्छा खड्ग हाथ में ले.

अनहानि तो तित कांन दैं न,
सुजांन ह्यां अति प्रानकौ डर ॥६७॥
कृप मलै[2] तो कृपपैं रह्यौ,
भगि गौ[3] कृपा निज जीपपै करि ॥
बनि वैनतेयँ विशाल कृप,
घन संख पूरि समक्ष अहि[5] अरि॥
जित[6] कोपि तंडिय रारमंडिय,
ह्यां सिखंडिय चंडिकौं[7] जजि ॥
सुन व्यूढकर्म्मा[8] व्यूढवर्म्मा[9],
उग्र कृतवर्म्मा जुट्यौ साजि ॥ ६८ ॥
जुरि दुँहुँन बान कबान कढ्ढिय,
त्यौंहि[10] काढ्डिय यौंन[11] जोरिय ॥
रनछोनि[12] छंडि सिखंडि भंडियँ[13],

---

(१)जो तृणमात्र भी हानि होतो धीर पुरुष कांन नहीं देते अर्थात् नहीं सुनते सो यहां तो प्राणों का बडा डर है ॥६७॥(२)लजाह(३)दया(४)कृपाचार्य ने गरुड़ बनकर हढ शंख को बजाया(५)शत्रु रूप सर्पों के साम्हने(६)जहां क्रोधकर गर्जना करी (७) देवी की पूजा करके (८)बडे कामों वाला (९) बडा है बकतर जिसके ॥ ६८ ॥ (१०) वैसे ही(११) सवारी का आपस का जोड़ा(१२)युद्ध भू-मि को छोड़कर(१३) तिरस्कृत हुआ.

धृष्टद्युम्नहिं संग दोरिय ॥
पंचालके सुत हे इन्हैं,
पहुँचाय दिय पंचालके दल ॥
मिजमान मांन वधावनौं थिक,
मांनि गौ दल पंडुकौ भल ॥ ६९ ॥
इततौ सुयोधन क्रूर क्रोधन,
लेस बोध न प्रानकौ उर ॥
उत धर्मजायौ दीह दायौ,
रंग आयौ जीतकौं जुर ॥
द्रढ यान भूप समान तान,
कबान बानन सौं छये दुव ॥
दिय तांनि धर्मज बांन धुक्किग,

---

(१)ये दोनों पंचाल राजाके पुत्र थे उनको उनकी फौजने पहुंचा दिया अर्थात् पंचाल की फौज भी साथ भगगई (२) ठीक जानकर अच्छी पाण्डवों की सेना भी उन्हें मिजमान जानकर मान बधाने को गई अर्थात् यह भी संग हो भगी॥६९॥(३)क्रोधी[४]हृदय में थोड़ा भी ज्ञान नहीं था (५)युधिष्ठिर(६)बडा है दावा जिस का, अर्थात् युद्ध कर के राज्य का आधा हिस्सा लेने वाला. जीतने के लिये जुड़कर आया (७) दोनों राजा तुल्य हैं (८) धनुषों को खैंचकर(९)युधिष्ठिर ने

कृपान[1] हानि पिछान तव सुव[2] ॥ ७० ॥
क्रुप[3] छोभ छोनिप त्यौं अहौनिहिँ[4],
हौंनि द्रोनिय हू करैं कुपि ॥
मिलि कर्न ऊपर कर्न नृपकौ[5],
अर्न[6] पंडुज संग ठहाँ रुपि ॥
भट भीम पारथ सात्यकी रु,
सिखंडि आदिक पांडु संगिय ॥
इतके[7] अटे उतके[8] अटे,
इतके सजे उतकेसजे जिय[9] ॥ ७१ ॥
इतके लखे उतके लखे,
इतके अरे उतके अरे भट ॥
इतके मचे उतके मचे,
इतके नचे उतके नचे नँट[10] ॥
रथकौं तथा रथिकौं तथा रँथ[11],

(१)तलवार झुकगई(२)संजय धृतराष्ट्र से कहता है कि तेरे पुत्र ने हानि पहिचान ली॥७०॥(३)क्रोध उत्पन्न होने की भूमि(४)क्रोध करके नहीं होनेवाले को होनी करनेवाला ऐसा अश्वत्थामा भी(५)राजा दुर्योधन की ऊपर करने के लिये(६)युधिष्ठिर के साथ वहां अड़ने के लिये(७)कौरवों के(८)पाण्डवों के(९)अपने सब जी से तैयार हुए ॥७१॥ (१०)विलक्षण नांच करनेवाले(११)रथ के अंग पहिया

अंग रंग उछार अट्टिय ॥
कट[1] काटिकैं कटि[2] काटिकैं,
कटि[3] के कपानन काटि कट्टिय ॥७२॥
कति हत्थिं हत्थिन हत्थ हत्थन,
मत्थ मत्थ भिराय मारत ॥
कति बोलं बोल अलोल व्है रु,
हरोलतैं हटि हीय टारत ॥
भट केक मुट्ठिन मार दैं,
अजमेधं[11] ज्यौं गजमेध मंडिय ॥
आहूति[12] वीरन हूति[13] व्हीं हठ,
दूति मृत्यु बुलाइ चंडियं ॥ ७३ ॥

आदि युद्ध भूमि में उछालकर चले (१) हाथियों के कपोलों (गण्डस्थलों) को काटकर (२) कमर काटकर (३) कितने ही हाथियों को खड्गों से काटकर (४) युद्ध करने वाले स्वयं कटगये॥७२ (५) हाथियों को हाथियों से (६) सूडों को सूडों से (७) भिड़ाकर मारें (८) कितने ही वीर बोलों को बोलों से (९) निश्चल होकर (१०) अगाड़ी की फौज से हटकर मनको युद्ध से हटाते हैं (११) अजमेध यज्ञ की तरह (अजमेध में बकरे को मुट्ठियों से मारते हैं) गजमेध यज्ञ किया (१३) वीरों को बुलाना है वोही (१२) आहूति अर्थात् तिल यव आदि का अग्नि में डालना है (१४) मृत्यु रूप दूती देवीको बुलाई ॥ ७३ ॥

[1]कति दंति दंत उखार सार,
प्रहारतैं जदुनाथ जानिय ॥
[2]जुग त्यौं जुगंधर[3] लै लरे,
बगरे वसुंधर[4] भा बिलानिय ॥
अटि अस्त्र[5]सस्त्र बिहीन ते,
अतिपीन[6] मल्लनलौं प्रकट्टिय ॥
कति मुट्ठिमारनसौं हजारन,
की खुमारिन[7]कौं उलट्टिय ॥ ७४ ॥
घर[8]कौ किधौं[9] परकौ जुंवा[10],
लैर[11]कौ किधौं धैर[12]कौ न धारिय ॥
[13]कति मित्र हैं कति मित्र नां,

---

(१)कितनेही योद्धाओंको हाथियोंके दांत उखाड़कर बड़ा बल युक्त प्रहार करने से श्रीकृष्ण समझे अर्थात् देखने वालों ने (२)रथ का जूड़ा(३)जिस रथके अवयव पर जूड़ा रहता है उसको लेकर(४)पृथ्वी की शोभा बिलाई अर्थात् ढकगई (५)केवल शस्त्र और अस्त्रों (मंत्र से चलानेवाले बाणादि) से रहित कितने ही वीर (६) बहुत पुष्ट शरीरवाले जेठीमल्लों के जैसे प्रकट हुए (७) थकेलों (परिश्रम) को उलटा दिया अर्थात् मिटादिये ॥ ७४ ॥
(८)अपना(९)अथवा दूसरे का(१०)जवान (११)बालक का (१२) मन में यह धड़का(भय) न रक्खा(१३)मेरे मित्र यहां कितने जीते हैं और कितने मरे हैं और कितने

कति शत्रु ह्यां स्मृतिकौं विसारिय ॥
रनमौर बाहुन जोर वीरन,
घोर जुद्ध मरोरसौं किय ॥
कुरुनाह यान विहीन ह्वै,
फिर आन यान अनीककौं लिय॥७५॥
लुभिकैं युधिष्ठिरसौं लरयौं,
वहहू अरयौ अकरयौ न लट्टिय॥
दुहुँ लैं धनू दुहुँ घाँ धुने,
दुहुँ बेधनू दुहुँ भूमि दट्टिय ॥
धनु आन आनिय बान तानिय,
द्वै गुमानिय हानि द्वै दल ॥
सुखवृद्धिसिद्धिक सिद्धि सिद्धि,

शत्रु जीते हैं (१) ऐसी यादगिरी को भूलगये (२) युद्ध के मुकुट भुजाओं के बल से (३) मरोड़ से किया (४) दुर्योधनने सवारी रहित होकर(५)दूसरे वाहन को युद्ध के लिये लिया ॥ ७५ ॥ (६) युधिष्ठिर भी (७) अकड़ा हुआ खड़ा और लटाया (दबा) नहीं (८)दोनों तरफ (युधिष्ठिर ने दुर्योधन की तरफ और दुर्योधन ने युधिष्ठिर की तरफ(९)दोनोंने धनुष रहित होकर जमीन को दबाई अर्थात् जमीन पर गिरगये(१०) दूसरे धनुष लाये (११) दोनों अभिमानी(१२)दोनों दलों का नुकसा नहुआ(१३)सुख की वृद्धि की सिद्धिवाला (१४) आठ

सुवान दिय हाटानि है दलं ॥ ७६॥
कुरुनाथ सत्तियसौं गदा,
गहि हाथ पंडुजपै पटक्किय ॥
कुपि भूर्प शोक्किय साचनैं,
जनु म्रूटकौं जुटिकैं म्फटक्किय ॥

संजयवचन ॥

नृपं सक्ति चल्लिय पांडुकी,
मनु मुंडपै कुपि सक्ति चल्लिय ॥
कुरुराजको उर वार्ज व्है,
जनु दीर्घछर्द्दं कपोत दल्लिय ॥७७॥
कुरुराजके वनि वंर्म कृत-
वर्म्मा रुप्यौ अरि बीचमैं परि ॥
चलि लोलि चाल सुँ गोलँ फौज,
हरोलमैं रविबालकौं धरि ॥

---

२ वाया दिये(१)दोनों ने हाय २ ऐसा शब्द किया॥७६॥ (२) बल से (३) युधिष्ठिर पर पटकी (४) युधिष्ठिर ने क्रोधकर रोकी (५) जुड़कर झंकेडा (६)हे धृतराष्ट्र (७) बरछी (८) देवी (९) वाज (श्येन) होकर (१०) बडे कपट रूप कबूतर को मारा ॥ ७७ ॥ (११)कवच सहित रक्षक बनकर(१२)शत्रुओं के बीच में (१३) चंचल गति से (१४) वह कृतवर्मा (१५) हरोल और चंदोल के बीच में की सेना(१६)कर्ण को रखकर

लखि फौज चल्लिय पंडुकी,
निर्म्मोक[1] धर फन[2] मोच लग्गिय ॥
नरलोक[3] तैं सुरलोक[4] लौं,
सुरओक[5] ओकन सोक[6] जग्गिय ॥७८॥
सुनि सोर[7] सात्यकि दोर ओरन[8]-
तैं मरोरलिये सज्यौ सरि[9] ॥
सर तोर तिंहिं[10] धनु तोर तिंहिं,
उर फोर कर्न मरोरसौं लरि ॥
कुरुनाथ[11] पै भट पाथ कोपिय,
हाथ चाँपन[12] नाथपै धर ॥
सर हिक्क[13] डारिय ठहाँ निहारिय,
द्रोनि[14] टारिय डारि द्वै सर ॥ ७९ ॥
न सहीगई तब कोपि[15] पत्थ,

---

(१) सांप अर्थात् शेषके (२) फणोंमें मोच (खड्डा) पड़गई (३) मनुष्य लोकसे लेकर (४) स्वर्ग तक (५) देवताओं के घर २ में (६) शोककी नींद उड़ी अर्थात् देवताओं को यह संदेह हुआ कि युधिष्ठिर कहीं न पकड़ाजाय ॥ ७८ ॥ (७) कोला-हल सुनकर (८) दूसरों से (९) कड़ापन धारण करनेवालों और तीरवाला सजा (१०) सात्यकिके (११) दुर्योध-न पर (१२) गांडीव धनुष पर हाथ रखकर (१३) एक बा-ण (१४) अश्वत्थामाने ॥ ७९ ॥ (१५) क्रोधकर अर्जुन ने

कही लही यह दोनिं को सिखि ॥
खरपै चढी कहि सीतला हँय,
लेहु यह नर देव श्रो रिखि ॥
गुरुपुत्रँ जान न मान लौं यह,
जान रहिय जिहांन मो मति ॥
भट आनँ आन लरैं परैं विचँ,
कांन जाहि कटैं यहैं गति ॥८०॥
कहि ताहि यौं तिंहिं चाप कट्टिय,
सार्थि कट्टिय बाँजि कट्टिय ॥
कृपचाँप कट्टिय तूँन कट्टिय,
सूतपुत्रहिँसौं लपट्टिय ॥ ॥
रनबीच पारथ मीचँ लौं,

कहा (१) हे अश्वत्थामा तू ने यह सीख कौनसी ली (२) गधे पर (३) घोड़ा लो (४) हे अश्वत्थामा तुझको गुरु का पुत्र समझकर (५) संसार मेरी बुद्धिको जानरहा है (६) दूसरे (७) तू बीच में पड़ता है [८] तेरी इस गति से कान काट लिये जावैंगे इस कथन से अश्वत्थामा को अतिबालक बनाया ॥ ८० ॥ (९) अश्वत्थामा को अर्जुन ने ऐसा कहकर (१०) घोड़ों को काटकर (११)कृपाचार्य का धनुष काटकर(१२)भाथे को(१३)कर्ण से ही लिपटा [१४] मृत्यु के जैसे

कृतकीच[1] भर रुजतोम[2] फेलिय ॥
सुनि कर्न सुस्रुत[3] व्है अटयौ,
घन[4] सर ति ओसधपरन पेलिय ॥ ८१ ॥
जित जोत सस्त्रन गोतकी,[6]
जीवातुजटिका[7] जोत जग्गिय ॥
सुपुलावं[8] खावनहार वेंक,[9]
गुलाबसे सु जुलाब[10] लग्गिय॥
तनु[11] भेदं[12] भेद ससेद[13] श्रोन सु,
कोन हो नहिं स्नान सज्जिय ॥
लखि कर्न वैद्य गरूरिकौ,[14]

---

(१)किया है कीचड़ जिसने अर्थात् रुधिर से(२)कीच की बिगड़ी पवन से हुआ अत्यन्त रोगोंका समूह फैला[३] वैद्य(आयुर्वेदाचार्य)होकर(४)मजबूत बाण हैं वेही औषधियों के पत्ते चलाये॥८१॥(५)जहां युद्ध में प्रकाश (६) शस्त्रों के समूहका है(७)सोही संजीवनी जड़ी का प्रकाश जगरहा है (८) मांस सहित चांवल खानेवालों को (९) और गुलाब के पुष्प समान मुखवालों को (१०)अत्यन्त जुलाब लगगया(११)शरीर पर(१२)तरह तरह के(१३) बहुत से पसीने सहित रुधिर से अर्थात् वह कौन था कि जिसने पसीने सहित रुधिर से स्नान न किया हो (१४)अभिमानी कर्ण रूप वैद्य को देखकर

रुजब्रात[1] क्रूर सुदूरं[2] लज्जिय ॥८२॥
घनघाय[3] कर्नहि प्यास द्याई[4],
तज्यौ व्यथा[5] पसरायक्रैं म्रति[6] ॥
कति[7] कौस[8] दैं द्विजं[9] तोसं[10] किय,
तिंहिं[11] पोस रहि इक द्योस[12] संसृति[13] ॥
अतिवामैं[14] तीजिय जाम कौ सु,
ललामं[15] जुद्ध असाम[16] पूरन ॥
पटु उच्च[17] कविपद्मसनैं किय,
सुद्ध सूर असुद्ध क्रूरन[18] ॥ ८३ ॥
अति पीरंकर[19] वरवारं[20] कर,
बरतीर चीरि सरीर हुव पैरं[21] ॥
नहिं स्वास लेत उसास लेत न,

(१) रोगों का समूह (२) बहुत दूरसे लज्जित हो गया ॥८२॥ (३) विस्तार वाले घावों से कण को (४) प्यास दिलाकर (५) पीड़ा फैलाकर (६) मृत्युने (७) कितने ही (८) भंडार देकर (९) ब्राह्मणों को (१०) संतोष किया (११) उस फल से (१२) एक दिनतक (१३) संसार रहा अर्थात् कर्ण जीता रहा (१४) बहुत टेढा (१५) श्रेष्ठ (मुख्य) साम उपाय से विरुद्ध (१६) दंड उपाय है जिस में (१७) चतुरों में ऊंचा (१८) कायरों को ॥ ८३ ॥ (१९) बहुत पीड़ा करनेवाले (२०) उत्तम वीरों के हाथों के (२१) पार निकलगये अथवा वैरी

आस जीवन नासतैं डर ॥
लरि पांडु तीरन मोजतैं कुरु,
फौज दीप्ति सरोजकी[1] लिय ॥
[2]घनस्रौंनतैं सर[3] भौ[4] सु तासमँ,
[5]हौ न है नहि ठ्हैन[6] यौं किय ॥८४॥
कुरु[7]वाँर बीरन वार [8]सार,
[9]सुभक्ष्यकार वि[10]भा [11]वैरी कुपि ॥
किय श्रौं[12]नसरहि कटाह ठ्हाँ,
भटबट[13]कैं [14]ग्राह छनंक छबि [15]रुपि॥
फबि [16]फार घेव्रर फे[17]फरे,
फिर कालखंड[18] दहीथरी फबि ॥
बनि नैंन [19]पैरे बूकरे,

हो गये (१) कमल की कांति लेली(२)विस्तारवाले रुधिर से (३)तालाव हुआ (४) उसके बराबर [५] पहिले नहीं था [६] ऐसा युद्ध किया अथवा तलाव किया ॥ ८४ ॥ [७] कौरवोंवाले वीरों के समूह ने [८] श्रेष्ठ[९] अच्छे कंदोई को(१०)शोभा को(११)ग्रहण करी(१२ रुधिर तलावका कडाव किया (१३)वीरों रूप बड़(१४ हाथ रूप छनकारे की शोभा(१५)स्थित हुई(१६)बहुत(१७) फेफड़े हैं वे घेवर हैं (१८) कलेजा[१९] नेत्र पेड़ों रूप हैं

मोदक[1] रु फेनिय[2] ग्रंथिकच छबि॥८५॥
अंगुरिय[3] सेव रु भेजि मावक,
अंतगुच्छ[4] जलेबिका इम ॥
जिहिंसमर[5] चंडिय[6] वीर घस्मर[7],
अमर[8] नरन चिरात नहिं किम[9] ॥
कटि कांतिवंार[10] ललार जे,
अहिवल्लिवारे[11] सुपानकी गति ॥
तित चर्बि चूंना मांस काथा,
औ सुपारिय[12] गुंल्फ घंन[13] तति[14] ॥ ॥ ८६ ॥
चंहलैं[15] किते पहलैं परे,
गंहलैं[16] तिन्हैं टहलैं पंथामति[17] ॥
कति तारदैं[18] कति गार[19] गावत,

(१)लड्डू रूप हैं(२)फीणी केशों की ग्रन्थि रूप है ॥८५॥ (३) अंगुलियां सेवां रूप हैं (४) आंतों के गुच्छे जलेबी रूप हैं (५) युद्ध में (६) चंडी और बावन वीर दोनों (७) खानेवाले हैं (८)देवताओं को (९) क्यों नहीं चिढ़ाते किंतु चिढाते ही हैं(१०)कांतिवाले जो ललाट कटे वे (११)नागरवेल के पान रूप हैं(१२)गिरिये (टखने) अर्थात् पैरों के दोनों ओर के अवयव विशेष (१३)मजबूत(१४) पंक्ति ॥८६॥(१५)खिसलकर पड़ते हैं(१६)पकड़ैं(१७)अपनी बुद्धिके अनुसार(१८)ताली बजातेहैं(१९)गालीगातेहैं

टारदैं कति वारकी गति ॥
इहिं भांति वीरन पांति क्रोध न,
सांति हुव हुव सांति आयुधं ॥
यह उद्ध जुद्ध वन्यौं सु तिंहिं,
करि सुद्ध वरनहिं व्पास सुरबुधं ॥८७॥
ललकार वीरनवार अच्छर,
वारकी वढि वाह फेलिय ॥
हलकारि घोरन मारि मारि,
अपार किय कर लाल हेलिय ॥
तिंहिं काल बद्दल लाल हुव,
तिंहिं चालकी तर्क सु उपज्जिय ॥
भट रांचिराचि पिसाच छात्रन,
नाचपैं पलसैलं सज्जिय ॥ ॥८८ ॥

(१) शस्त्रों की शांति होगई, अर्थात् शस्त्र मोटे हो गये (२) याद करके (३) बृहस्पति ॥ ८७ ॥ (४) वीरों के समूह की (५) ललकार कर (६) पीट पीट कर (७) कर शब्द का अर्थ श्लेष से किरण भी है इसलिये यहां उपमा अलंकार व्यंग्य है (८) सूर्य ने (९) वह उत्प्रेक्षा (१०) राजी हो होकर (११) पिशाचों के विद्यार्थियों के नाच पर (१२) उनकेलिये मानों मांसके पर्वत किये यहां मांस के पर्वतों की लाल बद्दलों में गम्यो-

चल बान वीर कबान भुव,
नेभथानलौं पवमान[2] रुक्किय ॥
छिपगो छिपा[3]बिच छद्मकैं,
रविबाजि[4] राजिय वक्त्र सुक्किय ॥
गयराजि[6] के हयराजि[7] के,
नरराजि[8] राजिय आजिमैं[9] गिलि[10] ॥
जमकौं अजीर्न[11] अपार भौ तिहिं[12],
जारबे न जरी[13] सकी मिलि ॥८९॥
इम कर्न वीरन मारि चाँप,
उतारि लिय हुव ऊर्ध्व[15] कोटिय ॥
सिर[16] ऊर्ध्वकैं मनु दृष्टि[17] दैं अरि,
भग्गिगे किंधुं[18] अत्र लोटिय ॥

उत्प्रेक्षा है ॥ ८८ ॥ (१) पृथ्वी और आकाश पर्यंत [२] वायु (३) रात्रि के (४) छल करके, अर्थात् अस्त होनेके छल से (५) सूर्य के घोड़ों की पंक्ति के मुख (६) हाथियों की पंक्ति (७) कितनी ही घोड़ों की पंक्ति (८) राजाओं की पंक्ति (९) युद्ध में (१०) निगली (११) बेहद (१२) उस अजीर्ण को जराने के लिये (१३) बूंटी नहीं मिल सकी ॥ ८९ ॥ (१४) धनुष को (१५) गोशा ऊंचा हो गया (१६) सिर को ऊंचा करके (१७) धनुष की ओर देखता है (१८) क्या यहां सोगये

जनु जहरकी सरिता बढी,
चंदपहरकौ[1] रैन कहर[2] भौ जित[3] ॥
पदमेसकवि मरुदेसकौ[4] छवि,
का कहैं मति सेसकी[5] थित[6] ॥ ९० ॥
इहिं वार दल्ल अवहार[7] भौ,
सुरनारि[8] सुर रनप्यार छंडिय ॥
निज निज सुयान[9] पिछानकैं,
निज थान चल बरवीर[10] चंडिय ॥
निज यान हेरनसौं[11] भयो श्रम,
चंडि वीरनकौं यहैं[12] क्षति[13] ॥
बिन यान कीन प्रयान भीरुन[14],
प्रान[15] मान पिछान धिनमति[16] ॥९१॥

---

(१) चार प्रहर का (२) युद्ध. यहां युद्ध होने रूप क्रिया जहर की नदी बहने रूप क्रिया की उत्प्रेक्षा है. (३) बहुत अथवा भयानक (४) जहां (५) मारवाड़ का. मारवाड़ में जल कम होने से नदी का वर्णन करना कठिन है इसलिये मारवाड़ का यह विशेषण दिया है (६) शेषनाग की (७) स्थिर हो गई ॥ ९० ॥ (८) सेना का पीछा लौटना हुआ (९) अप्सरा (१०) अच्छे वाहनों को (११) श्रेष्ठ बावन वीर (१२) ढूंढने से (१३) यहां चंडी और वीरों के हानि है (१४) कायरों ने (१५) प्राणों के सन्मान की पहचान करके (१६) इससे कायरों की बुद्धि को धन्यवाद है. यहां व्यतिरेक अलंकार और व्याजस्तुति भी है ॥ ९१ ॥

॥ अथ तृतीयधामकी सूची ॥
छप्पय ॥

करन पांडु दल लरन,
सात्यकि रु म्लेच्छप किय रन ॥
दुश्शासन सहदेव,
करन अरु नकुल जुद्ध घन ॥
करन रु अर्जुन कलहं,
उलूक रु अरि जुजुत्सु रन ॥
शतानीक श्रुतकर्म,
लरन सुतसोम शकुनि घन ॥
लखि धृष्टद्युम्न कृपकौ लरन,
कृतवर्मा रु शिखंडिरन ॥
जुधिष्ठिरतैं अद्भुत जुरिय,
उत दुर्योधन जुरिय घन ॥ ९२ ॥

दोहा ॥

भल्ल भल्लभट इहिँ विधि भरिय, भूरि भयानक भेस
पहर तीसरीके प्रथम, प्रकट कीन्ह पद्मेस॥९३॥
इतिश्रीमच्चंडीचरणारविन्दचंचरीकचारणावासा

---

(१) युद्ध (२) शकुनि का पुत्र (३) बहुत दृढ ॥ ९२ ॥
(४) अच्छे अच्छे योद्धा (५) बहुत (६) युद्ध॥९३॥
इति श्रीमती चंडी के चरणारविंद में है चित्त रूप

भिधेयचारुसंवसथवास्तव्यचारणचक्रचक्रवाक-
चंडांशुजाज्वल्यमानकाव्याज्ञत्वज्वालाज्वलज्ज-
गज्जीवजुष्टजयजीवनबलूंदाख्यग्रामठक्कुरजीवन
सिंहप्रतोलीपात्रवंशभास्करप्रबन्धप्रणेतृमिश्रण
कुलोद्भूतश्रीसूर्यमल्लशिष्यपातावतशाखाप्ररूढ
जगरामात्मजपद्मसिंहप्रभाषितकर्णपर्वविभावि-
भूषितवीरविनोदे तृतीययामयुद्धं संपूर्णम्॥३॥

अमर जिसका, चारनवास नामक सुंदर ग्राम का नि-
वासी, चारण समूह रूप चकवों के लिये सूर्य रूप, जा-
ज्वल्यमान काव्यकी अज्ञता रूप ज्वालाओं से जलते
हुए जीवों करके सेवित, विजय के जीवन रूप बलूंदा
नामक ग्रामके ठाकुर जीवनसिंह का पोलपात, वंशभा-
स्कर ग्रंथ के रचयिता मिश्रण कुल में प्रकट हुए श्रीसू-
र्यमल्लका शिष्य, पातावत शाखावाले जगराम का पुत्र
जो पद्मसिंह उस से रचे हुए कर्ण पर्वकी शोभा क-
रके विभूषित वीरविनोद में तृतीययाम का युद्ध सम्पूर्ण
हुआ॥ ३ ॥

॥ इति तृतीययाम॥

अथ चतुर्थयामप्रारंभ ॥

सेनावचन ॥

॥ दोहा ॥

आरनं[1] चौथिय जामकौ, किय चारन पदमेस ॥
सूरमहारनं[2] देश यह, कातर हारन देस ॥१॥

छंदपद्धरी

जब गये सबै सिविरनं[3] नरेस,
भनि वत्त सुयोधन दीनवेसं[4] ॥
सुन कर्न पत्थ दल हनिय पूंरं[5],
सुं[6] बच्यौ नहिं हौ तू रथिनसूंर[7] ॥२॥
कहि करन भूप[8] अब सुनहि घैरं[9],
नेंरं[10] हनि लैहूं सब नैरनं[11] वैर

---

(१) युद्ध (२) वीरों के प्रहारों का स्थान ॥ १ ॥ (३) अपने अपने डेरों को गये. अर्थापत्ति प्रमाण से दुर्योधन कर्ण के पास आया (४) गरीबी रूप पोशाक वाला (५) पूर्ण अर्थात् न्यूनता नहीं रक्खी (६) वह दल (७) तू रथियों में सूर्य समान है. एक रथी से युद्ध करै वह रथी. दश हजार रथियों से युद्ध करै वह महारथी. अगणित रथियों से युद्ध करै वह अतिरथी. यह संज्ञा महाभारत में है. भीष्मजी ने कर्ण को अर्धरथी कहा, और हमने रथियों का सूर्य कहा ॥ २ ॥ (८) कर्ण ने कहा, हे भूप अर्थात् दुर्योधन अब तू (९) कोलाहल सुनेगा. (१०) अर्जुन को मारकर (११) मनुष्यों का

भट अवर सुने यह कथ भुवाल,
कसि कमर सजे इक[1]इक्क काल[2] ॥३॥
कहि करन मैं नहि नर सुलाज,
सुख नहिंन दिखावहुँ[3] तोहि राज ॥
नर इती अँधिकता[4] रहिव छाकँ[5],
हनुमान ध्वजा विच करत हाक॥४॥
अद्भुत रथ हय धनु बान ओर,
जिहिं हरिसौ सारथि अँधिक[6] जोर ॥
है तासमँ[7] सारथि सल्य मोर,
मम किंकरता[8] है विजय तोर ॥५॥
वर[9] धनुष विश्वकर्म्मा[10] बनाय,
दिय इंद्रहि[11] दैत्यन हतनभाय[12] ॥
दिय जामदग्न्य[13] तिहिं मोहि दीन[14] ॥
नहिं विजयचापतैं[15] विजय[16] हीन ॥६॥
सुन सल्य करहु नृप[17] मोर सूत,

---

(१) एक एक का (२) यमराज ॥ ३ ॥ (३) दिखाऊंगा (४) अधिकाई से (५) छक रहा है ॥ ४ ॥ (६) अधिक बलवाला अथवा कृष्ण अर्जुन का जोड़ा (७) श्रीकृष्ण जैसा (८) नौकरी ॥ ५ ॥ (९) श्रेष्ठ (१०) देवताओं के कारीगर ने (११) इन्द्र को (१२) मारने के लिये (१३) परशुराम को (१४) दिया (१५) अर्जुन के धनुष से (१६) विजय नामक मेरा धनुष कम नहीं है ॥ ६ ॥ (१७) हे राजा

जीतौं जुत इंद्र हु इंद्रपूत ॥
नृप कह्यौ सल्यसौं जोर हाथ,
मम रच्छक ह्वैजैं मद्रनाथ ॥७॥
भट भीस्म द्रोन गए सूर्य भेद,
तुम कर्न दुहूँ मम हरन खेद ॥
नृप कह्यौ जोर कर कर निहोर,
तुम होहु करन सारथि सजोर ॥८॥
हैं होनहारकी परमहान,
तुम करन दुहूँनसौं दुहुँ समान ॥
कुपि कहिय सल्य दृग रक्त क्रोध,

सल्य वचन ॥

अनुचित कि उचित यह तुहि न बोध ॥९॥
सुन त्रिवरन किंकर करन सूत,

दुर्योधन (१) इन्द्र युक्त श्री इन्द्रपुत्र (अर्जुन) को जीतलूं (२) मद्र देशका राजा है शल्य ॥७॥ (३) सूर्यलोक को पार कर गये (४) मेरी पीड़ा दूर करने के लिये (५) निहोरा (प्रसाद पूर्वक गर्ज) करके (६) बलवान् ॥ ८ ॥ (७) इंद्र के दरजे के नुकसान (८) श्रीकृष्ण और अर्जुन के तुल्य तुम दोनों (कर्ण और शल्य) हो (९) क्रोध से लाल आंखें करके (१०) अयोग्य है अथवा योग्य (११) ज्ञान ॥९॥ (१२) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीनों का नौकर सूत है

मैं मद्रमहीपति छत्रिपूत ॥१०॥

॥ मनोहरछंद ॥

च्यारदस[2] लोक ललकार जीत लैनहार,
गदाके प्रहारतैं पहार[3] चूरडारौं मैं॥
बानकी[4] कृपानकी कृसानुसौं समुद्र सोखौं,
[5]कंठरव कंठीरव मूक करि मारौं मैं ॥
लत्तां[6] मल लत्तासी अनंताकौं[7] पताल पैलौं,
सिसुलौं[8] दरीसे करी छरीसौं उछारौं[9] मैं॥
तेरी भूल भई नाहिं मेरी भूल भई नाहिं,
वैरी भयौ मेरौ मंत्र[10] कौनपैं[11] पुकारौं मैं॥११॥
अमृतकौं जान्यौ विषै[12] विषकौं अमृत अच्छ,
कंचनकौं[13] लोह लोह कंचन ही लायो मैं ॥
अंबफल[14] अर्कफल[15] अर्कफल अंबफल,

(१)मैं क्षत्रिय पुत्र हूं॥१०॥(२)चौदह भुवनों को धमकाकर जीतनेवाला(३)पर्वतों को चूर्ण करडालूं(४)तलवार की अग्नि से समुद्र को सुखा दूं(५)गले के शब्द से सिंह को मूक (बेआवाज) करके(६)लात से मसलकर कपड़े जैसी कोमल(७)पृथ्वी को पाताल को भेजूं (८) बच्चा गेंदको फैंकता है जैसे(९)हाथीको छड़ी से ऊपर फैंकदूं[१०] मेरी सलाह(११)किस के पास जाकर॥११॥ (१२) जहर [१३]सुवर्ण को[१४]आम के फल को[१५]आक का फल

अतर सु तेल तेल अतर मुलायौ[1] मैं ॥
अस्वकौं सु गर्दभ त्यौं गर्दभ[2] कौं अस्व अच्छ,
[3]कल्पतरु निम्ब निम्ब कल्पतरु गायौ मैं ॥
भागिनेय[4] है अहेय हाय उन्हें माने हेय[5],
कौरवेंद्रहेयकौं अहेय मानि आयौ मैं ॥१२॥

॥ छंद पद्धरी ॥

कहनौ हौ मोसम[6] काग वीर,

॥ कविवचन ॥

यौं कहि पुनि उठि गम्न्यौं अधीर[7] ॥
दामन गहि नृप[8] कहि होइ दीन[9],
तूं मद्रमहीपति अतिकुलीन[10] ॥१३॥
सुन हौं रु करन नहिं तुव समान,
जिय[11] लयौ सरन धँन[12] जोग जान ॥
हैं हुकम नहिंन यह अरज हेर,

---

[१]मैंने मोल किया[२]गधा(३)मैंने कल्पवृक्ष को नीमका पेड़ कहा[४]जो भानजे नहीं छोड़ने लायक थे[५]छोड़ने लायक॥१२॥(६)मेरे जैसा(७)धैर्य रहित (शल्य) उठकर चला(८)दुर्योधन ने अंगका वस्त्रान्त (पल्ला) पकड़कर(९) गरीब होकर कहा(१०)मद्र देश का राजा बड़े कुल में पैदा हुआ है॥१३॥(११)जीने के वास्ते(१२)तुझको अत्यन्त लायक समझकर शरण लिया

इय कौसल्ल[1] हरिसौं अधिक फेर ॥१४॥
यह काज करहु यौं कहिय भूप[2],
अतितुष्ट[3] सल्य बुल्लिय अनूप ॥
नहिं जोग तऊ यह करहुँ काज[4],
छोरहु दामनं[5] व्हैं सुखित[6] राज ॥१५॥
भनि दुरजोधन सुनि वत्त भूप[7],
सिवकै[8] हुव सारथि विधि[9] सुरूप ॥
तारकदैत्यहिं[10] लिय सुरन जीत,
पुत्तय हुव ताकै प्रतीतै[11] ॥ १६ ॥
दिय नाम ज्येष्ठै[12] तिहिं तारकाक्ष,
कमलाक्ष रु विद्युन्मालि राक्ष[13] ॥
तपकरि विधिसौं[14] वर लीन तत्र,
हम अमर व्हैं[15] सु वर देहु अत्र[16] ॥ १७ ॥
विधि कहि यह बात बनैं न वीर,

---

(१)तेरा घोड़ोंके फेरनेमें चातुर्य श्रीकृष्णसे अधिक है॥१४॥ (२)दुर्योधन ने(३)अत्यन्त प्रसन्न शल्य उपमा रहित बोला (४)(सारथि रूप)(५)अंगे का छेड़ा छोड़दो(६) हे राजा दुर्योधन आप सुखी होओ॥१५॥(७)हे शल्य(८)महादेव के(९)अच्छा है रूप सारथिपन में जिस का ऐसा ब्रह्मा (१०)तारक नाम दैत्य का(११)प्रसिद्ध॥१६॥(१२)बड़े पुत्र का(१३)राक्षस(१४)ब्रह्मा से(१५)हम मृत्यु रहित होजावैं (१६) यहां ॥१७॥

वर अवर[1] विचारहु धारि धीर ॥
तब अहुँन विचारिय एक बात,
त्रैयपुर[2] रचिदीजैं हमहि तात[3] ॥ १८ ॥
इन एकहि सरसौं हँनहि[4] कोउ,
संग्राम[5] सँहारहि हमहिं सोउ ॥
कहि तथा[6] अस्तु विधि गयउ थांन,
मयदैत्य[7] त्रिपुर रचदीन्ह आंन ॥१९॥
जोजन[8] सत[9] चोरे जिनहिं जान,
पुनि जोजन[10] सत लंबे पिछान ॥
त्रैय[11] एक रूप कहुँ पृथक[12] होत,
पुनि स्वेच्छाविहरन[13] कांतिपोत[14] ॥२०॥
हिम[15] रजत[16] लोह त्रैयपुर[17] ति[18] ठिक,

---

(१) अमर होने रूप वात नहीं बन सकती इस लिये दूसरा वर विचारो (२) तीन नगर (३) हे पिता (ब्रह्मा) ॥ १८ ॥ (४) विध्वंस करेगा (५) वह हमको युद्ध में मारेगा (६) जैसा तुमने कहा वैसा होओ (७) मय नामक दैत्यने आकर ॥१९॥ (८) चार कोशका योजन होता है (९) सौ जोजन चोड़े जानो (१०) सौ जोजन लम्बे उन नगरों को जानो (११) तीनों पुर एक पुर रूप थे (१२) अलग अलग (१३) अपनी इच्छा हो उधर चलाजाना (१४) शोभा की नाव रूप ॥२०॥ (१५) सुवर्ण (१६) चांदी (१७) तीन नगर (१८) वे

इक स्वर्ग भूमि पातार इक्क ॥
क्रमसौं तिनके पति तीन काल,
विहरैं निसदिन[1] इकविधि विख्यात॥२१॥
जुरि[2] तिहुँन लीन सुरलोक जीति,
वड तारकाक्ष सुत करि प्रतीति ॥
तिहिँ विधि[3]सौं इकवर लीन तत्र,
जासौं वापीत्रय[4] मिलिगे[5] जत्र ॥ २२ ॥
तिन[6] वीच दैत्य जे करत स्नान,
मिटिजाय घाय[7] विधिवच[8] प्रमान ॥
जब भिरे सुरनसौं बलजिहाज,
इंद्रादिदेव डर भ्रमिय भाज ॥२३॥
ज्यौं[9] मरैं सरब ओसधि उठाय,
अमृत लौं[10] त्यौं लिय शंभु[11] पाय ॥
विधि[12] सुरपति[13] सुर लिय सिव रिझाय॥
सिव भनिय भनहु इच्छा सुभाय[14] ॥२४॥

---

(१) एक तरह से ॥ २१ ॥ (२) भिड़कर (३) ब्रह्मा से (४) तीन बावड़ी (५) मिलगईं ॥२२॥ (६) उन बावड़ियों के बीच में (७) जखम (८) ब्रह्मा के वचन से ॥ २३ ॥ (९) रोगी मरजावैं (१०) दूर करके (११) महादेवजी के चरणों का शरण लिया (१२) ब्रह्माने (१३) इंद्रने (१४) अच्छे अभिप्रायवाली ॥ २४ ॥

प्रभु त्रिपुर[१] देत बहु हमहिं त्रास,
निज दया करहु उन रिपुन नास ॥
भयहारक[२] भवं[३] सुनि भनि सुभाय ॥
तुम मम तेजहिं लहि[४] लरहु जाय ॥२५॥
तिन कह्यौ सहैं को तेज तोर,

॥ विध्यादिवचन ॥

लहि तेज हमारौ[५] भिरहु भोर ॥

॥कविवचन॥

दिय सिवहिं सुरन निज तेज तत्र,
ईसं[६] लखि समय हुव पात्रं[७] अत्र ॥२६॥
तब महादेवं[८] हुव नाम वाहं[९],
कहि रथ हय धनु सर मोर चाह ॥
रथ भुव हुव हुव रवि[१०] चंद चक्रं[११];
बनि बेद चहौं[१२] चहौं बाजि बक्र ॥२७॥
मंद्राचल लोधरै[१३] रिद्ध[१४] कीलं[१५],

---

(१) त्रिपुरों का (२) भयको दूर करनेवाले (३) महादेवजी ने (४) लेकर ॥ २५ ॥ (५) हम ब्रह्मादि देवों का (६) महादेव (७) दानपात्र ॥ २६॥ (८) शिवका नाम महादेव हुआ (९) सराहने योग्य (१०) सूर्य (११) दो पहिये (१२) चारों ॥ २७ ॥ (१३) पहियों के बीच रहनेवाली लोहे की पाटि (१४) तारे (१५) कीला, पहियों को रोकनेवाला

वासुकि[1] बनि जूरा[2] सुभगसील[3] ॥
रज्जु बनि पाप पुनि पुन्य रम्य,
फलपुष्पादिक[4] गुघरालि[5] गम्य[6] ॥२८॥
धृतराष्ट्रादिक[7] अहि सिमल[8] धार,
कालादिक[9] अहि हयबाल[10] सार[11] ॥
बनि दिस खलीन[12] बनि विदिस[13] वग्ग ॥
आकास मंच उत्तम अथग्ग ॥२९॥
पून्यौं रु अमा[14] जुग जोत[15] जोर,
ध्वज[16] बीज[17] पताका[18] पवन घोर ॥
वर बसट्कार[19] नोदन निहार,
गायत्रि जुगंधर[20] समुभ्क सार ॥ ३० ॥

(१)सर्पराज(२)जूड़ा वा युग(३)अच्छा है स्वभाव जिसका (४)कल्पवृक्षादिकों के फल फूल[५]गूघरों की पंक्ति(६)प्राप्त होने योग्य ॥ २८ ॥ (७)धृतराष्ट्र नामक सर्पादिक हैं वे(८) जूड़ेके दोनों ओर की काष्ठकी कीलें (९)कालको आदि लेकर सर्प(१०)घोड़ों की केशवाली हुए(११)उत्तम (१२) लगाम(१३)अग्नि आदि कोण ॥२९ ॥ (१४) अमावास्या (१५) जूड़ेके जोतों की जोड़ी (१६) ध्वजा. गरुड़ादि के चिन्ह वाली (१७) बिजली (१८) उसी प्रकार की जयपत्र युक्त कपड़ेकी बनी हुई [१९] इन्द्रको हव्य देनेका मंत्र वषट्कार रूप चाबुक है(२०)धरखूंटा ॥ ३० ॥

सावित्रि[1] गुन[2] सु अगईस चाप,
भल[3] अग्नि भल्ल इंषु[4] विष्णु आप ॥
जित तूंन[5] उदधि[6] जाह्नर जिहांन,
किय ताहि विश्वकर्म्मा[7] सुपांन ॥३१॥
हुव वृषभध्वज[8] रथि[9] अमरहूंत[10],
कहि मोसौं अधिकौ करहु सूंत[11] ॥
सुर सुरपति रिखि मिलि कर सलाह,
विधि[12] सारथि किय कहि वाह वाह[13]॥३२॥
हुव जुद्ध घोर हय थक अधीर,
सर[14] तनु तज हरि[15] हुव वृषभ वीर ॥
रथ कर्षिय पद लागि असुर बान,
हरिरूपवृषभ खुर फटिग जान ॥३३॥
तबतैं[16] ठहैं गौ[17] खुर फटे अैल,
स्तनरहित अस्व ठहैं कटिग तत्र[18] ॥

---

(१)पनच वा प्रत्यंचा (२) सुमेरु (३) भले (४) तीर (५) भाथा (६) समुद्र (७) देवताओं का कारीगर॥३१॥ (८) महादेव (९) रथमें बैठनेवाला (१०) देवताओंका बुलाया हुआ (११) सारथि (१२) ब्रह्माको (१३) यह शब्द देवताओंने कहा ॥ ३२ ॥ (१४) बाण रूप शरीर को छोड़कर (१५) विष्णु बैल हुए ॥ ३३॥ (१६) आज तक पैर फटे होते हैं (१७) गाय और बैल के (१८) इस लोक में

हुव इकसर[1] त्रयपुरदैत्य[2] हान,
नृप[3] कहि इम विधि[4] हरसूत जान ॥३४॥
अब सुरहित दैत्यन दिय खपाय,
परसुधर[5] अस्त्र लिय सिव रिझाय ॥
ते अस्त्र करन लिय छबि[6] समाज,
तुमसे[7] सारथि मम विजय आज ॥३५॥
कहि सल्य बनहुँ सारथि तुम्हार,
व्हैहैं नृप तोहू तोरि हार ॥
यह कीन्ह प्रतिज्ञा कृष्ण[8] उच्च,
जोलौं नर[9] लरहिँ न करहुँ जुद्ध ॥३६॥
जो मरहिँ पार्थ तो शस्त्र धार,
तुँहि[10] देहुँ राज तुव अरि सँघार ॥
नहिँ मरहिँ[11] पत्थ जो मरहि पत्थ,
हरि हरहिँ[12] सँत्थ[13] गहि सस्त्र हत्थ ॥३७॥

(१)एकही तीर से(२)तीन पुर रूप दैत्यों का नाश हो गया(३)दुर्योधनने(४)ब्रह्मा महादेव का सारथि हुआ था ॥ ३४ ॥ (५) परशुराम ने (६) शोभा का समूह (७)तुम जैसे अर्थात् शल्य जैसे ॥३५॥ (८) श्रीकृष्ण ने ऊंचा (९)अर्जुन॥३६॥ (१०) श्रीकृष्ण युधिष्ठिर को कहते हैं कि तुझको (११) नहीं मरेगा (१२) नाश करेगा (१३) तेरे संगवालों का ॥ ३७ ॥

हरि सम करौ तो दक्ष प्रबल धीर,
नृप कह्यौ आप हौ विदित वीर ॥
कहि सल्य करहुँ तब कथित काज,
तू करन देहु मुहि वचन राज ॥३८॥
हित अहित कहौं कछु जुद्ध बेर,
सब सहौ करन तू समय हेर ॥
प्रिय वच हुव सारथि सल्य बोल,
चहुँ वाक्य करैं नहिं भट अचोल ॥३९॥

॥ दोहा ॥

निज जस निज निंदा निरखि, ज्यौं परनिंदा जान
त्यौं झूठी तारीफ पुनि, करैं न निकरैं प्रान ॥४०॥

॥ छंद पद्धरी ॥

॥ कविवचन ॥

पुनि कुल्लि सल्य हिय किय हुलास,
मानस्मिसम हाकहु हय दुकोल ॥

---

(१) धीरजवाला (२) राजा दुर्योधन ने शल्य से कहा (३) प्रसिद्ध (४ कहा हुआ (५) हे राजा ॥ ३८ ॥ (६) हित अहित दोनों में से कुछ भी (७) शल्य बोला (८) चारों वाक्य जो अभी कहते हैं (९) चंचलपन से रहित अर्थात् धीर ॥३९॥ (१०) प्राण निकलैं तो भी ॥ ४० ॥(११)बोला(१२)मनको (१३) अगाड़ी चलने योग्य (१४) इन्द्र के सारथि के समान (१५) अत्यन्त चंचल

हुव सारथि सल्य रु[1] नृपति हेर,
जिय हरखित गिन[2] गँन[3] सत्रु जेर[4] ॥४१॥
तित सल्य कीन रथ हय तयार,
इत कर्न[5] अस्त्र पूजे उदार ॥
परिक्रमन[6] करि रु रथ करि प्रनामं,
सल्यहिं बिठाय बैठिय ससामं[7] ॥४२॥
जित रथि सारथि रवि चंद जोर[8],
उर[9] अरिन अमा[10] बैठिय सुघोर[11] ॥
बैठ्यौ अरि मन भय तिनहिं[12] संग,
अह्लाद[13] निजनके[14] अंग[15] अंग ॥ ४३ ॥

(१) और (२) समझे (३) समूह (४) शत्रुओं को दबे हुए ॥ ४१ ॥ (५) बड़ा और दाता, यह कर्ण का विशेषण है (६) परिक्रमा (७) साम उपाय सहित ॥ ४२ ॥ (८) जोड़ा है (९) छाती पर (१०) अमावास्या (११) बहुत भयंकर. यहां रथि सारथि के जोड़े का और चंद्र सूर्य के जोड़का रूपक है, और अमावास्या के साथ भयका एकदेशी रूपक है. ज्योतिष शास्त्र में कहा है कि चंद्रमा और सूर्य एक राशि पर आते हैं जब अमावास्या होती है. यहां शल्य और कर्ण एक रथ पर बैठे हैं जिस से शत्रुओं के चित्त में पराजय रूप अंधकार होजावेगा. (१२) उन दोनों (शल्य, कर्ण) के (१३) आनन्द (१४) अपने लोगों (कौरवों) के (१५) हरेक अंगमें. यहां कार्य कारण

वंदीजन चारन[1] मगध सूत,
बिरदावलि[2] हरखित सूर्यपूत ॥४४॥

॥ छंद मनोहर ॥

घूमैं घर[3] पीरपरैं[4] घरघर केते नरैं[5],
घूमैं परैं[6] पीरपरैं तूंही पीरक्षानहैं[7] ॥
जान जगवीच निजद्विज[8] जजमान[9] आन[10],
तूंही जगवीच जगद्विज जजमानहैं ॥
आप सुतैं[11] दान आन आप तियैं[12] मानआन,
आप तनुत्रानैं[13] तनुत्रानैं[14] केहू आनहैं ॥

एक साथ होने से अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है. शल्य, कर्ण का साथ बैठना तो कारण है, और उस के साथ ही शत्रुओं के चित्तमें भयका बैठना कार्य है. इसी प्रकार शल्य, कर्ण का और आनन्द का भी अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ ४३ ॥ (१)देवता विशेष(२)गद्यों और पद्यों में राजाओं की स्तुति की पंक्ति ॥ ४४ ॥ (३) अपने घर में (४) पीड़ा (दुःख) पड़ने पर (५)कितने ही मनुष्य तो ऐसे हैं (६) दूसरे में दुःख पड़ने पर (७) पीड़ित होने वाला है(८)अपने ब्राह्मण के (९) देव संबंधी यज्ञादि कर्म करनेवाले(१०)दूसरे(११)अपने पुत्र के लिये दान करनेवाले(१२) अपनी स्त्री के लिये सन्मान करनेवाले (१३) अपने शरीर की रक्षा करने के लिये(१४) कवच

तूंही आन[1] दान हैं रु तूंही आनमान[2] हैं रु,
तूंही कुरुभानु प्रान[3] त्रान सुप्रधान[4] हैं॥४५॥

॥ छंद पद्धरी ॥

दे धन द्विजदुःखन[5] दुःख दीन्ह,
लुभि[6] लुभितँ[7] तृप्त आसिखहिं लीन ॥
चित[8] चाह चही नृप गाहे[9] चीन,
हठि नृप कँहि[10] कर भुव पाण्डुहीन[11]।४६।
कै[12] गहहु युधिष्ठिर सर्वसिद्धि[13],
तव सम भट को कह विजयवृद्धि[14] ॥

कर्णवचन ॥

नृप तोर हुकम मम मत्थ सत्थ,
कै हनहुँ पत्थ कै हनहिं पत्थ ॥४७॥
वाजि करन अयुत[15] नोबत उदग्ग[16],

(१) दूसरों के लिये दान करनेवाला (२) दूसरों के लिये सन्मान करनेवाला (३) और दुर्योधनके प्राणों की रक्षा करनेवाला (४) श्रेष्ठ मुख्य है ॥ ४५ ॥ (५) ब्राह्मणों की पीड़ा का दुःख दिया (६) कर्ण ने लोभ करके (७) लोभवालों को तृप्त किया और उनसे आशिष ली (८) मनकी इच्छा चाहता हूं (९) राजा ने वात समझी (१०) कहा (११) पांडवों से रहित ॥ ४६ ॥ (१२) अथवा (१३) सर्वसिद्धि होती है (१४) जीतके बढने में ॥ ४७ ॥ (१५) दश हजार (१६) ऊंचे

वजि संख सल्य गहि हयन वग्ग ॥
इन भुजन भूप पूजे अनीक,
नरहरिहिं नरहिं रन परहिं ठीक॥४८॥
कुपि कालिमैं अबलौं वलन कीन्ह,
चक्री नर लैहौं वलहिं चीन्ह ॥
रटि धनुष धूनि सुन मद्रराज,
ईखहु विन पांडुन भूमि आज ॥४९॥
जग प्रीति उडावैं कपट ज्यौंहिं,
अरिसेन उडावहुँ आज त्यौंहिं ॥
कहि सल्य करहु मत व्यर्थ कूक,
सुनि अर्जुन जैहैं स्वैमद सूक ॥५० ॥
धरि धृति धरि तौधनु ध्वान ध्यान,
भटभरि गदाधरै करहु भान ॥

अर्थात् खंच दी हुई (१) युद्ध के लिये (२) श्रीकृष्ण को (३) अर्जुन को ॥ ४८ ॥ (४) युद्ध में (५) श्रीकृष्ण को और अर्जुनको (६) और सेना को समझलूंगा (७) कर्णने कहा (८) हे शल्य (९) देख ॥ ४९ ॥ (१०) शल्य ने कहा [११] कूका (हाका) (१२) अपना अहंकार ॥ ५० ॥ (१३) उस अर्जुनने धनुष के शब्द की चिंता को (१४) हे योद्धारों से डरनेवाला (१५) भीम का (१६) ज्ञान

पकरि करि[1] उछारहिं तोर प्रान[2],
गर्जना भूलिजै हैं गुमानं[3] ॥५१॥
गेरहिं गहि गोसिरं[4] गजनग्राम[5],
तब वढहिं वात[6] कातरि[7] सुनाम ॥
पद कर धूजहिं ताके[8] प्रताप,
अरु जुरैं चरन कर त्यौं[9] ति आप ॥५२॥

धृतराष्ट्र वचन ॥

॥ दोहा ॥

सुनसंजय किहिंभांति गंप,भपप्रद खयकियभीम
इप[10] रथ पंत्ति[11] लखे हरखि,सब भाखहु मंतिसीम[12]।

अथ चतुर्थयाम सूची ॥

छप्पय ॥

दुहुँन दलनकौ लरन करनकौ दलन पांडुदल,

(१)हाथियों को पकड़कर (२) उन के साथ तेरे प्राणों को भी भीम पवन का अवतार होने से प्राणों को पकड़ने की तर्क ठीक है (३) अभिमान को ॥ ५१ ॥(४) पृथ्वी पर(५)हाथियों के समूह(६) वात व्याधि(७)कायरतावालों में नाम, अथवा प्रसिद्ध नाम (८) उस वातव्याधि के प्रताप से हाथ पैर धूजते हैं और जुड़ जाते हैं(९)वे वैसे आपहो ॥ ५२ ॥ (१०)हाथियों का(११)पैदल (१२)हे बुद्धिकी अवधि रूप संजय ॥५३॥

नर[१] मारनकी करन प्रतिज्ञा कीन रहित छल ॥
शल्य कियो स्वीकार करन सारथि ह्वैहौ[२] मन
तारक[३] नामक दैत्य कथा वाकी भाखिय घन
करनकौं कटु वचन कहनकी,
अनुमति लीनिय शल्य इत ॥
करननैं कुपित कुरुनाथकौं,
आश्वासनैं[४] किय हित सहित ॥ ५४ ॥

॥ दोहा॥

जानहु चौथी जाममैं, इतनी कथा अनूप[५] ॥
प्रकट कियौ पद्मेस कवि, रनकौ अद्भुत रूप ५५

इतिश्रीमच्चंडीचरणारविन्दचंचरीकचारणवासा
भिधेयचारुसंवसथवास्तव्यचारणचक्रचक्रवाक-

(१) छल को छोड़कर यातो अर्जुन को मैं मारूं-गा, या अर्जुन मुझको मारेगा यह प्रतिज्ञा की (२) इस शब्द का अभिप्राय यह है कि मैं अच्छे मन से सारथि होऊंगा इस प्रकार दुर्योधन को तुष्ट किया, मेरा मन तुम्हारा भला करने में ही है ऐसे युधिष्ठिर को प्रसन्न किया (३) तारक नाम का दानव (४) हिम्मत बंधाना ॥ ५४ ॥ (५) उपमा रहित ॥ ५५ ॥

इति श्रीमती चंडी के चरणारविंद में है चित्त रूप भ्रमर जिसका, चारणवास नामक सुंदर ग्राम का निवासी, चारण समूह रूप चकवों के लिये सूर्य रूप, जा-

चंडांशुजाज्वल्यमानकाव्याज्ञत्वज्वालाज्वलज्ज-
गज्जीवजुष्टजयजीवनबलूंदाख्यग्रामठक्कुरजीवन-
सिंहप्रतोलीपात्रवंशभास्करप्रबन्धप्रणेतृमिश्रणा
कुलोद्भूतश्रीसूर्यमल्लशिष्यपातावतशाखाप्ररूढ
जगरामात्मजपद्मसिंहप्रभाषितकर्णपर्वविभाविं-
भूषितवीरविनोदे चतुर्थयामयुद्धं संपूर्णम्॥४॥

ज्वलयमान काव्यकी अज्ञता रूप ज्वालाओं से जलते-हुए जीवों करके सेवित, विजय के जीवन रूप बलूंदा नामक ग्रामके ठाकुर जीवनसिंह का पोलपात, वंशभास्कर ग्रंथ के रचयिता मिश्रण कुल में प्रकट हुए श्रीसूर्यमल्लका शिष्य, पातावत शाखावाले जगराम का पुत्र जो पद्मसिंह उस से रचे हुए कर्ण पर्वकी शोभा करके विभूषित वीरविनोद में चतुर्थयाम का युद्ध सम्पूर्ण हुआ ॥ ४ ॥

॥ इति चतुर्थयाम ॥

अथ पंचमयामप्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

जुद्ध पंचमी जामकौ अतिपंचत्व[1] रु आह[2] ॥
पंचमुखनसौं पंचमुख[3], थकिहैं दैं दैं वाह ॥१॥
जंग पंचमीजामकौ, धाम[4] लखहिं रिखि धीर[5] ॥
बामवरन[6] बामाँ[7] वरहिं, काम परहिं करपीर[8]।२।

॥ श्रीरघुवीरस्तुति ॥

मनोहरछंद ॥

राज भार दैंन टेरे[9] प्रेरे[10] वन भौंर धरि,
मानौं घंनसार[12] दैं पसारयौ हैं पैंटीरकौं[13]॥
नेह[14] मेह छांडि कीनौं वेर मेह चीनौं मानौं,
एकस्तनैं[15] प्याय प्यायौ अन्यस्तन[16] छीरकौं॥

(१) इस में बहुत सा मरना होगा (२) और बहुत सी हाय होगी (३) महादेव ॥ १ ॥ (४) युद्ध का तेज (५) धैर्य वाले अथवा विद्वान् (६) श्रेष्ठ पतियों को (७) स्त्रियां अर्थात् अप्सराएं (८) पीड़ा करनेवाला ॥ २ ॥ यहां मंगल जो मध्य में किया है वह कवियों की शैली है. आदि, मध्य और अंत में मंगल किया करते हैं ॥ (९) बुलाये (१०) भेजे (११) वनवास के बोझको (१२) कपूर को (१३) चंदन को. यहां बुलाने में कपूर की और भेजने में चंदन की उत्प्रेक्षा है (१४) स्नेह की वर्षा को (१५) एक स्तनका दूध पिलाकर (१६) दूसरे स्तनका दूध पिलाया, अर्थात्

दायौ हौ कनिष्टपद[1] ज्येष्ठपद[2] दायौ[3] देखि,
एक[4] जंघा[5] स्थित अन्यजंघास्थित धीरकौं[6]॥
तातपर[7] प्रीति त्यौं विमात[8] पर प्रीति त्यौं,
विमातृजपै[9] प्रीति वंदौं वीर रघुवीरकौं[10] ॥३॥

दोहा ॥

दूजे दिनकौ[11] संमर हल, मुदित[12] अमरतिय[13] मोर[14] ॥
कुसुम[15] अवरहित कलि कमर, भमर करन[16] नरभोर ॥

अथ गजादिचतुरंगिणीवर्णन ॥

संजयवचन॥

छंदमुक्तादाम ॥

निजश्रुति[17] दै सुनिये ममनाथ,
सजे इभ जे जुगसेनन[18] साथ ॥
भिदा[19] कति भद्र१ रु मद्ररहु भूरि[20],

कैकेयीने(१)छोटी ठौरका(२)बड़ी ठौरका, अर्थात् गद्दी बैठने का (३) हिस्सा (४) मुख्य. यहां मुख्य गौण व्यवहार बैठानेवाले के आधीन है(५)जांघ. यद्यपि जंघा नाम पींडी का है तथापि मरुदेश में जंघा शब्द से (ऊरु) साथल लेते हैं (६) धैर्यवाले भरत को (७) पिता दशरथ पर(८)सौतीली माता कैकेयी (९) सौतीले भाई भरत पर(१०)श्रीरामचंद्रजी को॥३॥(११)युद्ध(१२)प्रसन्न हुई(१३)अप्सरा(१४)मौड़ धारण करने के वास्ते(१५) दूसरे दिनके युद्ध रूप पुष्प के वास्ते (१६)कर्ण और अर्जुन ॥४॥(१७)कान(१८)दोनों फौजोंके संग(१९)भेद(२०)बहुत

सजे मृग३ मिस्र४ सुने सब सूरि[1] ॥५॥
कहे [2]इभ जाति[3]चतुष्टयकेर,
[4]रचात [5]वितीं विधिकौं बहुवेर ॥
[6]बने ति[7]न घने [8]नृपकुंजरव्रात,
जिन्हैं लखि [9]व्यालुक चित्त लजात॥६॥
रचैं [10]कृत रूप लगैं फल [11]रूप,
गिनी वह वत्त [12]उहां मनगम्य[13] ॥
[14]सिसू [15]गुनिलौं लघुदंत सुहात,
[16]महारद [17]मकुनव्रात विख्यात ॥७॥
किते कलभाभि[18]ध बाल कितेक,
मदो[19]त्कट [20]मत्त रु निर्म[21]द केक ॥
[22]वसा कति [23]जुत्थप केक वि[24]साल,

(१) पण्डितों ने ॥ ५ ॥ (२)हाथी(३)चार जातियों के (४)रचते(५) व्यतीत हुई (६) सजे (७) वे(८)राजाओं के हाथियों का समूह(९)दुष्ट हाथियों का मन ॥ ६ ॥(१०) कार्य(११)अच्छा(१२)उन हाथियों के देखने में(१३)चित्तके जाने योग्य अर्थात् मनोहर(१४)बालक(१५) गुणवान् के समान(१६)बड़े हैं दांत जिसके(१७)बिना दांतोंवालोंका समूह ॥ ७ ॥ (१८)कलभ नामका, अर्थात् ३० वर्षका हाथी(१९)आनेवाला है मद जिस के(२०)झररहा है मद जिसके(२१)मद रहित अर्थात् जिसका मद उतर गया है (२२) हथिनी (२३) झुंड का मालिक(२४) बड़े

भनैं छवि जे कविभूरि[1]भुआल ॥८॥
अनूपम सामलत्ता[2] इभ अंग,
भिंदा[3] तव होत भनंकत भृंग[4] ॥
किधौं अति आलसि भूपनकाज,
विरंचिय[5] संचिय ध्वांत[6]समाज ॥९॥
दिखावनमात्र ति दंत उँदग्ग[7],
मनौं खल[8] लौकिक वैदिक मग्ग ॥
तथा रद[9] बंगर हाटक[10] तंग,
खगाधिपपांख अनंत[11] सुअंग ॥१०॥
गिरयौ रनं[12] हिक रह्यौ हिक गैल,
सजी मनु चूरिय चंदनसैलं[13] ॥

---

(१)बहुतसे कवियों के राजा अर्थात् बृहस्पति आदि॥८॥ (२)कालापन(३)भेद(४)जब भौंरे भनंकार शब्द करैं. यहां उन्मीलित अलंकार है(५)ब्रह्मा ने(६)अंधकार का समूह ॥ ९ ॥(७)ऊंचा है अग्रभाग जिनका ऐसे दांत केवल दिखलाने मात्र के हैं जिस में उत्प्रेक्षा है कि(८)दुष्ट के इस लोक का और वेद का दोनों मार्ग केवल दिखलाने मात्र के होते हैं. (९) दांत(१०)सुवर्ण के (११) दांतों में बंगड़ पहनाये हुए कैसे दीखते हैं कि मानों श्वेत शेषके अंगके गरुड़ की पांख लिपटी हुई है ॥ १० ॥(१२)युद्धके समय एक बंगड़ गिरगया है और एक पीछे रहगया है सो कैसा दीखता है कि मानों(१३)चंदनके सैल पर चूड़ी सजी

भरे छबि कुंभ[1] कि कुंभ बिभात,
भये दुव संभु[2] लरे दुव भ्रात[3] ॥११॥
सिरी जरतार[4] जुहारन[5] सुद्ध,
मृडानि[6] पानि गजानन मुद्ध ॥
दिपैं दुव केकि[7] रु हस्तिप[8] देसै[9],
बनी छबि वाहन[10] कार्तिक[11] बेसैं[12] ॥१२॥
बन्यौ करि[13] कौ कर सामलैं[14] बर्न,
कह्यौ मनु वासुकि[15] वंटहि[16] कर्न ॥
भयौ भ्रम चंडियचित्त वह्यौ[17]हि,
गजासुर अन्य[18] कुटुंब गह्यौ[19]हि ॥१३॥

हुई है. चूड़ी सुधारने के गाडुम लकड़े का नाम सैल है (१)घट हैं कि कुंभस्थल शोभा देते हैं(२)महादेव(३)दोनों भाई (गणेश, स्वामिकार्तिक) लड़े. एक कहता है कि मैं महादेव को रक्खूंगा दूसरा कहता है कि मैं रक्खूंगा. मानों इन दोनों का झगड़ा मिटाने के लिये महादेव ने दो शरीर किये हैं. यहां गम्योत्प्रेक्षा है॥११॥(४)जरीकी (५)मणियों की जड़ी हुई(६)पार्वती का खुली अंगुलियों वाला करतल(७)मयूर(८)महावत(९) अपने अपने स्थान पर अर्थात् सिरी पर(१०)मोर रूप(११)स्वामिकार्तिक (१२) श्रेष्ठ॥१२॥(१३)हाथी की सूंड(१४)काले रंगकी (१५)सर्पराज(१६)हिस्सा करने के लिये(१७)बहा अर्थात् घबराया (१८)दूसरे गजासुर ने(१९)कुटुंब को पकड़ा है

वढ्यौ तनु स्वेद[1] बढ्यौ रँग ओत,
गिनै कवि चित्रितगौरवगात[3] ॥
दिपैं चँल[4] स्रोन अनी निसदीह[5],
जथा हरिभक्तसिरोमनि जीह[6] ॥१४॥
कलापक[7] कंठ दिपैं दुखदाट[8],
बनी मनु फेनियचीर विराट[9] ॥
खिजे नरसिंघ गँरै[10] वँर[11] खात,
सुरारिय[12] आंतन हार सुहात ॥१५॥
दिपैं महिषासुरके गलदेस,
विभासित अंब्जनि[13] पंक्ति विसेस ॥
मनौं बहु पन्नगबालक मेल[14],

महादेव, गणेश, स्वामिकार्तिक, शेष और वासुकि, पार्वती का यही कुटुंब है. यहां हस्तिका गजासुर के साथ रूपक है. और हस्ति के कुंभस्थल आदि छः वस्तुओं को महादेव आदि छः वस्तुओं की उत्प्रेक्षा है ॥ १३ ॥ (१)पार्वती के शरीर में पसीना (२) समूह (३) गुरुता युक्त चित्रास से युक्त शरीर (४) चंचल कानों की अणियँ (५) रात दिन (६) जीभ ॥ १४ ॥ (७) कलावा (८) देखनेवालों के दुःख को दाटनेवाला (९) विराट् भगवान् के खाने की फीनी की फांक (१०) गलेमें (११) वल (मरोड़ी) खाता हुआ (१२) हिरण्यकशिपु की ॥ १५ ॥ (१३) कमलिनी की (१४) इकट्ठे करके

खगाधिप[1] किन्न निवीतं[2] सुखेल ॥१६॥
झुकैं भुव मंदगिरी[3] पद ध्यान,
मथैं सुहि संभु वसुंधर[4] मान ॥
चलै तजि शृंखल[5] संकु[6] सुधार,
सुखंडित वैसिक[7] ज्यौं जगनार[8] ॥१७॥
दिपैं पदलच्छन[9] शृंखल दूर,
स्वकुंडल[10] दत्तश्रुती सुतसूर ॥
गहैं छबि लांगुल[11] की कविगोतं[12] ॥
सुकुल्यं[13] सुस्वल्प कालिंदिनिस्रोत[14] ॥१८॥

---

(१)गरुड़ने(२)जनेऊ॥१६॥(३)मंदराचलके पैरोंके ध्यान से पृथ्वी झुक रही है(४)धनवाली मानकर विष्णुने समुद्रको मथकर रत्न निकाले उस ईर्ष्या से महादेव ने पृथ्वी को मथकर धन निकालना चाहा(५)सांकल (६) खूंटा (७) वेश्यापति(८)जैसे वेश्या को. नायक अपनी स्त्री को छोड़कर दूसरी स्त्रीसे रमण करके अपनी स्त्री के पास आवे उस स्त्री को खण्डिता नायिका कहते हैं. और नायिका अपने नायक को छोडकर दूसरे नायक से रमण करके स्त्री अपने नायक के पास आवै वह खंडित नायक हुआ ॥ १७ ॥(९)सांकल के आंटण होने से(१०) अपने दिये हैं कुंडल जिस ने ऐसे कर्ण के समान चि-न्हवाला(११)पूंछ(१२)कवियोंका समूह(१३)अच्छी लहरों के वास्ते (१४) यमुना का प्रवाह ॥ १८ ॥

चढी मन उक्कि सु जात न चूकि,
दिपैं बडचिन्न सुपारियद्रू कि[1] ॥
गिरैं अलि[2] दान मनंकत[3] और,
पढैं जशं[4] जाचक दातन पौर ॥१९॥
घसीटत लंगर[5] सल्हनमान्य[6],
वहैं[7] जिम तंगिय[8] ऐंचि वदान्यं[9] ॥
अटैं[10] चितचाह न हस्तिप ओर,
सुनैं जिम सूम[11] सुकार्प्यनसोर[12] ॥२०॥
न अंकुसजोमिल[13] संकुच नैन,
कुपुत्र सुमात पिता वरबैन ॥
गिनैं न महावत बानि गरूर,
कुभृत्य[15] सुनिर्बल स्वामियैंनूर[16] ॥२१॥

---

(१) सुपारी का वृक्ष. यह शंका की पूंछ है कि सुपारी के वृक्ष का बडा चिन्ह है? इस प्रकार का संदेहालंकार है (२) भ्रमर (३) मदके लिये (४) कीर्ति. शौर्य आदि से उत्पन्न जस, और दान आदि से उत्पन्न कीर्ति कहलाती है. यहां अलंकारमें जस के पढ़ने की गम्योत्प्रेक्षा है ॥ १९ ॥ (५) लंबी सांकल (६) चलना है सन्मान करने योग्य जिनका (७) चले (८) टोटेको [९] उदार [१०] अपनी इच्छानुसार चलते हैं महावतों की इच्छानुसार नहीं चलते (११) कंजूस (१२) सूम ॥२०॥ [१३] अंकुश के जोड़े से [१४] लज्जा [१५] बुरा नौकर [१६] रूप ॥ २१ ॥

चलैं इक पैंड ति औरं[1] सलाह,
कुछात्र[2] जथाविधि देसिकं[3] राह ॥
अटैं बरवृच्छन लेत उखारि,
बढैं दुष्ट ज्यौं खल[4] काज बिगारि ॥२२॥
उछारत अस्वन लूम[5] अमेट,
फिंकी[6] बरफागिं[7] खौर[8] सुफेट ॥
चरक्खिन[9] चौंकिं[10] रुकैं छिन चौक,
स्ववल्लभचित्र[11] व्रतिय[12] सोक ॥२३॥
खिजैं दर[13] अखि न मावत खून[14],
जथा तिय प्रौढहि[15] काम जबून[16] ॥
अटैं गनबैनुंक[17] बीच अलोल[18],

---

[१]दूसरी सलाह अर्थात् दूसरे ही ढंग पर चलते हैं [२]कुत्सित विद्यार्थी(३)गुरु की (४) दुष्टों को ॥२२॥ (५) पूंछ पकड़कर (मरोड़कर) (६)फैंकी गई(७)अच्छे फाग के खिलाड़ी से(८)गुलाल आदि की अच्छी झोली (९) खिजे हुए हाथियों को रोकने का यंत्र विशेष(१०)चमक कर(११)मरे हुए प्यारे पति के चित्रको देखकर[१२]पति-व्रता का शोक. जैसे पतिव्रता क्षण भर ठहरकर फिर रोने लगती है वैसे ही हाथी क्षणभर रुककर फिर नालायकी करने लगते हैं ॥२३ ॥(१३)छोटी आंख में(१४)जुल्म(१५)प्रौढा स्त्रीके हृदय में[१६]बुरा(१७)भालों के समूह में(१८) स्थिर.

पस्यौ कपि[1] पास[2] यथा निधिबोल[3]॥२४॥
हिलै तनु[4] सीस गिरैं फटि हेर्म[5],
जथा गुरु जोग्य मिलैं सिख भर्म[6]॥
छहौं रितु छैल[7] रहैं मदछक्क,
उदंबर अन्य गिनैं सुअरक्क[8]॥२५॥
चलैं मंदशृंखल[10] हैं खिति[11] खोल[12],
वने[13] वनबाग वनात बिडोल[14]॥
अनाग्रह[15] होत कहूं अवधूत[16],
करैं हट ठहैं कहुँ बाल कुपूत[17]॥२६॥
स्वभृत्य[18] चढैं सिर स्वांत[19] सुसीत[20],
जथा नर नम्र[21] रहैं तियजीत॥

(१) हनुमान् (२) इंद्रजीत के पाश में (३) ब्रह्मा के वचन से. हनुमान् इंद्रजित् के पाश से कब रुक सकता था परन्तु अपने चित्त में लहर आगई जिससे रुक गया॥२४॥(४)थोड़ा सा(५)महल(६) भ्रम (७)बड़े शोकीन(८)गूलरका फल(९)सूर्य का॥२५॥ (१०) मद और सांकल(११)पृथ्वीमें(१२)अल्प नदी(१३)बनेहुए अर्थात् सरसब्ज(१४)बेडौल(१५)हठ रहित(१६)परमहंस के समान(१७)कुपुत्र बालकके जैसे॥२६॥(१८)अपना नौकर (१९)हाथीका मन(२०)बहुत शीतलहै. अपना नौकर सिर पर चढ़ जाय तो क्रोध आना चाहिये परन्तु उलटा शीतल कहा; इसका परिहार स्वभावसे है.(२१)नमा हुआ

चढावत भृत्यहिं जौं सिर लात,
बिगारत बाल कुलाडन तात ॥२७॥
किते करि निंद्य[1] अनिंद्य[2] कितेक,
विचित्रअलंकृतिकेर विवेक ॥
वढे[3] गढ ढाहनकौं कोउ वेर,
जहां करि जंग किये अरि जेर ॥२८॥
कपाटन तोरि कढे बल कँध[4],
मरकॅटि जाल[5] जथाबिधि अंध ॥
सकीलि[6] कपाट स्वदंत सुँराह[7],
विँध्यौ छिद थूहर[8] दंत बराह[9] ॥२९॥
दई उपमा फिर दीप्ति दुरस्सैं[10],
बन्यौं खतउज्जलपै[11] सुबुरस्स[12] ॥

॥ २७ ॥ (१) निन्दा करने योग्य(२)निन्दा करने योग्य नहीं. यहां विचित्र अलंकार समझो. यथा "नमत उच्चता लहन कौं, जे हैं पुरुष पवित्र"(३)बढकर चले ॥२८॥ (४) कांधे के बल से(५)मकड़ी के जाले को(६)खीलों सहित किंवाड़ जिनके दांतों में हैं(७)अच्छे होगयेहैं मार्ग जिन के(८)थोहर का पत्ता(९)शूकर की दांतली में ॥ २६ ॥ (१०) शोभा है श्रेष्ठ जिसकी (११)सुफेद दाढी पर (१२) अच्छा मुख

पिरयो पगतैं चक्कचूर कपाट,
परयौ सिर पापर[1] चक्किय पाट ॥३०॥
महक्किय[2] पैर कि कुंडिय[3] मद्द,
अपूपक्क[4] पै जनु कूट[5] उरद्द[6] ॥
चलैं गहि तोप अलोलिय[7] चाहि,
जनौं चरखा गहि जात जुलाहि[8] ॥३१॥
अरे रद[9] चक्र दिपैं छबि एम,
सुपाचक[10] सीक जलेबिय जेम ॥
गिरी लगि टल्ल सफील सुगात[11],
कटैं मनु डोरिन भींत[12] कनात ॥३२॥
परी भुरजैं लगि टल्ल प्रबंधे[13],
खिसे[14] मनु ढोल कुढोलिन कंध ॥
परे परिखा[15] कति गोखें[16] परम्म[17],
मलेच्छन[18] लाल मनौं मुहरम्मै[19] ॥३३॥

---

(१) पापड़ पर ॥ ३० ॥ (२) भैंस का (३) बांश अथवा मिट्टी की कूंडा (४) मालपूए पर (५) अहरन (६) ऊपर से (७) क्रीड़ा में है चाहना जिस की (८) जुलाहे की स्त्री ॥ ३१ ॥ (९) दांतों में तोपों के पहिये अड़े सो मानों (१०) अच्छे कंदोई के सिलाए में जलेबी फँसी है (११) अच्छे अंगोंवाली भींत (१२) समूह ॥ ३२ ॥ (१३) अच्छी तरह बंधी हुई (१४) खिसल पड़े (१५) खाइयों में (१६) झरोखे (१७) उत्तम (१८) मुसल्मानों के तालाब में (१९) ताजिये ॥ ३३ ॥

फुरी छिक तर्क सु मो मति फेर,
दिपै मनु हर्म्य जलाधिपकेर ॥
अरभ्रं प्रभा इम खेयं अगाध,
बनैं यह तर्क बनैं नहि बाध ॥३४॥
प्रभावर हाटक हर्म्य प्रपात,
मिली उपमा-सम हीय न मात ॥
लई करि खेयं प्रभा हीय लूट,
कही मनु द्वारवती छबिकूट ॥३५॥
कुथा बनि सोनितबर्न करीसँ,
सरस्वति धारें कलिंदिनि सीस ॥
हिलैं कवि बुद्धि होवन हेरें,
घनाघन सामल सोनित घेरें ॥३६॥

---

(१)महल (२) वरुण के. यदि कोई शंका करैं कि खाई में वरुण के महल कैसे तो उस का समाधान करते हैं कि (४)अथाह खाई की(३)बड़ी शोभा गिनी जाती है(५)प्रतिबन्ध ॥ ३४ ॥ (६)खाई की शोभा श्रेष्ठ है(७)सोने की कलई के महल पहले से(८)हृदय में(९)खाई ने(१०)समुद्र की शोभा(११)सुवर्ण की द्वारका पुरी(१२)शोभा का समूह ॥३५॥ (१३) झूल(१४)लालरंग की(१५)गजराज के (१६)साड़ी(१७)यमुना के सिर पर(१८)देखकर (१९) वर्षा काल के मेघ(२०)काले और लाल (२१) कोलाहल. उपमेय पक्ष में हाथी और होदों की अनेक मनुष्य प्रशंसा करते

प्रभा[1] असिताचलको[2] परिवार[3],
सुमेर सुसृंगन[4] सज्जि[5] सृंगार ॥
सुसौवर्न[6] घंट मतंगज[7] सोर[8],
तडित्[9] घन[10] गर्जन नर्तन[11] मोर ॥ ३७ ॥
मच्यौ स्रजहाटकपुस्पन[12] संघर्न[13],
विधुंतुद[14] वेष्टित द्वादस ब्रघ्न[15] ॥
करीगन केतु[16] फरक्कि कराल[17],
कि बातगिरीसिर[18] ज्वालनजाल[19] ॥ ३८ ॥

है जिस का कोलाहल ॥ ३६ ॥ (१) कांति (२) विन्ध्याचल के (३) कुटुम्ब रूप छोटे बड़े हस्ती (४) अच्छे शिखर रूप होदों से (५) सजा (६) अच्छी सुवर्ण की बनी हुई घंटा (७) हाथी [८] हाथी की गर्जना [९] बिजली (१०) मेघ (११) इनको देखने से सिरी अर्थात् हाथी के वस्त्र विशेष में स्थित मोर की प्रतिमा का नाच होता है ॥ ३७ ॥ (१२) माला में स्थित सुवर्ण के पुष्पों का (१३) युद्ध. परस्पर भिड़ने से अथवा हाथियों के संग स्पर्श से क्रूर शब्द होता है इसलिये युद्ध का कथन है (१४) राहु (१५) बारह सूर्य. प्रलयकाल में द्वादश सूर्य तपते हैं जिस से प्रलयकाल रूप यहां युद्ध समय है (१६) निशान वा झण्डे (१७) भयानक (१८) अथवा वायु नामक दिक्पाल की तर्फ के पर्वत पर. निरंतर वायु चलने का यहीं संभव है अन्यत्र नहीं (१९) अग्नि की ज्वालाओं का समूह है. यहां संदेहालंकार है ॥ ३८ ॥

सजी वैमथून सुपुस्कर[2] सृष्टि,
बन्यौं वर ज्यौंत अकालिकवृष्टि[3] ॥
दिपी जिंहिं जेव घटा द्युति दंति,
विराटवपू ब्रह्मांडन पंति॥ ३९ ॥
लखे द्विप इदल दीप्ति ललामं,
विलावहिं ज्यों जग सूंमन नाम ॥
कहौं कटु योग्य न मोरिस रोग,
भलो फल मल्ल लगावहु भोग॥४०॥

॥ छंद मनोहर ॥

मत्कुन रु[11] वाल अरु पोत[13] विक्क[14] सजित हू,

---

(१)शुंडादंड कृत जल फुहारों की (२) शुंड के अग्रभाग की रचना(३)अकालवृष्टि. अकालवृष्टिका होना विघ्न कारी है सो यहां घोर विघ्न होवेंगे.(४)जिस तरह (५) हाथियों की पंक्ति विशेष ही घटा की कांति(६) विराट् भगवान् के शरीर पर ब्रह्मांडोंकी पंक्ति ॥ ३९ ॥ (७) श्रेष्ठ(८)बल्लीरों के(९)यद्यपि कटु वचन कहने मुझे योग्य नहीं तथापि मेरे क्रोध रूप रोग है इससे आतुर होकर कहता हूं (१०) सलाह रूप फल ॥४०॥(११)जिस हाथी के समय पर भी दांत न आवें और छोटे शरीर वाला (१२) पांच वर्ष का हाथी (१३) दश वर्ष का हाथी (१४) बीस वर्ष का हाथी

परिनत[1] गभीरवेदिहु[2] उर आनिये ॥
उपवाह्य[4] रु संवाह्य[5] ईषादन्त[6] कोलौं कहुँ,
अगनित जातिके गयन्दजुत्थ[7] जानिये ॥
हेमकोश मानों मानसोल्लासहि मानों मन,
यों गजपरीचा के महत ग्रन्थ मानिये ॥
राजैं राजारामसिंह राज गजराज रम्य,
हैवैं हैं अनेक कविराजन पिछानिये॥४१॥

इति गजवर्णन ॥

धृतराष्ट्र वचन ॥

॥ दोहा ॥

गयवर्नन भो स्रवनगत, चित हयवर्नन चाह ॥
रथपयवर्नन फेर रुचि, भट वरनहु नैयनाह[11]॥४२॥

अथ हयवर्णन ॥

॥ संजयवचन ॥

सोरठा ॥

---

(१)टेढे दांतोंसे मुहरा करनेवाला (२) सात स्थान से मद झरता हो और अंकुश न मानता हो ऐसा हाथी(३) हृदय में(४)राजा के सवारी के योग्य (५) युद्ध के योग्य (६)अगाड़ी से ऊंचे भाग वाले जिस के दांत हों ऐसा हाथी (७)हाथियों का झुंड(८)मन की खुशी (९) सुन्दर ॥४१॥ (१०) समूह (११) नीति के स्वामी ॥४२॥

विहरयौ लौंन वैयार, हय विहरे हेरे विहरि ॥
नोटकछंद तयार, कवि नवछावरमैं करहिं।४३।

॥ तोटकछंद ॥

मुख भाकलपद्रुमपुस्प मनौं,
जु किलंगिय केसरजेब भनौं ॥
मनिजाल जराव जुरयौ मुहुरा,
चिहुँटी फलिवेल चली चुहुरा ॥ ४४ ॥
कित दीपसिखा तिन श्रौन कितैं,
वरध्वंसक बात सुमोद वितैं ॥
खुरतारन अधंन जोरि खरी,

---

(१) गया था (२) हवा खाने के लिये (३) पद्मसिंह. संजय त्रिकालज्ञ था इस से भविष्यत् कथन है कि आज से ५००० वर्ष पीछे एक पद्मसिंह कवि होगा वह वीरविनोद ग्रंथ में तोटक छंद इन घोड़ों के न्यौछावर करेगा॥४३॥ कल्पवृक्षका रूपक है. (४)शोभा सहित कल्पवृक्षका पुष्प मुख है. (५) किलंगी केसरे की शोभा देती है(६)चिप रही है(७)फलोंवाली वेल (८)चौछड़ा. मालवादि देशोंमें सूत की चार लड़ोंवाला मुहरा [मूछन]होता है, वह लिया है, चर्म का नहीं॥ ४४ ॥ (९) दीप शिखा कहां और घोड़ोंके कांन कहां? अर्थात् यह उपमा ठीक नहीं(१०)क्योंकि उन के वेग के अगाड़ी अच्छा नाश करनेवाले वायु का हर्ष वीत जाता है. घोड़े

भलभामिनि भौंह कि वंकभरी ॥४५॥
कलिकाजुग किंसुक कामनके,
वर द्वै कि विभाग विदामनके ॥
श्रुतिदारहगंत कि देखनके,
लखियैं लुभि अंट कि लेखनके॥४६॥
चितचोर सुनैं ननजोर चही,
कहि भृंगन जोर मरोर गही॥
हदकंध मयूरिय कंध हिलैं,
लखिकैं रन पैरन पैर छिलैं ॥ ४७ ॥

वायु के नाशक हैं, वायु दीपशिखा का नाशक है, इस लिये उन घोड़ों के कानों को दीप शिखा की उपमा देना अनुचित है (१) क्रोधवाली स्त्री के ॥ ४५ ॥ (२) केसूलों की छड़ियों की (३) विदामों के. यहां जिन घोड़ों के कानों में केश अच्छी तरह कटे हुए हैं उन की उपमा है (४) चंचल स्त्री के अपांग (५) कलम के अंट की दोनों शाखा बराबर होती हैं जैसे ॥ ४६ ॥ (६) मनको चुरानेवाले अच्छे नेत्रों की जोड़ी भ्रमर की जोड़ी है. मुखका पुष्प से रूपक है इसलिये नेत्रों का भ्रमर से रूपक है. यहां सांग रूपकालंकार है (७) मोर की स्त्री का कांधा हिलता है. इस सोच से कि मेरे पति मोर का कंधा ऐसा नहीं (८) घोड़ों के पैरों को देखकर (९) मोर की स्त्री के पैरों की बीमारी उछलती है. वैद्यक शास्त्रमें लिखा है कि सोच आदि से स्त्रियों के पैरकी बीमारी होजाती है॥ ४७ ॥

रनसिंघ[1] सुवाद्यनमैं[2] सुनिकैं,
उपमा चिकवित्तचढ़ी चुनिकैं ॥
जिरबंध[3] जु जान निबंधनज्यौं[4],
कवि आन तकैं[5] उपमान न क्यौं ॥४८॥
पटु[6] पट्टि तुटी कटि पातुरकी[7],
उपजी उपमा मति आतुरकी[8] ॥
उर्ध[9] अंग उतंग सु कंध करयौ,
उरअस्व[10] सु जासुख जेब जरयौ ॥४९॥
इक खेटकं[11] सादिय[12] पिठ्ठ परयौ,
इक कोतल[13] अस्व स्व अग्ग धरयौ ॥
कहि पिठ्ठि[14] जु ढाल कहैं वर को,

(१) रनसिंघा (वाद्य विशेष) (२) बाजों में (३) घोड़े का जेरबंध (४) उनको बांधने का जाड़िये के जैसा पतला कपड़ा (५) देखें ॥ ४८ ॥ (६) बहुत तेज दौड़से (७) नाचनेवाली की (८) घबराई हुई बुद्धि की. कवि उपमा न मिलने से घबराता है (९) कमर से ऊपर का अंग(१०)जिस वेश्या का मुख घोड़े की छाती की शोभा को धारण करता है ॥४९॥ (११) ढाल(१२)सवार(१३) राजा लोग दुहरी चीजें रखते हैं. धारण की हुई से दूसरी चीज को कोतल कहते हैं. यहां एक ढाल तो सवार की पीठ पर है और दूसरी ढाल की घोड़े की छाती में उत्प्रेक्षा है. (१४) पीठ की ढाल को अच्छी कौन कहें?

उरअर्स[1] मनौं उर अच्छरको॥५०॥
प[2]ति मो इत अच्छरकौं परनैं,
धृतढाल मनौं पडरा धरनैं ॥
उद[3]वर्तनन्हान कि पट्ट पर्‌यौ,
धरिहैं पति मो[4]र सु मोर धर्‌यौ ॥ ५१ ॥
सु[5]भप्रोथन बीन[6]विराव सजे,
मृगसा[7]र सुधा[8]रन या[9]ल मजे ॥
मृग[10] मानहु कातरव्रा[11]त मरे,
सुभ वीर सिकारिय खूब खरे ॥५२॥
पन[12]नारिनसौं नृ[13]त पैज परी,

---

[१]इसका अंगीकार करके कवि दूसरी उपमा देता है कि घोड़ेकी छाती के साम्हने आईहुई अप्सरा की छाती का प्रतिबिंब पड़ने से मानों आकार से उसकी छाती है ॥५०॥ (२) घोड़ा मन में विचार करता है कि मेरा पति (सवार) इस युद्धमें अप्सरा को व्याहेगा सो पडले के लिये ढाल चाहियेगी, मानों इस कारण से ही घोड़े ने अपनी छाती रूप ढाल धारण की (३) पीठी किये पीछे स्नान करने के लिये (४) मेरे पति ने छाती रूप मौड़ धारण किया है. यह आकार से उपमा है ॥ ५१॥(५) घोड़ों के अच्छे नकतोड़े [६] वीणा का शब्द(७) कस्तूरी(८) अच्छी धारावाली(९)केसवाली(१०)हरिण(११)कायरों का समूह ॥ ५२ ॥(१२) वेश्याओं से (१३) नृत्यकी शर्त हुई

करि जीत मनौं अलकैं कतरी ॥
समुदेवैपु सोलिय जेव जुई,
सिसुहेरन नागनि आति सुई ॥५३॥
पुनि लूमँ लसैं छवि पावतसौं,
जलजंत्र विलोकहु जावतसौं ॥
गहिकैं उपमान कहूं गुनिकैं,
धृत वेंनि नु पातुरकी धुनिकैं ॥५४॥
अथवा सिसु सुंदरि सोच अर्थौ,
मल जात अही उँध स्वास भर्थौ ॥
जित पौननकों त्रिक जेव जवैं,
फनं त्यौं मँनि त्यौं प्रनिबिंब फवैं ॥५५॥

(१)जुलफें(केशविशेष). गुंथी हुई केशवालोंकी अलकोंको उपमा दीजाती है. विजय होने पर लूट करना कितनेक देशों का रिवाज है. (२)पीले वदन पर बालों की काली लकीर(३)बच्चों को ढूंढने के लिये (४) सर्पिणी ॥ ५३ ॥ (५)पूंछ (६) फुहारा. जाता हुआ फुहारा ऊपर से जाडा और नीचे से पतला होता है. (७)समझके (८) वेश्या स्त्री का केशपाश [चट्टा] (९)हिलाकर॥५४॥ (१०) बालक और स्त्री के सोच से भरा हुआ. पूर्व कहा बाल रूप बच्चों और सेली रूप सर्पिणीको ढूंढनेसे(११)श्वास भरगया(१२)पवनों की त्रिरी(१३)ढूंढ से ऊर्ध्व भाग में बहुत तैयार होने से तीन पान पड़े हैं फण, पहला पान. (१४)मणि दूसरा पान.(१५)प्रतिबिंब तीसरा पान ॥५५॥

अहि[1] धूनिय सीस मनी उछरी,
भल दैं उपमा कवि हौंस भरी ॥
वर पोरें[2] कठोरपनैं वहिहौं,
कति शामलता[3] सु अगे कहिहौं ॥५६॥
टहिलौ मति ओपम टूमनपै[5],
किय सूम[6] निछावर सूमनपै ॥
रनमैं करि कुंभनपैं ति रुपैं,
धृतसामलतां न छुपी ति छुपैं ॥५७॥
डरतैं हुव स्वेत[9] कहैं करिकौं,
वह काज सुसादिन[10]के अरिकौं ॥
जिनके खुर हाटक[11] नाल जरे,
जनु राहु[12] वृहस्पति जुद्ध अरे ॥ ५८ ॥
गजबेल[13] वनी सुचि रीति मनौं,

---

(१)सर्प ने(२)अच्छे सूमों के कड़ेपन को प्राप्त होऊंगा (३) कितना है कालापना उन्होंके ऐसा अगाड़ी कहूंगा॥५६॥ (४)बुद्धि धीरे धीरे फिरी(५)उपमा रूप अच्छी चीजों के लिये(६)घोड़ों के खुरों पर(७)युद्ध में हाथियोंके कुंभस्थलों पर(८)धारण किया कालापन नहीं छुपा ॥ ५७ ॥(९) सफेद(१०)अच्छे सवारों के(११)सुवर्ण का(१२)मानो राहु और वृहस्पति दोनों युद्ध के लिये अड़े हैं ॥ ५८ ॥ (१३) एक जाति के लोह से

भल[1] आन कवी शुभतर्क भनैं ॥
कलिमैं[2] परिकैं अरिग्राम[3] कुट्यौ,
तिनक्रोध मनौं तिंहिंठां[4] चिहुट्यौं ॥५९॥
चित भो खलकौ त्वर चोरनसौं,
पिसकैं चिपट्यौ तिन पोरनसौं ॥
तिन राजत[6] नैंवर जेब तथा,
जयकंकन साद्दियँ आप जथा ॥६०॥
पुनि खूबिंयकौ खनकार परैं,
छित छात[9] छिती सिसकार करैं ॥
जरजीनँ जुहारन जाल जर्यौ,
पटुदीप्ति रविप्रतिबिंब पर्यौ ॥ ६१ ॥
धृतजेबँ[12] मनौं तति रत्न धरैं,
किरनैं नवछावर आँन[13] करैं ॥

---

(१) अच्छा लाकर (२) युद्ध में (३) शत्रु समूह(४)उस जगह पर ॥ ५९ ॥ (५) दुष्ट का चित्त हुआ जल्दी चोरने से(६)शोभते हैं. (७) सवारों के ॥६०॥(८)तारीफ का (९) घाव से छाई हुई पृथ्वी. यहां नेवरकी खनखनाहट में पृथ्वीके सिसकारेकी गम्योत्प्रेक्षा है(१०)जरी का जो जीन (काठी) वह रत्नों के समूह से जड़ा हुआ है(११)तीक्ष्ण है कान्ति जिस की ॥६१॥ (१२)धारण किया है प्रकार(तरह)जिसने(१३)आकर,

जवमैं[1] रविकौ हय जीति लयो,
द्रुत आनन[2] सप्तक दोरि दयो ॥६२॥
रिस चित्त सलाह न राह[3] रही,
विगरैं अधिकै[4] मुख वाह वही ॥
फबि भा गजगाहनकै[5] फिरनैं,
मनु कूदि लई ससिकी[6] किरनैं ॥६३॥
जलथाहन बालक जावत ज्यौं,
लखि चिन्ह सुकर्दम[7] लावत त्यौं ॥
वटसे[8] वपु साख विराजतसैं,
सुनिहैं[9] श्रुति यौं सँगभ्राजतसैं ॥६४॥
ससि सारद[10] नारद ईसअही[11],

(१) वेग में (२) सात मुख ॥ ६२ ॥ (३) रस्ते की सलाह नहीं रही (४) सात मुखों की जो वाहवाह (प्रशंसा) थी वह चली गई (५) घोड़ों के लगे हुए चामरों का हिलना (६) चन्द्रमा की ॥ ६३ ॥ (७) जैसे लोक में बालक जल का थाह लेने को पींदें (तल) में जाते हैं तो आती दफे वहांका निशान मिट्टी ले आते हैं ऐसे ही घोड़े सूर्यकी तर्फ जाकर चन्द्रमा के किरण रूप निशान ले आये (८) वड़ के जैसे पड़े हैं शरीर जिनके. यहां शाखा गजगाहों रूप हैं (९) इसको सुनेंगे इस हेतु से चारों वेद घोड़ों के संग फिरते हैं (यहां चारों गजगाहों में चारों वेदोंकी गम्योत्प्रेक्षा है) ॥६४॥ (१०) सरस्वती (११) सर्पों का

गुन गावनकौं चहुकोन गही ॥
दुमचीं रुचि पुस्प जु राचतहैं,
ग्रैह अष्ट जुरे तिन जाचतहैं॥६५॥
गजगाह सुसामँलभा परसैं,
इतही कविकौं उपमा दरसैं ॥
पितु कोप सुनैं अतिकोपपुरी,
जमुना चँवधारन जंग जुरी ॥६६॥
भलहैं न सुता इनसौं अरनैं,
कहि छांह गई कि मनैं करनैं ॥
सुनकैं यह आनि जुर्यौ कि सँनी,
भिरहैं हम तूं जिन रीति भनी ॥६७॥

राजा (शेष)(१)दुमची (घोड़ोंके खोगीरों में बनात वगैरहसे लिपटी हुई निवार, जो पूंछमें होकरके खोगीरमें लगी रहतीहै. वह वस्त्र या चमड़ेकी होतीहै वहां कान्तिवाले पुष्प शोभते हैं(२)आठों ग्रह चन्द्रादिक इकट्ठे हुए पिछली लीहुई चन्द्रकिरणों को मांगते हैं ॥६५॥ यहां से कविने काले गजगाहों का वर्णन करना प्रारम्भ किया है. (३)अच्छी है काली कान्ति जिनकी (४) सूर्य के क्रोध को (५) यमुना चारों धाराओं से युद्ध करने के लिये भिड़ी ॥ ६६ ॥ (६) हे बेटी यमुना (यह उक्ति सूर्यकी छाया की है) इन से युद्ध करना या परपुरुष से स्पर्श करना ठीक नहीं है(७)शनैश्चर (८) तू मत भिड़. यह रीति है

वरवीर सुखग्ग उदग्ग वही,
चवखंड भये उपमा सु चही ॥
झरते सनिपैं रिससौं झपट्यौ,
कहुँ केतुहु ताविधि तत्थ कट्यौ ॥६८॥
अरिको अरिमित्त सुध्यांन धर्यौ,
तमँ च्यारदिसान पिछान अर्यौ ॥
रुचिरंग सुरंग जिहाँन रटैं,
उपमान कुरंग जुबांन कटैं ॥६९॥
करहीन कियौ जिन चंद जहाँ,
कहियैं मृग कौन पयांन कहाँ ॥
वरवग्गन वत्त न वैंननसौं,
निरखैं मन पिट्ठिय नैंननसौं ॥७०॥

कि भाई के जीते बहिन का लड़ना उचित नहीं ॥६७॥ (१) घोड़े पर चढे हुए वीर का ऊंचे अग्रभागवाला ख-ड्ग चला जिससे शनिके चार टुकड़े हुए (२)उस शनि की तरह ॥ ६८ ॥ (३)शत्रु का शत्रु मित्र होता है. यहां सूर्य का शत्रु केतु मित्र हुआ(४)अंधकार(५)संसार अ-च्छे रंगवाला कहता है(६)यदि कुरंग(हरिण और खरा-ब वर्ण) को उपमान कहूं तो कहनेवाले की जीभ कट जाय ॥ ६९ ॥ (७)किरण रहित और हस्त रहित (८) हे मृग तू कह, उस वक्त कहां गया था अथवा कोई कहे कि जिस वक्त चन्द्रमाको जीता था उस वक्त हरिणने कहां ग-मन किया(९)सवार का मन पीठरूप नेत्र से देखता है ॥७०॥

सचिको सुचि नच्च सु राइ सजैं,
वर पोरनं घोर मृदंग वजैं ॥
श्रुति१मूर्छन २ ग्राम ३ भये इक ज्यौं,
मनुँ सादिय१वाजिय२कौतुकि३ त्यौं ।७१।
तथथेयं १ तथैय २ तथैय ३ तवैं,
जुर जाल लखैं सुरबालं जबैं ॥
हियपै छविदार हँमेल हिले,
सुममाल ति नारद लीन मिले ॥७२॥
लखि नच्च सुरी बहुवेर परी,
करि कोप सुरेंद्रं परैं कतरी ॥
गुनग्राहक सादिनकौं सुनिकैं,

(१) इन्द्राणी के जैसा श्रेष्ठ नाच करते हैं (२) उत्तम खुरों से जो आवाज है वह मृदंग वजता है (३) वाईस श्रुतियां और इक्कीस मूर्छना और तीन ग्राम जैसे एक रूप हो गये हैं (४) वैसे सवार और घोड़े और देखनेवालों का मन ये तीनों एक रूप होगये ॥ ७१ ॥ (५) ये तीनों तिरवट के बोल तव होते हैं (६) जब स्वर्ग की स्त्रियां देखती हैं (७) कान्तिवाला हार विशेष (मरुभाषा में झालरा) (८) पुष्पों की माला ॥७२॥ (९) देवताओं की स्त्रियां इनका नृत्य देख बहुत वेर मूर्छा खाखा कर पड़गई (१०) इन्द्र ने उन की पांखें कतरली (११) गुणग्राहक

चकरी पकरी गुनकौं चुनिकैं ॥७३॥
उपमा पवमानें न माननकौ,
गृहझारक गर्दभ आननकौ ॥
फननेटियलैं गज फेटनतैं,
चललट्टु सुबाल चपेटनतैं ॥७४॥
असवारनके मन गैल अटैं,
रमनीपतियाँ रुचि पीय रटैं ॥
दुहुँ वागनमैं इकधा दरसैं,
जलमैं थलमैं घन ज्यों वरसैं ॥७५॥
करें द्वै तनु आपत टारनमैं,
दृगें द्वै जिम रूप निहारनमें ॥
श्रुति द्वै जिम शब्द सुनावनमें,

सवारों को सुनकर इन्द्रने (१) डोर रूप (गुण) को बीच में रखकर चकरी (खिलौना) लिया॥७३॥ (२) वायुको उपमान मानना योग्य नहीं (३) क्योंकि वह वायु रावण का घर बुहारने वाला है (४) हाथी भी चक्कर खाते हैं जिन घोड़ों के धक्के से (५) चंचल लट्टुआ (खिलौना) जैसे बालक के हाथ की थप्पड़ से ॥ ७४ ॥ (६) मन के पीछे चलते हैं (७) जैसे सुन्दर स्त्री (पतिव्रता) पति की रुचि के अनुसार चलै (८) एक तरह से दीखैं (९) मेघ (बद्दल) ॥७५॥ (१०) दोनों हाथ शरीर की आपत्ति दूर करने में हैं (११) दोनों नेत्र (१२) दोनों कान

पखे[1] है जिम लाज वधावनमें ॥७६॥
उततैं इतकों झट यों पलटैं,
जिम झूट[2] रटैं छिनमैं हि नटैं ॥
दपटैं[3] गजगीरिय भित्तिपकों,
न गिनैं खल ज्यौं पर प्रीतियकौं[4] ॥७७॥
चल[5] पैर रकेबन चूमतसे,
सरकौ सिर फेरत घूमतसे ॥
पुनि पौरन व्रात[6] उडात परैं,
मरुकी[7] धरकौं वर कच्छ करैं ॥७८॥
जितही[8] जित पैर रुपैं जिनके,

---

[१]दोनोंपक्ष अर्थात्‌माताका पक्ष और पिताका पक्ष॥७६॥ (२)जैसे झूट बोलनेवाला क्षण भर में नटजावै (३) भींत को पटक कर खूंदतेहुए चले जाते हैं अथवा ऊपर होकर जातेहैं पक्षी भीतों के(४)दूसरे के स्नेह को ॥७७॥(५)चंचल पैरों से सवारों के पागड़ों को मानों चूमते हैं और हमारे बराबर कौन है इस हेतु से सिर हिलाते हैं. यहां अद्भुत चंचलता है और घोड़े और सवारों के आसुकीमासुकी है. घोड़े आसुक हैं और सवार मासुक हैं (६) खुरों का समूह (७) मारवाड़ की जमीन को उत्तम जलप्राय देश करते हैं. अर्थात् पैर इतने गहरे घुसते हैं जिस से पानी उबक आता है ॥ ७८ ॥ (८) जिनके

तितहीतित आतं दिपैं तिनके ॥
सरगंम्मपधंनिनिधंपमगं,
रस यौं गुनिं तान गही कि अगं॥७९॥
पुनि दृष्टियमैं उपमान परचौं,
कवि लोम विलोम सुचित्र करचौं ॥
सुचिं बाजिय पैर समेटनसौं,
कर सूम कि जाचकं भेटनसौं ॥८०॥
सु अंज्ञातपैं आवत बाल नटैं,
दुलही पियभी कुच द्वै दपटैं ॥
भरंपूरपटी भुवसौं भिरते,

पैर जाती दफा जहां जहां रूपतेहैं(१)आती दफा भी वहां वहां परही शोभते हैं(२)स नाम षड्ज से लेकर नि नाम निषाद तक आरोही तान कही जाती है और नि नाम निषाद से लेकर स नाम षड्ज तक अवरोही तान कही जाती है(३)गवैयों ने अगं (नहीं जानेवाली स्वरों की शकल से) ऐसी तान ली. यहां कि शब्द से संदेहालंकार है॥७९॥(४)निजर में(५)कविने मानों सुलटा उलटा चित्रकाव्य किया है. जैसे "चिरमी मिरची" (६) गतिविशेष(७)कंजूसके हाथ जैसे याचक के मिलाप से पीछे पलट जाते हैं॥ ८०॥(८)नहीं पिछाने हुए पुरुष के पास (९) नवीन परणी हुई मुग्धा स्त्री पति के भय से जैसे कुचों को हाथों से छिपाती है(१०) अत्यन्त परले दर्जे की दौड़ में मानों जमीन से चिपकते

इँद्रजालिकभित्तियलौँ[1] फिरते ॥८१॥
उडते[2] चल आवत धीर धरैं,
कपटीनर[3] प्रीतिय रीति करैं ॥
असमान गयैं पुनि बान[4] परैं,
सुरथान[5] विमाननसे उतरैं ॥ ८२ ॥
पटु[6] सादिन लैंन न देत पलो,
अरि ती लहिहैं कहि यौं उछलो[7] ॥
अति गौरव[8] खेत सुपिट्ठि इतैं,
विचलैं रनखेत सु हेतु किते[9] ॥८३॥
जिन पिट्ठि चढैं सुख पावहिं जे[10],

हुए चलते हैं (१) बाजीगर की बनाई हुई सफील के जैसे दीखते हैं ॥ ८१ ॥ (२) ऊपर को जाते चंचल और उतरते धीरे२ हैं (३) जैसे कपटी आदमी की प्रीति (४) बाण (शोर या बारूद के बने हुए) (५) स्वर्ग से विमान के जैसे ॥ ८२ ॥ (६) होशियार सवार को पल्ला (वस्त्र का अन्तभाग) नहीं लेने देते. यहां कोई शंका करै कि पूर्वोक्त आसुकी मासुकीमें फर्क आताहै उसका समाधान(७) वह पल्ला शत्रुओं की स्त्रियों पति मरने पर लेवैंगी ऐसा कह कर उछल गये (मरुदेश में रोने को भी पल्ला कहते हैं)(८)अत्यन्त बडप्पन का वंश और क्षेत्रभूमि भी पिछाड़ी रखतेहैं(९)युद्धखेतसे भाग जावैं वो कारण कहांहै ॥८३॥(१०)जो सवार इनके पीठ पर चढेंगे वे सुखपावेंगे

तिन चित्तहिँ पूछहु गावेंहिँ[1] ते ॥
दृढ अस्व लखे नृप[2] दैदलके,
पर हैं मिझमान घरीपलके ॥ ८४ ॥
इम भा[3] फुलवारिय आफुवकी,
दृढ तो[4] मँति दाव चमूदुवकी ॥
सुतबात[5] सुवात विहार सज्यौ,
लखिकैं विदुर[6] दृढ मेघ लज्यौ ॥८५॥

॥ छप्पय ॥

अतिअद्भुत अस्वीय[7] वनायुज[8]१विदित वखानिय
आजानेय[9]२ कुलीन[10]३ पारसीकें[11]४हिँ पहिचानिय
कतिवाल्हिक[12]५कांबोज६जैंवन[13]७घनबँहुवन[14]जानहु

---

(१) वे कह देवेंगे (२) हे राजा धृतराष्ट्र ॥ ८४ ॥(३)घोड़े रूप अफीम की फुलवाड़ी की कान्ति है(४)तेरी बुद्धि रूप वन की अग्नि(५)तेरे पुत्र (दुर्योधन) की बात रूप प्रचंड पवन के चलने को देख कर (६) विदुर रूप मजबूत मेघ शर्मा गया अर्थात् मेरे से कुछ न हुआ इस हेतु से ॥ ८५ ॥(७) घोड़ों का समूह (८) वनायु देशमें पैदा हुए(९)बरछी लगने परभी मूर्छित न हों(१०)अच्छे कुल में पैदा हुए(११)परसिआ[ईरान]देश में उपजे हुए (१२)वाल्हीक देश में उत्पन्न हुए (१३) बहुत वेगवाला (१४)बहुत पानीवाला

कोउककथितकिसोरपृष्ठपुनिरथ्यपिछानहु ॥
सित असित हलाहं कुलाहं सुचि वर विनीत
श्रुति रम्यके ॥
इमलक्खनअस्वअटेअपनकरिवेनम्यअनम्यके
सैंधवं सूकलं कडयं अष्टमंगलं रु कक्कं कहि,
पंचभद्रं सेराह रु खोंगाह रु नीलक गाहि॥
त्रियूह तथा वोल्लाह हरियं खुंगाह उराह हि,

(१) बछेरा (२) भार लादने योग्य (३) रथ में जोतने योग्य (४) सफेद और (५) काले (६) चित्र विचित्र या अपलक (७) थोड़े पीले वर्ण वाला शरीर और जानु (घुटने) श्याम हों (८) शिक्षा में चलनेवाले और सुन्दर कानवाले (९) मार्ग (१०) नहीं नमने योग्यों को नमने योग्य करने के लिये ॥ ८२ ॥ (११) घोड़ा (१२) नहीं शिक्षा पाया हुआ घोड़ा (१३) पतली कमर वाला घोड़ा (१४) जिस के पूंछ, छाती, खुर, केश, मुख सफेद हों उसका नाम (१५) सफेद घोड़ा (१६) हृदय, पीठ, मुख, पसवाड़े में फूल हो ऐसा घोड़ा (१७) अमृत के जैसे वर्ण वाला (१८) सफेद और पीला (१९) थोड़े नीलवर्ण वाला (२०) कपिल वर्णवाला (२१) जिसके सफेद केसर (गर्दन के केश) और पूंछ हों (२२) पीला वर्णवाला (२३) काला वर्णवाला (२४) शरीर थोड़ा सफेद हो और पींडियें काली हों ऐसा घोड़ा

वोरुखान[1] उकनाह[2] सोणा[3] हालक[4] पंगुल[5] कहि।
सरुह[6] कयग्रु[7] श्रीवृक्ष[8] कोकति[9] कियाह[10] गौरवकाहय
इहि विधि नामनके अश्वउत गुनिके पद्मसुक-
वि गहिय ॥८७॥

इति हयवर्णनसपूर्ण ॥

धृतराष्ट्र वचनं ॥

॥ दोहा ॥

रथ्य अस्व अँचैं रथहिं, जानहु मुहि यह जान।
रथ रयजुत किहिं रीतके, करहु तृप्ति ममकान.

॥ अथ रथवर्णन ॥

[छप्पय]

सीसम[11] साँग[12] रु सार[13] सौर स्यंदनगनें[14] साजिय ॥
सम्पा[15] जुंग[16] कूबर[17] सुनाभि[18] नेमिनें[19] मन मज्जिय[20] ॥

(१) श्वेत रक्त वर्णवाला (२) पीला और लालवर्ण वाला (३) काला और लाल कमल के जैसे वर्णवाला (४)पीला और हरे रंगवाला (५) सफेद कमल के जैसी कान्ति वाला (६) गधे के जैसा (७) अश्वमेध यज्ञ के योग्य (८) छाती और मुँह पर भँवरीवाला (९) लाल वर्णवाला ॥ ८७ ॥ (१०) वेग सहित ॥८८॥ (११) सागवान(१२)सालकी लकड़ी(१३)गर्भ की लकड़ी (१४)रथों का समूह(१५)जूके की खीली (१६ जूड़ा (१७) धरसूंडा(१८)नाप (१९) पूठियों में(२०)मन डूबगया.

कंचनपंत्रि रु कील मंच मखतूलै मनोहर ॥
जितजित रत्नन जटित भुकिग झल्लरिगन गोहरं,
भुवं परस जानि पेरसैं न भुव बहु वैंय अंबरमैंकटैं
देखे तिन्हैं देवन फटिग हग अवलौं वैसैंही अटैं

॥ दोहा॥

आगैं हे रथ ओरविधि, अब हैं रथ विधिओरं ॥
पढिकैं एकहि पंथकौं; किय कविपद्म निचोरं

इति रथवर्णानसमाप्त ॥

॥ धृतराष्ट्रवचन ॥

॥ दोहा ॥

सुन संजय सब सुनिचुके, सामजैं हय रथ सार।
सुन्यौं चहौं कैसे सुभट, इन ऊपर असवार।९१॥

(१) सुवर्ण की पातियां और खीलें (२) रेशम (३) मोतियों का है समूह जिनमें (४) पृथ्वी को रथों का स्पर्श प्यारा है (५) देवता यह जानकर पृथिवी को नहीं छूते हैं(६)बहुत अवस्था आकाश में ही कटती है(७)जिन्होंने इन रथों को देखा था उन देवताओं के नेत्र फटगये(८)अब तक उसी कारण फटे नेत्रों से फिरते हैं. देवताओं का अनिमिष होना प्रसिद्ध है ॥ ८९ ॥(९) और तरहके (१०) एक छप्पय को (११) निचोड़ (सार) ॥९० ॥ हाथी ॥ ६१ ॥

॥ संजयवचन ॥

॥ दोहा ॥

उज्वलकुलमनआदिकति,पतिहयगुनहिसमांन।
पैं चंचलता भेद पटु,उन पद चल इन पांन॥९२॥
अबसुन सुभटनमुकुटमनि, सुभटन वर्नन सोर॥
सुभटन जस सुनहैं सुभट, मेटन कुभट मरोर९३

अथ सुभटवर्णन ॥

तोटक छंद ॥

कसिकैं भट कंदर्ल काज कढैं,
छितबांछित यांन पिछान चढे ॥
घनें उक्तिन जुक्ति सु रत्न जरयौ,
कविपद्म सुतोटकछंद करयौ ॥९४॥
अमितादिक खग्गप्रहार भने,

---

(१) जिनके वंश और मन निर्मल हैं आदि शब्द से प्रीति वर्त्ताव इत्यादि जानो (२) सवार और घोड़े बराबर समझो (३) परन्तु चंचलपन में अच्छा भेद है (४) घोड़ों के पैर चंचल हैं और सुभटों के हाथ चंचल हैं ॥ ९२ ॥(५)हे योद्धाओं में मुकुटमणि धृतराष्ट्र (६)अच्छे योद्धा के जसको अच्छे योद्धा ही सुनते हैं(७) कुत्सित वीरों की मरोड़ मेटने के लिये ॥ ९३॥ (८) युद्ध के लिये (९) सवारी(१०)दृढ कथन रूप हेतु॥९४॥ (११) खड्ग चलाने के अमित, उद्भमित आदि पांच भेद हैं

ति प्लुतांतिक अस्वविहार तने ॥
सरं छत्तकैं विच पारकैं,
सुभ सूजंनिकीविधि सार करैं ॥९५॥
खुभि वृत्तिप सेलन खेलनमैं,
झट खग्गन खेटकं झेलनमैं ॥
खटत्रिंसत शस्त्र चिनार खरे,
खुरलींविच पान प्रवीन खरे ॥९६॥
जगके कवि जे मतभेदजटे,
रस द्वादसं नो अरु अष्टं रटे ॥

---

(१)प्लुत है अन्तमें जिनके अर्थात् आस्कन्दित१धौरित-क २ रेचित ३ वल्गित ४ प्लुत ५ ये पांच भेद अश्व गति के हैं(२)बाण को छात के कड़े के बीच होकर पार करैं और छात के रगड़ा न लगै (३) अच्छी सूई से बींधने के प्रकार से॥ ९५ ॥(४)भालों का व्यापार. जैसे बालकपनके खेल में हाथ ऊंचा करके लट्टू से लट्टूको फाड़ने हैं इस रीतिसे भाला चलाना सीखलिया और चकरी के खेल के जैसे खड्गप्रहारकी पांचों गतियों को जान लिया (५) ढालों पर तरवारों को झेलना (६)छत्तीस प्रकार के शस्त्रों की पहिचान में तैयार हैं (७) शस्त्र विद्या में और चतुराई में पुष्ट ॥ ९६ ॥ (८) बारह रस अर्थात् उन नव रसों में वत्सल१ हास्य२ सख्य३ मिलाने से(९)आठ. शान्त रस रहित नाटक में आठरस माने हैं

इनके मततो रसजुग्म अटैं,
रुचि वीर ततोऽधिक रौद्र रटैं ॥९७॥
उर स्वच्छदया नहिं पच्छ अरैं,
जलहीन वचैं जललीन जरैं ॥
वर धारनैं वारन तारनके,
कति संबर दारन दारनके ॥९८॥
चित अर्पितँ चर्नन चंडियके,
मृध किंकर केक मृतंडियके ॥
श्रुतिसारं बिचार विहार करैं,
पुनि छेह न दैं सिरतूटपरैं ॥९९॥
बिगरैं पहलैं वरधीर बनैं,
बिगरैंपर वीरन वीरवनैं ॥

---

(१)दो रस अर्थात वीर और रौद्र(२)वीर से जियादा इच्छा॥९७॥(३)हृदयमें निर्मल दया(४)बहादुरी रूप पानीसे रहित बचतेहैं और उसी पानी सहित उद्दीपित होतेहैं.यहां विरोधाभास अलंकार है (५) विष्णु के वर पाये हुए(६) काम के शत्रु महादेव के वरपाये हुए९८॥(७)अर्पण किया है मन जिन्हों ने ऐसे भक्त हैं(८)युद्ध में कितने ही मार्तण्ड अर्थात सूर्य के भक्त हैं(९) वेदान्त को समझकर वर्त्ताव करते हैं ॥ ९९॥ (१०)जहां तक न विगड़ैं उस से पहले बड़ी धीरज धरते हैं (११) बिगड़ने पर वीरों के भी वीर हो जाते हैं.

तित जावत तीन उपाय तजैं,
सुखछावत अंत उपाय सजैं ॥ १००॥
नखतैं सिखलौं थित नीतिहिमैं,
रुचि राचिरहे वड रीतिहिमैं ॥
कढिजान विपच्छन पच्छकरैं,
रु रुपैं पर लक्खन लच्छ करैं ॥१०१॥
सरनागत पंजर सांज सजे,
सिरसद्म तजैं तिनकौं न तजे ॥
परनारिनपै नहि नैनपरे,
बिगरैं परकाज न वैनपरे ॥ १०२ ॥
दर पैं गिरिलौं परपीर गनैं,
गुरु लाज रु तुच्छ सरीर गनैं ॥

---

(१) साम, दान, भेद, (२) दुखद होने पर ॥ १०० ॥ (३) राजनीति में (४) इच्छा से आसक्त हो रहे हैं(५)शत्रुओं के पांखें करैं. अगजाने के वास्ते(६) लाखों आदमियों को बाण का निशाना बनावैं ॥१०१॥ (७)शरणागतों के लिये पींजरे के जैसा वेश धारण करैं(८)अपना सिर और घर छोडदेवैं (९) पर स्त्रियों पर (१०)जिनसे दूसरेका काम बिगड़ जाय ऐसे वचन नहीं बोलते हैं॥१०२॥ (११) यद्यपि दूसरे की पीड़ा थोड़ी है तथापि उसको पर्वत के जैसी समझैं (१२) बड़ी

समुझैं उपकार सदा सिरपैं,
परकाज त्वरा[1] अतिही थिर पैं॥१०३॥
गुन औरन सर्सप[2] मेरु गनैं,
निज मेरु सु सर्सप हेर भनै ॥
नित मातपिता पद[3] सीस नमे,
जिय मित्त[4] विपत्तिहिं जानि जमैं॥१०४॥
उपकार करैं इक ब्रह्म[5] रटैं,
रु बिगारबनैं जिय ईस[6] रटै ॥
विपदाविच धीरज मेरु धरैं,
जसकाज त्वरा लखि लाज जरैं॥१०५॥
कर आसु[7] थासु[8] कासु[9]पै,
मन आसक्त[10] बाजिय मासुक[11]पै ॥

---

(१)जल्दीवाले हैं॥१०३॥(२)दूसरेके सरसों समान भी गुणोंको मेरु समान समझते हैं(३)चरणोंमें सिरको नमाते हैं(४)मित्र की विपत्ति को हृदय में जानकर समीप स्थिर रहैं ॥ १०४ ॥(५)दूसरे का उपकार करके आत्मा को एक ब्रह्म समझैं अर्थात् मैंने मेरा ही उपकार किया दूसरे का नहीं(६)यदि बिगाड़ हो जावै तो जीव और ईश्वर जुदा २ मानैं, अर्थात् मुझ अपराधी को ईश्वर दण्ड देगा ॥१०५॥(७)हाथ जल्दी से(८)स्थिर होते हैं(९) बरछी पर(१०)मन आसक्त हो रहा है (११) अत्यन्त प्यारे घोड़े पर.

गुरुताात ति टोप रु कौच गनैं,
भल भ्रात सुहेतिनँ भ्रात भनैं ॥१०६॥
भुजजोर भरोस परोस भलौ,
पकरैं जमहूँ दुवकोस पलौ ॥
दिय दान सुही धनँ जान दिपे,
गुनचोरनसौं छितिछोर छिपे ॥१०७॥
करिकैं गुन ओरनँ तुष्ट तवैं,
छत दर्पन प्रौढ तिया ति छकैं ॥
गुन गाय गयौ नहिँ रिक्त गुनी,
गुरुकी गंरहा सुपनैं न सुनी ॥१०८॥
गुरु कैं उपकार रु मौनँ धरी,

(१)शिरस्त्राण (टोप) को गुरु और कवचको पिता समझते हैं(२)अच्छे चाचों के समूह को अच्छे भाई समझते हैं ॥१०६॥ (३) पड़ोस(४)यद्यपि यम के इन योद्धाओं से दो कोश की दूरी है तथापि उसको पकड़ लेते हैं(५) जो वस्तु दे दी वोही धन समझकर शोभते हैं अर्थात् वही हमारे संग चलेगा(६)कृतघ्नों से पृथ्वी के किनारे पर जाकर छिपते हैं क्योंकि इनकी छांह हमारे पर पड़ न जाय ॥१०७॥(७)दूसरों का उपकार करके स्वयं राजा होकर उनको देखते हैं(८)जैसे काच में अपने मुँह पर दन्तक्षत देखकर प्रौढस्त्रियां प्रसन्न होती हैं(९)खाली (विना कुछ लिये)(१०)निन्दा ॥१०८॥(११) चुप हो गये

करि दान कहूँ न पिछान करी ॥
सिरत्राय परी सु उठाय नचे,
जमराजहिँ जाचि रु जंग जचे ॥१०९॥
परसैं जु पराजय पौनहिकौं,
नित भार गन्यौं प्रभु नोनहिकौं ॥
ऋँतपै चितचाह उछाह रचे,
निरखे रन अच्छर नाच नचे ॥११०॥
टरि के जमदूत करैं टरके,
थिर लोकप्रवादनसौं थरके ॥
जस वत्त रहैं जु वनी जियमैं,
हित हीय रहैं निजँतीयहिमैं ॥१११॥
भट धन्य भने क्षत जे छकगे,
न मुहूर्त्त सुन्यो सुनि सूचकगे ॥

अर्थात् कभी मुख से ऐसा न कहा कि हमने इसका काम सुधारा (१) यमराज से भी मांगकर युद्ध करनेवाले ॥ १०९ ॥ (२) हार रूप पवन का स्पर्श करै ऐसा कौन है (३) मालिक के खाये हुए नमक का (४) स्वर्ग पर ॥ ११० ॥ (५) यमदूत भी टलकर दौड़जाते हैं (६) लोकों के कथन से कांपते हैं (७) अपनी विवाहिता स्त्री में ॥ १११ ॥ (८) जो घावोंसे व्याप्त हो गये हैं वे धन्य हैं (९) इन के युद्ध से भगजाने का मुहूर्त्त न सुनकर चुगल

कति भूसन दूसनजानि तजे,
हरैं जीरनहार निहारि लजे ॥११२॥
धरि त्यौं कवि जो लरि दैं जु धनी,
त्रिपदा भुजबंधन प्रीति तनी ॥
हहरायँ छिनो छमगीरकरे,
शिशुऊमर सिंघन चीरि खरे ॥११३॥
झर ऊठैं रिस सत्रुन आँखनतैं,
उछरैं चिनगैं उठि आंखनतैं ॥
खरकैं खरखग्गनँ नैंन खिलैं,
मन कुंभ सुवाद्य निनाद मिलैं ॥११४॥
तनुमांन बखान जुवान लटैं,
हनुमांनहु बंदर मान हटैं ॥
करिकैं श्रम टल्ल लगाय कढैं,

भाग गये(१)गहने को दूषण समझकर छोड़ते हैं(२) अपने स्वामी महादेव के गले में पुराना हार देखकर शर्माते हैं ॥ ११२ ॥ (३) गायत्री(४)डरकर क्षणभर (५) बालक अवस्था में ॥ ११३ ॥ (६) चिनगारियें (७) तीक्ष्ण खड्ग(८)जैसे कुंभकर्ण के मनको अच्छा बाजा मिले ॥ ११४ ॥(९)शरीर का प्रमाण(१०)हनुमान् भी अपनेको बन्दर मानकर हटता है. यहां योद्धाओं का और हनूमान् का उपमेयाधिक रूपक व्यंग्य है (११)कसरत करके

वडथंभनकौं वडसीत[1] चढैं ॥११५॥
भुजचीन रु मुद्गर[2] खीनभटे,
पढि पीन[3] पटाविधि लीन्ह पटे ॥
वडअंखन[4] झंखनि घोर छुरी,
परिहैं[5] काढि यौं कवि चित्त फुरी ॥११६॥
इह कीन्ह दया विधि[6] भ्रांति दुरी,
जुगँ[7] मुच्छ सुथंभन जोरि[8] जुरी ॥
कति अंग छिपात न कंकटमैं[9],
सुभकंकट स्वामि कुसंकटमैं ॥११७॥
इह पातुरकौं मन दांमनमैं[10],
कटि कच्छि[11] रहे प्रभु कामनमैं ॥
धनहीननकौ नहिं संग धरैं,
इम भीति[12] अनीति न अंग अरैं ॥११८॥

थंभों के धक्का लगाकर अखाड़े से निकलते हैं (१) वड़ा सीया नामक ज्वर चढजाता है ॥ ११५ ॥ (२) मोगरी भी जिनके भुजाओं को देखकर भड़ीता किये हुए वैंगन के समान हो जाती है (३) पुष्ट (४) नजर (५) निकलकर पड़ जावेगी ॥११६॥ (६) ब्रह्माने दया की जो कवि की भ्रांति चलीगई (७) मूछों की जोड़ी (८) वक्तर में (९) मालिक की खराब आपत्तिमें।११७।जैसे वेश्याकामन (१०) पैसेमेंमजबूत रहताहै (११) कमर बांधकर (१२) भय और अन्याय॥११८॥

जिमि जात[1] कुजात सुजात कितैं,
इम घात[2] कुघात सुघात इतैं ॥
तिय चाह स्ववासँक[3]के दिनकी,
रति[4] वाहविलासनमैं इनकी ॥११९॥
जसलाज जँजीरनसौं जकरे,
असिप्पार[5] फिरैं अकरे अकरे ॥
जिनकौ तनु घाव प्रभाव भर्यौ,
धरि अग्र न पैर[6] अनग्र धर्यौ ॥१२०॥
पिछली भुव नांहि[7]न पर्सनकी,
मन मानि मनौं[8] खटदर्सनकी ॥
जति जोगि सँन्यासिय जंगमहैं,
द्विज[9] औ दुरवेस[10] छ दर्सनहैं ॥ १२१ ॥
इनके कनकौं[11] कहुँ भैंक्षप[12] गनैं,

(१) जैसे वेश्या के जाति और नीच जाति अच्छी जाति ही है (२) इस तरह जिन वीरों के अच्छा और खराब प्रहार अच्छा ही है (३) अपनी बारी के (४) प्रीति ॥ ११९ ॥ (५) तरवार के स्नेह से कारड़े (५) फिरते हैं (६) पिछाड़ी ॥ १२० ॥ (७) पृथ्वी स्पर्श करने योग्य नहीं (८) मानों षट्दर्शनियों की दी हुई पृथ्वी मानली (९) ब्राह्मण (१०) फकीर ॥१२१॥ (११) अन्नको (१२) खाने योग्य. मारवाड़ में बिलकुल मना हैं. जैसे अभी खरवा के

मरुभूमियमैं यह रीति मनैं ॥
किलकैं सिसु गैंदप्रहार करैं,
इम चोलनें गोलन वारं हरैं ॥ १२२ ॥
करि तूंर डुलावत कूरनकौं,
हसि पूर बुलावत हूंरनकौं ॥
हसि भूतन हूलि हटावनके,
करि प्रेतन चेत कटावनके ॥ १२३ ॥
कति डक्कनिकौं डरपावनके,
कति सांबमहेसं रिझावनके ॥
कति जुग्गनिपंति जमावनके,
कति शेजिं सुछाव भ्रमावनके ॥१२४॥
नित नेह निजाहव आवनसौं,
वद्ली पधिया गन बांवनसौं ॥

ठिकाने के स्वामी खालसे की जमीन को भी यदि षट्द-र्शनी मोलेवे तो उसका हासल नहीं लेते(१)बालक(२) लांछ (३) प्रहारों को दूर करते हैं॥१२२॥(४,नगारों की अवाज(५)अप्सराओं को(६)भूतों को भी बुलाकर (७) देव विशेष (८) होशियार करके (९) चिढ़ानेवाले ॥१२३॥(१०)पार्वती सहित महादेव को(११)शिरके मांस विशेष से भरी हुई खोपरी ॥ १२४ ॥(१२) अपने युद्ध में आने से(१३)बावन वीरों के समूह से. तुम हमारे साथ

रिसघेरे[1] रनांगन पैर रुपैं,
धूर्त[2] ग्रंथन अंगदकीर्ति छुपैं ॥१२५॥
दृढहो पद इक्कहिं अंगदको,
इनके पद द्वै दृढ क्यौंन तंकौ[3] ॥
लखि जाचक सूमन ज्यौं लचकैं[4],
मृधं[5] नाचक[6]मानि मही मँचकैं ॥१२६॥
तर्[8]कैं तनु कौचं[9] करी तरकैं,
थिरता लखि जुद्धथिरा थरकैं,

ऐसा दुःख उठाते हो इस अहसान से तुम्हारे धधड़ी धड़ल भाई होते हैं(१)क्रोध में आने से बड़ा कोलाहल होता है (२) ग्रंथों में लिखी हुई बालिपुत्र अंगद की कीर्ति. अंगद ने रावण की सभा में अपना पैर रोपकर कहा कि कोई बलवान् हो सो इसे उठावै. तब रावणने उसके पैरको, अन्य राक्षसोंसे यह नहीं उठेगा ऐसा समझकर, पकड़ा तब अंगदने ठट्ठा किया कि मेरे पैरों क्यों पड़ता है ? श्रीरामचन्द्रजी के पैरों पड़. उससे जो अंगद का यश हुआ था वह दूर होजावै. इस को पुष्ट करने को आगे हेतु दिखाते हैं ॥ १२५ ॥ (३) हे श्रोताओ क्यों नहीं देखते हो? (४)लचक जाता है कि ये क्यों आये! (५)युद्ध में(६)नाचनेवाले अर्थात् अति प्रबल समझकर(७)मचक खारही है ॥ १२६ ॥ (८) शरीर कटता है (उत्साह के न माने से)(९)बकतर की कड़ियें फटती हैं (शरीर के न माने से)(१०)रणभूमि

हरखैं[1] हर[2] हरि हेरा हरखैं ॥
बरखैं[3] बरविच्छु अही बरखैं ॥१२७॥
भट के रजधानिहिं मुख्य भनैं,
गुनि के महिजानिहिं मुख्य गनैं ॥
जुग[4] जानत मुख्य अनेक जिहाँ,
जुग गौन[6] गिनैं कहि कौन[7] तहाँ॥१२८॥
उर सत्यप्रभा इहिं भांति अरी,
कतिबेर अरातिन पैज करी ॥
यह लच्छ परैं नहिं तो करतैं,
गनि लक्ख असर्पियं दैं घरतैं ॥१२९॥
धरकौं मनिज्यौं फैनिनाह धरी,
इकइक कढैं केउ आँहकरी ॥

(१)महादेव वीरोंको देखकर प्रसन्न होते हैं(२)और पार्वती नवीन मुण्डमाला धारण किये हुए महादेव को देखकर प्रसन्न होती है(३)महादेव बरसाते हैं॥१२७॥ (४) राजा को(५)दोनोंको ही (६) गौण अर्थात् अप्रधान. तात्पर्य यह है कि हमें राजा वा राजधानी किसी से प्रयोजन नहीं. सिवाय हमारे प्राणों के. यहां तक संजय वचन है अब धृतराष्ट्र का वचन है(७)वहां कौन था? अर्थात् कोई नहीं था ॥ १२८ ॥ (८) सत्य की शोभा(९) निशाना (१०)मुहरें ॥१२९॥(११)पृथ्वीको(१२)शेष ने(१३)निकलने से(१४)हाय हाय किया. ऐसे बलवान् शेष को इतना

थरकैं जग जंगम थावर[2] हैं.
नृप[3] तोर कुमंत्र[4] निछावरहैं ॥ १३०॥

कविवचन ॥

ऋजु[5] सोमति बंक महारनसौं,
जसभा[6] वरनी न परैं मनसौं ॥
कछु जाय कही जिहिँ भाय कही,
गुनकैं कविपद्म सुमौन गही ॥१३१॥

॥ दोहा ॥

पराचीनभँट स्तुति प्रचुर, कहुँक आधुनिक केर॥
उन सुप्रभाव निहारहैं, गुनि श्रोता भ्रम गेर॥१३२॥

॥ धृतराष्ट्रवचन ॥

ऋजु[11] संजय चतुरंगिनी, रटी सेन ऋजुरीति ॥
करनसल्पकोकथनकछु,रह्यौसुपढकरप्रीति१३३

संजयवचन ॥

सुन नृप चल्ली सल्यसौं, कुवचन सरिता[12] केकैं[13] ॥

जोर पड़ा (१) चर (चलनेवाले) (२) अचर (नहीं चलने वाले) (३) हे राजा धृतराष्ट्र (४) ये सब तेरी बुरी सलाह के न्यौछावर हैं ॥ १३० ॥ (५) सरल(६)जस की शोभा ॥१३१॥ (७) प्राचीन योद्धार भीष्म, द्रोण, भीम, अर्जुन आदि(८)ज्यादातर(९) अभी के (१०) भ्रांति को छोडकर ॥ १३२॥ (११) हे संजय तू सरल है ॥ १३३ ॥(१२)नदियां (१३) कितनी ही

सहनसीलराधेयसुनि, अचल उदधि भो एक १३५

सत्यवचन

कहनौं हैं कछु औरही, करनौं हैं कछु और ॥
व्यर्थवचनकहिकहिकरन, कियममकरनकठोर

छंदपद्धरी ॥

तव बानी वंध्यातीय जानि,
सुत अर्थ कितैं परि मृत्यु पानि ॥
नरधनुष वृकोदरगदा ध्वान,
ति सुनावहिं अंतकपुन्यदान ॥१३६॥
सुनि करन जानि निजस्वामिकाम,
कहि हाक हाँक रथ गहि लगाम ॥
धरि मौन हकि रथ धरनि धूजि,
उलकाप्रपात हुव कुरव कूजि ॥१३७॥

(१)राधाका पुत्र कर्ण(२)नहीं डगमगानेवाला(३)समुद्र॥१३४॥ (४)सहज(५)कठिन ॥१३५॥(६)बांझ(७)पुत्र रूप प्रयोजन तो कहीं रहा, वह स्वयं मृत्युके हाथमें पड़ा(८)अर्जुनका (९)भीम की(१०)शब्द(११)मरते समय पुण्य के वास्ते जो दियाजाता है अर्थात् अष्ट महादान ॥१३६॥(१२) चलाओ. यहां हाक शब्द दो बार वीप्सा अर्थ में है(१३) पृथ्वी(१४)ज्वाला रहित अग्नि आकाश से पड़ी(१५)निंदित शब्दवाले अर्थात् अपशकुन सूचक काकादिकों

ए असकुन लखि अतिसोच आनि,
सिर धूनि सल्य कहि सुनहु वानि ॥
पेखहु इन असकुनफल प्रकास,
निजजिय[1]को जयको आज नास१३॥८॥
सुनकैं वच सल्यहिं कह्यौ कर्न,
असकुन ह[2]रि पांडव पौन[3] पर्न ॥
का वरुन इंद्र अरु जम कुबेर,
व्है नर[4] सहाय तिहिं निबल हेर ॥१३९॥
जिनं[5] सबजग निजबल कीन्ह जेर,
हौं हनौं प्रथम तिन पत्थ फेर ॥
न मरैं तो भीस्म रु द्रोन रीति,
कटि स्वर्ग सिधावन मोर प्रीति॥१४०॥
जंपि[6] सल्य करन चपचप[7] न जल्प,
कित नर अनल्प[8] कित आप अल्प[9] ॥

बोले ॥ १३७ ॥(१)अपने प्राणों का और विजय का नाश होगा ॥ १३८ ॥(२)श्रीकृष्ण (३) पवन के आगे पत्ते उड़ते हैं, वैसे ये तीनों मेरे साम्हने उड़ जावेंगे(४)अर्जुन को॥१३९॥(५)जिन वरुणादिकों ने॥१४०॥(६)बोला (७) चुपरह.(८)बड़ा. धनुर्विद्या में(९)छोटा. तू द्रोणाचार्य के गुरु परशुराम का शिष्य है, तथापि परशुराम का शाप होने से बल और विद्यामें छोटा है. और यह क्षत्रिय

नित किंकर[1] हुव त्रिहुलोकनाह[2],
मय[3] तृप्ति अग्नि किय खंडु[4] दाह॥१४१॥
गोग्रहनवेर[5] हे सर्व तत्र,
छीन सब सत्व लिय छीन छत्र ॥
तू तित न हुतौ अब हुव उदोत[6],
नर मौत किते इत आप[7] मौत ॥१४२॥
मुहि सकुनज्ञान तू प्रबल मूढ,
रट रहे आज तुहि मृत्युरूढ[8] ॥
आपुन चढि स्यंदन[9] कीन गौन,
तव चित्त[10] भ्रमित तित हुव कुसौन[11]॥१४३॥
तिनकौ फल तोकौं मिलहि तत्र,
कयौं प्रथमहिं रोवैं ज्यौं कलत्र[12] ॥
इम किय विवाद रथि साथि उद्ध[13],
अन्यादिन[14] जाम हुव प्रथम जुद्ध ॥१४४॥

और तू सूत है यह भी सूचित है.(१)सारथि(२)त्रिलोकीनाथ [श्रीकृष्ण](३)दैत्य का नाम है(४)खांडव वन को जलाया ॥ १४१ ॥ (५) विराट् राजा के यहां गायों को घेरने के समय(६)प्रकाशमान (७) आप की मृत्यु आई॥१४२॥(८)मौत पर चढा हुआ(९)रथ पर (१०) तेरा चित्त विक्षिप्त था, अर्थात् ठिकाने नहीं था. (११) अपशकुन हुए थे॥१४३॥(१२)स्त्री(१३)ऊंचा(बहुत)[१४]दूसरे

पंचमयाम सूची ॥

छप्पय ॥

प्रभु चतुरङ्गिणी प्रश्न ताहि संजय दिय उत्तर।
गजवर्णन जुत राजनीति त्यों हयवर्णन वर॥
शुभ रथवर्णन स्वल्प सुभटवर्णन वर सज्जिय।
सुभटकर्णकों शल्य लुभि रु कहिकुवचनलज्जिय
करनकौं भये अपशकुन कटु तिनहिं करन तिन
सम गनिय ॥
भलकर्णहिं रन उच्छव भयउ भूलि शल्य कुव-
चहि भनिय ॥ १४५॥

दोहा ॥

पहरपंचमीमैं प्रकट, बरवस्तुन विस्तार ॥
पटुकवीसपचोसनैं, बरनिय सुमति विचार॥१४८॥
इतिश्रीमच्चंडीचरणारविन्दचित्तचंचरीकचारण

दिनके प्रथम यामका युद्ध हुआ ॥१४४॥(१)धृतराष्ट्र का सेनाके चारों अंगोंको पूछना(२)राजनीति सहित अर्थात गजों का वर्णन मुख्य है ही परन्तु गौण राजनीति भी कही है(३)थोड़ा सा(४)कडुए वचन कहता हुआ शल्य लज्जित न हुआ (५) उन अपशकुनों को कर्ण ने तृण के समान गिना ॥१४५॥ (६) गजादिक चीजों का ॥१४६॥

इति श्रीमती चंडी के चरणारविंद में है चित्त रूप

वासाभिधेयचारुसंवसथवास्तव्यचारणचक्रचक्रवा कचंडांशुजाज्वल्यमानकाव्याज्ञत्वज्वालाज्वलज्ज गज्जीवजुष्टजयजीवनबलूंदाख्यग्रामठक्कुरजीवन सिंहप्रतोलीपात्रवंशभास्करप्रबन्धप्रणेतृमिश्रण कुलोद्भूतश्रीसूर्यमल्लशिष्यपातावतशाखाप्ररूढ जगरामात्मजपद्मसिंहप्रभाषितकर्णपर्वविभावि- भूषितवीरविनोदे द्वितीयदिनप्रथमयामयुद्धं सं- र्णम् ॥ २ ॥

भ्रमर जिसका, चारणवास नामक सुंदर ग्राम का नि- वासी, चारण समूह रूप चकवों के लिये सूर्य रूप, जा- ज्वल्यमान काव्यकी अज्ञता रूप ज्वालाओं से जलते हुए जीवों करके सेवित, विजय के जीवन रूप बलूंदा नामक ग्रामके ठाकुर जीवनसिंह का पोलपात, वंशभा- स्कर ग्रंथ के रचयिता मिश्रण कुल में प्रकट हुए श्रीसू- र्यमल्लका शिष्य, पातावत शाखावाले जगराम का पुत्र जो पद्मसिंह उस से रचे हुए कर्ण पर्वकी शोभा क- रके विभूषित वीरविनोद में द्वितीय दिनके प्रथम याम का युद्ध सम्पूर्ण हुआ ॥ २ ॥

इति पंचमयाम संपूर्ण ॥

॥ अथषष्ठयामप्रारंभ ॥

॥ दोहा॥

जंग जु छट्टिपजामकौ, छट्टीपय[1] गिरि जाँहि ॥
छवदनसौं छवदन[2] सुछवि, वाइ भाखि भिरिजाँहि
जंग जु सष्टी जामकौ, सूरन रंग[3] स्वरूप ॥
सुनि कातर तजि संग[4]कौं, कलाहिँ[5] ढंग[6] हितँ[7]कूप॥

धृतराष्ट्र वचन ॥

संजय कहहु सुसोन[8] कति, कतिहैंकहहु कुसोन[9]
कोन सुखद[10] हुव करनकौं, कहहु दुखद[11] हुवकोन३
महाराज सुन सकुन[12]मत, जे सुखदुखद[13] जिहान॥

(१)छटी का दूध. धर्म शास्त्रके अनुसार जन्मसे छठे दिन छटी देवी की पूजा कर जागरण करतेहैं. यह दंत कथाहै कि उसी दिन विधाता उस बालक के ललाट में लेख लिखता है. देवी की पूजा से छटी रात का दूध दृढ होना चाहिये परन्तु भयानक युद्ध के कारण उलटा जायगा. (२) स्वामिकार्तिक ॥ १ ॥ (३) नृत्य भूमि के तुल्य युद्ध भूमि का स्वरूप प्रतीत होगा. (४) बहादुरों का संग छोडकर(५)प्राप्त होवेंगे(६)कायरों की रीति मुख बिगाड़ना, आंसू आना, कंप होना (७)जिनको कूआ प्यारा है पड़ने के लिये ॥ २ ॥(८)अच्छे शकुन (९) अपशकुन(१०)सुखदेनेवाले(११)दुःख देनेवाले॥३॥(१२) शुभाशुभ शकुनों का सिद्धांत (१३) जगत् को सुख दुःख देनेवाले.

सुखद भये नरसुखदकौं, दुखदहि दुखद पिछान

॥ छंदपद्धरी ॥

बिनु पौन गिरिगै नीसानै वीर,
हुव उपश्रुति धीरहु तजत धीर ॥
हुव स्वानस्वानं घघरान हेर,
दिन मूक उलूकनकूँ फेर ॥५॥
जिम मेहं वृष्टि इम खेहं छाय;
महिसं रु खर सम्मुह मिलिग आय ॥

(१)सुख देनेवाले अर्जुनको सुखकारी शकुन हुए, यहां नर शब्द में श्लेष है(२)दुःख देनेवाले कर्ण को दुखकारी शकुन हुए ॥ ४ ॥(३)गिरगई(४)ध्वजा (५) मरुभाषा में इसको असोई कहते हैं. वह दो प्रकार की है, शुभ और अशुभ. शत्रुवधोद्यत के लिये मारो काटो इत्यादि असोई शुभ है. कहां जाता है? मत जा इत्यादि अशुभ है. और पीठ में जाइये इत्यादि शब्द शुभ हैं. साम्हने आइये इत्यादि शब्द शुभ हैं. कर्णको ऐसी असोई हुई कि जिसको सुनकर धीर पुरुष भी धीरज छोड़ते हैं (६) कुत्तों के शब्द हुए(७)दिन में नहीं बोलनेवाले उल्लू (घूघू) बोले ॥ ५ ॥(८)साम्हने बादल (९) साम्हने और अकालवृष्टि(१०)साम्हने खांखल अथवा आंधी(११)भैंसा(१२)गधाये दृष्टि में आये हुए अशुभ.

फनि[1] काल चलिग चलचाल फेर,
बिछुटेकच[2] रजवतितिय[3] कुबेरं[4] ॥६॥
पुनि पिष्ट[5] रु कंटक[6] दृष्टि पूर,
मिलि स्वर्नकार[7] पुनि वृक[8] जु क्रूर॥
इंगाल[9] अग्नि पुनि भस्म यौंहि,
तित इंधन कर्दम[10] रज्जु[11] त्यौंहि ॥७॥
पुनि खल[12] कपास तुस केस फेर,
अस्थि[13] पुनि असित[14] सबवस्तु हेर ॥
कलकल[15] रु लोह पुनि असितनाज,
सूप[16] पुनि शकृत[17] अरु सिलहि[18] साज॥८॥
तेल अरु जहर गुड चर्म तन्न,
रिक्तघट[19] खंडे[20] अरु चरबि अत्र ॥
तृन छाछ लौंन अर्गल[21] तथाहि,
वर नहिंन सरुत सम्मुह जथाहि॥९॥

(१)काला सर्प(२)खुले केशोंवाली(३)रजस्वला (४) बुरे समय॥६॥(५)आटा(६)कांटा(७)सोनार(८)भेड़िया- मद भाषा में इसको ल्याळी कहतेहैं॥"कोकस्त्वीहामृगो वृकः" इत्यमरः॥(९)कोयले(१०)कीचड़॥७॥(११)तिल आदि का तेल रहित कीटा(१२)हड्डी (१३)काली समस्त वस्तु अशुभहैं. दिशा दर्शनके लिये कितनी ही काली वस्तु गिना दी गई हैं(१४)कोलाहल(१५)छाज(१६)विष्टा (१७) पत्थर॥८॥(१८)खाली घड़ा(१९)हींजड़ा(२०) आगल॥९॥

शोणित तथाहि मंजार जुद्ध,
बधिर[1] पुनि कुब्ज[3] ए नहिंन सुद्ध ॥
समझहु सब रारहु[4] हंतक[5] सुक्ख,
पट छग कमंडलु[6] स्खलित[7] दुक्ख ॥१०॥
महिस[8] रव दक्खन खररव[9] रु रोस,
गर्भिनीतिय सुख करत सोस ॥
मुंडितसिर आर्द्रहु वस्त्र एम,
परस्परदुर्वचन हरहिं प्रेम ॥११॥
अंध रु जाहक[10] वातकिप[11] आन,
जाहि विध ससक[12] तिम सूर जान ॥
गोधादिक[13]को सुभ कढन नाम,
इन सब्द रु लखनो असुभधाम ॥१२॥
गंता[14] रु अपर[15] लैं नाम शुद्ध,

---

(१) रुधिर (२) बहरा (३) कूबड़ा (४) लड़ाई (५) नाश करने वाली (६) लोटा आदि जलपात्र (७) गिरते हुए ॥१०॥ (८) भैंसे का शब्द दक्षिण में (९) क्रोध ॥११॥ (१०) जंतुविशेष. मरुभाषा में इसको सेळा कहते हैं. (११) वायु रोग वाला (१२) खरगोश (१३) गोह. यहां आदि पद से सेळा, सूकर, सर्प और खरगोश का ग्रहण है ॥१२॥ (१४) प्रयाण करनेवाला (१५) अथवा कोई दूसरा नाम लेवै तो शुभ है

इनकौ दर्शन एव अति अशुद्ध ॥
वंदर रु रीछ इन अशुभनाम,
इन दर्शन अरु रव अतिललाम ॥१३॥
वंध्यातिय पुनि उन्मत्त मान,
संन्यासी नग्न रु जटिल जान ॥
लहैं रोगी अरि अरु अंगहीन,
अभ्यंगकृत रु पुनि क्षुधित चीन ॥१४॥
वसन कासाँय पट फेर मान,
जरदी हररे कासाय जान ॥
यह सुनी वृद्धजनपै सुजान,
उष्ट्रागम निजगृह लाय आन ॥१५॥
ए असकुन होवैं जत्र जत्र,
तजियैं जिय जय जस आस तत्र ॥
कहि करन सुने ए सब कुसौन,
कहहु अब जगत सुभ सकुन कौन॥१६॥
दधि घृत रु दोब अंछतहिं हेर,
घटभरयौ रु रांध्यो अन्न फेर ॥

---

(१)इनका दीखना और शब्द अशुभ है(२)बहुत सुंदर ॥ १३ ॥(३)बावला(४)जटावाला(५)मालिश कियाहुआ (६)भूखा॥१४॥(७)भगवां वस्त्र (८) ऊंट का आना (९) घरमें अग्नि का उपद्रव ॥ १५ ॥ १६ ॥ (१०) चांवल

ज्यौं सरसौं चंदन काच जान,
मृत्तिका मांस पुनि संख मान ॥१७॥
गोरोचन[1] गोमय[2] गो[3] गनाय,
सहत पुनि देवप्रतिमा[4] सुभाय ॥
बीन रु फल सिंघासन[5] बिचार,
अंजन आभूसन पुस्प सार ॥१८॥
सस्त्र सुभ त्यौंहिं ताम्बूल मान,
नर जाहि उठावैं श्रेष्ठ यान ॥
आसन रु छत्र व्यंजन[6] उदार,
सुवरन रु अभोगितवस्त्र[7] सार ॥१९॥
ताम्र[8] सुभ रजत[9] पुनि रत्न[10] तत्र,
फिर वृषभ रज्जुजुत[11] श्रेष्ट अत्र ॥
शुभ अन्न फेर मदिरा सभार,
नाली जुत झारी कमल[12] सार ॥२०॥
देदीप्यमान[13] पावक[14] अनूप[15],

॥१७॥ (१) सुगंधि द्रव्य (२) गोबर (३) गाय (४) मूर्ति ॥ १८ ॥ (५) पालखी (६) रींधा हुआ शाक (७) काम में नहीं लाया हुआ वस्त्र॥१९॥(८) तांबा (९) चांदी (१०) मणि (११) डोरी सहित बैल (१२) पुष्प विशेष ॥२०॥ (१३) जलती हुई (१४) अग्नि (१५) श्रेष्ठ.

गज अरु अज ए द्वै सुभ स्वरूप॥
अंकुस रु अस्व पुनि चमर अन्न,
नवसाक वनस्पति सुखद तन्न ॥२१॥
जु अनेक विप्र जुततिलक जान,
मदरहितहस्ति पय श्रेष्ट मान ॥
वेस्या मयूर चाख सु विचार,
नकुलँ इक बद्धपसु समुभ्क सार ॥२२॥
सुभउपश्रुति सुंभगो सहितवच्छ,
पयपूर्न कलस ए अतिहि अच्छ॥
संपूर्न ईखँ उस्नीसँ आन,
कन्या वृष सित विनुबंध जान ॥२३॥
दीप रु सिसुसंजुततिय अनूप,
धोवी रु घुटपौपट सुखस्वरूप ॥
विनुरुदनसव रु नीसान रम्य,

[१]बकरा[२]अच्छे स्वभाव वाले[३]विना रांधा हुआ हरा शाक[४]वृक्ष ॥२१॥ (५) दूध[६]पक्षी विशेष. मरुभाषामें लीलटांच कहते हैं(७)नौलिया(८)बंधा हुआ पशु ॥२२॥ (९)अच्छी असोई(१०)अच्छी गौ (११)जल से भरा हुआ (१२ अखंड(१३)सेलड़ी(१४)पघड़ी॥२३॥(१५)सुफदे सांड विना बंधन(१६)बालक सहित स्त्री (७१) मुर्दा (१८) ध्वजा और नगारा

फिर दासी भारद्वाज गम्य ॥२४॥
गिन बेदशब्द मांगलिक गति,
रिक्तघट छुछिआयें पुनीत ॥
ए सकुन कहे जब करन अग्र,
निरखे सबहिन गंधर्वनग्र ॥२५॥

कर्णवचन ॥

घबराहट मतकर सकुनघाट,
छितिपैं छलीपन विकट थाट ॥
रूपगो सकुनन विच तोर रँग,
इनतैं गिन पांडुनकौ अभाग ॥२६॥
कुपि कहिय सल्य सुन करन कांन,
मनमोदक मत भख मोदमांन ॥
हित वचन कहौं तुहि मित्र हेर
धिक भयौ विकलमति बिषम बेर ॥२७॥

कर्णवचन ॥

छंदमनोहर ॥

---

(१) पक्षि विशेष ॥ २४ ॥ (२) मंगलीक गीत (३) खाली घड़ा (४) मृगतृष्णावत् झूठे॥ २५ ॥ (५) शकुनों के घाट से (६) अद्भुत बाहुल्य (७) स्नेह॥ २६ ॥ (८) मन के लड्डू (९) तुझको धिक्कार है [१०] व्याकुल बुद्धि वाला ॥ २७ ॥

रंकनकौ रंकहैं जुधिष्टिर शु वाकौं आज,
वंकहैं मयंक अंकधरन सैरन कौ ॥
रम्य रम्य पात्रमैं ललाम छौंक दैगो भीम,
व्यंजन करैगो नाम धरकैं पैरनकौ ॥
घोटक सुकुल जत्र नकुल संकुल तत्र,
लख सहदेव तिथिपत्रतैं लरनकौ ॥
कृष्णतनु कृष्णमन कृष्णनाम पंथकौ हैं,
कृष्ण जस ह्वैं तौ आज आहव करनकौ ।२८।

॥ शल्यवचन ॥

॥ छप्पय ॥

वनिकैंपुलकी झूठ खाय इक काक पुष्ट हुव॥

(१) चन्द्रमा टेढा है, अर्थात् चौथा, आठवां अथवा बारहवां दुःखप्रद है (२) गोदी में रखनेके लिये. (३) कौनसा कारण है (४) शत्रुओं को. जैसे रुष्ट हुई स्त्रियां अपने पति आदि के शत्रुओं का नाम ले ले कर साग छमकती हैं, ऐसे ही भीम भी स्त्रियों के समान दुर्योधनादि का नाम ले ले कर छौंकार मात्र ही देवैगा युद्ध नहीं करेगा (५) घोड़े (६) अच्छे कुलवाले (७) कुल सहित वहां चलाजायगा (८) हे शल्य तू देख. (९) पंचांग से लड़नेवाला है (१०) (काला) (११) अर्जुन का शरीर, मन और नाम तीनों कृष्ण हैं सो आज मेरे साथ युद्ध करेगा तो यश सुफेद है सो वह भी कृष्ण होजायगा ॥ २८ ॥ (१२) वनिये के पुत्र की (१३) उच्छिष्ट खाकर

शतगति सौकौं याद उडन किय बाद हंस युव
दधिपै उडिकैं गयउ काक थकि बूडनलग्गौ॥
कहहु यहैं गति कौन हंस कहि हाससु पग्गौ
कहि काक गतिहिं पूछत कहा मेरो अब आ-
यौ मरन ॥
पत्थ हरिरूप बारिध प्रगट क्यौं नहिं बूडहिं तू
करन ॥ २९ ॥

कर्णवचन ॥

॥ छंदमनोहर ॥

पितृगन पोखन कनागत बलीके काज ॥
कुस्वर कुटिल कति काकहिं बुलावैं हैं ॥
बालकन आसमानि जीवनकी आस जानि,
सीतला बिलासहित रासभ जु लावैं हैं ॥

---

(१)सौ चालें(२)जवान हंसके साथ(३)समुद्र पर(४)हास्य में आसक्त(५)अर्जुन(६)और श्रीकृष्ण रूप समुद्र में ॥२९॥ (७) पितरों के समूह की प्रसन्नता के लिये (८) श्राद्ध में (जो कि कन्या राशि पर सूर्य आने से आसोज के कृष्ण पक्ष में सोलहदिन तक होता है)(९)कुत्सित शब्द वाला(१०) वक्र अर्थात् एकाक्षि होने से टेढ़ा देखनेवाला (११) अपासम्बंधि भय मानकर (१२) शीतला देवी के प्रसन्नता के वास्ते (१३) गधों का

छत्रीसमुदाय चित आपके सिकार जाइ,
फिर विरदाइ तुच्छ स्वानहि फुलावैं हैं ॥
जोग औ अजोग वस्तु भोगको न हर्षशोक,
बुद्धिमान लोक हठ रोगको डुलावैं हैं॥३०॥
पत्थ धनु वान कौंन मेरे धनु बांन कौंन,
पत्थ तौंन मेरे तौंन कौंन क्यौं न तोलैं तूं॥
पत्थ वरदान कौंन मोर सापहाँन कौंन,
पत्थ यान मोर यान कौंन कितैं डोलैं तूं ॥
मित्रता पै वज्र पर्‌यौ कैधौं चित्त प्रेत चर्‌यौ,
कै विष भर्‌यौ हैं हिय छद्म क्यौंन खोलैं तूं।
हाहा झूटी हाहा बोलैं प्रौढालौं हजारबेर,
हाहा एकबेर सांची औहा क्यौंन बोलैं तूं३१

(१) क्षत्रियों का समूह (२) नीच (३) कुत्तों को भी हाथ फेरकर प्रसन्न करते हैं(४)दूर करते हैं ॥ ३० ॥ (५) भाथा (६)शाप से हानि (७) वाहन (८)तेरी मित्रता पर वज्र पड़गया, अथवा तेरे चित्त में प्रेत घुसगया है अथवा तेरे हृदय में जहर आगया है ? वेदांत में चित्त और मनको भिन्न कहते हैं. अथवा यहां वक्षःस्थल और हृदय का अभेद है(९)कपट(१०)प्रौढा नायिका ऊपर के मन से रत में हाय हाय करे जैसे (११) हे अर्जुन तू एकवार वाहवाह क्यों नहीं कहता है ॥ ३१ ॥

सूतसिरताज[1] मद्रराज[2] हय साज आज,
अखनसमाजके इलाजकौ करैया[3] मैं ॥
गेरैं[4] गजराजी गजराजसम गाजि गाजि,
गदावाज[5] गाजके[6] इलाजकौ करैया मैं ॥
वैनतेय[7] आज कादवेयसे[8] अरीन काज,
पत्थरूप बाजके इलाजकौ करैया मैं ॥
धर्मराजराजके[9] इलाजकौ करैया कुरु,
राजहितराजके इलाजकौ करैया मैं ॥३२॥
हरिसुतश्रोन[10] हरिश्रोन[11] हरि[12] देहैं कर,
घरीघरी घोर[13] धनुघंट[14] घननातैतैं ॥

---

(१)हे सारथियों के शिरोमणि(२)शल्य(३)मैं इलाज का करनेवाला हूं (४) हाथियों की पंक्ति को (५) गदा का रसिक अर्थात् भीम(६)गर्जन का (७) गरुड़ (८) सर्पों के जैसे शत्रुओं के लिये (९) युधिष्ठिर के राज का इलाज अर्थात् राज रहित करनेवाला मैं हूं सो युधिष्ठिर गोमुखी में हाथ डालकर आनंद से माला फेरै ॥ ३२ ॥ (१०) इंद्र के पुत्र [अर्जुन] के कानों पर (११) घोड़ों के कानों पर(१२)श्रीकृष्ण हाथ देवैंगे अर्थात् क्रूर शब्द के सुनने से हुई घबराहट मेटने को (लोक में भी यह रीति है कि मूर्छित पशुओं के चेतना के वास्ते कान दबाते हैं) (१३) भयानक(१४)धनुष की घंटियों के शब्द से.

भेरी रव भूरिभटभीरभार भूमिभरि,
भूधर भरैंगे भिंदिपाल भननाटेतैं ॥
खप्पर खनंक ह्वैहैं न खेटकाके खप्पर ह्वैहैं,
खेटकी खिसकिजैहैं खग्गखननाटे तैं ॥
चूकजैहैं धानधर यानकौं चलान बान,
बानधर मेरे पानि बान सननाटेतैं ॥३३॥

॥ दोहा ॥

करन कह्यौ सुन सल्य सुहि, और न नैंक विचार
सापउभपतिनसुमरिकैं, हिय मानत टुकहार३४

॥ शल्यवचन ॥

॥ दोहा ॥

आप धर्मश्रुत धर्मव्रत, आप धर्मकृत आप ॥
को अधर्म भो आपतैं, आप लयौ क्यौं साप३५

छप्पय ॥

महेंद्राद्रिपर भोरि गोद सिर सुप्त परसुधर ॥

[१]नगारेका शब्द(२)बहुत योद्धाओं के भीड़ के भार से पृथ्वीको भरकर(३)पर्वत(४)गोफन(५) भरणाटा[६]खनंकार [७]ढालका[८]ढाल धारण करनेवाला [९] तरवारों के खन खनाहट से(१०)सारथि (श्रीकृष्ण)(११)हाथ में॥३३॥(१२) थोड़ासा (१३)दोनों शाप(१४)किंचिन्मात्र पराजय॥३४॥ (१५) सुना है धर्म जिसने (१६) धर्म में है व्रत जिसका (१७) कियाहै धर्म जिसने॥३५॥(१८)महेन्द्र नामक पर्वत पर(१९)परशुरामजी

इंद्रकीट वनि जंघ घसिय रतं लगिय जगियत्वर
कहि तूं नहि द्विज[3] कोन जात मैं क्षत्रिय सूतसुत
कहि विद्या वीसरहिं दुःखपरिहैं तिहिं छिन हुत
सर देत लच्छपर वच्छमरि कहि द्विज जिहिं
छिन दुख परहिं ॥
तिंहिंछिनतवरथकेचंककौंनिश्चयवसुधानीगरहिं

॥ दोहा ॥

इम कहि कहि तूं सूत मम, बहुर वचन तुहि दीन्ह
इक स्वामीके भृत्यहैं, इंनतैं जिय नहि लीन्ह ३७
स्वामिधर्मके मर्मकौं, कहत न जानत केक,
एकभृत्यकी ऊनता, व्है ऊनता अनेक ॥३८॥
सुहि अब कटुवँच कहहु मत, नीचमंत्र जिन देहु
हुव प्रसन्न दुहुँ परसपर, कह्यौ विजयरस लेहु ३९

(१) कीड़ा बनकर (२) रुधिर (३) ब्राह्मण (४) सारथि का पुत्र हूं (५) भूल जावेगा (६) मैं निशाने पर बाण चलाताथा (७) इतने में उसबाण से गौ का बछड़ा मरगया (८) ब्राह्मण (९) पहिये को जरूर पृथ्वी निगल जावेगी ॥ ३६ ॥ (१०) इन तीनों कारणों से तेरा जीव नहीं लिया ॥३७॥ (११) रहस्य को (१२) यदि एक नौकर की गिनती में न्यूनता होवै (१३) बहुत खराबियां पैदा होजाती हैं ॥३८॥ (१४) कडुए वाक्य (१५) बुरी सलाह मत देना (१६) आपस में (१७) जीत का मजा लो ॥ ३९ ॥

छंदतोटक ॥

लखि शत्रुन कर्न सुगर्ज करी,
हुव चकित बाजि रु पत्थ हरी ॥
सुवे फट्टि कि स्वर्ग विकुंठ फट्यौ,
बिसरे त्रिहुँ ओरन स्वार्थ रट्यौ ॥४०॥
त्रिहुं अप्पनदाढ्ढि लुभ्भायि तितैं,
इम इंद्र रु भक्त निवास वितैं ॥
दल पंडुनव्यूहँ बिगारदयौ,
कुठसौं लगि वैंनतिव्रात गयौ ॥४१॥
नृप भोज रु मागधँ दच्छनकौं,
सकुनीमति बामदिसाहि छकौं ॥
रहि पिट्ठि दुसासनसेन रखी,
नृपकेकय मद्र हरोल लखी ॥४२॥
विच द्रोनिय उक्कटकर्न अगैं,
जिम अंकन अग्रिम बिंदु जगैं ॥

---

(१)घोड़े(२)क्या जमीन फटगई॥४०॥(३) तीनोंने अपनी दाढी(४)फौजकी रचना विशेषको बिगाड़ दिया(५)खराब ठस्सा लगा (६) नक्षत्र का समूह॥ ४१ ॥(७) मगध देश का राजा, वे दक्षिण दिशा की तरफ थे (८) सेना का अग्रभाग ॥ ४२ ॥ (९) अश्वत्थामा(१०)जैसे गिनती के नौ अंकों से अगाड़ी बिन्दु (शून्य) है

द्रुत देखि जुधिष्टिर वाह दई,
कहि पत्थ[1] वनावहु[2] व्यूह जई ॥ ४३ ॥
रचि व्यूह रु अग्रिम पत्थ रह्यौ,

कर्णवचन ॥

कित पत्थ यहै कुपि सल्य कह्यौ ॥
चित[3] जीत चहौं न इनाम चहौं,
कलि[4] होहु हुँस्यार पुकार कहौं ॥४४॥
घननाहट वाद्यन[5] व्रात भयो,
क्रुध आकृति वीरन व्रात छयो ॥
रजमैं[6] चमकैं सर त्यौं बरछी,
मनु उच्छरि वारिधि[7] सोन मछी ॥४५॥
मनु धूमतती[8] चिनगें उछरैं,
कि तमाल[9] पलास प्रसून झरैं ॥
धर[10] धूजि कपी[11] ललकार धमी,
नरकी[12] ललकार चमू[13] नरमी ॥ ४६ ॥

---

(१) हे विजयवाले ॥ ४३ ॥ (२) बनाकर (३) मन से तेरी जीत चाहता हूं (४) युद्ध से ॥ ४४ ॥ (५) बाजों के समूह का (६) धूल में (७) मानों समुद्र में लाल मछली उछली ॥४५॥ (८) धूओंकी पंक्ति में (९) मानों तमाल वृक्ष में केसूले के पुष्प झड़ते हैं (१०) जमीन कांपी (११) हनुमान्‌ने (१२) अर्जुन की [१३] शत्रुसेना नरम होगई ॥४६॥

[1]धृतिधूम भिराक्नहृष्टि भ्रमी,
[2]हरितेज धनंजय जोरि जमी ॥
लगि वान [3]रथी रथतैं उछरैं,
[4]दिवतैं जिम पुन्यविहीन परैं ॥४७॥
[5]तनु सोन परैं कति तर्क फुरी,
सर [6]बिंदु घटारथतैं बिजुरी ॥
[7]रतँ छक्कि कालिय छर्दि करैं,
उपमा कविके मन फेर अरैं ॥४८॥
[8]भुर्व रागनि भेटन मोद भर्यौ,
मनु मंगल [9]अंबरतैं उतर्यौ ॥
इत कर्न रु सल्य जवांन लरे,
उत पारथ संग त्रिगर्त्त अरे॥४९॥
कहि कर्न न ह्वैं रन काज सरे,
[10]नरैं मारतही चहुँ भ्रात मरे ॥
[11]हहरावहि [12]ह्री वचिहैं न [13]हरी,

(१) धीरज रूप धूंए से (२)श्रीकृष्ण का तेज और अर्जुन का तेज (३) रथ में बैठनेवाले (४) स्वर्ग से ॥ ४७ ॥ (५)लाल शरीर(६)बूंदें(७)मानों रुधिर से उन्मत्त हुई कालिका देवी वमन करती है ॥४८॥ (८)पृथिवी रंग था स्नेह वाली (९)आकाश से ॥४९ ॥(१०) अर्जुन के(११)घबरावेंगे(१२)लज्जा से [१३]श्रीकृष्ण भी बाकी

मरजावहिं सात्यकि फौज मरी ॥५०॥
मृधं[1] पूरबमैं अभिमन्यु मर्यो,
हुव नास हिडंब रु हौं उबर्यौ ॥

कविवचन ॥

मनमोदक[2] खाइ सुमोद[3] भर्यो,
हसि कर्न कर्यौ निज हीय हर्यो[4]॥५१॥
कहिं सल्य तितैं कित कर्न वकैं,
सुन घास[5] न अग्नि बुझाय सकैं ॥
नहिं नासहिं अंप्पति[6] पानियतैं,
पवमान[7] न पत्रि पुरानियतैं ॥५२॥
तिहिंवेर दुहौं दल आन अरे,
जिमि ज्ञान रु काम भिरे अकरे[8] ॥
वृषं पाप किधौं क्षय धैर्य भिरे,
धन आरंस संग्रह त्याग फिरे ॥५३॥
इन दोउन विच्च न इक्क रहैं,

न रहेंगे ॥ ५० ॥ (१) पहिले युद्ध में (२) मन के लड्डू (३) खुशी से भरा हुआ (४) अपने मनको खुश किया ॥५१॥ (५) तृणों का (६) वरुण को (७) वायु पुराने पत्तों से नहीं मारा जाता ॥५२॥ (८) जैसे ज्ञान और कामदेव अकड़कर भिड़ें (९) पाप और पुण्य (१०) आलस्य (११) संचय

मतिवार अनेक पुकार कहैं ॥
पहु पारथपैं कुरुवीर परे,
कुपि सस्त्र रु अस्त्र प्रहार करे ॥५४॥
नहि पत्थ वचैं नहि पत्थ वच्यौ,
जरि मारि तिन्हैं तिनको न लच्यौ ॥
जित कर्न युधिष्ठिर संग जुर्‍यौ,
हरिअस्त्र प्रयोग सु कर्न फुर्‍यौ ॥५५॥
दल पंडुनको भल जेर भयो,
रु पँचालन कर्नहिं घेरलयो ॥
लुभि द्रोपदके सुत द्वैहु जरे,
कुपि दैं सरदान अप्रानकरे ॥५६॥

॥ दोहा ॥

भानुसेन१ चित्रसेन२ भट, सूरसेन३ रनसत्व ॥
तपन४ रु सेनाविंदु५ त्यौं, पंच गये पंचत्व॥५७॥

छंदतोटक ॥

और दान ॥ ५३ ॥ (१) बुद्धिमान(२) चतुर अर्जुन पर ॥५४॥(३)तृण मात्र भी न लचका(४)वैष्णव अस्त्र का चलाना कर्ण को याद आया ॥ ५५ ॥ (५) बहुत पीड़ित हुआ(६)दोनों शिखण्डी और धृष्टद्युम्न (७) बाणों रूप दान देकर (८) मारडाले ॥ ५६ ॥(९)मरण को प्राप्त हुए ॥ ५७ ॥

लखि कर्नहिँ पंडुनलोग लर्यो,
घनघायनसौं घनरीत घर्यो ॥
दस वीर पँचालनके दपटे,
हलवारकने दस दोस दटे ॥५८ ॥

दोहा ॥

वृष जेठो सुत करनको, पिह्वि रखारनहार ॥
सत्यसेन रु सुखेन लघु, चक्कन रक्खनवार॥५९॥

छंदतोटक ॥

ललकार अरातिनि कर्न लर्यो,
हसि भीमँ सुखेन सुसीस हर्यो ॥
तिँहिँ भ्रात सु भीम कवान हरी,
सर सप्त दये रिसिँ भ्रांति परी ॥६०॥
तनु वान दये कँर कर्न तुटे,

(१) वहुत घावों से (२) लोहे के घन की तरह घड़दिया (३) मानों मजबूत रोकनेवाले गुणवान् ज्योतिषी ने विवाह के लत्ता पात आदि दश दोष रोके ॥ ५८ ॥ (४) छोटे लड़के (५) रथ के पहियों की रक्षा करने वाले ॥ ५९ ॥ (६) शत्रुओं पर (७) भीमसेन ने हँसकर (८) सुषेण के भाई सत्यसेन ने (९) सात बाण दिये (१०) मानों सातों ऋषियों की भ्रान्ति पड़ी (मरीचि१ अंगिरा२ अत्रि ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ वसिष्ठ ७) ॥ ६० ॥ (११) कर्ण ने हाथों से तोड़डाले.

अरि भीम रु कर्न दुहौं अहुटे ॥
कृप भोज१दुसासन२औ सकुनी३,
ढकि बान इन्हैं रु कबान धुनी ॥६१॥
वडभ्रात सुखेन सुबानतती[3],
सहदेव भिर्यौ किय सेसँ[4] नती ॥
मचि माद्रिज[5] द्वै जुग सिंघ मनौं,
जिनमैं किटि[6] इक्कहि कानि[7] जनौं ॥६२॥
भर्म[8] कौन करैं किंहिं जीति भई,
जग जाहर नाहर सूर[9] जई ॥
हटिगे दुहुँ ए हटकार हियो,
पटुवीर विजैपय[10] पूर्न पियो ॥६३॥
जित सात्यकितैं वृषसेन जुर्यौ,
दिय वार[11] व्यथा सुत[12]कर्न दुर्यौ ॥

---

(१)भिड़े(२)धनुष को कंपाया॥६१॥(३)अच्छे बाणों की पंक्ति(४)शेषने भी नमस्कार किया अर्थात् शेष का शिर झुकगया. यहां शिर झुकनेमें नमस्कारकी गम्योत्प्रेक्षा है(५)नकुल और सहदेव(६)सूअर(७)कर्णका पुत्र सुषेण॥६२॥ (८) संदेह(९)जगत् में प्रसिद्ध है कि सूअर सिंह को जीतता है(१०)विजय रूप पानी खूब पिया (यहां रूपक का तात्पर्य यह है कि घायल को प्यास बहुत लगती है) ॥ ६३ ॥(११)प्रहारों की पीड़ा दी (१२) जिस से कर्ण का पुत्र छिपगया.

करवाल रु ढाल लई करमैं,
भट जोरि लरी लखि और भ्रमैं ॥६४॥
वृषसेन सु सर्वसहीन भयो,
रथवीच दुसासन हारि लयो ॥
गहि या छलकौं भगि दूरगयौ,
भटकर्न सु मोह विहीन भयो ॥६५॥
वृषसेन भयो पितु पिछि खरो,
सिनिपुत्र दुसासनसंग लरो ॥
गुनवान चलावन बान गह्यौ,
लुभि दौरि रु कर्न सुसर्न लइयो ॥६६॥
सजि तोमर द्रोपदिपुत्र सबैं,
नकुल प्रभु सात्यकि ज्वान जबैं ॥
सहदेव सिखंडिय भीम फसे,
वरबान कबान घने बरसे ॥६७॥
रनकैं इनतैं नहिं कर्न रुक्यौ,

---

(१) खड्ग (२) दूसरे संदेह करते हैं ॥ ६४ ॥ (३)शस्त्र मात्र भी न रहा (४)पहले आई मूर्छा से रहित हुआ ॥ ६५ ॥(५)सात्यकि (६) अच्छा शरण लिया ॥ ६६ ॥(७द्रौपदी के लड़के प्रतिविन्ध्यादिक पांचों ही (८) हे राजा धृतराष्ट्र ॥ ६७ ॥

झटकार जुधिष्टिर ओर झुक्यौ ॥
दृढ बाननपंति नरेस दई,
निकसी रंत रत्ति जलोक नई ॥६८॥
रुपि कर्न सुबानन जाल रच्यौ,
सबकौ सतकार कर्यौ न लच्यौ ॥
सरभञ्जन हाटक नाम लिखे,
लखि लागतही जियदान सिखे ॥६९॥
घनव्यूह बगारिय दंतिघटा,
पकरौं नृपकौं कहि कीन्ह कटा ॥
भट सात्यकि भीम सिखंडि भिरे,
तिनजुक्त अनेकन कौंच चिरे ॥७०॥
वढिगो न रुक्यौ वडवीरनसौं,
न बिलाव रुकौं जिम कीरनसौं ॥

---

(१) राजा जुधिष्ठिर ने (२) लोहू से लाल अद्भुत जौंक निकली ॥ ६८ ॥ (३) सोने के अक्षरों से (४) शत्रु भी जीवदान देना सीखगये. यहां उदार कर्ण के नाम लिखे हुए बाणों के लगने से ये शत्रु भी प्राण जैसी प्यारी वस्तु देने में उदार हुए इसलिये वस्तु से तद्गुणालंकार व्यंग्य है॥६९॥(५)व्यूह में बाणों से हाथियों की पंक्ति को बिखेर दिया(६)कत्ल किया(७)कवच फटगये ॥ ७० ॥ (८) जैसे तोतों से

द्रविड़ाधिप भिल्ल पँचाल कुपे,
रिस शोकन कर्नहि पंडु रुपे ॥७१॥
तिनकौं तिनसे गनिकैं तकिकैं,
किटि छेकि चल्यौ सनकौं छकिकैं ॥
गुनग्राम न मूढनरेस गनैं,
उपकार करोर कृतघ्न सनैं ॥७२॥
पति नीच घने अपराध करैं,
इकहू न सती उरबीच धरैं ॥
भट जाय जुधिष्ठिर संग अर्यौ ॥
कहि कर्नहिं क्यौं मग गैल पर्यौ ॥७३॥
पहिरे दुरजोधनके कपरे,
स्रुध मारहुँगो तुहि दोउ मरे ॥
भलबान चमूपति वक्ष भर्यौ,
लुभि कर्ज चुकावन काज लर्यौ॥७४॥

भिन्ना नहीं रुकता है(१)क्रोध से॥७१॥(२)तृण के जैसे(३) जैसे उन्मत्त हुआ सूअर सन के खेत को दबाता हुआ चला जाता है(४)गुणों के समूह को मूर्ख राजा के जैसे(५)किये उपकार को न माननेवाला (कृतघ्न) क्या करोड़ों उपकारों से भीजता है अर्थात् नहीं. यहां वक्रोक्ति अलंकार है ॥ ७२ ॥(६)पतिव्रता स्त्री (७) योद्धा कर्ण॥७३॥(८) युद्ध(९)सेनापति कर्ण का हृदय भरा॥७४॥

जित बाननतैं तमतोम जग्यौ,
भटठट्ठन दिक्खिय कर्न भग्यौ ॥
कहि कर्न गयो भगि भीरु कितैं,
यह हौं कहि धर्मज आव इतैं ॥७५॥
धरि सुच्छ सुपान कबान घुनी,
सुरनारिन तारिन तान सुनी ॥
छुभि बान दये घन छत्तियमैं,
रनभू सिसुलौं भटकर्न रमैं ॥७६॥
करि हाँस लयो सर यौं करमैं,
रथचक्ररछक्कन सीस रमैं ॥
नृप बानन कर्न रु सल्प नये;
द्रुपदासुत भीमहु भीमभये ॥७७॥
सजि सौन्य सिखंडिय सात्यकि त्यौं,
रिस माद्रिज द्वै मिल वाँहनि ज्यौं ॥
लरिकैं इन कर्नहि घेर लयौ,

(१) अन्धकार का समूह (२) डरपोक (३) युधिष्ठिर ने ॥ ७५ ॥ (४) अच्छे हाथ को (५) अप्सराओं की (६) बालक की तरह अथवा रन नाम युद्ध में भूमिशुलों नाम मंगल के जैसे रुधिर से रक्त वर्ण हुआ ॥७६॥ (७) रथ के पहियों की रक्षा करनेवालों के (८) भयानक हुए ॥७७॥ (९) दोनों नकुल और सहदेव (१०) फौज ॥७८॥

जगके दुख ज्यौं हरिभक्त छयौं ॥७८॥
तब कर्न चलाइय अस्त्र तहाँ,
जरि फौज गई कति भजि जहाँ ॥
जब कर्न जुधिष्ठिर जंग जुरे,
घन अच्छर गुग्घर गैंन घुरे ॥७९॥
सजि कर्न [४]सरावलि वार सठ्यौ,
[५]कुसमैं कित भूपति कौच कट्यौ ॥
धनु बान ध्वजा हय [६]धर्म्मजके,
कटिगे रथ सूत [७]सुकर्म्मजके ॥ ८० ॥
कुपि [८]कुंतचतुक्क प्रहार करयौ,
तिहिँ हारि [९]तिनौं नहिँ कर्न टरयौ ॥
उपमा कवि पच्छ हिये उझलैं,
[१०]चहुँवेद मनौं खल टारि चलैं ॥८१॥
[११]कपरे रिपुव्है वह गत्थ भनी,
वह तत्थ जुधिष्ठिर सत्थ बनी ॥
[१२]पटुसूतजपै [१३]नृपसंकित सरी,

---

(१)फौज जलगई(२)सुख में(३)आकाशमें चले॥७९॥ (४) घावोंकी पंक्ति(५)आपत्तिके समयमें युधिष्ठिरका कवच कटा(६) युधिष्ठिरके (७) धर्म्मके कर्म से पैदाहुए ॥ ८० ॥ (८)भालोंकी चौकड़ी(९)तृण भर भी[१०]जैसे दुष्ट आदमी चारों वेदोंको छोड़कर चलताहै॥८१॥[११]आपत्तिमें कपड़े भी शत्रु होजाते हैं(१२)चतुर सार्थी पर(१३)युधिष्ठिर राजा

हसि हेर सुवानन सप्त[१] हरी ॥८२॥
कविपक्ष सुतर्क प्रहार करयौ,
हद ईतिनं[२] सातु सुभिक्ष हरयौ ॥
हसिकैं दिय बान हजारन हीं,
वर्न[३] पापन भूप भज्यौ हला घाँ ॥८३॥
कहि कर्न सु मोहिप लाय लगैं,
भट१ छलिय२ भूपति३ हैं ह भगैं ॥
अँहिलौं[४] उडिकैं तिहिं गैल गही,
नृपकौं गहिकैं तित कर्न कही ॥८४॥
पढु[५] विप्रनं[६] धर्महिंकौं पकरौ,
कटु छत्रिनधर्म[७] प्रनाम करौ ॥
हरि कुंतियके वच छोरदयो,
श्रुतकीर्तियके रथ दौरिगयो ॥८५॥
इक धर्म[८] भगैं कहा देरलगैं,

की शक्ति चली (१) उस को सात बाणों से हटाई॥८२॥
(२) ईति [पीड़ा] सात तरह की है (जैसे १ अतिवृष्टि २ अनावृष्टि ३ टीड्डियें ४ चूहे ५ तोते ६ अपने देश का भय ७ शत्रु के देश का भय) (३) बहुत प्रहारों से ॥ ८३ ॥
(४) सर्प के जैसे उड़कर उस का (५) पीछा लिया॥८४॥ (६) पढे हुए ब्राह्मणों के (७) युद्धको ॥ ८५ ॥ (८) एक युधिष्ठिर॰

भट कर्न अगैं कोउ धर्म[1] भगैं ॥
हुव लज्जित[2] हा कहि छाक लई,
पकरयौ न्रप[3] है दल हाकभई ॥८६॥

संजयवचन ॥

दल पंडुन भूप सभाव[4] लयौ,
दल अप्पन रोकन दाव दयौ ॥
भट भीम सिखंडिय सात्यकि ठहाँ,
घनकोपि[5] फिरे दल कौरुन[6] घां ॥८७॥
चित चाहत पैं[7] उपमा न लुभै,
अरि वाजिय इज्जत जिय्य[8] उभै ॥
नभ[9] नच्चि परी घननेहभरी,
दुहुँ फौज मरी इम चित्त धरी ॥८८॥
लुभिकैं किय दाव अनेक लरे,
अटि वैंनं[10] कहें अकरे अकरे ॥

---

(१) यहां धर्म शब्द के श्लेष से पुण्य वा आचार (२) मूर्छा ली (३) युधिष्ठिर पकड़ागया यह शब्द दोनों फौजों में हुआ ॥ ८६ ॥ (४) युधिष्ठिर का स्वभाव अर्थात् भगना लिया (५) बहुत क्रोध करके (६) कौरवों की सेना की तरफ ॥ ८७ ॥ (७) परन्तु उपमा नहीं मिलती है (८) प्रतिष्ठा और जीव की बाजी लगी (९) आकाश में ॥ ८८ ॥ (१०) अगाड़ी बढ़कर वचन

कति कातर[1] तीरतती तरकैं[2],
मुनि नग्नन[3] साधु गृही[4] सरकैं ॥८९॥
कति सस्त्र किरै[5] भट पैं[6] न फिरै,
भरि बत्थ समत्थ भिराक भिरै ॥
नचकैं[7] रन मल्लनकौ रचकैं,
लचकैं महि[8] मल्लनकी मचकैं॥९०॥
वय[9]कोमलके कढि नैन परैं,
लखिहैं[10] मनु अच्छर यौं निकरैं ॥
जिनके रनमें कर[11] बाम फरैं,
कति वीरन चारु विचार करैं ॥९१॥
इन माल धर्यौ नहिं दान कर्यौ,
झरगे[12] कुपि यौं अनुमान कर्यौ ॥
कति वीरन दच्छन[13] पानि कटे,
हसिं तर्क करी रनतैं न हटे ॥९२॥

कहते हैं (१) कितने ही डरपोक (२)इधर उधर चलेगये (३)नंगे साधुओं को(४)गृहस्थ लोक ॥ ८९ ॥(५)बरसाते हैं (६) परन्तु युद्ध से पीछे नहीं हटते(७) नृत्य करके(८) पृथिवी ॥ ९० ॥ (९)कोमल अवस्थावालों के निकलकर नेत्र बाहिर पड़ते हैं(१०)मानों अप्सराओं को देखेंगे इस हेतु से(११)बाएं हाथ फड़ते हैं ॥९१॥(१२)क्रोधकर के इस हेतु से झड़गये (१३) दाहिने हाथ ॥ ९२ ॥

हरि दीन्ह जथा नहि दीन्ह तथा,
कटिगे ठिक्कीन रही सुकथा[2] ॥
धरै[3] रुंड निसाँदिन बानभरे,
सरकन्नन देख कि दौंव[5] जरे ॥९३॥
मधिलग्गि[6] कटार तिरौं[7] कढिगे,
उपमान कृती[8] चितमैं चढिगे ॥
रनहेतु जबैं कुरखेत भर्यौ,
सुकुमारिय[9] व्रात विलोम पर्यौ ॥९४॥
करिहस्तं[10] उछारिय गैनं[11] लसैं,
हठि हस्तैं[12] छत्रहिं हेरि हसैं ॥
रनमत्तभये न पिछान रही,
गनैं[13] मारनकाज कृपान[14] गही ॥९५॥

---

(१)जैसे ईश्वरने धन दियाथा वैसा दान न दिया इस हेतु से(२)अच्छी कीर्ति रहगई(३)जमीन पर है मस्तक रहित शरीर जिन का ऐसे(४)हाथी पर चढनेवाले (५) वनकी अग्निसे जले हुए ॥ ९३ ॥(६)बीच में लगकर(७)तिरछी निकल गई(८)कवि(९)मानों गंवारपाठे का समूह उलटा पड़ा है ॥९४॥(१०)हाथियों के हस्त (सूंडें)(११)आकाश में शोभते हैं(१२)हठवाले मानों हस्त नक्षत्र को देखकर हसते हैं कि तूं एक और हम बहुत हैं इस हेतु से(१३) भटों के समूह को मारनेके वास्ते(१४)तलवार ली ॥९५॥

न [1]मुरैं न जुरैं यह भेद नहीं,
[2]क्षतैं व्याप्त फिरै कहुँ [3]खेद नहीं ॥
कहुँ [4]रम्य जुरैं कि [5]अरम्य जुरैं,
कहुँ [6]वृत्त फुरैं कि अवृत्त फुरैं ॥ ९६॥
मन माग अरातिन मारनमें,
[8]इकही मति वीर हजारनमें ॥
विरमे न [9]पंगुध्न कुब्राह्मनपैं,
[10]सिख ली यह दुष्ट अमात्यनपैं ॥ ९७ ॥
जिन [11]दीनें अदीनन ज्ञान नहीं,
पुनि [12]सांच रु झूठ पिछान नहीं ॥
[13]रुचि न्याय अन्याय कहूँ न रुकैं,
[14]गैर दामनसौं तिन सीस झुकैं ॥९८॥
करि [15]कोरि उपाय जमा करिहैं,
[16]प्रभुप्रेरित [17]दामिनि ही परिहैं ॥

(१) मुड़ते नहीं (२) घावों से भरे हुए (३) परिश्रम (४) सुन्दर (५) कुरूप (६) गोल॥९६॥(७)मन तो केवल शत्रुओं के मारने में है (८) एकही बुद्धि (९) कलाई संस्कार रहित ब्राह्मणादिक पर(१०)दुष्ट अहलकारों से ॥९७॥(११) गरीब और धनवान् का जिनको ज्ञान नहीं है(१२)जिन की इच्छा(१३)इनसाफ से या गैर इनसाफ से(१४)रुपैयोंकी झड़ीसे जिनका सिर झुकजाता है॥९८॥ (१५)करोड़(१६)ईश्वरकी भेजी हुई(१७)बिजली पड़ेगी

जुटि जुट्टनकी विधिसौं जकरे,
पुनि कर्न लिपांडुनकों पकरे ॥९९॥
इनकों तजि कर्नहिं सल्य कह्यौ,
उतकों अंट भीम अटैं उमह्यौ ॥
गरज्यौ लखि कर्नहिं तुच्छ गन्यौं,
वदि सल्य वृकोदर काल बन्यौं ॥१००॥

कर्णवचन ॥

॥ छंदमनोहर ॥

द्यूतकारकौं निहारि द्यूतकार सार कहैं,
वैसिक सु वासक सराह विच लीनहैं ॥
चोरकों सराहैं चोर कातरकौं कातर त्यौं,
सुरापी सराहेगो सुरापी तनु छीनहै ॥
पंडित प्रवीन हैं कुलीनहैं रु पीनेपन,
हरि पदलीनं मनपच्छपात हीन हैं ॥
ऐसेकी सराहतो सराहबेकौं पद्मकवि,
औरकी सराह कुंसराहके अधीनहैं ॥१०१॥

(१) रीति से बंधे हुए ॥ ९९ ॥ (२) उधर चल (३) उमंग से निडर फिरता है (४) कहा (५) भीमसेन मानों साक्षात् मृत्यु बना है ॥१००॥ (६) जूआ खेलनेवालों को देखकर (७) वेश्या के पास जानेवाला (८) मदिरा पीनेवाला (९) पुष्ट प्रतिज्ञावाला (१०) ईश्वर के चरणोंमें लगा हुआ (११) निन्दाके वशीभूत है ॥१०१॥

छंदतोटक ॥

कहि कर्न गनौं इहिं मच्छरलौं,
अरिकौ दल नचहि अच्छरलौं ॥
गहिकैं इहिं या छिन छोरदयौ,
डरकैं मुहि तैं कित जोरि दयौ ॥१०२॥
खिजि पंच सुयोधन भ्रात खरे,
दिय बान वृकोदर दृष्टि परे ॥
छिन झांकि तिन्हैं हिय मोद छिल्यौ,
मनु भीम पँचांमृतकुंभ मिल्यौ ॥१०३॥
छितिवास तज्यौ सरछांकितही,
तित कर्न रह्यौ मुख ताकतही ॥
भेंट संमुख कर्न रु भीम भये,

---

(१) इस भीम को (२)अर्जुन की सेना(३)अप्सराओं के जैसे(४)छोड़दियाहै(५)हे शल्य तूने(६)जोड़दिया अर्थात् लगा दिया; अथवा चल दिया. यह बलतो युधिष्ठिर को देना चाहिये था कि कर्ण तो भीमको कुछभी नहीं समझता ॥ १०२ ॥(७)चलाये हुए बाणों के समान अर्थात् तुच्छ(८)देखकर(९)उझला(१०)दुर्योधन के पांचों भाइयों में पंचामृत की उत्प्रेक्षा है ॥ १०३ ॥(११)पृथ्वी का रहना छोड़दिया अर्थात् स्वर्ग में चलेगये(१२)बाणों से तृप्त होते ही (१३) जोड़ार भीम और कर्ण

सर कट्टिय कोपित भीम दये ॥१०४॥
लखि अर्गल[1] उद्ध[2] उठायलई,
जिहिं झांकि भजे कति वीर जई[3] ॥
इक कर्न खरो रँनभू[4] अकर्‌यौ,
जयलाज जँजीरनसौं[5] जकर्‌यौ ॥१०५॥
घँन[6]अर्गलतैं दिय घाय घने,
हसि कर्न ध्वजा हय[7] सूत[8] हने ॥
करि नर्म[10] तितैं कढि[11] कर्न कही,
गुनि[12] भीम सुलोकिकै[13] गत्थ गही॥१०६॥
तरलौं[14] कहि खावहु दंतनतैं,
यह वत्त कही इहिं अंतनतैं ॥
तब पैदल सूतजसौं[15] टरकैं,

।१०४।[१]आगल[२]ऊंची[३]जीतनेवाले[४]रणभूमि में[५] जीत और लाज रूप दो सांकल से बंधा हुआ ॥ १०५ ॥ [६]मजबूत[७]प्रहार(८)घोड़े(९)सारथि(१०)भीम का ठट्ठा करके(११)आगे बढकर कर्णने कहा[१२]भीमको समझकर (१३) लोककहावत की अर्थात् कहा (कर्ण ने) ॥ १०६ ॥ [१४]मारवाड़ में यह कहावत है "रावड़ीई फ-वै कै म्हनें दांतांऊं खावो।" सो कर्ण की कही हुई यह बात भीमने अपनी आंतों से कही अर्थात् बाहिर प्रकट नहीं करी (१५) कर्ण से

फिर गौ जित फीलं[1] ध्वजा फरकैं॥१०७॥
घनें[2] भीम हने कुरुहत्थि घने,
रथि सारथि बाजि न जात गने ॥
हुतें[3] हूँति[4] फिरे भजि[5] पाँयगये,
ति[6] गदा गहि भीम बिछाय दये ॥१०८॥
उपजी उपमा जिय जेव जथा,
छिति[7] छात छई[8] थर रोड़ तथा ॥
दल कर्न बुलावन सोर करयौ,
धरि ध्यान तितैं धनु पाँनि[9] धरयौ॥१०९॥
छिलि छोभें[10] बढ्यौ रनके छलिमें[11],
कटि मुंडें[12] रु रुंडें[13] किरे[14] कलिमें[15] ॥
घन व्यास यहै उपमान धरयौ,
तित तारनजुक्त अकास परयौ ॥११०॥
वर तीर वृकोदर[16] यौं बरस्यौ,

(१) हाथियों की ॥ १०७ ॥ (२) हंहं भीम ने (३) जल्दी (४) बुलाने से पीछे फिरे (५) मिलगये (भीम को) (६) उनको ॥ १०८ ॥ (७) पृथ्वी रूप छात में (८) रोड़थर दिया (चूना पकड़ने के लिये छात में पत्थर बिछाये जाते हैं उनको रोड़थर कहते हैं) (९) हाथ में॥१०९॥ (१०) क्रोध (११) छलवाले युद्ध में (१२) मस्तक (१३) मस्तक रहित शरीर (१४) बिखरे (१५) युद्धमें॥११०॥१६ भीम

तकि तो दल सूतजकौं तरस्यौ ॥
दलकौं बलि सूतज सांति दई,
जयं जान लये कर बान जई ॥१११॥
ललकार युधिष्ठिरकौं लखिकैं,
कहि जावहु बान चरू चखिकैं ॥
क्रतुकारनके क्रतु केक हि हैं,
यह आरननामक एक हि हैं ॥११२॥
हनि यान ध्वजा हय सूत हने,
घन जुद्ध लखैं भट घोर घने ॥
लुभि बान दये नृप लच्छहिमैं,
बरछी नृप रोपिय बच्छहिमैं ॥११३॥
घन घाय चमूपति घूमतहैं,

---

(१)भीम को देखकर (२) कर्ण को(३)अत्यन्त भय सहित होकर याद किया (४) बलवान्(५)अपनी वा भीम को ॥ १११ ॥(६)युधिष्ठिर को: हे युधिष्ठिर ऐसा संबोधन करके (७) तीर रूप चरू को चाखकर. युधिष्ठिर को हव्य शेष प्रिय है इसलिये यह कथन है (८) यज्ञ करनेवालों के(९)सोम अश्वमेध आदि कई यज्ञ हैं(१०) युद्ध नाम को ॥ ११२ ॥(११)वाहन(१२)युधिष्ठिर रूप निशाने में(१३)युधिष्ठिर ने(१४)छाती में ॥ ११३ ॥(१५) सेनापति (कर्ण).

उपजी उपमा चित चूमतहैं ॥
उरभित्तिय[1] खुंटिय[2] रीत वहैं,
जित हार जुधिष्टिर हार रहैं ॥११४॥
वडप्पार सुजोधन यार[3] वन्यौं,
कित यारपनौं सिरदारैं[4] गन्यौं ॥
तिंहिं[5] धारि रवीसुत त्यार भयौ,
पटु[6] अच्छर विंदन प्यारभयौ ॥११५॥
ति तने सननाहट तीरनके,
खननाहट खग्गन वीरनके ॥
झननाहट अच्छर जेहरकौ,
गननाहट भट्टन गेहरकौ ॥११६॥
छननाहट बानन श्रोन छटा,

---

(१) छाती रूप भीत में (२) जिस प्रकार खूंटी में मोतियों का हार रहता है वैसे मानों बरछी रूप खूंटी में युधिष्टिर की हार है ॥ ११४ ॥(३)मित्र(४) मालिक गिना (दुर्योधन ने) (५)मित्रपन और मालिकपन को याद करके(६)चतुर अप्सराओं के और वरों के स्नेह हुआ. अप्सराओं ने प्रीति से वरों को और वरों ने मिलने की आशा से अप्सराओं को देखा ॥ ११५ ॥(७) गहनों का (८) फागवा का डँडियों का खेल. यहां युद्ध रूप गेहर है ॥११६॥ (९)रुधिर.

घननाहट घंटन कुंभि[1]घटा ॥
फननाहट भार फनी[2] फनकौं,
बननाहट गोफनि फैंकनकौं ॥११७॥
टननाहट द्वै भिरि टोप परैं,
हननाहट ह्वाँ हय होस हरैं ॥
भननाहट घावनैं[3] मक्खिनमैं,
जिहिं बेर हजारन हिक्क जमैं ॥११८॥
इकतैं इक छीन विजै उमहैं[4],
मैंहि[5] मालव छाव मजूर गहैं ॥
बढि यौं रन बीरनबीरनसैं,
त्वरतां[6] तित तीरनतीरनमैं ॥ ११९॥
भट भीम भयानक अद्रि[7] भयौ,
गनि तूल[8] प्रभंजन[9] कर्न गयौ ॥
दलमें भट है दृढ ओर न[10] यौं,
उपमा कहिवे उमहैं[11] कवि त्यौं ॥१२०॥

---

(१) हाथियों की रचना (२) शेष के ॥११७॥ (३) घावों पर मक्खियां फिर रही हैं ॥११८॥ (४) राजी होते हैं (५) जैसे मालव देश में कूआ खोदने के समय मजूरों की पंक्ति एक से दूसरा, दूसरे से तीसरा छाव ले लेते हैं (६) ताकीद ॥११९॥ (७) पर्वत (भीम) (८) रुई का (९) पवन रूप (कर्ण) (१०) ऐसा (११) उत्साह करता है ॥१२०॥

अहिजीह[1] कि नैंन कि ऐंन[2] उभै,
लखिकैं तटिनीतट[3] चित्त लुभैं ॥
घन घूमत घोर गयंदघटा,
छिटक्यौ[4] घट भीम दिखाय छटा[5] ॥१२१॥
कटि कुंभ[6] सुमुक्तन[7] पंक्ति किरैं[8],
गज मानु[9] निछावरं[10] साजि गिरैं ॥
मजबूतन मूतन हूंति[11] मचैं,
रनराच पिसाच कुनाचे[12] नचैं ॥१२२॥
गजपैर भले तबले[13] ति तहाँ,
हयपौर मजीरन[14] जोर जहां ॥
जु गजश्रुति[15] जोरिय झांझ जबैं,
रनसिंघ क्रमेलक[16] कंठ तबैं ॥१२३॥

दोनों भटों के विषय में कवि उत्प्रेक्षा करता है. (१) बराबर सांपकी दो जीभ (२) दो अयन दक्षिणायन और उत्तरायण (३) नदी के तीर (४) टूट के पड़ा (५) वजह ॥ १२१ ॥ (६) हाथियों के कुंभस्थल फटे (७) अच्छे मोतियों की (८) बिखरती है (९) मानों शस्त्र चलानेवालों के (१०) न्यौछावर करके ही हाथी गिरते हैं, यह सिद्धविषया हेतूत्प्रेक्षा है (११) परस्पर बुलाना (१२) बेताला ॥ १२२ ॥ (१३) हाथियोंके पैर तो तबले हैं (१४) घोड़ों के पौड़ मजीरों की जोड़ी है (१५) हाथियों के कानों की जोड़ी झांझ हैं (१६) ऊंटों के गले रनसिंघा है ॥ १२३ ॥

कितहे जु क्रमेलक्क प्रसन्नकरैं,
हसि पद्मकवी तिन्ह भ्रांति हरैं ॥
तित म्लेच्छपनैं लक्कि जुद्ध तन्यौं,
वर उष्ट्र गनैं वर ज्यौंत बन्यौं ॥१२४॥
हयं काय पखावज ज्यौं गनिबैं
गजमत्थहिं नौबत लौं गनिबैं ॥
जित दंतिय दंत ति कोनन ज्यौं,
ति तुरंगश्रुती इलगोजन त्यौं ॥१२५॥
नरकाय सुभाय विपंचि बनी,
तित आंतन तांतनरीति तनी ॥
मनमात न बाद्यनव्रात बन्यौं,
सुभंगाथ पिसाचन साथ सन्यौं ॥१२६॥
भरदैं कति डग्गन डोरियँ दैं,
हसि हेर हुस्यार हिलोरियँ दैं ॥

(१) अधमपन से (२) म्लेच्छों के राजा ने (३) मुसल्मान ऊंटों को अच्छे गिनते हैं ॥ १२४ ॥(४)मस्तक पूंछ और पैरों से रहित घोड़ों के शरीर पखावज हैं(५) हाथियों के दांत नगारे बजाने का डंका है (६) घोड़ों के कान अलगोजे हुए ॥ १२५ ॥(७) मनुष्य का शरीर वीणा हुई(८)समूह (९) कथा, यहां वाद्यों का और पिशाचों का प्रथम समालंकार है॥१२६॥(१०)कितने ही पिशाच डगों से रणभूमिको नाप रहेहैं(११)संतुष्ट करते हैं

दरकी[1] छतियैं जमदूतनकी,
भिरि भेटत भामिनि[2] भूतनकी ॥१२७॥
ढुलि[3] टेरत डक्कनि डैरवतैं,[4]
भरिवत्थ भवानि[5] भैरवतैं[6] ॥
अरि केक लरैं उमहे उमहे,
रन झोंक हँचक्क[7] लचक्क[8] रहे ॥१२८॥
बरबीरन हाक हला बिगरी,
जियकी हहरान[9] चँमू[10] जिगरी ॥
जित द्रोनि[11] पैथ्य[12] स्वरूप जग्यौ,
भयव्याधि[13] युधिष्ठिर भूप भग्यौ ॥१२९॥
कहि रे द्विज कौन अकर्म करैं,
धरि वेद परैं[14] परधर्म धरैं ॥

---

(१)फट गई (२) क्रोधवाली स्त्रियां. स्त्रियों के पहले क्रोध था युद्ध देखकर प्रसन्नता आई. यहां भावोदय अलंकार है ॥ १२७ ॥(३)अपने साथ से बिछुड़ी हुई को बुलाती हैं(४)डमरू से. हल्ले में शब्द न सुन सके इसलिये डमरू कहा.(५)देवी. मैं फट न जाऊं इस भय से (६)महादेव से(७)धक्का लगने से हिचक रहे हैं(८) झुक रहे हैं ॥ १२८ ॥(९)घबराहट हुई. (१०)सेना के अंदरूनी (११)अश्वत्थामा(१२)पथ्य अर्थात् अपनी सेना के लिये हितकारी(१३)भय रूप रोग से ॥ १२९ ॥(१४)वेद को दूर रखकर.

कुपिकैं तित भूपहिं विप्र कह्यौ,
बर वेद विचारत जाहु वह्यौ[1] ॥१३०॥
कुपि कर्न अरातिन चूर्न करे,
चिदिभूपति[2] भट्टन चाप चरे[3] ॥
हय हत्थि रथी रथव्रात हर्यौ,
पलटैं गिरिं कौं जिमि अग्गिपर्यौ॥१३१॥
जित आनन थे भट भग्गिगये,
मन ज्यौं कलिमत्त अनेक भये[4] ॥
भगतौ निजसत्थहिं पत्थ लख्यौ,
रटि कान्हहिं[5] मो पन आप रख्यौ।१३२।
कुपि कर्न गरीबन मर्न करैं,
हय हक्कहु त्यौं तिंहिं हौंस हरैं ॥
सुनकैं हरि यौं तितही ति[6] अटे,
अनृती[7] जन तत्वशा ज्यौं पलटे ॥१३३॥

॥ दोहा ॥

---

(१) वेद को विचारता हुआ चला जा. क्षत्रिय को भागना कहां लिखा है लो इस बात को नहीं विचारता ॥ १३० ॥ (२) चंदेरी का राजा(३)खागया ॥ १३१ ॥(४)जैसे कलियुग में जिस का जिधर मन हुआ उस ने वही मत चला दिया(५)कृष्णको॥१३२॥(६) वे दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन(७)झूट बोलनेवाला।१३३।

भीम भयानक भेसकौं, छेकि करन रैन छैल
तृषित विजय जयपानहित, गहिय युधिष्ठिरगैल
सात्यकिआदिक सुभट सजि, करके करखि कमान ॥
मानि बडे निभ्रमान मनु, बानपान दियपान ॥१३५॥

छंद नाराच ॥

उँयो सु अर्कपूत ईखि पांडवी चमू अमा,
जहां उलूकलौं अचूक माद्रिकूखभू जमा ॥
मनैं फनी सु धर्मपूत इंद्रपूत भौ मनी,
अमैं विलोकिकैं करीसिसूं सुभीमभूतनी ।१३६।
सुसांचकी मरोरबोल वैसिपुत्र फौकरी,
निहार सुक्र सात्यकी सु पार्थ सिष्य नौकरी॥

(१) उल्लंघन करके (२) युद्ध के लिये सजा हुआ (३) प्यासा (४) विजय रूप पांनी पीने के लिये ॥ १३४ ॥ (५) सिंहनाद किया (६) कर्ण ने बाणों रूप तांबूल उनके हाथों में दिये, अर्थात् योद्धाओं ने भय से हाथ आडे दिये उन में बाण लगाये ॥ १३५ ॥ (७) उदय हुआ (८) कर्ण (९) देखकर (१०) अमावास्या को (११) घूघू की भांति (१२) नकुल सहदेव (१३) युधिष्ठिर सर्प हैं (१४) अर्जुन मणि हैं. (१५) हाथी रूप बालक ॥१३६॥ (१६) धृतराष्ट्र का वैश्या पुत्र युयुत्सु [१७] शृगाली [१८] शुक्र के तारा के सदृश सात्यकि

सिखंडि धृष्टद्युम्न द्रोपदेये अस्विनी तहाँ,
कुबेर जार कौलमत्त वार वाहिनी जहाँ॥१३७॥
अपार अंधकार पत्थवार कोप आनियैं,
अशेर हारदेनहार सूर्यवार मानियैं ॥
निकारि बान सार दीप्तिवार वज्रकी विभा,
विथारि पंडुफौज सारि ज्वान चांदिनीविभा॥१३८।
दुधारि मारि मारि हेसिवार भूविभा दुरी,
अपार स्रोनधारकौं निहार ओपमा फुरी ॥
घने परे ति अस्त्र सस्त्र वस्त्र हीन घूमिके,
भले मनौं निचोलि रुंड मुंड चित्र भूमिके॥१३९॥
अजैं चमू जितैं जितैं तितैं वृषभूपकौं चितैं,
जथाजितैंहिं प्रानि जात भाग्य संग ठैं तितैं ॥
सु सौम्य सात्यकी सँभारि फौजकौं हुस्यारकैं,

(१) द्रौपदी के पुत्र (२) अश्विनी नक्षत्र रूप हैं अश्विनी के तीन तारे होते हैं इसलिये ये तीनों (३) वाममार्गियों का समूह (४) सेना रूप है ॥ १३७ ॥ (५) अर्जुन सम्बंधी कोप (६) सूर्य सम्बंधी (कर्ण) (७) श्रेष्ठ (८) कांति (९) लड़ाई रूप चांदनी फैलाई ॥ १३८ ॥ (१०) दोधारोंवाले खड्गों से (११) शत्रुओं के समूह को (१२) छिपगई (१३) वस्त्र ॥ १३९ ॥ [१४] कर्ण को देखते हैं। [१५] देहधारी जाते हैं.

रुपे तुह्मारि फौजपैं सुकार[1] घोर रारकैं॥१४०॥
उठी रजो अपार अंधकार वेसुमार भौ,
निवारि स्रोनधार कर्न तात[2] प्रीतिकार भौ ॥
घने[3] सुकुंभि कुंभपै त्रिशूलवार ठहैं घने,
विभा गिरीसँसीसपै[4] ति बीलपत्रसे बने॥१४१॥
जु रक्तमांस हैं सु रक्तचंदनप्रभा जहाँ,
दिपैं सुभेजि भूरि भा विभूतिकी विभा तहाँ ॥
झमंक[5] वज्जि खग्गवार बूर धारको[6] झरैं,
वहां विधान जोग[7] अच्चतौघकी प्रभा भरैं॥१४२॥
वदैं[8] कितेक हाय गालवज्जनौं विचारियैं,
डरैं जु अंसुधार प्रेम अंसुधार धारियैं ॥
फिरात घूमें मूर्ध हेरफेर चक्षु फेरके,
जितैं परिक्रमा जमैं नमैं नतीं[9] सुजेरके॥१४३॥
जहाँ अपार अस्थिकी[10] भुजा सिताभ्रमा जथा,

(१) अच्छे कारीगर ॥ १४० ॥ (२) पिता सूर्य के प्रीति करनेवाला हुआ (३) अच्छे हाथियों के प्रहार (४) महादेव के ॥ १४१ ॥ (५) लाल (६) तरवार के शब्द का अनुकरण है (७) धारा का बूर झरता है (८) करने योग्य (९) चांवलों के समूह की ॥ १४२ ॥ (१०) कहते हैं (११) कायरों के घबराहट से सिर घूमते हैं. भक्तों के भक्ति से (१२) नमना ही नमस्कार है ॥ १४३ ॥ (१३) हड्डी है वाकी जिस में

पिसाच श्रोनं अंजली ति पुस्पअंजली तथा ॥
परैं अपार श्रोनधार वार वारधारसी,
सजी सु सुंडिसीकरालि धूप धूम सारसी।१४४।
कढैं अमानवानकी कृसानु भानुभारती,
सरूपभक्तसूरके अनूपरूप आरती ॥
विसुद्ध मूर्द्ध जे भरे ति सुद्ध भेट सेवनैं,
तितैं परैं जु कातरालि दंडवत्तसी तनैं ॥१४५॥
कितीक कातरालि डाकरैं तृनालिकौं गहैं,
रटी सु नंदकेस्वरालि व्हां विभा वनीरहैं॥
अनेक वीर धीर पै अधीर क्रुद्ध उप्फन्यौं,
वन्यौं विचार ना क्रम प्रभंगकौं तथा वन्यौं१४
किते कृती विचार स्वच्छ मच्छ काव्यनीरके,

ऐसी भुजा कपूर की कांति रूप है. (१) रुधिर की अंज ली रूप पुष्पांजलि (२) जल की धारा जैसी (३) सूंड के जल की फुहार धूप के धूम जैसी है ॥ १४४ ॥(४)अग्नि (५)सूर्य की कांति में प्रीतिवाली अथवा जिस के साम्ह ने सूर्य की कांति एक रती के बराबर है. यहां पांचवां प्रतीप अलंकार है (६) मस्तक भेटके समान हैं (७)काय रों की पंक्ति पड़ती है सो दंडवत् के जैसे है ॥ १४५ ॥ (८)घासों की पंक्ति लिये(९)क्रोध के कारण॥१४६॥(१०) पण्डित अथवा कवि(११)निर्मल विचारवाले(१२)काव्य

स्वपद्दती पिछानहैं पिछानहैं सुधीर के ॥
कटैं कितेक हत्थिहत्थ दंत सत्थही कटैं,
असूरं ठहैं कुनूरं पूर तीयँचूरिकौं रटैं ॥१४७॥
घटी सुनारि संग वांहि डारि हौं अघ्यौ इतैं,
कहैं किते पुकारि प्रेमवारि पायहैं कितैं ॥
नचैं कबंध चुक्कि तार ज्यौं स्वछंदनारँ ठहैं,
न सास्त्रकौ विचार सार बुद्धिफारवार ठहैं॥१४८॥
पिसाच राचिराचि नाचिनाचि श्रोनपानकैं,
जहां कृपानिपानि चूंवि दानकार जानकैं ॥
त्रिगर्त्तदेसके नरेसके सुवीर ताकिकैं,
छकाय घाय पत्थकौं कुभायँ घाय छाकिकैं१४९
सुरंगँ कृष्ण कृष्ण हे उभै दुरंग सोसँनी,

रूप जल के मच्छ (१) अपनी शैली (२) कायर (३) संपूर्ण रूप रहित होकर (४) अपनी स्त्रियों की चुड़ियों को याद करके कह रहे हैं ॥ १४७ ॥ (५) स्नेह की वाड़ी रूप (६) ताल चूककर (७) स्वेच्छाचारिणी अर्थात् निरंकुशा (८) तत्त्व बुद्धि के विस्तारवाले हैं॥१४८॥ (९) खड्गवालों के हाथों को (१०) अर्जुनको घावों से तृप्त किया (११) कुचेष्टा के भावों से तृप्त होकर ॥ १४९ ॥ (१२) लाल (१३) लाल और काला रंग मिलने से सोसनी रंग होता है सो अर्जुन और कृष्ण दोनों रुधिर से रंगजाने से सोसनी

जहाँ उमंग अंगअंग ओनसूर्ति जो सैनी ॥
चले अमान बान ठहाँ गुमानकौं चलावने,
त्रिगर्त्तसाथ नाथ[2]पाथकौं चहैं हलावने[3] ॥१५०॥
लगे दुहूँनके ति[4] बान एक केतु[5]मैं लग्यौ,
अगौन[6] हाक पौन[7]पुत्र कौन जो न ठहाँ भग्यौ ॥
अलोल[8] द्रोन[9] अद्रि लोल[10] कीन त्यौं उठायकैं,
अनूप जंगमावली चली स्वभा[11] दिखायकैं॥१५१॥

दोहा ॥

संसप्तक सब समटिकैं, हैला[12] किय करि हाक॥
पकरिलये हरि[13]पत्थकौं,छकिरनघायन[14]छाक१५२
कहुँ सिंकता[15] मैं सपनकरि, केसरि मारत अंग
मारैं जु अनुकन[16] यौं मारे, संसप्तक इक संग१५३
पुनि रन घेर्यो पत्थकौं, सज्जि संसप्तकसूर ॥

रंग के हो गये (१) लीगी हुई (२) श्रीकृष्ण (३) हटाकर ले जाना चाहते हैं ॥ १५० ॥ (४) वे (५) ध्वजा में (६) प्रधान (७) हनुमान् (८) अचल (९) द्रोण पर्वत को (१०) चंचल किया (११) स्थावरों को ही चंचल करादिया तो चलनेवालों को चंचल करना तो बात ही क्या है॥ १५१ ॥ (१२) हमला किया (१३) श्रीकृष्ण (१४) युद्ध में घावों की घूंटें भरकर ॥ १५२ ॥ (१५) नदी के रेतीले मैदान में (१६) अत्यन्त छोटे कण ॥ १५३ ॥

पाद[1]बन्ध नागा[2]स्त्रकौं, पटक्यौ पा[3]रथ क्रूर ॥१५४॥

छंदमनोहर ॥

वासव[4]कौ जायौ हिप वासव सिरायौ,
काल[5]खंजहि गिरायौ जसछायौ जग जानैं के ॥
ईद्र[6]कौं रिझायौ वरपायौ मनभायौ दल,
दुहूँ[7] दबायौ पटु[8] पाटव पिछानैं के ॥
गहन[9] सँधान[10] तानें[11] चलनि[12] सुबान चर्न,
तालें[13]केसमान रंगें[14] प्रानहर मानैं के ॥
नैर[15]कौं वखानैं नरवरकौं वखानैं नर,
करकौं वखानैं नरसरकौं वखानैं के॥१५५॥

॥ छंदनाराच ॥

चल्यौ सु अश्व पत्थकौ नरेंद्र[16]कौं नमायकैं,

---

(१)जिससे पैर बंध जांय(२)सर्प अस्त्रको।१५४।(३)अर्जुनने (४)शीतल किया(५)कालखंज नामक दैत्यको मारा(६)महादेवको(७)शत्रुओंको(८)कोई चतुर अर्जुनकी चतुराईको जानतेहैं।९.पकड़ना[१०]धनुष पर चढ़ाना[११]खैंचना[१२] चलाना[१३]चौतालेके समान. गहन आदि तीन तालों में तो काल कम, और चलन रूप चौथे तालमें काल अधिक (तीनों तालों के बराबर) लगता है इस विषय को संगीतज्ञ जानते हैं(१४)युद्ध संबंधी और गान संबंधी भूमिमें (१५) अर्जुनको ॥ १५५ ॥ (१६) त्रिगर्त देशके राजा को

अनेक सर्प आयकैं लये त्रिगर्त्ति छायकैं ॥
त्रिगर्त्तईसनैं[1] खगेसे[2] अस्त्र रीसकैं जप्यौ,
अमेय[3] पांडवेय[4] काद्रवेयव्रात[5] ठ्हाँ खप्यौ ।१५६।
त्रिगर्त्तनाथ हाथ बान मोह[6] पार्थकौं दयौ,

संसप्तकवचन॥

कहैं गह्यौ न हाथ नाथ पाथ स्वर्गकौं गयौ ॥
भये हरी[7] न हीनपार्थ पार्थ मोह हीन भौ,
दई दरारे[8] वक्षनैं सु तोर पुत्र दीन भौ ॥१५७॥
सुवात आर्द्रवस्त्र[10] पत्थ अस्त्रसों वचायकैं, ।
लखे अमान ज्वान पीनेपान मुच्छ लायकैं[11] ॥
हुस्यार ठ्हैं निहारि साथ आपनौं अरीनकौं,
स्वसस्त्र अक्ष[12] वेंक पेखि कृष्ण प्रीति पीनकौं[13]१५८

---

(१) त्रिगर्त देश के राजा ने (२) गरुड़ अस्त्र (३) अ-परिमित (४) अर्जुन के (५) सर्पों का समूह ॥ १५६ ॥ (६) मूर्छा (७) श्रीकृष्ण ने अर्जुन का हाथ नहीं पकड़ा होता तो (८) अर्जुन से रहित श्रीकृष्ण नहीं हुए, किंतु अर्जु-न मूर्छा रहित हुआ, यहां विषाद अलंकार है. (९) तेरे पुत्र की छाती फटगई क्योंकि पहले उसने अर्जुन को मरा जाना था ॥ १५७ ॥ (१०) गीले कपड़े से अर्जुन को हवा की (११) पुष्ट हाल को मूछों पर धरकर (१२) मुख (१३) पुष्ट प्रीतिवाले श्रीकृष्ण का ॥ १५८ ॥

करयौ सु पत्थ मझनकृष्णासौंकह्यौ चलैं कितैं,
मिल्यौ न ज्वाबतौ मिले सिखंडि गौतमी तितैं॥
सिखंडि बान झुंडि गौतमेप[2]तुंडिपैं सजी,
जहाँ सु गौतमेपनैं सरालिं[3] दंतुली जजी॥१५९॥
तुरंग[4] मारि डारिकैं सतांग सारथी हरे,
कृपान[5] ढाल पानि[6]लैं सिखंडि पैंतरे करे ॥
चल्यौ न पाँव[7] दाव क्रो[8]धराव भाव[9] नां चल्यौ,
फिरैं छुंधार्त[10] सौम्य गौतमेपैं[11]अंबसौ फल्यौ॥१६०।
भयौ जु मेघ भोज ह्याँ सुसौम्पकौं भ्रमायकैं;
पछार सार्थिकौं अपार बान धार छायकैं ॥
सुकेतु बान दैं कटी कबान गौतमेपकी,
लरी घरीक लुत्थ ह्वाँ सुकेतु कीर्तिगेयैं[12]की १६१
कृपीज[13] स्येन[14] ह्वै कपोत[15] पंडुसेनपै परयौ,
भटालि[16] भूलकैं सरालि बाइआलि[17]सौं भरयौ ॥

---

(१) कृपाचार्य (२) कृपाचार्य रूप सूअर पर (३) बाणों की पंक्ति रूप दंताली दी ॥ १५६ ॥ (४) रथ को (५) खड्ग (६) हाथ में (७) पैर, अथवा पाव भर भी कदम न चला (८) शब्द (९) चेष्टा (१०) भूखा [शिखंडी] (११) कृपाचार्य आंबा सा फला॥१६०॥ (१२) गाने योग्य है कीर्ति जिसकी ऐसे सुकेतुकी॥१६१॥ (१३) अश्वत्थामा (१४) शिकरा (१५) कतबूर रूप (१६) योद्धाओंकी पंक्ति ने बाणों की पंक्तिको भूलकर (१७) पंक्तिसे

धुनी कवान धर्मवर्म वर्म काटि धर्मको,
दये ति धर्म पर्मबान पूछि वाक्य सर्मको।१६२।
भरी सरालि द्रौनि पांडवी चमू भगायदी,
दिखाय प्रेतभार्य व्हाँ सुलायसी लगायदी ॥
कह्यौ पुकारि धर्म होनहार लच्छ जो मरैं,
करैं अकाज विप्र लोकलाजतैं न तू डरैं।१६३।
मरे कितेक जे लरैं ति पत्थ भीम मारहैं,
विजै हमार द्रोनवार तू खरो पुकारहैं ॥
परी जुबान द्रौनिकान बांनके प्रभावतैं,
भज्यौ लज्यौ न पंडुभूप कातरीस्वभावतैं।१६४
प्रकास भौ अलंकती असंगती जु पर्मकौ,
कर्यौ न पंडु विप्रनास नास छत्रिधर्मकौ ॥
द्विजाम द्योस हो जबै द्वि माद्रिपुत्र दायकैं,

(१)धर्म के कवच रूप(२)कवच (३) युधिष्ठिर ने (४) कुशल पूछकर ॥ १६२ ॥(५)प्रेतपन(६)युधिष्ठिर ने (७) हे ब्राह्मण अश्वत्थामा ॥ १६३ ॥ (८) हे द्रोण के पुत्र(९) तू खड़ा रहकर मददगारों को बुलावेगा, मार डालरे २ ऐसा कहेगा(१०)अश्वत्थामा के बाणके प्रभावसे॥१६४॥ (११)ब्राह्मणपनका नाश नहीं किया(१२)दिन(१३)नकुल सहदेव दाव करके

दलौं द्रकौरवेंद्रसौं लरे विभा दिखायकैं ॥१६५॥
दुहूँनकी हरी कमान बान दैं नरेसनैं,
पिल्यौ सु सौम्य कौरवेंद्र दौर फौज पेसनैं,
मची अपार बानमार हार नां दुहूँनकी,
कटे सतांग सूत वाजि भूप जीत ऊँनकी॥१६६।
कछू न पास औ उदास सोककौं बढायकैं,
सतांगपै स्वभ्रात दंडधार गौ चढायकैं ॥
पिल्यौ सुकर्न वीरवर्न धर्मअस्त्र प्रेरकैं,
कियौ सुसेनकौं कुंघाट वीर बाट घेरकौं।१६७।

दोहा ॥

सुसरमा१रु चितहि२सखुम्रुउग्रायुध३जय४और
सुलक्ष५रोच६मानहि७सखुम्रुसिंघदत्त८भटमौर॥
जिष्णु१भद्र२चित्रायुध३ रु, चितकेतु४हरिभद्र५
इन चिदि सुभटन हनि करन, वाह लई पतिभद्र॥

(१) सेनापति कर्ण और दुर्योधन (२) दुर्योधन ने ॥१६५॥(३) ढाल के जैसे (४) रथ (५) दुर्योधन के विजय को कम करदिया ॥ १६६ ॥ (६) रथ पर (७) दंडधार गया (८) वीरों के जैसी है स्तुति जिस की(९)अग्नि अस्त्र(१०)बुरी रीति से वा मार्ग से॥१६७॥ (११)सुभटों के मुकुट ॥ १६८ ॥ (१२)चंदेरी के राजा के सुभटों को(१३)शल्य से॥१६९॥

छंदनाराच ॥

महारथी रथी रु हत्थि के हजार मारकैं,
भनी वनीचमूभगैं हसैं खरो हकारकैं ॥
भये न द्रोनभीस्म भीस्म भीस्म कर्न यौं भयौ,
सुबक्र हो अरीनचक्र पै अवक्र ह्वै गयौ॥१७०॥
युधिष्ठिरादिपुत्र सात्यकी जुरे लरे जहाँ,
इतैं उतैं दये अमार्न बान तानकैं तहाँ ॥
बह्यौहि सस्त्रधारमैं रह्यौ असस्त्र सौ रह्यौ,
न कर्न दांन बानहीन विप्र सत्रु जो रह्यौ।१७१।
भगे समस्तपांडुवीर तीर पीर भीतितैं,
रुकैं सबैं सुरीति त्यौं कुभूपकी कुनीतितैं ॥
त्रिगर्तनाथसाथतूल पार्थ दाह दै रह्यौ,

अर्जुनवचन ॥

लखौ सुनाथ मोर साथ प्रान कर्न लैरह्यौ।१७२

(१) कहा (कर्ण ने) (२) ललकार कर (३) गांगेय (४) भयानक (५) बहुत टेढ़ा था (६) शत्रुओं की सेना (७) सीधा ॥ १७० ॥ (८) अप्रमाण (९) शस्त्रों की धारा और रुधिर की धारा (१०) कर्ण के दान से हीन विप्र, और बाण से हीन शत्रु न रहा ॥ १७१ ॥ (११) बुरे राजा की बुरी नीति से (१२) त्रिगर्त देश के राजा का संग रुई रूप है (१३) जला रहा है (१४) देखो (१५) हे श्रेष्ठ स्वामी कृष्ण! ॥ १७२॥

करीं[1]द्रकेझ्लकी धुजा वही रही फरक्किहाँ,
वित्रा[2]ससौं वरूथि[3]नी घनी भगैं टर[4]क्किहाँ ॥
अटैं[5] तितैंहि कर्नच[6]क्र चँ[7]क्र पांडुईसकौ,
तज्यौ न संग चक्रि[8]चक्र रुष्ट[9] ज्यौं रिसी[10]सकौ ।१७३।
कही सुपाथ जोरि हाथ नाथ बात का छुपी,
अचैनै[11] कर्नके अगैं रहैं न वाहि[12]नी रुपी[13] ॥
लखैं समस्तचित्त[14]की सु क्यौंन मित्तकी लखैं,
लई सु फेरि[15] वग्ग फेरि[16] जेर सत्रु जी लखैं।१७४।
त्रिगर्त्तनाथ साथपैं सु पाथवीर यूं गयौ,
मनौं कुलीन[17]ढंगकौं सुसंग लाजनैं लयौ ॥
कह्यौ नरेंद्र[18]नैं त्रिगर्त्तनाथ जुट्ट पाथसौं,
छिल्यौ स्वजी[19]तिछाकसौं मिल्यौ चहैं स्वसाथसौं॥

---

(१) हाथी की झूल की (२) भय से (३) सेना (४) इधर उधर भगी (५) चलता है (६) कर्ण की सेना (७) युधिष्ठिर की सेना (८) विष्णु के सुदर्शन चक्र नें (९) क्रोधी (१०) दुर्वासा ऋषि का॥ १७३ ॥ (११) पांगुला (पीछा लौटनेमें) (१२) सेना (१३) ठहर सकतीं (१४) सब जगत् के मनकी बात जानता है सो मित्र के मन की क्यों नहीं जानै (१५) वाग फेरली (१६) रथ का फिराव ॥१७४ ॥ (१७) कुलवान् के बरताव का (१८) दुर्योधन ने (१९) अपनी जीत का प्याला पीने से ॥१७५॥

रटैंहि कौरवेंद्रकै त्रिगर्त्तनाथ रारकैं,
मरोरि घेरि पार्थकौं हकारि[1] बान मारकैं ॥
भिराकै[2] कर्नपानतैं सुवानकौं प्रहारभौ,
भग्यो जु पांडुवांर[3] भूप पांडुसेन पार भौ ॥१७६॥
जहां जु वाक्य कुंतिकौं दयौ सु चित्त जागिगौ[4]
लग्यौ न गैल कर्न फौज फैलकर्न[5] लागिगौ ॥
त्रिगर्तनाथके रथी रु हत्थि सप्ति[6] मारकैं,
चल्यौ अगैं किरीटि द्रौनि[7] थंभयौ जुहारकैं[8] ॥१७७॥
छए सुबानगात पाथनाथ मोहसौं[9] छये,
छए सुजोधनादि श्रेय जीत छोहसौं छये ॥
स्वचित्त[10] नाथ बग्गलीन्ह पार्थ बान सोंकेंही[11],
लख्यौ न लैनहार[12] दैनहार[13] दैनि[14] रोकही ॥१७८॥
कही सुवात नाथ पार्थ जातं क्यौं लेंट्यौ लट्यौ
कटीकबान[15] बान[16] ग्रान पाँन[17] तोर का कट्यौ ॥

[१]हकालकर[२]लड़नेवाले कर्ण के हाथ से [३] पांडवों को ॥ १७६॥(४)याद आगया (५) अफैल करने लगा (६)घोड़े (७) अश्वत्थामा ने रोका (८) जुहार करके ॥ १७७ ॥(९) उत्सव से व्याप्त हुए. छोह नाम क्रोधका भी है परन्तु लोकमें उत्सव को भी छोह कहते हैं.(१०) अपने चित्त को स्थिर करके (११)सरणाटा दिया (१२) अश्वत्थामा(१३)अर्जुनकी (१४)दातव्यता ॥१७८ ॥(१५] क्यों झुका जाता है (१६) कवच (१७)हाथ

तितैं[1] न कान दीन्ह ज्वानै[2] बान दीन्ह ताकिकैं
छयौहियौकुद्रोह[3]छीनमोहलीनैं[4]छाँ[5]किकैं ॥१७९॥
सतांग[6]कौं भगाय[7]कैं बचायि द्रौनि सूत गौ,
प्रहारकैं संघारकीन्ह सेन इंद्रपूत[8] गौ ॥
कह्यौ नरेंद्र[9] कर्नकौं मनोर्थ तोर पूर्नभौ,
यहैं किरीटि याहि देखि तोहि देखि तूर्नभौ[10]१८०
निहारि[11] देवनारि[12] पुस्पमाँर[13] डारनैं नईं[14],
उठायि हीलैं[15]गायि ओठ[16]छूवायि जे कटे जईं[17]॥
चल्यौ नरेंद्र कर्न गोधि[18]कौं पटीर[19] चर्चवै,
कै चारु फूलवाँर[20] जीतकार बाहु अर्चवै[21] ॥१८१॥
दये अलंकृती[22] स्व सौंपकार[23] जीतकौ करयौ,
हुस्यार लोक कर्न लार भौ सुरीति ही हर्यौ[24]॥

(१) श्रीकृष्ण के कथन की तरफ (२) अर्जुन ने (३) वैर से क्षीण (४) मूर्छा आगई (५) चतों से छककर ॥ १७९ ॥ (६) रथको (७) अश्वत्थामा को (८) अर्जुन (९) दुर्योधन ने (१०) त्वरावाला हुआ है ॥ १८० ॥ (११) देखकर (१२) अप्सराएँ (१३) पुष्पोंकी माला (१४) झुकी (१५) छाती के लगाकर (१६) चूँबा देकर (१७) जीतनेवाले (१८) ललाटको (१९) चंदन (२०) फूलोंके समूह से (२१) पूजने के लिये ॥ १८१ ॥ (२२) अपने गहने (२३) जिसने जीतको सच्ची करी (२४) हृदय प्रसन्न होगया.

कह्यौ पुकारि द्रोनि प्रानलैनहार द्रोनकौ,
पच्छारितौहिहौं अक्रौचहौंहुँसौंहनौंनकौ॥१८२॥
कदाच सौम्यकौं वचायि पत्थ भीम जुट्टिहैं,
न न्यून इक्क इक्कतैं त्रिहूँन सीस तुट्टिहैं ॥
सुनी सुबानि द्रोनिकी मनौं चमू सुधा मिली,
लरी सुलोह छोह छाकि पूर्नप्यास जो पिली१८३
खुले निसान के चले वजे निसान केक व्हाँ,
जवान जोरवान पाँनि के कबान वान व्हाँ॥
विथार मारमारकौ अपार सेनपारभो,
उडी रजी अपार अंधकार वेसुमार भौ॥१८४॥
भ्रमी भ्रमी फिरैं सुभूमि सेससीस सेस नां,
सुसेस कार्त्तवीर्य पानि पूजकैं महेस नां ॥

(१) अश्वत्थामा ने (२) जो यह द्रोण का प्राण लेनेवाला है उसको मारकर पीछे कवच रहित होऊंगा अर्थात् कवच खोलूंगा ॥ १८२ । (३)धृष्टद्युम्न को (४) कम(५)अर्जुन (६) लोहे के शस्त्रों के प्रहारोंके क्रोधसे तृप्त होकर(७)मिटी॥१८३॥(८)ध्वजा (९)नगारे(१०)हाथों के(११) विस्तार (१२) मारलो मार लो इस शब्द का॥१८४॥(१३) शेषजी के शिर पर पृथ्वी हजार ही फणों पर फिर गई एक भी फण बाकी नहीं रहा (१४)जैसे सहस्रार्जुन के हजार हाथोंमें से एक भी हाथ महादेव की पूजन करने में बाकी न रहा.

चला भई स्वभाव छोरि भूमि भौ नवीनपै,
मनौं थिगात ग्राम्य यष्टि तूर्न अंगुरीन पै॥१८५॥
बलैं हरी रखो इन्हैं फिरी सुमात धायकैं,
बच्यौ न गेह एकहू परी पुकार हायकैं॥
धरा रु भूधरानकौं सुताप सीतदैं चढ्यौ,
वयारि बान औंनि वारितैं अपथ्यसो बढ्यौ॥१८६॥
दिसाकरीन सोक छीन औनअब्धि देखिकैं,
दिपात अद्रिनाथ दौनि पार्थपौन पेखिकैं॥

(१)पृथ्वीका नाम अचला है सो अपने स्वभावको छोड़कर चल हो गई(२)परंतु कांति नवीन रही(३)पृथ्वीके चंचल पन में उत्प्रेक्षा है कि मानों गांव का मनुष्य अंगुलियों पर लकड़ी को थिगाता है॥ १८५॥ (४) श्रीकृष्ण मथुरा को जाते हैं सो इनको रक्खो ऐसे दौड़कर यशोदा ने घर घर में कहा तब एक भी घर बाकी न रहा (५) हाय हाय शब्द कहकर(६)पृथ्वी(७)पर्वतों को (८) सी देकर अत्यन्त ताप चढा. यहां धूजने में उपमा है. जैसे शीत ज्वर से देही का देह धूजे वैसे पृथ्वी धूजी. यहां पृथ्वी का घबराना व्यंग्यहै(९)बाणों का पवन(१०)रुधिर रूप जल से(११)कुपथ्य से॥ १८६ ॥(१२)दिग्गजों के जो सिंदूर नहीं लगाने का सोच था वह रुधिरके समुद्र को देखकर चीण हुआ कि इस लाल जलमें न्हाकर हमभी लाल हो जावेंगे(१३)अश्वत्थामा रूप सुमेरु(१४) अर्जुन रूप पवन को. पुराण में यह कथा है कि एक

चलैं अमान बान ध्वान सिंधुगान चालसौं,
खरे महेस्वरी महेस राचि पत्थरुपालसौं॥१८७॥
विदारि वीरवारकौं अपार बान आप त्यौं,
कुनाथ रीति सुप्रजा करेजवाँ जराय ज्यौं ॥
सरालि बंबसौं प्रवाह स्रौन नीरकौं चल्यौं,
अगैं अवाज बान चेरिमानकौं तहां छल्यौ १८८

समय सुमेरु और पवन के विवाद हुआ कि मैं बलवान् हूं; परन्तु सुमेरु अपने तई निर्बल समझ सोचकर भगवान् के निकट गया भगवान् ने गरुड़ को आज्ञा दी कि तू इस पर्वत को पांख से ढककर रक्षाकर फिर गरुड़ने उसकी रक्षा करी, परन्तु गरुड़ने एक पांखको ज्योंहि ऊंची करी त्योंही एक शिखर उड़कर पड़ा जहां लंका बसी है. सो जैसे सुमेरु बहुत बड़ा है परंतु पवन के साम्हने कुछ नहीं वैसे अर्जुन के साम्हने अश्वत्थामा कुछ नहीं. (१) शब्द (२) सिंधुराग की चाल से (३)देवी (४) महादेव ॥ १८७ ॥(५)फाड़कर(६) निंदित स्वामी की रीति (७) कलेजा (८) बाणों की पंक्ति रूप बंबा (पानी फेंकने का यंत्र) (९) दासी के गुस्से को छल लिया. जब ठकुरानी अपराध करने पर दासी को तर्जना देती है तब वह दासी स्वामिनी के साम्हने न कहती हुई दूर जाकर दूसरीको सुनाती हुई रीस लिये कुछ कहती है, इस तरह बाणों का शब्द अगाड़ी होता है. यहां पांचवां प्रतीप अलंकार है ॥ १८८ ॥

दिपात इक ज्वानकै वतीस सीस बान वे,
द्विपात वारपार सेल च्यार च्यार ज्वान वे ॥
परैं उभे लरैं खगे सुहत्थ सीस दैं भमैं,
अरठ्ठ मारवारकौ फिरैं सु ओपमा जमैं॥१८९॥
दिपात औनधार नीरधारसी बिचारियैं,
जहां सुप्रेतभूतचंडि बाग ज्यौं निहारियैं ॥
गिरी किती कबेर फेर फौज पांडवी भगी,
निहारकैं अपार कर्नवार ठहां बिभा जगी१९०

छप्पय ॥

नरं नहि लखिय नरेश कन्हकौं कहि रथप्रेरन
भज्जि खरौ जित भ्रात गयउ नरं हरि तिहिं हेरन
बढिग पांडुदल विविध हरखि कुरुफौजहिं हेरिय

(१)सिर पर बत्तीस बाण(२)आर पार निकले हुए भाले (३)दो पड़े हैं(४)एक खड़ा लड़ताहै(५)वो दोनों हाथ अपने मस्तक पर लगाकर फिर रहा है, वह मारवाड़ का अरठ फिरता है. मारवाड़ का अरठ कहने का तात्पर्य यह है कि मारवाड़ में लाठ नीचे रहती है और बैल ऊपर फिरते हैं. मालवादि देशों में लाठ ऊपर रहती है और बैल नीचे फिरतेहैं.॥१८९॥(६)लड़ी(७)कर्णके अपार प्रहार को देखकर॥१९०॥(८)अर्जुनने(९)यहां नरोंका ईश और नरका ईश यह श्लेषहै, जिससे शाब्दी व्यंजना है. इस से उपमा अलंकार व्यंग्य है(१०)अर्जुन और श्रीकृष्ण

करन अग्ग बढि कछुक फौज सर मोज सुफेरिय
दुहुँ तरफ कछुक रहगयउ दल रन संसप्तक
कछु रहिव ॥
पाडुदल रुकिय मनु तृषितगन पंपपाली लखि
थिर्त लहिव ॥ १९१ ॥
करन सौम्य धनु कोटि प्रानहर बान प्रहारिय
इसि सात्यकि विच हानिय करन सात्यकिहिं
सँभारिय ॥
उभय जुद्धकरि अहुटि द्रोनसुत सौम्यहिं दक्खिय॥
लखहु तातकौ वैर लहौ झर सँर भरि जक्खिय
तित कहिय सौम्य तव तातकौ सत्कार जु जि
हिँ विधि करिव ॥
ताकौ सुत तौकौं मिलहिँ वह कहि कर सर
वर धनु धरिव ॥१९२॥

॥ बरवैछंद ॥

समटि द्रौनि सर साजिय भजिय सोम ॥

---

(१)कर्ण के कुछ अगाड़ी बढकर(२)बाणोंकी निवाजिस से पांडवों की सेना को पीछी फेरी(३)प्याऊ (४) स्थिरता पकड़ी ॥ १९१ ॥ (५) धृष्टद्युम्न के धनुष को(६)दीण हो गये(७) बाणों की झड़ी से भरकर बका ॥१९२॥ (८) होश्यार होकर

हसि कहि जात उतारन सकुन विलोम॥१९३॥

छप्पय॥

पत्थ हकारिय[२] दौनि पलट इत तितहिं[३] पैलट्टिय
लक्खन वान बरक्खि लखै[४] लखें कोउ न लट्टिय[५]
स्रमित[६] दौनिकौं समुझि लोल[७] सर नर तिंहिं
चंपिय ॥
सयनें[८] करिय लखि सूत कढिगैं[९] रथ लै उर
कंपिय ॥
पुनि पत्थ पलटि वर सर वरखि संसप्तकौंगन[१०]
लच्छपरि ॥
कहि कन्ह सुजोधैंन[११] प्रबल घन[१२] सर डरि चिंक-
रि[१३] भजत करि ॥१९४॥

पंच सहस गज प्रबल हेर हय अँयुत[१४] हरोलिय

(१) तुझको आते समय अपशकुन हुए थे सो उनको उतारने को जाता है क्या ॥ १९३ ॥ (२) अर्जुन ने कहा (३) उधर ही फिरा (४) लाखों आदमी देखते हैं (५) कोई भी नहीं लचका (६) थका हुआ (७) चपल (८) हाथ पैर चांपे (दुड़बड़ी दी) (९) सोगया अर्थात् मूर्छित हो गया. (१०) रथ को लेकर निकलगया (११) संसप्तकों के गण रूप लक्ष्य पर (१२) दुर्योधन रूप प्रचंड बद्दल (१३) चिंघाड़ करके ॥ १९४ ॥ (१४) दशहजार

लीन्हे पैदल लक्ख खग्गरव[1] केतुन खोलिय ॥
भीरु[2] भजत भजि भीति[3] पुत्र त्रिय घरपर प्रीतिय
टरत भूँरि[4] भट अरत विषमवेला[5] यह वीतिय॥
गहि लीन्ह नृपहिँ[6] यह कीन्ह गति यौं कोउ
कहिहैँ आयिकैं॥
दुख हमहिँ तुमहिँ पुनि परम दुख करन जुँहा-
रहिँ[7] जायिकैं ॥१९५॥

दोहा ॥

भिरचौ भिल्लपति भीमसौं, द्वै[8] कर लैं द्वै सेल[9] ॥
दसमदसा[10] दससरनसौं, किय किय भीम सुखेल

छप्पय ॥

बहु संसप्तक मरिग सेस भजि[11] इंद्रसरन[12] गय,
तित दुरजोधन फौज सेस रहिअक्षौहनित्रय ॥
हस्यौ पत्थ वडहत्थ[13] तत्थ द्विजसुत[14] समत्थ हुव,

(१) तरवारों का है शब्द जिन में (२) डरपोक(३)डरको धारण करके(४) बहुत से(५)विकट समय (६)युधिष्ठिर को (७) कर्ण को मुजरा करेंगे ॥ १९५ ॥[८]दोनों हाथों में [९] भाले[१०]दसवीं दशा अर्थात् मरण॥१९७॥[११] भागकर[१२]इंद्रादिकों का आना युद्ध देखने के लिये महाभारत में लिखा है(१३)बडे हैं हाथ जिस के अर्थात् आजानुबाहु (१४) अश्वत्थामा.

जुरिवे सिखंडि रु करन सरन रैव करन बधिर हुव
दुस्सासन सौंध्य जिमि द्वै द्विरद लरैं ताहिविध
रन लरिव ॥

इहिविधदुःसासनसौंध्यकौं पांडुनदल ऊपरकरिव

छंदनाराच ॥

अपार सास्त्रसारकौं विचारि लोक उच्चरैं,
जमें न संसकार उप्परे किते कछू करैं ॥
परें सुपद्य कानपैं परैं न पानि दानपैं,
कहूं जबान कानपैं परैं न पानि बानपैं॥१९८॥
परैं अपारैं आनदान देखि दीर्घदानपैं,
परैं सुहूति कान पान क्यौंन ज्वान बानपैं ॥

---

(१) सिड़े (२) बाणों के शब्द से (३) कान बहरे हो गये. यहां "थहुव रहुव" अन्त्यानुप्रास है (४) दो हाथी (५) मदद की ॥ १९७ ॥ (६) अनेक ग्रन्थों के तत्त्व को (७) बोलते हैं (८) अतिसूक्ष्म है स्वरूप जिनका ऐसे उखड़े हुए संस्कार नहीं जमते. जैसे बड़े बड़े वट वृक्ष का इतना छोटा स्वरूप बीज रूप है (९) कानों में अच्छे श्लोक पड़ते हैं अर्थात् दानियों की कथा सुनते हैं परंतु सूमों का हाथ दान पर नहीं पड़ता (१०) वैसे ही लोक कडुए वचन कहते हैं परंतु कायरों के हाथ बाणों पर नहीं पड़ते॥ १९८ ॥ (११) अपार (१२) दूसरे का (१३) आदर पूर्वक बुलाना कान पर पड़ने पर (१४) बाण

चलैं प्रहार आनके करैं प्रहार धायकैं,
जथा बडे न जीमि तुष्ट तुष्ट ह्वैं जिमायकैं१९९॥
चहौं दिसा उलंघिकैं परैं अराति मानिपै,
उलंघि वेद अब्जयोनि यौं पर्यौ सुबानिपै॥
चहैं ति बानहीन के कबान तोरडारनौ,
न चोरमारनो हि ठिक्क चोरमातमारनौ॥२००॥
कबानँबानहीन पानि ह्वां परैं कृपानपैं,
मनौं उदारद्रव्यहीन दृष्टि पीन मानपैं॥
झरे द्विहस्त सत्रु स्वस्थ लौंन प्रान झुक्कयौं,

पर हाथ क्यों नहीं पड़े, अर्थात् पड़े ही (१) दूसरे के (१) जैसे बड़े आदमी खाकर प्रसन्न नहीं होते हैं किंतु खिलाकर प्रसन्न होते हैं वैसे ही वीर आप दूसरे के बाण खाकर प्रसन्न अथवा तीर के उद्यम रहित नहीं होते हैं किंतु बाण दूसरों को मारकर प्रसन्न होते हैं॥ १९९॥ (३) अभिमानी शत्रु पर(४) जैसे ब्रह्मा चारों वेद छोडकर अच्छी भाषा (सरस्वती) पर पड़ा (५) कितने ही बाण रहित वीर शत्रु के पीछे बाणों को तोड़ना नहीं चाहते किंतु उन के धनुष को तोड़ना चाहते हैं(६)ठिक्क का दोनों वाक्योंसे अन्वय है॥ २००॥ (७) जो धनुष बाण हीन हैं उनका हाथ खड्ग पर कैसे पड़ता है कि जैसे द्रव्यहीन दानी की दृष्टि पुष्ट मान पर पड़ती है. खड्ग युद्ध है वह युद्ध की अन्य सामग्री के अभाव का व्यंजक है(८)दो हाथ वाला शत्रु

जहां सुलत्त जोगतैं विवाह दूर रुक्यौ॥२०१॥
करैं प्रहार के कबंध मुंड वाहवा रटैं,
करी सु स्वीयकीर्ति वीर स्वीयसीसही कटैं ॥
करयौ विहार श्रोन सार खग्गधारतैं कढयौ॥
सुनीबुरी न आनकीमनौं रिसायकैं अटयौ२०२
भिदे द्विनेत्र व्हाँ कह्यौ हरयौ न हार हीयपै,
तहाँ तरार लैं परे जु अन्यदीयँ तीयपै ॥
परयौ करयौ कि जुद्ध यौं विचार वीर क्यौं परैं
करैं कबंध केक जुद्ध अंध क्यौं नहीं करैं२०३

दूसरा (१) लात के प्रहार से. अप्सराविवाह पक्ष में ज्योतिःशास्त्र प्रसिद्ध लत्ता दोष ॥ २०१ ॥ (२) धड़(३) मस्तक(४)अपनी कीर्ति. यदि कोई यहां शंका करै कि इस वीर ने अपनी वडाई अपने मुँह से करी सो अनुचित है. इस का उत्तर यह है कि (५) अपना सिर कटने पर ही करी नकि पूर्व. तू भी तेरा सिर कटने पर तेरी तारीफ करलेना, हम तेरी भी तारीफ ही करेंगे (६) कानने (७) चल ॥ २०२ ॥(८)जिस वीरके दोनों नेत्र फूटगये उसने कहा(९)मैं परस्त्री के हृदय के हार पर राजी हो कर नहीं हरा(१०)तुम मेरे मन विना ही तरराटा लेकर परस्त्री पर पड़े जिसका फल तुमको मिला है(११)कदाचित कोई वीर शंका करे कि वह नेत्र रहित वीर पड़ गया कि लड़ा तो उसका समा-

इटैं न कौंचके कटैं अटैं उमंगि ऊंढपै,
सु प्रौढनारि चोलि डारि प्यार काम जुड्पै ॥
विभावना तृतीयकौं विचारकैं विसारियैं,
यहां समारि तीसरौ अलंकृती उचारियैं॥२०४॥
कटैं कितेक टोप पै घटैं न चौगुने अटैं,
कुतीय नष्टपीय जीवका निदेस ज्यौं रटैं ॥
विहीनहस्तत्रान अन्यहस्तत्रानिकौं हसैं,
अदानि सूम आप पैं हटी प्रदानिकौं हसैं २०५
कटे परे कहैं कितेक हां लरौ हुस्यारहैं,

थान यहहै कि कबंध कौनसे युद्ध नहीं करते ॥२०३॥(१)
कवच के(२)अपने से ऊंचे वीर पर भी उमंगकर जातेहैं
(३) प्रौढा स्त्री(४)कंचुकी को(५)सम अलंकार का वैरी
विषम अलंकार. इसका लक्षण यह है. "और भलो उ-
द्यम कियैं, होत बुरो फल आय" इसको उलटा बदल
दिया. जैसे "और बुरो उद्यम कियैं, होत भलो फल आ
य" कवच के कटजाने से पीछा चलाजाना उचित था
क्योंकि नंगा शरीर ज्यादा कटता है. यहां नंगे शरीर
से गया यह बुरा उद्यम किया जिसका अच्छा फल यह
हुआ कि शत्रु उसको बेधड़क आता देखकर घबरागया
॥ २०४॥ (६) चलते हैं (७) जैसे बुरी स्त्री पति के मर-
ने पर कहती है कि मुझे जीविका दो और मेरा हुक्म
रक्खो ऐसे पहले से चौगुनी बढजाती है (८) दस्ताना
(९) दस्तानावाले को ॥ २०५ ॥

जथा तजैं न वट्ट जेवरी जरैं रु छारह्वैं ॥
म्हारैं जवान मोरजीत[1] मोरजीत ह्वैं जपैं,
जथा सुवा[2]सिनारपैं[3] हिजार प्यारकैं खपैं ॥२०६॥
कटैं भरैं परैं कितेक मान स्वामिकाममैं,
जथा करैं स्वकाम[4] रामभक्त चित्त राममैं ॥
अरैं मुरैं मुरैं अरैं क्रुधा चमू[5] द्विओरकी,
जनौं खुली सुसेलि[6] रेसमी दुरंगदोरकी[7]॥२०७॥
कटे कटारवारि[8] के कटारवार[9] वित्थरयौ,
धरा कटारिभांतिकौ अधोडुँकूलसौ[10] धरयौ ॥
भयौ छुधार्त श्राद्धदेव[11] भूरि डौंचकैं[12] भरी,
प्रपूर्न जीर्न डढ्ढपंक्तितैं[13] तूर्न तूटकैं परी ॥२०८॥

॥ दोहा ॥

भिरिय नकुल वृषसेनभट, तरँकि करनंसरत्रास

(१) शस्त्र होने पर (२) मेरी विजय (३) रूपवती वेश्या पर ॥ २०६ ॥ (४) जैसे गृहस्थ अपने घरका काम करते हैं (५) सेना (६) अच्छी जाली (७) दो रंगवाली डोर की ॥ २०७ ॥ (८) कटारीवाले (९) कटारों का समूह (१०) लहँगा (११) यमराज (१२) मुँह फाड़कर चीजको दबाना (१३) दाढों की पंक्ति. मरुभाषा में कटारी को जमदड्ढ कहते हैं ॥ २०८ ॥ (१४) डरकर चलागया.

वहे अपनैं दल कौं अट्यौ, पह आयौ पितु पास २०९

॥ सोरठा दोहा ॥

अ[2]रिं सहदेव उलूक[3] सकुनि सात्यकी रन सजिय॥
चिंतहु दुहूँ अचूक, भजि उलूक रथ सकुनि लिय

॥ छंद मनोहर ॥

बकि बकि विदित अराती कहैं तकि तकि,
स[4]त्यकनैं सात्यकिलौं सात्यकि वनायौ है ॥
पत्थमन भायौ पत्थमित्त मन भायौ,
पत्थपूत स[6]म दायौ दुवदलन दिखायौ है ॥
बान असिनीलौं है कबान असिनीलौं है,
जबान असिनीलौं असि नील धरि धायौ है॥
वा[10]हिनी वनी पै वर वी[11]रता सनी पैं वीर,
आज सै[12]निजायौ सनि[13]रूप वनि आयौ है २११

छप्पय॥

---

(१) नकुल ॥ २०९ ॥ (२) अड़े (३) सहदेव और शकुनिपुत्र ॥ २१० ॥ (४) प्रसिद्ध (५) प्रधाने. सत्यक शब्द साभिप्राय है (६) अभिमन्यु के समान जिसका दावा है (७) वज्र के समान (८) खड्ग (९) श्याम (१०) सेना रूप दुलहन (११) वीरता से भीगी हुई (१२) शिनी का पुत्र सात्यकि (१३) शनैश्चर ॥ २११ ॥

सात्यकिकी सरसरनि कुरुनसरनिसुपरिभग्गिय
भीमसुयोधन भिरिय सुयोधन भगि मग लग्गिय
युधामन्यु कृपधनुषकट्टि कृप तिंहिं धनु कट्टिय
उत्तमौज भिरि भोज उत्तमौजहिं स्मृति अट्टिय
दूसासन सकुनिय द्विपिनकी घटा देखि सर
मुख घरिय ॥
पुनि दुर्जोधनस्यंदन चढिय पृथापुत्रके दृग परिय

॥ विशोकप्रतिभीम वर्नन ॥

॥ छंदमनोहर ॥

दरि दरि डुंरि डुरि दीरघदरीन द्रुत,
दुर्हृदन हृदयदरारहैं दरातीतैं ॥
सेरसमसोरसे सुजोधनादि सूरनकी,
संख्यसर सारसं सिरालिहैं सरातीतैं ॥

---

(१) बाणों का मार्ग (२) कृप के धनुष को (३) राजा का नाम है (४) राजा का नाम है (५) मूर्छा थी सो पीछी स्मृति आगई (६) हाथियोंकी (७) घटा (८) रथ पर (९) भीम की दृष्टि में पड़ा॥२१२॥ (१०) छिप छिप कर (११) लंबी गुफाओंमें (१२) शीघ्र ही शत्रुओं की छाती में दराड़ें होजावें (१३) शंखों के शब्द की पंक्ति से (१४) सिंह के सदृश शब्दवाले (१५) युद्ध रूप तालाव में (१६) मस्तक रूप कमलों की पंक्ति

चाली चल काली पैं करालीकों समेटिकुपि,
खग्गनके खेलतैं निरालीव्है नैरालीतैं ॥
गोरकरि गेरिकैं गयंद्र छकौं वाह छंद,
गिरिसि फनिंदकी गिँरालीव्है गैरालीतैं।२१३।

छंदहरिगीतिका

भट भूप भीम सुभूपकौ रन कूँपछांह प्रभाकरयौ
घनआयें कुम्भिनकी घटांपर वायु वायुजे व्है
परयौ ॥
हनि हत्थि हत्थि भिरायकैं भुज ठोककैं किय
हाकैं व्हाँ,
सुपुरीसैंकीन्हवरांककुंभिनधाकैंहुव विनवाकहां
लहि अर्द्धसेन नरेसैं पांडुनरेसैं खेरनकौं लरयौ

(१)कालीदेवी(२)मनुष्योंकी पंक्ति से(३)हाथियोंको(४)नृत्त होता हूं(५)महादेव(६)शेषके(७)वाणीकी पंक्ति(८)गलों की पंक्ति से॥२१३॥(९)दुर्योधन(१०)कूपकी छायाके समान दुर्योधनका पराक्रम उसीमें रहगया,(११)दृढ चेष्टाओंसे (१२)यहां हाथियों की घटा और बद्दलों की घटा इनके उपमान उपमेय भाव से शाब्दी व्यंजना से उपमा अलंकार व्यंग्य है[१३]भीम वायु होकर[१४]सिंहनाद (१५) क्रीडा किया(१६)नगर(१७)यमकी हुई[१८]विना वाणी ॥२१४॥[१९]दुर्योधन[२०]युधिष्ठिरको.

चलिवान जुग्म जवानव्हांउरथानधर्मजभीभर्यौ
सहदेव नकुल रु भीम मिरिं अक्षौहिनी दल
साजिकैं,
रोके तिहुँन सर कर्न त्यौं त्रिहुँ जुग धरम क-
लि गाजिकैं ॥२१५॥
परवानि कांन सलाहकैं तिहुँ ज्वान मानन लेभगे
सतवानि सत रन जज्ञ किय सतजज्ञके हिय
भय जगे ॥
संतवान कर्न हुँहै वये त्रप वान प्रेरिय कर्नहू
अन मारि सारथि डारि रथ भगि पारगो गनि
मर्नहू ॥२१६॥
तिहिंछिन वृकोदर बाहुवर कर सर सँभारि

---

(१) दोनों जवान दुर्योधन और युधि-ष्ठिर ने (२) हृदय (३) भय से भरगया (४) जैसे कलियुग तीनों युग अर्थात् सत्य, त्रेता और द्वापर के धर्म को रोक लेता है जैसे कर्ण ने तीनों को रोकलिया ॥ २१५ ॥ (५) परवाले बाण. यहां पर और बाण दोनों ने उनको कानमें सलाहदी कि भागजाओ (६) सौ बाणों से सौ युद्ध रूप सौ यज्ञ किये जिस से इंद्र के हृदय में भय उत्पन्न हुआ (७) युधिष्ठिर ने कर्ण की छाती में सौ बाण लगाये (८) मरना समझकर युधिष्ठिर भाग गया ॥ २११ ॥ (९) श्रेष्ठ भुजावाला

भिरयौ तितैं॥
नृप पृष्ठ गौ राधेय रोकिय नकुल कहि जैहैंकितैं
कर्णवचन ॥
सुन नकुलै नकुल न तू अही हौं नकुल यौं
कहि हार दैं ॥
लिय काटि मुकुट नरेसको सैर दाटि कटुवच
भार दैं ॥२१७॥
भगि नृप नकुल सहदेवकौ रथ लीन सल्य तः
हाँ भन्यौं ॥
के वेर छांडे गहि इन्हैं क्यौं करन हननौंहितगन्यौं
इनके मरैं नहि राज पैहै राज पारथके मरैं ॥
चल उतैं नृपकेमान लैहैंभीमइहिंविधिसौंलरैं२१८
सरपीरतैं सोपौ युधिष्ठिर माद्रिसुत रनकौं मुरे
जित सात्यकीरु सिखंडि स्यंदनचक्ररक्क ठहैं जुरे

(१) कर्ण युधिष्ठिर के पीछे गया (२) नकुल तू नौलिया नहीं है (३) सांप है नौलिया तो मैं हूं. (४) युधिष्ठिर का (५) बाखों से दबाकर (६) कडुए वचन रूप भार देकर. यहां भार देना कहने का तात्पर्य यह है कि नंगे सिर पर बोझा देने से तकलीफ बहुत होती है ॥ २१७॥(७) पांडवों को (८) दुर्योधन के ॥ २१८ ॥(९)अर्जुन के रथके पहियों की रक्षा करनेवाले

पुनि युधामन्यु रु उतमोजहु पृष्ठिरक्षकपत्थके
हसि हेरि नर रनछोनि द्रोनिहिं जुट्टि जुट्टिय
सत्थके ॥ २१९ ॥

काति वान लागे कृष्णकै रन द्रोनि अस्वकटा
कर्यो ॥

लख नाथ यौं कहि पार्थनैं लुभि द्रोनिसारथि
जी हर्यौ ॥

हुव वानसत्थ समत्थ द्रोनि पपत्थभो असमत्थ व्हां
कुपि वग्ग कट्टिय सप्ति सूरहि ले भगे निज
फौज घां ॥२२०॥

हरिं हेर पत्थ समत्थ हत्थन पत्थ हत्थनहेरकैं
सरे के अरे सरके अरी सरिकेसरी सर जेरकैं

(१) पीठ की रक्षा करनेवाले (२) अश्वत्थामा से अर्जुन भिड़ा (३) साथवाले भी भिड़े ॥२१९॥ (४) अश्वत्थामा के घोड़ों को काटा (५) अश्वत्थामा बाण चलाने में असमर्थ हुआ (६) अर्जुन ने अश्वत्थामा के घोड़ों की बाग काटी ॥ २२० ॥ (७) कृष्ण ने अर्जुन को और उस के हाथों को समर्थ देखा. (८) शत्रुओं ने उन हाथों को देखकर (९) जिनके कई तीर लगे हैं ऐसे (१०) शत्रु धीरे धीरे तरफ गये (११) बाण धारण करनेवालों में सिंह समान अर्जुन को (१२) बाणों से दबा करके

कुरुसेन भग्गिय कर्न अग्गिय शोक लग्गिय कौ रुकैं ॥
कुपिकर्न भार्गवअस्त्र[1] प्रेरियसत्रुहेरियजाँ सुकैं॥२२१
जरिगे किते परिगे किते मरिगे किते सरजालतैं
तजि चाल सूरनहाल[2] दल भजि कर्न काल[3] करालतैं ॥
भट कर्नसौं रनकर्नमैं भट भीस्म द्रोनहु हेमले
नरसो[4] न नर नरदरन[5]मैं नर सुर लखैं नरसरचले

छंदमनोहर ॥

केउनके बान मनवीचही[6] प्रयानकरैं,
केउनके तूनमैं त्यौं करमैं वसतुहैं ॥
केउनके गुर्नहीमैं[8] केउनके धनुहीमैं,
केउनके तनुहीमैं लटके लसतुहैं ॥
तेरे बान व्योमपै[10] व्है रोमपै[11] व्है तोपै अब,

(१) परशुरामजी के अस्त्रों को चलाया ॥ २२१ ॥ (२) शूरवीरों के ढंग को छोड़कर (३) यमराज के तुल्य भयंकर कर्ण से (४) अर्जुन के जैसा (५) मनुष्यों का दलन करनें में ॥ २२२ ॥ (६) मन में ही फिरते हैं, बाहिर नहीं आते (७) भाथे में (८) प्रत्यंचा में (९) शरीर में एक वा दो अंगुल तक जाते हैं (१०) महादेव के पास होकर (११) परशुरामजी के पास होकर

आये रविजा[1]ये कवि गा[2]ये सरसतु हैं ॥
मनमैंऽहैं तून[3]मैंऽहैं करमैंऽहैं गुन[4]मैंऽहैं,
धनुमैंऽहैं तनुमैंऽहैं धर[5]मैं धसतु हैं ॥ २२३ ॥

॥ छंद हरिगीतिका ॥

फिर वर्न[6] नर परहरनकौं कहि कर्न घां[7] रथ फेरियैं
हरि[8] कहि जुहारहिं कर्न फिर हटि भजिग नृप
तिहिं हेरियैं ॥
नर चलिय डेरन नृपहिं हेरन भीम वैरिनपै रुप्यौ
लखि भीमकौं कहि पत्थ भूपति हैं कितैं
कलिपै[9] कुप्यौ ॥२२४॥
कहि भीम कर्न सशालि[10]कंपित ह्वैं इतैं शिविरै[11]-
न गयौ ॥
कहि पत्थ[12] हौं अरि सत्थपै[13] हौं तत्थ हेर कंहा भयौ
भनि भीम दौर्यैं[14] कुरूप भीति[15] होन तीतर हौं भमौं

(१) हे सूर्यके पुत्र कर्ण (२) कवियोंसे गाया हुआ कर्ण. दूसरे पक्षमें बाण. (३) भाथेमें (४) प्रत्यंचामें (५) पृथ्वीमें ॥ २२३ ॥ (६) अक्षर (७) कर्ण की तरफ (८) राजा युधिष्ठिर भागगया है (९) कलियुग पर क्रोध करनेवाला. धर्म का अवतार होने से ॥ २२४ ॥ (१०) शाखाओं की पंक्ति से (११) डेरों को (१२) मैं (१३) हूं (१४) दुर्योधन रूप बटेर पर (१५) बहुत भयवाला दुर्योधन

संसप्तकनकौजुद्धउंदसुपत्थकहिहौंहीजमौं२२५
कहि भीमसंसप्तक जुद्दारहुँ मारि मारि विहारकैं,
गय पार्थ नाथ स्वहीय हर्षित पांडुनाथ निहारकैं
नृप सयन थित लखि कॉन्ह नर नति कीन्ह
पद सिर नायकैं ॥
हुवभ्रांतिनृपनरकान्हआपेकर्नस्वर्गपठायकैं२२६

॥ युधिष्ठिरवचन ॥

छप्पयं ॥

यह दुरजोधन हत्थ भयौ याहीतैं भारथ,
यहैं कालसम याहि पछारन समथ पारथ ॥
दुरजोधन दुख दीन्ह मंत्र याकौ सुख मानिय॥
यह सूरनकौं असह्द प्रबलभटसुक्कुट पिछानिय
हसि सर धनु हय रथ सूत हनि भीमादिकन
भमाय ठहाँ,
लिय पकर मोहि कटुवचन कहि छंकि रन
दिय छुटकाय ठहाँ ॥२२७॥

(१) विकट ॥ २२५ ॥ (२) फिर फिर कर, अथवा क्रीड़ा से (३) युधिष्ठिर को जीवित देखकर (४) श्रीकृष्ण और अर्जुन ने नमस्कार किया ॥ २२६ ॥ (५) यह कर्ण दुर्योधनका हाथ था अर्थात् भुजा समान सहायक था.(६)मृत्युके समान(७) इस कर्ण की सलाह को सुख्य जानी.(८) नहीं सहने योग्य(९) उन्मत्त होकर ॥ २२७ ॥

पारथ मृत्यु हि प्रबल अपुनकौं मन तृन मानिय
परसुरामसम अस्त्र पूर्न सुरतरुसम दानिय ॥
गुरु जिमि नीतिगँभीर महतगुनगन अभिमानिय
दुरजोधन दुख देखि जीव निज तृन समजानिय
निसदिन मम नींदहि नींद दिय खटक लियें
हिय खटकतो ॥
कित भिरन लरन कित विजय कित लखि
तिहिं मोसिर लटकतो ॥२२८॥

दोहा ॥

वह गति द्रौपदिकी करी, वह गति आपुन चीन्ह
कट्यौ करनकै नाहि कट्यौ, कहहु पत्थ काकीन्ह

॥ अर्जुनवचन ॥

॥ दोहा ॥

करन पछारत परनकौं, मरनहि न्यौति बुलाय

---

(१) यमराज से भी प्रबल (२) कल्पवृक्ष के समान दानी (३) बृहस्पति के समान राजनीति के रहस्य को जाननेवाला (४) रात दिन मेरी नींद को नींद दी अर्थात् इसके कारण मुझे नींद नहीं आती थी (५) हमारी बुरी चिंतता हुआ (६) मेरा सिर नीचा होजाता ॥ २२८ ॥ (७) हे अर्जुन ॥ २२९ ॥ (८) शत्रुओं को

स्वर्नवर्न[1] सर ज्वलितजुत[2], गिरत उखारहुँ[3] जाय २३०

॥ युधिष्ठिरवचन

॥ छप्पय ॥

भीम[4] भ्रातकौं करनै[5] काल आगैं धरि आयौ
भगि[6] बाननकी भीति पृथापय[7] पान लजायौ ॥
करी प्रतिज्ञा क्रूर करनके मरनकरनकी ॥
सब कछु तोकौं समझि रचिप[8] बाजी धनरनकी
सतशृङ्गअद्रिके सिखर हुव सुरबानी[10] तंव[11] जन्मसुवे[12]
यहसब जगकौं जीतिहैं हाहा[13] वहु व्यर्थहुवे[14] २३१
त गंजिवकौं त्याग औरकौं सौंपहु करतैं ॥
हय हकहु करहोसें[15] डुल न भास्करसुत[16] डरतैं
कान्ह करनकौं हनहिं चढिग रिसँ[17] भो अस्थि-
रचित ॥

---

[१] सुवर्ण के अक्षरोंवाले. अर्थात् जिन में अर्जुन का नाम खुदा है. (२) जलन सहित (३) जड़से उखाड़दूंगा ॥२३०॥ (४) भीम जैसे भाईको (५) कर्ण रूप काल के अगाड़ी रखआया (६) डर से (७) कुन्ती के दूधका पीना (८) प-ण (९) दृढ युद्ध का (१०) देववाणी (११) तेरे जन्म के समय (१२) हेपुत्र [१३] बड़े खेदकी बात है [१४] निष्फल हो गये ॥२३१॥ [१५] सावधानी रखकर (१६) सूर्य के पुत्र के डर से (१७) अर्जुन को क्रोध आगया

खैंचि नृपतिसिर खग्ग कान्ह कहि करत अ-
कृत कित ॥
कहि पत्थ सहौं नृपके कुवच देहु हरिहिं धनु
यौं कहिय ॥
यौं कहैं ताहिमारौंयहैंमोरप्रतिज्ञारुपरहिय२३२

दोहा ॥

इक पापी तप करि कह्यो, विधिसौं यह वरदेहु
मैं सबजीवनकौं हनौं, निसदिन विधि कहिलेहु
खिजिविधितिहिंश्वापदकरयौ,पुनिकियताकौंअंध
वेह नाँसाकेबलहिंवहु,जन्तुनहनियस्वच्छंद२३४

छप्पय॥

ताहि बलाक जु भिल्ल भक्ष दे भकहित मारिय
तब श्वापद अरु भिल्ल सुगति लैं स्वर्ग सिधारिय
जो हिंसक तिंहिं नरक दुष्टहिंसक दिव जप्पिय

---

(१) युधिष्ठिर के ऊपर (२) नहीं करने योग्य क्या करता है ? (३) स्थिर है ॥ २३२ ॥ (४) ब्रह्माजी से (५) ब्रह्माजी ने कहा कि वर लो ॥ २३३॥ (६) हिंसक पशु (७) नाक के बल से (८) जीवों को(६) बे रोकटोक ॥ २३४ ॥(१०)बलाक नाम के भील ने(११) भक्ष्य के लिये(१२)जो हिंसा करनेवाला है उसको नरक मिलना चाहिये परन्तु दुष्ट हिंसक को स्वर्ग मिला.

कहि अर्जुनकों कान्ह धर्मगति सूक्ष्मंहि थप्पिय
कौसिक[2] द्विजवरके सरन कोउ छुपे धनिक[3]
चोरन कहिय ॥
तू सत्यवादि कित धनिक इत हनिकैं उनको
धन लहिय ॥२३५॥

॥ दोहा ॥

कहुँ हिंसा अतिही सुभग, सत्य असुभगहिं जान
अब नर नृप वंदनकरहु, रही प्रतिज्ञा मान २३६

॥ अर्जुनवचन ॥

॥दोहा॥

नृप अवध्य यह मोर मति, प्रगटी तोर प्रताप॥
नृपति रहें मम पन रहैं, यह गति हेरहु आप२३७

छप्पय ॥

कहि हरि नृपकौं कुवच कहहु मंहतनयह्मरनौं
कह्यौ पत्थ नृप तोर काज किय जोनहिंकरनौं

---

(१)धर्म की गति बड़ी बारीक है(२)कौशिक ब्राह्मण के शरण में कोई धनी पुरुष छिपा(३)धन लेलिया ॥२३५॥ (४) हिंसा बुरी है परन्तु कहीं अच्छी हो जाती है (५) बुरा(६)हे अर्जुन(७)राजा को नमस्कार कर ॥२३६॥ (८) नहीं मारने के लायक (९) ढूंढो ॥ २३७॥ (१०)बड़े लोगों का(११)जो करने योग्य नहीं था

सब दोषनके उदधि आप मुहि दोष न दिज्जिय
लक्खनलोगन प्रान,अजसअरिआसिपंजिज्जिय
कहि कुवचन नृपकौ मरन किय मोर खग्ग कटि मरहुँ मैं ॥
करि काम यहैं मुखस्याम कारि धाम जाय का करहुँ मैं ॥ २३८ ॥

॥ दोहा ॥

हँसि कहि हरि जा खग्गसौं, लीन्हैं नृपके प्रान
ताहि खग्गसौं तू मरहु,समझहु बडासयान२३९

॥अर्जुनवचन॥

मैं जीते सुर नर असुर, गंगासुत दिय गेर ॥
कौन हन्यौं नर कौनसौं,है मम समं तिंहिं हेर२४०

॥ छंदहरिगीतिका ॥

गंजीवंज्या टंकारकैं रथ त्यार ठहैं हरिकौं कह्यौ
नरसारं कर्नहिं मारि कौच उतारहौंपनयौंगह्यौ

(१)समुद्र(२)मेरी कमरमें बंधेहुए खड्गसे मैं मरूंगा(३)मुँह काला करके(४)घर पर जाकर(५)मैं क्या करूं॥२३८॥(६) जिस कुवचन रूप तलवार से(७)समझदारी ॥ २३९ ॥ (८)भीष्म को गिरादिया (९) मेरे जैसा कौनसा मनुष्य है ॥ २४० ॥(१०)अपने धनुष की पनचका टंकार करके (११)मनुष्यों में श्रेष्ठ अर्जुन ने कहा

तिंहिं मात रोवहिं मात कै मम मात रोवहिं मातही
तिंहिं भ्रात रोवहिं रुधात[1] कै मम भ्रात रोवहिं
रुधातही ॥२४१॥

तिंहिं तातें[2] कै मम तात रोवहिं हात[3] मुंडहिमारकैं
तिंहिं तीय कै मम तीय रोवहिं पीयपीयपुकारकैं
इम बोलपत्थ अलोल[4] बोलनरेंद्र[5] मोलियसौं कह्यौ
नृप सोक अहिनिर्मोक[6] ज्यौं तज लोक जेय[7] सबैं
रह्यौ ॥ २४२ ॥

कर जोरि नृप पद जोरि[8] मैं परि तोर किंकर
यौं कह्यौ ॥

पितु मात तात कुबात[9] पै चितलातनां श्रुति[10] यौं नह्यौ
कहि भूप[11] भाइय मो बुराइय[12] दुःखदाइय घर्म[13] हैं
मतिदीनहौं गतिहीनहौं सुहि[14] मारडारहु सैं मैं हैं २४३

[१]जाहिर॥२४१॥[२]पिता(३)हातों से सिर फोड़कर(४) स्थिर[५]युधिष्ठिर से[६]जैसे सर्प कांचली को छोड़ता है वैसे हे राजा शोक को छोड़(७)अब जो लोग बाकी रहे हैं वे सब जीतने लायक हैं ॥ २४२ ॥ (८) चरण युगल में पड़कर(९) पिता पुत्र की कुत्सित बात पर ध्यान नहीं देता (१०)वेदने ऐसा नियम बांधा है(११)युधिष्ठिरने कहा(१२) मेरी बुराई द्यूतक्रीड़ादि तुम को दुखदायी है जिस से तुमको (१३) गर्मी होजाती है (१४) सुख होवे॥ २४३ ॥

सुखरासि[1] लूटहु पासि[2] छूटहु पास दासियजीतितौ[3]
हौं[4] आस तजि बनवास कैंहौं[5] नास व्हैहैं[6] भीतितौ
यह बात कहि नृप जातहो हरि हाथ गहि हसि
हेरिकैं ॥
नृप[7] राज कर अब आज कर्न इलाज करिहौं
टेरिकैं[8] ॥२४४॥
यह गाह सुनिजदुनाहकीनरनाहचाहस्तुतीकरी
इहिं[9] रार मारनहार कर्नहिं आप पैं[10] नहिं हेहरी[11]
मुहु[12] मोदसौं[13] त्रिहुँ व्हाँ मिले नर कीन्ह स्तुति
नरनाहकी ॥
चुप चौंपै[14] चंक्रियहू[15] चितैं न चंक्यौ[16] करी चित
चाँइकी[17] ॥ २४५॥

---

(१)सुख के समूह को(२)दुःखकी पाशी से छूटो(३)जीत रूप दासी तो तुम्हारे पास ही है (४) मैं राज्य आदि की आशा छोड़कर(५)करूंगा (६) भय(७)हे राजा! (८) बुलाकर ॥ २४४ ॥(६) इस युद्ध में कर्ण को मारनेवाला (१०)दूसरा नहीं(११)हे कृष्ण(१२)बारंबार[१३]उत्साहसे (१४)श्रीकृष्णभी(१५)देखतेहैं(१६)अर्जुन योग्य मार्गसे न चूका, अर्थात् आप भी बचा और भाई को भी बचाया (१७)अपने मन में चाही हुई बात सिद्ध करली ॥ २४५॥

॥ अर्जुनवचन ॥

॥छंद मनोहर॥

धर्म[1]धुर धारकैं अधर्म[2]छल छीनी छिति[3],
तैसेहू पितृव्यपै[4] अनन्यभक्ति तेरे हैं ॥
मंत्रीवर कौनसर[5] भीस्मवर द्रोनवर,
ताहीके प्रताप कृष्ण फेरैं रथ जोरे हैं ॥
तूही धर्म[6]त्रानहैं रु तूही धर्मभानहै रु,
तूही धर्मध्यान हूंहराय[7] रिपु हेरे हैं ॥
छोटोभ्रात कौनजैसो छोटोभ्रात रामकेहो,
मोटोभ्रात कौन जैसो मोटोभ्रात मेरेहैं२४६

॥छंद हरिगीतिका॥

नृप[8] भाखि सुख अभिलाष[9] छाकहु[10] आसिखाहु[11] उछाहकी ॥
जिंहिंगाहसौं[12] अरिनाहके उर[13] दाहव्हैं तिंहिंचाहकी
कर जोर नृप[14] जदुमोरसौं[15] कहिओरदाहकरोरहैं[16]

(१) धर्म के मार्ग को (२) अधर्म के कपट से (३) पृथ्वी को (४) पिता के भाई (बड़ाबाप) पर (५) बराबर कौन है! (६)धर्म का रक्षक (७) घबराकर ॥ २४६ ॥ (८)युधिष्ठिर ने कहा(९)हे सुखकी अभिलाषावाले अर्जुन!(१०) तृप्त हो(११)आशीर्वाद(१२)जिस गाथा से(१३)हृदय में (१४)युधिष्ठिर ने(१५) श्रीकृष्ण से(१६)जलन

भटछलिन्हैरनमैं भजैं यह बाडवानलग्रोरहैं२४७
सुभछत्रिता जरि छारव्हैं न पुकारव्हैं भट
सारकी ॥
इहिंवार सुहि ललकारि दी सिरहार जय रवि
वार की ॥
हौं छत्रिन्हैं रनमैं भज्यौ हट छोरि धीरधिकारदैं
धक्कैं न धारैं नक्कहू डरकौं परैं कर डारदैं २४८
कतिबेर नृपमुख हेरि नैंनन फेरि पारथनैं कही
इकबेरे पिट्ठिप फेरबै नृप हेर कातर नां सही ॥
इकबेर बालियपैं भज्यौ सुंभकंठ हुव पुंनिसूरहू
रिपुप्रान तीयसुपांनि पुनि रजधानि लिय सुख
मूरहू ॥२४९॥
जमदग्निसूति लखि रौमहू इकबेरतोदुखगेहभौ

(१)वाड्वाग्नि॥२४७॥(२)जलकर राख होजाती है(३)यो-
द्धारोंमें श्रेष्ठकीभी(४)कर्णने करी(५)धीरजको धिक्कार दे
कर (६) धड़कजावैं (७) दूर करके (८) हाथ से डालदेवैं
॥ २४८ ॥ (९) एक बार पीठ फेरने से कायर नहीं होता
है यह सत्य है.(१०)सुग्रीव(११)शूरवीर भी (१२) अच्छे
हाथवाली स्त्री (१३) सुखमूल. इसका अन्वय तीनों के
साथ है ॥ २४९ ॥ (१४) मरण (१५) परशुरामजी भी
(१६) दुख का घर

इ[1]कविंसवेर निछत्रि कैं[2] भुव फेर भटसुखगेहभौ
इकवेर मारुतिं[3] जेरभो भट इंद्रजीत क्रुधाभरयौ
फिरमुट्ठिदैं[4]उरकुंभकर्नदरारिं[5]कुंभपभाकरयौ२५०
कहि पत्थ तव पं[6]द सौंह भीम रु नकुल त्यौं
सहदेवकी ॥
रु कबान बानन सौंहहैं नहिंवानिपहअहँ[8]मेवकी
नृपआजकर्न पछारिमारहुँ नांहिंतो विनु भ्राततूँ
कहिंगाथ पांडुनं[10]नाथहनि रिपुसाथ गैं[11]जाहिंपार्थतूँ
कहि कान्ह दारु[12]कें कानैं[13] छोरि सैं[14]तांग राखहू
साजिकैं ॥
गुं[15]नबान बान कूं[16]पानअरिगनप्रानछानहुगाजिकैं
नरनाथके पद माथदैं दुहुँ साथ स्यं[17]दनपै चढे ॥
रविं[18]जातकर्नदुबाहुपै दुहुँ राहुसे छबिसौं बढे२५२

---

(१) इक्कीसवार (२) करके (३) हनुमान् (४) कुंभकर्ण का हृदय फाड़कर (५) घड़े के जैसी करदी ॥ २५० ॥(६) तेरे चरणों की सौगन है (७) अहंकार की (८) नहीं तो आज तू विना भाईवाला होवेगा (९) बात(१०)युधिष्ठि-रने(११)गर्जेगा ॥ २५१ ॥(१२)श्रीकृष्ण ने अपने सारथि से कहा कि हे दारुक!(१३)प्रतिज्ञा को छोड़कर(१४)रथ को (१५) पनचवाला धनुष (१६) खड्ग (१७) रथ पर [१८] सूर्य का पुत्र.

वरमग्ग वीखिरुमग्गकौंगहिअग्ग घोरनकौंलये
सुथिरा[1] थरक्किय[2] रयौं बरक्कियडड्डकोल[3]हुचीछ्छये
छिड्डार जीहनसौं रटौं छिय सेस यौं सुखसौं छयौ
तिंंवारभारअपारहाहा[5]कारवारमजालयौ २५३
इम लेत दिग्गज भामरी जिम भौंर[6]नावपरीभमैं
जुतसोर[7] छुरिचक्क सोर[8]कौ परि अग्गि सौं उप-
मा जमैं ॥
डरि चर्न सीस छिपायि कच्छप[9] अच्छकवि
उपमा रखैं ॥
कैषुकें[10] छिपावैं धान्य ज्यौं कन[11]वारकहिं आवत
लखैं ॥२५४॥
हरि[12]मुष्टिकृष्ठकीपयोधरलौं पयोधर[13] पै झरैं
पुनि दुष्टसीस अज्ञातें[14] विपदापात ज्यौं उलका[15]परैं

॥ २५२ ॥ (१) पृथ्वी (२) धड़क गई (३) वाराह भगवान् को (४) जी इस शब्द से छागये (५) हाहाकारवाला ॥ २५३ ॥ (६) समुद्र के भँवर में (७) शब्द सहित (८) बारूद का विच्छू अग्नि पर पड़कर (९) कच्छप भगवान् (१०) किसान (११) कणवारिये को आता देखकर ॥२५४॥ (१२) श्रीकृष्ण की मुट्ठी से खिंचे हुए पूतनाके स्तन से दूध के जैसे (१३) पर्वतसे पानी झरता है. (१४) अचानक आपदा (१५) विना इंधन की अग्नि

कहि कान्ह पत्थ सुजान अब धनु तान बानहि
पान लै ॥
थिंत थान बान अमान महिप पिछान कर्न कुं-
प्रान लै ॥ २५५ ॥
तित पत्थ सोचिय कर्नमारनकी प्रतिज्ञामैं करी
किंहिंधा पछारहुँ यौं विचारिय हीय धारिय
ईयौं हरी ॥
हरखात स्यामलगात बुल्लिय पत्थ वात न भी-
तिकी ॥
भगदत्त अग्गैं भग्गि वासव लग्गि मुँह पुनि
प्रीति की ॥ २५६ ॥
तिंहिं हत्थि मार्यौ तांहि मार्यौ भीस्म मार्यौ
द्रोनकौं ॥

---

(१) हाथ में (२) स्थानों में स्थित हैं बाण जिन के ऐसे अपरिमित राजाओं में ॥ २५५ ॥ (३) किस तरह (४) उसी तरह श्रीकृष्ण ने विचारा. (५) श्याम शरीर (६) इंद्रने (७) खुशामदी करके ॥ २५६ ॥ (८) उस भगदत्त के हाथी को (९) जिस की इंद्रने खुशामदी करके प्रीति करी थी उस भगदत्त को मारा तो कर्ण के मारने में क्या संदेह है.

रन तूं हनैं कृप द्रौनि भोजहिं सकुनि कर्न
कुगौनकौं ॥
तजि भर्म नर्महिसौं पछारहु सर्मप्रदसुतधर्मकौ
नरं घर्महियठहैंपर्मसीतलवर्मधरवर धर्मकौ २५७
मुंहि हतनकौं हतनापुरी निजहितुनसौं पकरन
कह्यौ ॥
दुहुँ कृष्ण हनहौं ताहिछिन हैं न याहिछिन का
गनि रह्यौ ॥
अतिरम्य होयहरम्यपांडु अरम्य मानिअरम्यभौ
कुरुरायकौं वहकायि रनभुवि आयि पांय

(१) संभव है कि तू मारेगा (२) खोटा है गमन जिसका ऐसे कर्ण को शकुनि का साथ कहना चंडाल चौकड़ी के द्योतनार्थ है (३) भ्रम (४) लीला ही से (५) सुख देनेवाला. युधिष्टिरको (६)हे अर्जुन(७) तपा हुआ हृदय परम शीतल होवे. (८)धर्म का श्रेष्ठ कवच धारण करनेवाले युधिष्टिर का ॥ २५७ ॥ (९) मुझे मारने के लिये हस्तिनापुर में कर्ण ने अपने मित्रों से कहाथा. (१०) दोनों कृष्ण अर्थात् श्रीकृष्ण और अर्जुन को(११) जिस समय तुम पकड़ लोगे(१२)मार(१३)पहले यह कर्ण बहुत अच्छा था(१४)परन्तु अच्छे पांडुओं को बुरे समझकर बुरा हो गया है (१५) पैरों से अचल हो गया

अगम्य भौ ॥२५८॥
मम भागिनेय[1]मराथिमृ[2]तिद्वि[3]जराज्यसौंबतवायिकैं
इत भो खरो सुखपायि लैंहौं[4]दायपायहिमरायिकैं
सुन पत्थ तोर सपत्थ कर्नहिं मत्थहीनहितूंकरैं
चल[5] प्रबल भार्गव अस्त्रके बल निबल ज्यौंतव
बल जरैं ॥२५९॥
भटमौर पत्थ समत्थ यौं सुनि वत्त ठ्हां जदुनाहकी
कटुराहिं जय चित चाह किय ललकार अरि
दल आहकी ॥
अब सकुनि ठ्हैं सकुनी उडैं मम बान व्यर्थ न
जावही ॥
परिवार कर्न पुकार सुनि कुरुवीर पार न पावही २६०

॥२६८॥(१ भानजे अभिमन्युको(२)मृत्यु(३)द्रोणाचार्यसे कर्ण के कहने से द्रोणाचार्य ने अभिमन्यु को मारने का उपाय बताया (४) बदला(५)सौगन (६) यहां से यहां चल (७) परशुरामजी के अस्त्र के बल से प्रबल है (८) तेरी सेना निर्बल के समान जलती है॥ २५९॥(९)सुभटों के मुकुट अर्जुन ने(१०)कडुए रस्ते से(११)शत्रुओं की फौज को आह करानेवाला(१२)पक्षी(१३)कर्ण के परिवार के(१४)कुरुवंशी दुर्योधनादि दुःख समुद्र का पार नहीं पावेंगे ॥२६०॥

॥ कविवचन ॥

रनभूमि जाय उठाय हत्थहिं मुच्छ लायि ख-
रो रह्यौ ॥
बढि ध्वान[1] घोर निसान[2] कानन[3] तान गान ग-
यौ बह्यौ[4] ॥
जित घोर लोयन[5] के घुरैं तित कौन तूतिय की सुनैं
यह लोक गाथ[6] अनूप पद्म कविंद को हिय उप्फनैं २६१
भिरि कर्न पत्थ समत्थ[7] मांगियँ अत्थ[8] जय अ-
पनाय कैं ॥
धनि[9] आन मनि सिरथान थप्पिय प्रान[10] पान
उडाय कैं ॥
कति वीर तुच्छ सरीर कौं गनि तीर तुच्छ अ-
रीन के ॥

---

(१) शब्द (२) नगारों का (३) कानों तक है तान जिन का ऐसे अप्सराओं के गान (४) वह गया. अर्थात् नगारों के शब्द ने इसका तिरस्कार कर दिया (५) कितनी ही (असंख्य) (६) लोककहावत ॥२६१॥ (७) दोनों बलवान् सर्व (८) जयरूप धन को (९) मालिक की आज्ञा रूप मणि को (१०) प्राण रूप पत्तों को (११) यहां शरीर और तीर रूप वस्तुओं को तुच्छ गिनने रूप धर्म से तुल्ययोगिता अलंकार है.

भलवत्तबुल्लियहीन[1]भीतिअहीन[2]उच्छत्रपीन[3]के२६२
जब हौं [4]कढ्यौ कसि सस्त्र अंग उमंग जुरिबै
जंगके ॥
मुख हेरि फिर [5]कर फेरि बुल्लिय मात सें[6] सु-
रंगके ॥
स्तनँ[7] हत्थ धरि इहिं पान करि जुरि फिरहिं जो
रन जायकैं ॥
तूं तात नहिं हौं मात नहि यह ख्यात इक्खहु
आयकैं ॥ २६३॥
कढि ठहँ खरी सिर चूंदरी अँगुरी धरैं रु [9]स्वसा
कह्यो ॥
मुरि तीर आयौ वीर तो यह चीर [10]खप्पनहीचह्यो
पुनि तीय बोल्लिय पीय सुन विजुजीयँ[11] रन

[१]भयसे रहित[२]एक एकसे कम नहीं[३]पुष्ट उत्साहवाले दोनों कर्ण और अर्जुन।२२६।(४)कोई योद्धा कहता है कि जब मैं युद्ध करनेको निकला था तब(५)माताने हाथ फेरकर (६)अच्छी रणभूमिका के लिह!(७)स्तनों पर हाथ धर कर माता बोली कि इस स्तन को पीकर पीछा फिरेगा तो (८) पुत्र ॥ २६३ ॥ [९] बहिन ने[१०]चूँदरी को खप्पन करूंगी अर्थात् आत्मघात करूंगी यह व्यंजना है (११) मरा हुआ.

सुनिपाय हौं ॥
उत अरै[1]हिं अच्छर हौं इतैं जरि[2] लरि[3] रु तोकहिं
लायहौं ॥ २६४ ॥

केउ बेर पायो ओठ[4]रस फिर हेर हसि हसि पायहौं
बहुधा सुवायो ब[5]च्छपैं पुनि स्वच्छ[6]बच्छसुवायहौं
अरि जीत[7] आयो प्रीतिपै फिर हौं वहैं अरु तूंवहैं
बिनु जीतआयोप्रीतिपनहितूंवहैंनहिहौंवहैं २६५

यहसान्तिवृत्ति[8] लियैं कहीनसहीगईरिसउफनी
तिहिंबेर लै समसेर[9] टेरहुँ कोबँना[10] अरु कोबँनी[11]
पति[12]व्रत्त हानिय जीय जानिय तेअज्ञानियजानियैं
तनु[13]तुच्छजानैंसुच्छरक्खनस्वच्छ पैं[14]छपिछानियैं

---

(१) अड़ेगी अर्थात् अहंपूर्विका पूर्वक वरेगी (२) जलकर अर्थात् सती होकर (३) अप्सरा से झगड़कर ॥ २६४ ॥ (४) अधरामृत (५) छाती पर(६) दिव्यदेह का निर्मल (७) विजय पाकर ॥ २६५ ॥(८)इस समय तो मैंने यह शांतवृत्ति से कहा है यदि हारकर आया तो उस समय (९) तलवार लेकर युद्धके लिये बुलाऊंगी.(१०)कौन तो दुलहा है और कौन(११)दुलहन है. यहां बना बनी कहने का अभिप्राय यह है कि विवाह हुए थोड़े दिन हुए हैं.(१२)यहां पतिव्रतापन नष्ट होजायगा ऐसे कहनेवाले को अज्ञानी जानना चाहिये (१३) शरीर का(१४)कुल॥२६६॥

कसिकैं कढे कुपि क्रूर पूरगरूर[1] सूर समाजके
सुनि गोधि संगर दांत क्रैंगर[3] तंग लंगर लाजके
तरवार उद्ध प्रहार मुंद्ध द्विफार अंस[6] दुहौंनपै ॥
दुवथाँरिसितसुमडारिगौरिपुरारिपूजतमौनपै २६७
सुनि सोर जोरगहीगदाभुंजजोर फारियजोरकी
निसंरयौ[10] डरयौ रु मरयौ नही विसरयौ अंदा[11]
सुमरोरकी ॥
कैंहि[12] पत्थ हौं विनुसत्थ तूं जुतसत्थअंत्थ[13]इतैंजुरैं
विनुमत्थ हौं विनु मत्थ तूं विचरैं अरैंन दुहूंमरैं २६८
श्रुति[14] वर्न परतहिं कर्न लोटिय कर्न ओहव[15]
अैनकौ[16] ॥

---

[१] पूर्ण अभिमानी. [२] जन्मपत्री से ललाट में युद्ध लिखा हुआ सुनकर [३] जैसे हाथियों के तंग वगड़ होते हैं वैसे इन के लाज रूप लंग लंगर हैं [४] ऊपर से [५]मस्तक को दो फाड़ें [६]दोनों कंधों पर पड़ी हैं[७]सो मानों दोनों के लिये थाली में सुफेद पुष्प रखकर पार्वती और महादेव को पूजते हैं ॥ २९७ ॥ [८] जिस का मस्तक फटा था उस ने शब्द सुनकर [९] भुजों की जोड़ी से[१०]जिसने माथा फाड़ा था वह भागगया[११]बजाह [१२] अर्जुन ने कहा [१३]विजय रूप फल के लिये ॥ २६८॥(१४)कानों में ये अक्षर पड़ते ही(१५)युद्ध करने के लिये(१६) इधर उधर हिले नहीं ऐसा युद्ध.

कहि कर्न लख मो सैर्न कै तौ सर्नपै मतसर्नकौ
जपि पत्थ सुनि सुत कर्न जानहु सर्न मो जदु
रायकौ॥
बिनु सर्न तूं कोउ सैर्न कौ अरि सर्न मारहिं
आपकौ ॥२६९॥
कहि दोहु जुट्टिय धीरैं छुट्टिय सरअहुट्टियकर्नपै
गहि गदा डारिय पत्थ टारिय सैंक्ति डारियसर्न पै
नर तानकैं सिसु बान दिय प्रिय प्रान पैंय सु
पिछानकी ॥
सिसु बानकी न सिखा बढी कटगी सिखाभट
आनकी ॥ २७० ॥

---

(१) बाणों को (२) परन्तु किसी का शरण मत देख. (३) कोईशरणावाला शत्रु(४) बाणों से ॥ २६९ ॥(५)धीरज चली गई अर्थात चंचलपन आगया (६)कर्ण के बाण क्षीण हो गये(७)बरछी(८)पूर्वोक्त शरणा रूप श्रीकृष्ण पर (९) बालक सदृश बाण(१०)जिनको प्राण रूप दूध की पहचान है(११)बालक रूप बाण की चोटी नहीं बढी. लोक में कहतेहैं कि "हे बच्चा तू दूध पीजावेगा तो तेरी चोटी बढेगी" सो उन बाणों की चोटी नहीं बढी. सामहने के वीर की चोटी कटगई अथवा वीर की मरोड़ की चोटी कटगई. अर्थात् पैरों में पड़कर कहा कि मैं तेरा चाकर हूं मुझे मतमार ॥२७०॥

लखि वच्यौ कर्नहिं पढिय वर्नहिं[1] मंत्र जो गुरु
पै पढ्यौ ॥
कर मुच्छ फेरिय बान प्रेरिय वच्छ[2] फोरि परैं कढ्यौ
जिहिं भांति जसपदपांति[3] सौं गुन कांतिकौ सि-
र घूमतौ ॥
तिहिं भांति घूमत दूर ह्वो नहि तौ मिहिरैं[4] मुख
चूमतौ ॥२७१॥
दुस्सासनहु संसप्तकन जुत भीमतैं भट ह्वै भिल्यौ
सात्यकिं सिखंडिय कृप सुयोधन द्रोनसुत सौं[5]
म्यहिं पिल्यौ ॥
जुतमन्यु[6] ह्वौं भट युधामन्यु रु चित्रसेन जुरे जहाँ
नहिं द्वंद्व[7] जुद्ध कह्यौ परैं कावि एक जीह सरैं कहाँ ॥२७२
जगद्वै द्विजीह[8] अही रु सूंचक[9] जोइ न्है गुरुमानलौं

---

(१) मंत्र के अक्षर (२) छाती फोड़कर पार निकलगया (३) जस के पदों की पंक्ति अर्थात् स्तुतिमय वर्णन से गुण की कांतिवालों का अर्थात् गुणवानों का सिर घूमने लगता है वैसे कर्ण का सिर घूमने लगा इसका कारण यह था कि वह दूर था नहीं तो (४) सूर्य के मुखको चूमता ॥ २७१ ॥ (५) सात्यकि कृपाचार्य से, शिखंडी दुर्योधन से, अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न से भिड़ा (६) क्रोध सहित (७) दो दो की लड़ाई ॥ २७२॥ (८) सर्प (९) चुगल

तब एक वाहमिलैंसमत्त[1]अनेकआई[2]स्वकानलौं
सहदेव सकुनिय सतानीक रु साकुनी[3] सजि-
कैं लरे ॥
भिरि भोज नकुल सओज[4] है सबवीर द्वै द्वै व्है
अरे ॥२७३॥
सरमोजें[5] साजिय उत्तमोजसुखेन[6]कर्नजव्हांसज्यौ
भर परन लागे नर किते दुहुँ नरनतनु हित
यौं तज्यौ ॥
झटपरयौ भट सुतकर्नकौ भट उत्तमोज छटा
नच्यौ ॥
हत सूत रथ सुतसूतनैं सुसिखंडि रथ चढि श्रम
रच्यौ ॥२७४॥
तिहिं हेतु ही मनु उत्तमोजसरालिसौंकृपहयहने[10]
कहि भीम चाल असोक व्हाँ कुरु लोक सोकैं[11]

(१) रोवरू (२) हायरे कवि ने यह क्या किया कि इन को शुरु बनाया यह अनेकों से सुननी पड़ेगी (३) शकुनि का पुत्र उलूक (४) पराक्रम सहित ॥ २७३ ॥ (५) बाणों की रीझ (६) कर्ण का पुत्र सुषेण (७) शरीर का स्नेह (८) वजह से (९) कर्णने उत्तमौजा के सारथि और रथ को मार दिया ॥ २७४ ॥ (१०) कृपाचार्य के घोड़ों को (११) शोक में बह जावैं.

वहैं घने ॥
ए उद्द[1] वच सुनि क्रुद्ध व्है कुरुमुद्ध[2]भटरनपैरूपे
संरवारतैं तरवारतैं घरवाँरपाप[4] सबैं धुपे॥२७५॥
दलकौं[5] उडावैं पौन[6] यह सुतपौन भलदलदट्टयौ[7]
फिर बात रक्खिय तातकी सरसाथ दलहिं उ-
लट्टयौ ॥
सुरतीय[9] भोगन जोग जे भट तेइ जुट्टिय भीमसौं
चढ भीमपै बलमीकके[10] भ्रम जो भग्यो दल
दीमसौं[11] ॥२७६॥
तित भग्गि[12] भैंट फिर जग्गि[13] फिर बेप्रीतें[14] मित्त
नरेसें[15] भौ ॥
तित बान पानन[16] पेसिभीमकुवेसहसितमहेसैंभौ[17][18]

(१)ऊंचवचन(२)कौरवों में शिरोमणि(३)बाणों के समूह से (४) गृहस्थियों के चूल्हा आदि पांच हिंसाओं का पाप ॥ २७५ ॥ (५) पत्तेको (६) पवन का पुत्र भीम (७) सेना को (८) पवन रूप पिता की की(९)अप्सराओं के भोग के योग्य(१०)बमोटा, अर्थात् उदेई का किया हुआ ढेर(११)उदेई के जैसे॥२७६॥(१२)कर्ण भगा(१३)सावधान हुआ, अर्थात् भागने का काम मेरे जैसोंका नहीं (१४)गुस्से हुआ. (१५)दुर्योधनका मित्र अर्थात् कर्ण(१६) पत्तों के जैसे बाणों को पीसकर(१७)भयानक वेषवाला (१८) उसको देखकर महादेव हँसे

जुतसोक भीम विसोककौं कहि सोकदैं नृप
कौं जियौ ॥
रन भज्जिडेरनगोसुफेरनठीकचेरनकाकियौ२७७
तिहिं क्रोधतें नहिं बोध है सुहिचौंधनैंननपैचढी
पर अपर जान परैं नहीं वेर अंध हौं विधुरावढी
जो मिलहिं हमसौं मिलहिं जमसौं याहिदंम
सौं यह भई ॥
निजवार पास विचार नावैं वारदेहु उन्हैं जेई२७८
छबि याहि विधि हैं आज विनति विसोकनैं क
रजोरि की ॥
हिय जान रखि पहिचानदैहौं जौंनि छबि निज
ओरकी ॥
कहि भीम लख विच यानकैं साहित्यसंगरको
कितौ ॥
तित बोल सून विसोकैं करि हिय तोज ईसैं

(१) दुर्योधन को (२) नौकरों ने ॥ २७७ ॥ (३) ज्ञान (४) फ़ब्बल. मरुभाषा. नेत्ररोग विशेष (५) खूब अंधा हूं (६) पीड़ा (७) इसी समय से (८) अपना समूह (९) मना करदो (१०) हे जयशील ॥ २७८ ॥ (११) पहिचान कर (१२) सामग्री या सामान (१३) युद्धकी (१४) विशोक नाम. और शोक रहित हृदय (१५) हे स्वामी

सुनौ इतौ ॥२७९॥

॥ विशोकवचन॥

॥ दोहा ॥

बाने[1] षष्ठि अरु भल्ल[2] दस, क्षुर[3] दस द्वै नाराच[4] ॥
प्रदर[5] तीन ये बुद्धिबल, जोरि सहस्रन जाच २८०
असि[6] तोमर[7] अर्गलहु[8] भल, खांडे बरछी फेर ॥
इतने हैं मृत हय रु गय, रथ तव सस्त्रहि[9] हेर२८१

॥ भीमवचन ॥

॥ दोहा ॥

भन यह काकौ दल भगैं, करिकरिकांतरकूक[10]
कहि विसोक कुरुफौज यह, नरसैं[11]रचलियअचूक
नरे[12] आयो का सूत कहि, सुनत न गंजिवसोर॥
ग्राम चतुर्दस वीस रथ, सत दासी हुव तोर[13]२८३
पत्थ खबर दिय अतिहि बर, स्तोकरी[14]भैं[15]दियतोहि
अब हरि पत्थ रु हौं इतैं,होनी होहि सु होहि२८४

॥२७९॥(१)बाण साठ हजार,(२)भल्ल दसहजार(३)क्षुर दस हजार (४)नाराच दो हजार (५)प्रदर तीन हजार ॥ २८० ॥ (६) तरवार (७) भाला (८) आगल(९)ये भी तेरे शस्त्र ही हैं ॥२८१॥(१०)कायरों के जैसे चिल्ला चिल्ला कर(११)अर्जुन के बाण ॥ २८२ ॥(१२)भीम ने कहा कि क्या अर्जुन आया?(१३)यह इनाम दिया॥२८३॥ (१४) थोड़ी(१५)इनाम ॥ २८४ ॥

षष्ठयामकी सूची ॥

छप्पय॥

शकुन विचार रु करन सल्यको हुव विवादहद
करनसापको कथन [1]व्यूह [2]व्यास रु कवि[3]मतिपद
दुवर्दलरन पाण्डु[5]दल करन अरु करन भीमरन
हुव माद्रिज[6] अरु करनँपुत्र वृषसेन सुरन घन ॥
सातयकि अरु दुःशासन सुरन करन युधिष्ठिर
रन कहिय ॥
सातयकि शिखण्डि भीम रु त्रिहुन कर्रन रन
सु गौरव गहिय॥२८५॥
करन अग्ग नृपभगनकरन त्रिँहुँ पाण्डवपकरिय
दुर्योधनके पंचभ्रात हनि भीम बाह लिय ॥
भीम करनिगन हनिय भीमकरन सुं जुट्टिपभल
अश्वत्थामा नृपति[12] करन अर्जुन रन विनुछल ॥

(१)सेना की रचना विशेष (२) व्यासमतिपद व्यास-जी के बुद्धि का स्थान अर्थात् महाभारत में कहा उस तरह(३)कवि की बुद्धि का स्थान अर्थात् कवि की कल्पना से किया हुआ(४)पाण्डव और कौरवों की सेना का युद्ध(५)पाण्डवों की सेना से कर्ण का युद्ध(६)नकुल और सहदेव(७)कर्ण का (८) कर्ण के युद्ध ने बडापना पकड़ा ॥ २८५ ॥(९)युधिष्ठिर (१०) नकुल, सहदेव और भीम (११) वह कर्ण (१२) युधिष्ठिर.

अर्जुन रु त्रिगर्त्तिय अति अरिय कृपशिखण्डि रन घन करिय ॥
नकुल सहदेव अरु करन नृप[2] लुभिचारों अद्भुत लरिय ॥ २८६ ॥
करन रु अर्जुन अरन करनसों नकुल अरनरन
नर सुनृपति[3] हेरबे गमन किय नृप[4] लखि सुखघन
कर्नहि मारनकेरि प्रतिज्ञा पत्थ प्रकाश्यि ॥
भो. भूपहिं विश्वास करन मरन सु निश्चयकिय
अर्जुन रु करन किय रनअधिक अधिक[5] कथा छप्पय अधिक ॥
एककी ठोर रक्खिय त्रिहूँ माफ करहिं कवि भय[6] अधिक ॥२८७॥

॥ दोहा ॥

पेखहु षष्ठी पहरविच, एतिय कथा उँदार ॥

(१)हढ वा विस्तृत (२) दुर्योधन ॥ २८६ ॥ (३) श्रेष्ठ वा वह राजा युधिष्ठिर (४) राजा को देख अर्जुन को सुख हुआ जीता मिलने से, और अर्जुन को देख कर राजा को सुख हुआ. कर्ण को मारकर अर्जुन आया है इस हेतु से (५)पूर्व युद्धों से यहां अधिक हुआ इस हेतु से कथा अधिक हुई और एक छप्पय के क्रम से दो छप्पय भी अधिक हुए (६) क्रम छोड़ने का मुझको भय अधिक है ॥२८७ ॥ (७) बड़ा

पद्मसुकविहरखितस्वहियशुभशुभपद्यसँभार२८८

इतिश्रीमच्चंडीचरणारविन्दचित्तचंचरीकचारणा
वासाभिधेयचारुसंवसथवास्तव्यचारणचक्रचक्रवा
कचंडांशुजाज्वल्यमानकाव्याज्ञत्वज्वालाज्वलज्ज
गज्जीवजुष्टबलूंदाख्यग्रामठक्कुरजयजीवनजीवन
सिंहपतोलीपात्रवंशभास्करप्रबन्धप्रणातृमिश्रण
कुलोद्भूतश्रीसूर्यमल्लशिष्यपातावतशाखाप्ररूढ
जगरामात्मजपद्मसिंहप्रभाषितकर्णपर्वविभावि-
भूषितवीरविनोदे द्वितीयदिनद्वितीययामयुद्धं सं-
पूर्णम् ॥ २ ॥

---

(१)अपने हृदय में(२)दोहा छप्पय आदि ॥२८८ ॥

इति श्रीमती चंडी के चरणारविंद में है चित्त रूप भ्रमर जिसका, चारणवास नामक सुंदर ग्राम का निवासी, चारण समूह रूप चकवों के लिये सूर्य रूप, जाज्वल्यमान काव्यकी अज्ञता रूप ज्वालाओं से जलते हुए जीवों करके सेवित, बलूंदा नामक ग्रामके ठाकुर विजय के जीवन रूप जीवनसिंह का पोलपात, वंशभास्कर ग्रंथ के रचयिता मिश्रण कुल में प्रकट हुए श्रीसूर्यमल्लका शिष्य, पातावत शाखावाले जगराम का पुत्र जो पद्मसिंह उस से रचे हुए कर्ण पर्वकी शोभा करके विभूषित वीरविनोद में द्वितीय दिनके द्वितीय याम का युद्ध सम्पूर्ण हुआ ॥ २ ॥ इति षष्ठयाम सम्पूर्ण ॥

॥दोहा॥

समर सातमीजाम[1]को, अमरतिपन उतसाह ॥
भमर[2]करनसेपरहिंभुव, कमर खुलहिं कतराह[3]॥१॥

॥छंदभुजङ्गप्रयात॥

चलैं भीमको पत्थको रत्थ ऐसें,
अकूपार[4]मैं भारकी नाव जैसें ॥
चल्यौ द्रोन[5]कौं लैं हरी[6] पौनजायो,
हरी[7] ताघरी रत्थ ऐसो चलायो ॥ २ ॥
फिरे बीर आडे तिन्हैं तीरसाजे,
भये कालनेमीकथा[8]मैं जमा जे ॥
बन्यौ भीम ह्वां काल[9]कोसो विगारी,
वहैं[10] आयु हेरैं यहैं आयुहारी ॥ ३ ॥
बगारी[11] अरी फौज घांघां अनारी[12],
बगारी[13] कृती[14] कीर्ति दातारवारी ॥

---

(१) अप्सराओं को (२) भ्रमर, अथवा युद्ध के रसिक. मरुभाषा में छैल (३) स्वर्ग का रस्ता करनेवाले पुरुषों की ॥ १ ॥ (४) समुद्र में (५) द्रोणाचल को (६) वानर हनुमान् (७) श्रीकृष्ण ने ॥ २ ॥ (८) मारे. जैसे हनुमान्ने कालनेमि को मारा था वैसे आडे आये उनको भीमने मारा (९) यमराज का (१०) यमराज तो आयुष्य को देखता है और यह आयुको हरण करनेवाला है ॥ ३ ॥ (११) ठौर ठौर (१२) अनाड़ी अर्थात् कम समझनेवाला (१३) फैलाई (१४) कविने

फटीनावके खंड[1] ज्यौं अब्धिमें[2] खेलैं,
पुरी तर्ककी[3] व्यासकौं कौन पेलैं ॥ ४ ॥
हनौं भीमकौं भीमकौं[4] भूप भाख्यौ,
जतूगेहमैं[5] याहिनैं पत्थ राख्यौ ॥
भटाली[6] भिरी भीमसौं भूपभेजी,
फटी मत्तके[7] हत्थ ज्यौं जीर्न[8] रेजी ॥५॥
खटाईपरैं दूधकौं ज्यौं बिदारैं,
बिदारैं सिला सोर[9] ज्यौं अग्निडारैं ॥
जबैं उत्तर्‌यौ रत्थसौं वायुजायौ[10],
गदा हत्थ लैं हत्थिघेरा[11] घुमायौ ॥६॥
घनी घोटकाली[12] गदा चोट घोटी[13],
मनौं धातु के लीक भूमी[14]कसोटी ॥
पछारे रथी सारथी के पछारे,
मरी कंसवार्ता सिसू[15]सप्तमारे ॥७॥

---

(१)टुकड़े(२)समुद्र में(३)उपमा के नगर व्यास को कौन उठावै ॥ ४ ॥ (४) दुर्योधन (५) लाचागृह में (६) योद्धारों की पंक्ति (७) पागल के (८) पुरानी ॥ ५ ॥(९)बारूद (१०)भीम(११)हाथियों की घटा को ॥ ६॥(१२)घोड़ों की पंक्ति(१३)बहुत बारीक करदी औषधके जैसे(१४)पृथ्वी रूप कसोटी पर(१५)पुराण प्रसिद्ध सात बालकों को

लरैं भीम लोहू झरैं कोप कैसो,
कुरू कोपले अग्निगोला[1] अनैसो[2] ॥
कह्यौ भूप[3] मामां जथा द्यूतकीन्हौं,
तहाँ धर्मकों जीतिकैं राजलीन्हौं ॥८ ॥
तथा आज तूं भीमकौं गाजि जीतैं,
बडे बीर बीते किंते तो न बीतैं[4] ॥
मुरयौनां[5] भिरयौ भीमसौं भूपमामा,
हसी तारदैं भूरि गिर्वानवामा[6] ॥९॥
करयौ पत्थसम्बन्धसौं नर्म[7] कैसौ,
कुरूनाथमामा दिपैं अंसद्वैसौ[8],
ध्वजा१भीम२घोरे३सबैं छिद्रधारी,
कलीं[9] विप्र जोगी तपस्या विकारी॥१०॥
बरछी लगी भीमकी ठहां अन्यैारी,

मारने की कंस की कथा ॥ ७ ॥ (१) अग्नि का गोला (भीम) (२) असदृश(३)दुर्योधन ने कहा ॥ ८ ॥ (४) और कितने न बीत जांयगे (५) दुर्योधन का मामा शकुनी मुड़ा नहीं (६) देवताओं की स्त्रियां ॥ ९ ॥(७) अर्जुन के संबंध से ठट्टा किया (८) दो कंधोंवाला. दो पुरुषों के अंशका अर्थात् दोगला. यह भी अर्थ जानना (८) ध्वजा, भीम और घोड़े सब छिद्रवाले हैं. भीम पक्ष में आरपार छिद्रवाले(१०)कलियुगमें॥१०॥(११)अणिवाली

टर्‌यौ नां रतौं झेलिकैं ताहि टारी ॥
जबै भीम कोप्यो हरौं सत्रु जीकौं,
हरे सूत घोरे हन्यौ वारहीकौं ॥११॥
कछू सौंज नां सौंबली यौं सिटायौ,
भगी भीम भौ नैंकसौं चित्तभायौ ॥
भग्यो देखि गंधारिभूं नेहभीनौं,
गन्यौं गींडवा रत्थपैं डारलीनौं ॥१२॥
उभै थांनपैं सौबली भूप ऐसैं,
जहाँ जोरि राजी कली पाप जैसैं ॥
भगी भीमभीसौं कुरूफौज भारी,
लर्‌यौ कर्न सर्ना दयादानकारी ॥१३॥
बितायौ तृतीयांस हो द्यौस बाकी,
चली कर्नकी बांनचाली चैलाकी ॥
बढे मच्छ पंचाल चंदेरिवारे,
दिखाये तिन्हैं कर्ननैं द्यौस तारे ॥१४॥

(१) शाकुनी के प्रहार को रोकदिया ॥ ११ ॥ (२) सामग्री (३) शकुनि (४) दुर्योधन (५) तकिया॥१२॥ (६) दोनों (७) रथ पर (८) दीपि (९) भीमके भय से ॥ १३ ॥ (१०) दिनका तीसरा हिस्सा बाकी रहा (११) गति (१२) चल गतिवाला (१३) दिन में तारे दिखाये॥१४॥

जबै कोपकैं कर्नसौं भीम जुट्टयौ,
अरे पांडुवारे घने नां अंहुट्टयौ ॥
लख्यौ कर्न ऐसौ भग्यौ सो न कैसौ,
जनौं डैल डारैं चिरीजाल जैसौ ॥१५॥
सहस्रांर्चि धी सांत भीर्तीं अतुल्या,
करी कर्ननैं श्रोनकी केक कुल्या ॥
स्तुती कैं सुरी कर्नपै पुस्प डारे,
रवीभू सराली निसाने निहारे ॥१६॥
गये भागि पांडू दसौंही दिसामैं,
जहाँ अंग को बान ब्याप्यौ न जामैं ॥
उतैं कर्नपैं कर्नके बीर आये,
मिले भीमसौं भीमके सीस नाये ॥१७॥
भिरी पांडुकी वाहिनी चाहभीनी,

(१)क्षीण नहीं हुआ अर्थात् बुद्धि, क्रिया और बल क्षीण न हुए (२)मिट्टीका ढगला चिड़ियों का समूह ॥ १५ ॥ (३) सूर्य की बुद्धि भी थक गई कि कदाचित् पुत्र मर न जाय (४) भय (५)छोटी नदियां (६) करके (७)अप्सरा (८) कर्ण ने. यहां कर्ण का नायक पन व्यंग्य है ॥ १६ ॥(९) वह कौनसा अंग है कि जिस में बाण न लगा ॥ १७ ॥ (१०) सेना

अटी[२] कांतराली उतै आइ कीनी ॥
कह्यौ याहिनैं भूप[३]कौं जेर कीनौ,
घनौं घेर[४]कैं सेर[५]कौं घेर लीनौ ॥१८॥
खरो कर्न ठां ठां खरे शत्रु खेसैं[६],
अफीमी मनौं यूक[७] प्रस्तारपेसैं ॥
कछू नां कहैं पांडु मौनी ति कैसैं;
रहे सीसपैं क्रूरको राह जैसैं ॥१९॥
तन्यौ व्रात[८] कन्नातमैं ज्यौं कि तंबू,
जथा अंब्धि[९]के बीच ज्यौं द्वीप जंबू ॥
जट्यो जेवसौं ताहिमैं मेरु है ज्यौं,
जुर्यो कर्न व्हां सेरहू फेरु[१०] है ज्यौं ॥२०॥
भिर्यौ पंडुकोसाथहू छोभ[११]भीनौ,
जतूगेह[१२] जारे वहै नेह चीनौ ॥
करौं आन कुरबान[१३] का ध्यान दीनौ,
सरालीनकौं सीसपै मेह कीनौ ॥२१॥

---

(१) भाग गई (२) कायरों की पंक्ति (३) युधिष्टिर को (४) कोलाहल करके (५) कर्ण रूप सिंह को ॥१८॥ (६) शत्रुओं को भगा रहा है (७) जूंवों के फैलाव को ॥ १९ ॥ (८) समूह (९) समुद्र के (१०) शृगाल ॥ २०॥ (११) क्रोध से भरा हुआ (१२) लाक्षा गृह में (१३) निछावर ॥ २१॥

मिली ओपमा मोद दैं चित्त मोहैं,
सुभा उष्ट्रकंटालको पुस्प सोहैं ॥
घने घाय लागे दुहूँ वीर घूमैं,
भनौं हों विभा कौंनकी जुद्धभूमैं ॥२२॥
कहौं क्रुद्धकौं कर्नसौं भीम क्यौं मैं,
तितैं कर्नहू भीमसौं क्यौं कहौं मैं ॥
मिली नां तुला जी धरैं धीर धायौ,
उहाँ कर्नसो कर्नही दृष्टि आयौ ॥२३॥
निहारैं अराती क्रुधा काम नास्यौ,
प्रलैकालको भीमही भीम भास्यौ ॥
चले बान वीरान वीरानकी घाँ,
धसे श्रोनं चल्लू हड्डै भूमिमैं ठहाँ ॥२४॥
मिले चर्म औ मांस औ अस्थि मज्जा,
धसे भूमिमैं भी जबैं नैंकलज्जा ॥

(१)ऊंटकटाले का पुष्प कांटों से शोभता है वैसे कर्ण घावों से शोभता है ॥ २२ ॥ (२) क्रोध किये हुए भीम को कर्ण जैसा मैं क्योंकर कहूं (३) उपमा. यहां अनन्वय अलंकार है ॥२३॥ (४) शत्रुलोकों का क्रोध रूप कामदेव अथवा विजय की इच्छा (५) महादेव (६)कानों में ॥२४॥ (७)हड्डी(८)हड्डियोंके सारसे मिले तीरोंको (९)जमीनमें होकर पातालमें(१०)थोड़ीहै लज्जा जिनके ऐसे बाण

कही पार्थनैं नाथ न्हां रत्थ लीजै,
करैं कर्न संवर्त्त[1] ना कर्न दीजैं[2]॥२५॥
भनी सल्यनैं कर्न भो तोर[3] भायौ,
अरी चाह जाकी वहैं दोर आयौ ॥
धरयौ भूपनैं जुद्धकौ भार तोपैं,
उठावैं तथा तूं उठैं ओर कोपैं ॥२६॥
भयौ नैंकसो आरसी[4] जो रवीभूं[5],
कुरूनाह पैहैं[6] मरैं दाहकौं[7] कूं ॥
कह्यौ कर्ननैं सल्यकौं भी[8] न कासौं[9],
दुहूं कृष्णकौं मारि कीर्त्ति प्रकासौं ।२७।

॥ कविवचन ॥

कह्यौ सल्य एही बुरी तोर बातैं,
गहैं भूं सिसू[10] चंद आवैं कहातैं ॥
उभै गैनं[11] औ पौन ना मुष्टि ऐहैं,
जुरैं कन्ह का पत्थ जीत्यौ न जैहैं ॥२८॥
भये द्योसं[12] वैराट वीती ति थोरे,

(१) प्रलय (२) मत करनेदो ॥ २५ ॥ (३) तेरा चाहाहुआ. ॥ २६ ॥ (४) आलसवाला (५) कर्ण (६) पावेगा (७) पृथ्वी (८) भय (९) किसीसे भी ॥ २७ ॥ (१०) पृथ्वी पर पड़ा हुआ बालक (११) आकाश ॥२८॥ (१२) दिन

दयानैं लये बस्त्र ओ जीव छोरे ॥
कही उत्तरानैं सुही साच कीनी,
गुडीकाज पोसाक लीन्ही नवीनी॥२९॥

॥ दोहा ॥

पोंछि करन सुन गुन करन, आज अरन नर ओर॥
मम प्रथमहि आयो मरन, तोर मरन प्रियतोर।३०।

॥ छंद भुजङ्गप्रयात ॥

कही कर्न हैं पत्थ ज्योंही कहैं तूं,
गही मैं प्रतिज्ञा न ओसै गहैं तूं॥
हनौं पत्थ हौं कै हनैं पत्थ मोकौं,
बतैहौं इहाँ एकतो सत्य तोकौं ॥३१॥
इती बातकैं साथसौं मंत्र धारौ,
सबै साथही पत्थकौं ह्याँ हंकारौ ॥
घनै हैं वहैं इक्क हैं स्रांत व्है हैं,

---

(१) विराट राजा की कन्या उत्तराने अर्जुन से युद्ध को जाते समय कहा था कि मेरी ढूली के लिये नवीन वस्त्र लाना (२) ढूली ॥ २९ ॥ (३) हाथ पौंछकर (४) शल्य कहता है कि मेरे पहले तेरा मरना आगया है; क्योंकि तुझे तेरा मरना प्यारा है ॥ ३० ॥ (५) अभिप्राय ॥ ३१ ॥ (६) बुलाओ (७) थकजायगा, अर्जुन.
नर्म हाफ.

जुरैं मोर नाराचतैं जिय्य जैहैं[1] ॥३२॥

॥ अर्जुनवचन ॥

हरौं प्रान राधेयके[2] है[3] अहोनी,
छयो छद्मकौ[4] जुद्ध यौं कंपि छोनी ॥

॥ पृथ्वीवचन ॥

भरी आजलौं पुत्रकी[5] कीर्ति भातैं,[6]
घरैंगो[7] घरी हिक्कमैं छद्मघातैं[8] ॥३३॥
कवीपद्मके चित्तमैं तर्क ऐसैं,
करैं पुत्र एं काम धूजैं न कैसैं[9] ॥
मरैं सत्रु[10] यौं कर्न भो ध्यानि मोनी,
दलौं पत्थकौं हौं भिरयौ दोरि द्रोनी[11]॥३४॥
हरीकै[12] हरीकै[13] हरीपूँतहीकै[14],

---

(१) मेरे वाण से क्या जी जायगा? कभी नहीं ॥ ३२ ॥ (२) कर्ण के (३) यह अयोग्य बात है (४) कपट का युद्ध छाया तब पृथ्वी धूजी (५) पांडु पृथ्वीका पति होनेसे अर्जुन को पृथ्वी का पुत्र कहा है (६) शोभासे (७) घड़ेगा (८) कपट से प्रहार ॥ ३३ ॥ (९) जब पुत्र ऐसे अनर्थ का काम करै तो पृथ्वी कैसे न धूजै! किन्तु धूजै ही (१०) शत्रु (अर्जुन) इसप्रकार मरेगा ऐसे विचार बांधता हुआ कर्ण ध्यानयुक्त और मौनवाला हुआ तब (११) अश्वत्थामा ॥ ३४ ॥ (१२) कृष्णचंद्र के (१३) हनुमान् के (१४) अर्जुन के

दये बान द्रोनी चलाकी रही कैं ॥
गुरूपूतके सूतकौं मारि डारयौ,
कृपाचार्यकौं बान दैं बार टारयौ ॥३५॥
ध्वजा औ धनू भूपके तोरि घूम्यौ,
वहां कौन हो पत्थसौं जो न झूम्यौ ॥
जितैंद्रीयपैं ज्यौं परस्त्री सु जावैं,
मुरैं हायकैं धीर क्यौं चित्तलावैं ॥३६॥

॥ दोहा ॥

वैर प्रीति समसौं बनैं, गुनी सुनी वह गाथ ॥
सल्य रु हरि दुहुँ सारथी, रथी करन अरु पाथ॥
हेरँहु हरि हांके हरिन, परिय अरिन उर त्रास ॥
पलटे भूषन अच्छरिन, वरन वरन वर खास।३८।

(१) चंचलता करके रहगया ॥ ३५ ॥ (२)दुर्योधन के(३) भिड़ा(४)जैसे जितेंद्रिय पुरुष पर परस्त्री जावे और वह हाय हाय करती हुई पीछी मुड़ जाय (५) जिसके पास गई थी वह जितेंद्रिय पुरुष ॥ ३६ ॥ (६)बराबरी वाले के साथ ॥ ३७ ॥ (७) देखो (८) श्रीकृष्ण (९) घोड़ोंको (१०) अप्सराओं ने कम कीमतके गहने उतारकर बढ़िया कीमती गहने पहने. एकान्तस्थान न होनेसे और लज्जासे कपड़े नहीं बदले (११) पतियों को (१२) वरनेके लिये (१३) वरदानों के भंडार वीर. जमीन में गढ़ा करके धान्य रखने के खड्डेको खास और खोड़ा कहते हैं ॥ ३८ ॥

॥छन्दभुजङ्गप्रयात ॥

जुरे कर्न श्रो पत्थ त्यौं भीम जोधा,
गही नाहि पीछी गई टूटि गोधा[1] ॥
मच्यौ ध्वांत[2] व्हाँ पत्थ यों बान मारैं,
न दीखैं रवी[3] जुद्ध जैंसौं[4] निहारैं ॥३९॥
पितो[5] चित्तकौ पुत्रनैं मंत्र[6] चीनौं,
हनौं ध्वांत यौं बान दैं ध्वांत कीनौं॥
सुभाँ कर्न पत्थीनि छत्रीन सैट्टैं[8],
करैं काज सीधे कुंती कौ उलट्टैं[11] ॥४०॥
कहा ध्वांतकौ[12] नासवै ध्वांत कीनौं,
करैं नर्म[13] ताकौ कवी ज्वाब दीनौं ॥
वढी वीर संघातसौं[14] स्वेद[15] वृष्टी,
दई पद्मसूरी तितैं नीर[16]दृष्टी ॥४१॥

---

(१)गोहके चमड़ेका दस्ताना(२)अंधकार(३)सूर्यको(४)नम
लगाकर देखताहै तोभी॥३९॥(५)सूर्य के मन की (६)स
लाह को (७) अच्छी है कांति जिसकी (८) बाणों को
(९) चलाता है (१०) बुद्धिमान् (११) विपरीत करै
इस छंदके पूर्वार्द्ध में तीसरा असंगति अलंकार है॥४०॥
(१२) अंधकार का नाश करने के लिये प्रकाश करना
योग्य था ऐसा कोई (१३) ठट्ठा करै तो (१४) वीरोंके
समूह से (१५) पसीने की वर्षा (१६) पानी समझा.
जो घायल पड़े हुए पानी२ कर रहे थे उनकेलिये ॥४१॥

कटे हत्थि घोरे रथी सूत केते,
यहैं रीति ह्वैहैं रहे गैल जेते ॥
किते लुत्थपै लुत्थको जुद्ध तोलैं,
किते बुत्थपैं बुत्थकी वाह बोलैं ॥४२॥
किते खग्गकी धारके अग्ग लग्गैं,
कहैं कोपकैं ते तथा जुद्ध जग्गैं ॥
कहैं कुप्पिकैं के बडे हो अनारी,
कहो का बरैगी खरी देवनारी ॥४३॥
सज्यो जुद्ध ह्वां पार्थनैं क्रुद्धसीमा,
करयो चंडिकी स्वस्तिकों अस्थि कीमा॥
इषू अग्नितैं स्रोन घी छौंकि ओटचो,
मसाला गदातैं घनौ मांस घोटयो॥४४॥

---

(१) जितने पिछाड़ी रहे हैं उनकी यह रीति होगी कि पानी पानी करते मरजावेंगे (२) बोटी पर बोटी पड़े ऐसे युद्धकी॥४२॥ (३) खड्गकी धाराके अगाड़ी चींठ जावें ऐसा युद्ध करते हैं (४) अप्सरा क्या बरेगी; क्योंकि वरमाला डालनेकेलिये शरीर ही नहीं रहेंगे॥४३॥ (५) क्रोधकी है परम हद जिसमें ऐसा युद्ध किया (६) देवीके आशीर्वादके लिये हड्डियों का चूर्ण होकर कीमा बनगया (७) बाण रूप अग्निसे रुधिर रूप घीमें छोंककर पकाया (८) गदा से घोटा हुआ मांस मसाला हुआ. अस्थिका कीमा और मांसका मसाला दोनों यथायोग्य होनेसे प्रथम समालं-

कटारी कढी बीरकी फोरि काया,
लखैं जुद्द यौं जीवकौ ठीक ठाया ॥
उठी दूसरी यौं तुला चित्त चीन्ही,
मनौं पान दे प्रानकौं सीखदीनी ॥ ४५ ॥
रुपी अग्ग भूरंगमैं सक्ति जो हैं,
श्रवैं बीरता बारुनी जंत्र सोहैं ॥
दिपैं इक्कही कुंतमैं बीर द्वै हैं,
किधौं सारदा नीरकी कावरैं हैं ॥ ४६ ॥
भटाली कटी मध्यसौं जो कटी व्हां,
उडी ऊर्द्धके भागकी जो रटी व्हां ॥
अधोभागकी पंतिकी दीप्ति ऐसैं,
जुलाहा सुतानां सजैं जंत्र जैसैं ॥ ४७ ॥

कार है ॥ ४४ ॥ (१) कटारी का अग्रभाग है यह जीव के बैठने को योग्य स्थान हुआ (२) उपमा (३) बीड़ा देकर प्राण रूप महमानको सीख दी. यहां एकदेश विवर्ति रूपक है ॥ ४५ ॥ (४) बरछी जो रंगभूमि में अगाड़ी रुपी है सो (५) बीरता रूप मदिरा का यंत्र शोभता है. (६) भाले में (७) सरस्वती के जलकी कावड़ें हैं ॥ ४६ ॥ (८) कमरके बीचमें से (९) कही थी (१०) नीचेके भाग की ॥ ४७ ॥

छुछकैं[1] उडैं श्रोनकी तत्र ताना,
कहैं कामरे[2] नोकके तीर नाना[3] ॥
चली तृप्त ह्वैं चंडिका यौं विचारी,
सिरोपाव देहैं सजैं वीर[4] सारी ॥ ४८ ॥
किते रुंड[5] नच्चैं किते मुंड गावैं,
जिहां राहु केतू कथा जी जमावैं ॥
नचैं अच्छरी के खरी के निहारैं,
किती कैं सती[6] याद निस्वाँस[7] डारैं ॥४९॥
नचे वीर पच्चास[8] द्वै वीर नच्चे,
छके जीमि जादा भये ताल कच्चे[9] ॥
बखानैं रिखी कै कहैं कालबच्चे,
सुनी भ्रांतितैं डक्कनी बालबच्चे ॥५०॥

---

(१) यंत्रसे सीधी निकलती हुई धारा (२) उस तानेमें दो दो कामड़े होते हैं (३) अनेक प्रकारके नोकवाले तीर (४) वीर लोगोंने साड़ी बनाई ॥४८॥ (५) रुंडका नाचना और मुंडका गाना असंभव है सो राहु शिरकी और केतु धड़की जो कथा है वह संभवपन को जीमें जमाती है (६) जो पति के मरने पर उसके संग जलती है. यहां पतिव्रता का पर्याय नहीं जानना (७) कितनी ही अप्सराएं निश्वास डालती हैं कि ये हमारे पतियों को छीन लेवेंगी ॥ ४९ ॥ (८) बावन वीर (९) ज्यादा जीमकर आपा भूल गये इसीसे तालमें कच्चे होगये, अर्थात् बेताले नाचे ॥५०॥

नची आप बा[1] थो जहां का निहार्‌यौ,
भगी भूरि भूपै[2] भयौ हास भार्‌यौ ॥
चले जुद्धपै सूर यौं कूर[3] चूके,
भने भूरि भा का भ्रमैं सूरि भूके ॥५१॥
करी च्यारसौं पत्थके मत्थ प्रेरे,
हर्‌यौ भौ हरी[4] जुक्त दैं दृष्टि हेरे ॥
टर्‌यौ ना लर्‌यौ भीमके दाव टेरे,
पिता[6] वैर अद्री मनौं काटि गेरे ॥५२॥
कुरूवीर भागे किते सस्त्र त्यागे,
लगे दौंवनीके जथा जंतु भागे ॥
मिल्यौ पत्थसौं भीम भो साथ भार्‌यौ,
घरी द्वै दुहूनैं[10] तहां मंत्र[11] धार्‌यौ ॥५३॥

---

(१)जहां बाकार अर्थात् बाल शब्द था वहां काकार अर्थात् काल शब्दको देखा (२) पृथ्वी पर बहुत भगगई. भूरि शब्द को डाकिनी का विशेषण कियाजाय तो बहुत सी डाकिनियां भगीं. (३) कायर भग गये (४) बहुत शोभा क्या कहैं पृथ्वी के बहुतसे कवि उपमा के वास्ते फिरे ॥ ५१ ॥ (५) कृष्ण (६) इन्द्रके (७) पर्वतोंको ॥ ५२ ॥ (८) वन की अग्निसे (६) मृगादिक (१०) अर्जुन और भीमने(११)सलाह. यद्यपि युद्धके वैसे क्रूर समयमें सलाह करना योग्य नहीं था तथापि शास्त्र में

टरी भ्रातकी आपकी मोत घातैं,
प्रतिज्ञा करी आदि दे कौन बातैं ॥
रथी पंक्तिं[१] कोरूनके पत्थ[२] मारे,
रथीतोंमं[३] जुट्टे[४] कुरूके हकारे[५] ॥५४॥
खरे खेल के कैं[६] चमू[७] कानि खीनी,
कुपै भीमने व्हां गदा तृप्त[८] कीनी ॥
बडे आपनों सुक्ख ओ दुक्ख मानैं,
तथा ओरकौ चित्त दृष्टांत ठानैं ॥५५॥
भिरैं भूख मोसौं भमौं दुक्खि भारी,
चलै क्यौं दुखी व्है गदा त्यौं विचारी[९]
भगी सर्वसेना खरो कर्न ऐसैं,
गये गाडि [१०]गोरे खरी लुत्थ जैसैं ॥५६॥

लिखाहै कि कोई काम करै वह सलाह करके करै यह उपदेश है. सलाह यह थी कि मैं दुःशासन और दुर्योधन को मारूं तब तू पूरा होश्यार होकर देखना ॥ ५३ ॥ (१) मृत्युका पेच (२) देश (३) समूह (४) भिड़े (५) दुर्योधन के ललकार कर भेजे हुए ॥ ५४ ॥ (६) करके (७) पांडवों की सेना को क्षीण किया. (८) गदा को तृप्त किया अर्थात् महाभयंकर गदा युद्ध किया॥५५॥ (९) जैसे मैं भोजनके वास्ते दुखी फिरता हूं वैसे यह गदा भूखी है सो कैसे चलेगी ऐसे विचारकर गदा को खूब घपाधी(१०)अंगरेज लोग मुर्देको खड़ा गाडतेहैं ॥५६॥

भगी फौजकौं भूतलौं कर्न फेरी,
घने दांयकैं पाण्डवी फौज घेरी ॥
जुट्यो सात्यकी ज्वान जन्मेज जैसो,
दुहूँ अस्वहीने दिपै कर्न कैसो ॥५७॥
कटे चाप ह्वां द्रोपदीपुत्र लुट्टे,
कट्यौ केकयाधीशभू संगि कट्टे ॥
भग्यो सौम्य ह्वै जुद्धतैं सौम्य भारी,
महाक्रुद्ध कैकयकी फौज मारी ॥५८॥
हटैं उच्छरैं के करैं सब्द हाहा,
गही मुग्धती पूर्वसंजोग गाहा ॥
फिर्‍यौ केकयाधीसकौ लोग फाट्यो,
अगैं कर्नके पूतको सीसं काट्यो॥५९॥
मच्यो कर्न पंचालकी फौज मारी,

(१ भूतके जैसे (२) पेच करके (३) घोड़ोंसे रहित ॥५७॥
(४) लचक गये (५) केकय देशके राजाका कुमार (६)
धृष्टद्युम्न[७]सोम अर्थात् चन्द्रमा है देवता जिसका ऐ-
सा उसका उपासक अर्थात् कलंकी होकर भगा (८) ब-
डा क्रोधवाले कर्णने ॥५८॥ ९ मुग्धा स्त्री के प्रथम संयोग
की कथा (१०) धृष्टद्युम्न ने कर्णके पुत्रको मारा
५९ ॥

रखैं[1] बीज नाहीं हनौंहीं द्विजारी[2] ॥
भिरैं भूप पंचालके जुद्ध भूमैं,
धस्यौ बान दैं[3] भानुको पूत घूमैं॥ ६० ॥
जुधामन्यु जन्मेज ज्यौं उत्तमोजा,
सिखंडी रु पार्षत्त[4] त्यों सौम्यओजा[5] ॥
भगे पंचहू भानवी[6] जुद्ध भीतैं,
प्रभूके[7] भजैं पंच ज्यौं पाप[8] वीतैं ॥६१॥
धरैं द्वेस ह्वां कर्नपै भीम धायो,
भिरे भूरि ह्वै भयो चित्तभायो[9] ॥
जुरे जोग्य दाता कवी जोग्य दोहू,
तकैं[10] तुष्ट अन्योन्य[11] तृप्ती न तोहू ॥६२॥

---

(१) कुलका अंकुर पुत्र पौत्रादिक (२) ब्राह्मण द्रोण का शत्रु अर्थात् धृष्टद्युम्न (३) कर्ण ॥ ६० ॥ (४) धृष्टद्युम्न [५]ठंडे तेजवाले (६) सूर्यके पुत्र कर्णके (७) परमेश्वर के (८) पंच महापाप. ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरुस्त्री गमन, स्वर्ण की चोरी और पांचवां इनका संबंध ॥६१॥ (९) चित्तका चाहा. इसका तात्पर्य यह है कि मरनेकी इच्छा नहीं थी, किंतु भिड़ने मात्रकी थी (१०) मिलाप से प्रसन्न हुए देखते हैं. (११) परस्पर. यहां दोनों जगह धनाभाव और मरणाभाव हेतु है. और मिलाप मात्र प्रसन्नताका कारण है ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

कर्न भीम रन करि रहे, पर्यौ दुसासन बीच ॥
कब काकी रोकी रुकै, न्यौंत बुलाई मींच॥६३॥

॥ छंदपद्धरी ॥

भिरि भीम दुसासन विकटभाय,
सब लखैं सुभटथैट वैटसहाय ॥
ध्वज धनुष सूत हनि भीम धीर,
द्रुपदा इत का दिय भाल तीर ॥६४॥
पुनि दुस्सासन धर धनुष तत्थ,
हुव अग्ग गहिय इय बग्ग हत्थ ॥
सँठि सर सार्थिसिर वृष्टि साजि,
ॠजु सर द्वादस उर भीम गाजि ॥६५॥

---

(१)मृत्यु. यहां कर्ण सहायताका दुःशासन की मृत्युको न्योता देना व्यङ्ग्य है॥६३॥(२)अद्भुत चेष्टासे(३)समूह(४) वीरता की मरोड़ है सहाय जिनके ऐसे देखनेवाले सब भटों को (५) मारकर (६) द्रौपदी ललाट में है क्या? इस हेतु से ललाट में तीर लगाया; अर्थात विधाता ने तेरे भाग्य में तीर और मेरे भाग्य में द्रौपदी लिखी है. यहां गूढोत्तर अलंकार से शुद्धापन्हुति अलंकार व्यंग्य है ॥ ६४ ॥ (७) साठ (८) करी (९) सीधी बारह बाणों की (१०) पंक्ति ॥ ६५ ॥

दुस्सासन हिय दिय भीम बान,
इतहैं द्रोपदि आभर्न ध्यान ॥
भरि कोप गदा प्रेरी सु भीम,
उछरि गिर दुसासन मृत्युसीम ॥६६॥
कर रक्खि मुच्छ फिर बत्त भाख,

॥ भीमवचन ॥

ईहिं लोहिं राखि तिहिं उडहिं राख ॥
सुनं सकुनि सुयोधन कर्न नीच,
बचावहु याहि हितं चित्त बीच ॥६७॥
इम अक्खिं उछरि अंगारसैल,
परिग तित दुसासनतूलपैल ॥
हसि हुलसि हियय तिहिं बक्त्र हेरि,
भुज ठोंकि कह्यौ फिर सीसं फेरि॥६८॥

॥ छन्दमनोहर ॥

पेखे नित निपट नछत्र त्यों नछत्रपति,

(१) भीमके हृदय में (२) मौतकी हदके पास॥ ६६ ॥ (३) इस दुःशासन को (४) सुन और नीच इन दोनों शब्दों का शकुनि आदि तीनोंके साथ अन्वय है (५) स्नेह ॥ ६७ ॥ (६) भीम के नेत्रोंसे (७) क्रोध रूप अंगारों का पर्वत (८) दुःशासन रूप पीनी हुई रुई पर (९) उस दुःशासन का मुख देखकर (१०) अपना सिर ॥ ६८ ॥ (११) तारोंको (१२) वैसेही चन्द्रमा को

माठरकौं[1] मित्र करि मित्रै[2] नित धायो मैं ॥
सिसिर हिमंतहूमैं प्रीति करि रीतिरम्य,
मरुतमिलन घन व्यजनैं[3] घुमायौ मैं ॥
हव्यवाट[4] हव्य[5] दीनौं अतर[6] अमोल लीनौं,
जरँनि[7] हुती न पर वरुन[8] रिझायो मैं ॥
मेरे पुन्य पूरे[9] आज तेरे पुन्य पूरे[10] आज,
मोकौं आज पायो तूं रु तोकौं आज पायो मैं।६९।

॥ छंदपद्धरी ॥

पदपद्म[11] तोलि[12] मुखपद्म[13] बुल्ल,
हियपद्मैं[14] दीन्ह असिपद्म[15] हुल्ल[16] ॥

---

(१) माठर नामक सूर्य के समीप रहने वाले को (२) सूर्य का (३) पंखा (४) अग्निकेलिये (५) होमने योग्य पदार्थ (६) सुगंधि पदार्थ. यहां न्याय शास्त्र में प्रसिद्ध होनेसे गंधसे पृथ्वी लेना चाहिये (७) शरीर में ताप नहीं था कि जिस मिससे ठंढकेलिये न्हाऊ तोभी (८) जलके राजा को. यहां आकाशादि पांच भूतों में तुझको ढूंढा परंतु नहीं मिला यह व्यंग्यार्थ है (९) मेरे पुराय पूर्ण हैं (१०) तेरे पुराय खतम हो गये ॥ ६९ ॥ (११) चरण कमल को (१२) उठाकर (१३) मुख कमल से बोला (१४) हृदय रूप कमल में दी (१५) खड्गका अग्रभाग अथवा फल (१६) साम्हनेका प्रहार

मुख फारि रुधिर छिछकारि छकि,
तिहिं दाटि काटि सिर ताहि तकि॥७०॥
महिष्यादि स्तननकी ज्यौं सुधार,
चंचल सिसु अचवंत वक्त्र फार॥
तिहिं बेर भीम छबि यौं दिखात,
नवछावर बिच सिसु केक जात॥७१॥
मंचं जिम मेंचिग महि नचिग भीम,
सम रुद्र छबि न छबि रुद्रसीम॥
यह कॅर पॅटहर द्रोपदकुमारि,
यह मरयौ करौं का इहिं उखारि॥७२॥

---

(१) लोहू की ऊपर की ओर निकलती हुई धारा से (२) तृप्त होकर (३) उस दुःशासन के पैरसे दबाकर (४) उस दुःशासन को मरा हुआ देखा॥ ७० ॥ (५) भैंस बकरी आदि के स्तनों के दूध की (६) धैर्य रहित. क्योंकि दूध पारी में निकाल गर्म कर कटोरे में डालकर पावें इतनी देरको नहीं सहनेवाले (७) पीता है (८) मुंह फाड़कर (९) बालक ॥ ७१ ॥ (१०) रथादिके मांचके जैसी (११) पृथ्वी ऊंची नीची हुई और इधर उधर भी हुई (१२) प्रलयकाल के महादेव की कांति के बराबर नहीं है (१३) रौद्ररस की हद पर पहुंची हुई भीम की कांतिके साम्हने (१४) यह हाथ (१५) वस्त्र को शिरसे खींचनेवाला है (१६) उखाड़कर. तात्पर्य यह है कि यह जीता होता तो जीते का हाथ उखाड़ता ॥ ७२ ॥

हरि सीस ताहि हुव हद हुस्यार,
अब स्यारै घसीटहिं तोर यार ॥
इम कहिय गहिय गति नचि उताल,
तित्तृकिट तृकिट धिकृकिट चाल॥७३॥
तुन्नाकिट किटतक ताकिट तित्थ,
धुमकिट धाधाकिट धकिट धित्थ ॥
किटतिकथुन्न् था था थकिट थुन्न,
धृक्किटतिक धिक्किट धिकिट धुन्न ॥७४॥

(१)मस्तक काटकर(२)तेरे मित्र शृगाल हैं; अथवा तेरा यार दुर्योधन उसके सिरको भी ऐसे ही स्यार खींचेंगे (३) संगीत के छंदको ग्रहण करके. जिसको गानेवाले गति कहते हैं (४) उतावला नांच. यहां तित्तृकट से आदि अर्थ रहित वर्णोंका अनुकरण जो धिक्कृकिटादि तक. इन पदोंको गवैये लोक तिरिवट के बोल कहते हैं परन्तु यहां ऐसा मालूम होता है कि समस्त व्यंजन अक्षरों में कितनेक तो मृदंगके बाएं मुख से और कितनेक दाहिने मुखसे और कितनेक दोनों मुखों से निकलते हैं. यह वर्णों के नियम की परिपाटी लुप्त होगई. हम हमारे विचार से कुछ कहते हैं कि जैसे कवर्ग का पहिला अक्षर ककार, तीसरा अक्षर गकार और पांचवां अक्षर ङकार ये तो दाहिनी तरफसे निकलने चाहिये. दूसरा खकार और चौथा घकार ये बांई तरफसे निकलने चाहिये. ऐसे ही शेष चारों वर्गों को जानो. और यका-

त्रिक्किट त्रिक्किट तृक त्रिकिट तार,
धाधाधिन् धाधिन धिंधि धार ॥
गिदूगिन् गिदूगिदूगिन् गिदूगिनु गिदू गिदू
गिनु घोर,
धुम्किट धाधाकिट धकिट घोर ॥७५॥
नट[१] नच्चिग भीमभट नचिग नेच्च,

रादि जो आठ अक्षर पीछे रहे वे और कितने ही अक्षर पांचों वर्णों के दोनों तर्फ से निकलने चाहिये. और घकार तो इस वक्त भी निकलताही है. संस्कृत और भाषा के कवि इन बोलों को छंद में लाते हैं. जैसे चंद कविने रासेमें दिखाया है. "ततत्थई ततत्थई ततत्थई सुसंडियं, तथुंग थुंग थुंग थे विराज काम दंडियं ॥" और महाकवि ठाकुर साहिब सूर्यमल्लजी हमारे भाषागुरु, वंशभास्कर ग्रंथ के रामसिंहचरित्र में नाराच छंदमें, "तझं झझं झझं झ थित्थ थित्थ तत्थ तंडई" । और दूसरे प्रकरण में मुक्तादाम छंदमें "थेई थेई नच्च कबंधन जूक, बने जहां कातर पत्त वधूक"॥ रावण ने शिवताण्डवस्तोत्रमें "धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके ॥ धिमिं धिमिं धिमिं ध्वनन् मृदङ्गतुंगमंगलम्" ॥ इसप्रकार मैंने भी इस छंद में कहे हैं. मेरी गानेमें रुचि अधिक है इससे ये बोल मैंने अधिक कहे हैं. इनका अर्थ मैंने नहीं लिखा ॥ ७३ ॥ ७४ ॥७५॥(१)जैसे नट नाचे वैसे भीम नाचा (२) वीरोंके नृत्य में.

गुनि सोक कीच कुरु गचिंग गच्चँ[2] ॥
परि श्रमित[3] स्वेदँ[4] गन बूंद पूर,
मौक्तिक नवछावर कीन्ह हूँर[5] ॥७६॥
सर[6] सुकिग धुकिँग[7] धर रुकिग सूर,
कति मचिंग[8] रचिंग[9] रन लचिग कूँर[10] ॥
भुज ठोकि कीन ललकार भीम,
सुन कर्न सुयोधन कुकृत सीस ॥७७॥
धिनधिन्न दिवस रनभूमि धिन्न,
भिरि किन्ह दुसासन वच्छ भिंन[11] ॥
पृथु[12] कीन प्रतिज्ञा श्रोनँ[13]पानि,
घन घूँर्न[14] घूर्न हुव पूँर्न[15] आनि ॥७८॥
अँपि[16] रैँ[17]न निछावर भइ न अँत्र[18],

(१)कलीजगये(२)कलीजनेके समय शब्दका अनुकरण है (३)थके हुए भीमके(४)पसीनेकी बूंदोंका समूह(५)अप्सरा-ओं ने मानों मोतियों की न्यौछावर की ॥ ७६ ॥ (६) तलाव सूखगये (७) पृथ्वी झुकगई (८) उन्मत्त होगये (९) खुश हुए (१०) कायर लचगये ॥ ७७) (११) विदीर्ण किया (१२) बड़ी (१३) रुधिर रूप पानी (१४) घूमती घूमती (१५) पूर्ण हुई. मेरी प्रतिज्ञा ॥ ७८ ॥ (१६) हे विशोक? (१७) धन नहीं है. (१८) इस युद्ध भूमिमें.

किंत गइ न करहुँ वे[1] इहिं[2] कलत्र ॥
मधु[3] मधुर सिता[4] अरु अमृत मान,
कुर्बान[5] सबहि पेह[6] पान आन ॥७९॥
करि बत्त बहुरि ललकार कीन,
उनमत्त[10] प्रथम पुनि मद्य पीन ॥
हो भीम[11] भीम पुनि ओन[12] पान,
भट भगैं क्यों नलहि लहि स्वमान॥८०॥
कुपि भीम बहुरि[13] इकर अकृत कीन्ह,
पुनि मृतक उर चुलुक ओन पीन्ह ॥
भट चित्रसेन लघु कर्न भ्रात,
परि शुधामन्यु परि मन्यु[14] भ्रात ॥८१ ॥

(१)निश्चयसे(२)इस दुःशासनकी स्त्रीको(३)शहद(४)मिश्री (५) न्यौछावर है (६) रुधिर रूप पीना (७) और ही है. यहां भेदकातिशयोक्ति अलंकार है ॥ ७९ ॥ (८) अपने मनसे अथवा विशोक के साथ (९) सिंहनाद किया(१०)दिवाना तो था ही और फिर मद्यपान किया इससे दुष्ट भ्राता के रुधिर पान रूप कार्य अकरणीय था वह करणीय हुआ (११) पहले भीम भयंकर तो था ही (१२) रुधिर ॥८०॥ (१३) फिर. इसका अभिप्राय यह है कि जीते हुए भाईका रुधिर तो पहले पिया ही था मरे हुए भाईका फिर पिया (१४) क्रोधका समूह रूप ॥ ८१ ॥

ताकि तानि वान दिय चित्रकेतु,
हुव सारथि रथि अतिक्षत[1] अहेतु[2] ॥
कुपि जुधामन्यु हनि चित्रकेतु,
हेरि तनु हरखि मन मलम[3] हेतु ॥८२॥
भिरि भ्रात कर्न सुत कर्न भूरि,
चरसरन[4] अरिन तनु कीन चूंरि[5] ॥

॥ दोहा ॥

जिहिं विधि न्यारयौ[6] धूरिबिच, द्रव्यलखतसुखं[7]
सीम ॥
तिहिं विधि तिहिं[8] हिय कुटिलता झुकि झुकि
हेरत भीम ॥ ८३ ॥

---

(१) बहुत घाववाले हैं शत्रु जिनके (२) विना कारण (३) इसका शरीर मेरे मलनके अर्थ आवेगा. जीते हुए इसका शरीर अतिकायर और दान रहित होनेसे कुछ कामका नहीं था, अब मरे हुए का काम आता है॥८२॥ (४) चंचल वाणों से (५) चूर्ण कर दिये, अथवा चूर्ण करके सूक्ष्म करदिये. (६) कारीगर विशेष. जमीन की धूल में अथवा सोनारों की राख वगैरःमें द्रव्यादिक मिले उसको ढूंढकर जीविका करनेवाला (७) परले दर्जे का सुख मानकर (८) उस दुःशासन के हृदय में (९) छाती फाड़कर दुर्जनता को

पटु[१] अमात्य सिसु[२] स्वामिको, हरखि होत गृहहेर ॥
त्यों दुर्जनता ताहिहिय, भट हेरी तिहिंवेर ॥ ८४ ॥
ज्यों उजारमैं अंध[३] कर, स्वर्न[४] रत्न गिरिजाय ॥
चुप चुप तिहिं हेरत तथा, हेरत भीम कुभाय[५] ॥ ८५ ॥

॥ छंदपद्धरी ॥

मृतक[६]कौ कहिय गौ कहिय मोहि[७],
तृषित जलरुधिर पिय मारि तोहि ॥
घर्न[८] घाय भखहुँ लघुभ्रात[९]घास,
खैहौं[१०] दुरजोधन बंट खास[११] ॥ ८६ ॥
दिय गरल[१२] मरनहित सरल[१३] भ्रात,
जतुगेह[१४] जरावन नेह[१५] ख्यात ॥
द्रौपदि विनु वस्त्रन लिय घसीट,

दूंढा ॥ ८३ ॥ [१] चतुर मंत्री [२] बालक ॥ ८४ ॥ (३) अंधेके हाथ से [४] सुवर्ण (५) खराब चेष्टावाला ॥ ८५ ॥ (६) मरे हुए अर्थात् दुःशासन को भीम ने कहा [७] मुझको तूने गौ कहा था (८) बहुत से घाव देकर (९) छोटे भाइयों रूप घासको [१०] खाऊंगा (११) अच्छा बांटा काकड़े खलादिक ॥ ८६ ॥ [१२] जहर [१३] तेरे सीधे भाई अर्थात दुर्योधनने [१४] लाखके घरमें [१५] तेरे भाई की प्रीति प्रसिद्ध होगई

केटु बरन कहे श्रुति झरन कीट ॥८७॥
उन फलन जिमायो तोहि आज,
सेसैनहित थिंत मोदक समाज ॥
हनि दुरजोधन सिर प्रपदपात,
भिरि करन रुधिरघट छकहुँ भ्रात॥८८॥
विकराल बनिग तिहिं काल वाँस,
सब दण्ड विसरि किय प्रीति साम ॥
देख्यो न जात मनु मिलिग काल,
दृग ढकित जथा लखि रविहिं बाल।८९।
हुव दुखित सुयोधन भीत हेर,
हुव दुखित कर्न कहि सल्य फेर ॥
ईहि[12] हत्थ न मृति मृति[13] पत्थ हत्थ,

(१) ये तेरे पति योग्य नहीं दूसरे पति धारण कर इत्यादि (२) जिनको सुनने से कानों के कीड़े झड़ जावैं॥८७॥ (३) बाकी के आदमियों के लिये [४] रक्खे हैं (५) ठोकर (६) रुधिर के घड़ों से तृत होऊंगा. यहां भोजनोत्तर तक तरलादि (छाछ-राब आदि) के स्थानापन्न रुधिर घट समझना ॥ ८८ ॥
(७) टेढ़ा [८] दण्ड उपाय को भूल ही गये (९) साम उपाय से प्रीति की. तात्पर्य यह है कि भीमकी खुशामद की कि यह हमको न मारे (१०) यमराज ॥८९॥
(११) दुःशासन को [१२] इस भीमके हाथ तेरा मरण नहीं है [१३] अर्जुन के हाथ तेरी मृत्यु है

सुत अंध अंधे दस मिलिग सत्थ ॥९०॥
कवची१ निखंगि२ पासी३ रु खंड४,
धनुर्धर५ दंडधर६ सह७हु चंड ॥
अलोलुप८ सुवर्चस९ वातवेग१०,
दसैन किय दसभुजी चंडि देग ॥९१॥
कर्नसुत लर्न वृषसेन कोप,
रुकि भीम इतैं कहि पैंररोप ॥
विचहिं कहि नकुल इत अरहु वीर,
वृषसेन धनुष ध्वज कटिंग तीर ॥९२ ॥
विउ सेन एक वृषसेन वीर,
अरिसेन कीन जिम फेन नीर,
तिहिं वेर कुरुन भट द्वै हजार ॥
भट नकुलहिं रोक्यौ सस्त्रवाँर ॥९३॥
भट नकुल सबन तून गनि विदारि,

(१)भीमको जानते हुए भी अजान होकर दुःशासन का वैर लेनेकेलिये भीम से भिड़े॥९०॥ (२)दशोंको मारकर देग करदी (३) दश भुजावाली चंडीके जीमनेकेलिये. यहां देवीका दशभुजी विशेषण साभिप्राय होने से परिकर अलंकारहै॥९१॥(४)अचल होकर खड़ारह(५)कटगया. नकुल के बाणों से ॥ ९२॥(६) बुदबुदे इधर उधर फिरते होवैं जैसे (७) शस्त्रों के समूह से वा प्रहार से ॥ ९३ ॥

मारे वृषसेनहिं तीर मारि ॥
वृषसेन लपे षट बान हस्त,
नकुलकी खड्गधुंत कीन ध्वस्त ॥९४॥
खटरांग करैं जगजीव जेर,
वृषसेन अरागैंहिं भट झँझेर ॥
वृषसेन नकुलकौं विकल वीख,
भीमसौं जुद्धकी जाचि भीख ॥९५॥
भट इक्कं द्वै नकुल रु भीम भ्रात,
थकिरहे जुद्ध करि लरथरात ॥
कित याके उनके तिग्म तीर,
वृषसेनहिं झेल्यो पत्थ बीर ॥९६॥
द्रुपदासुत पंच रु द्रुपदवार,
जुजुधान अग्र हुव धनुषधार ॥
कृप भोज द्रोनि[11] कुरुराज क्रूर,
सकुनिय आदिक साजि लरन सूर॥९७॥

---

(१) तलवार से नष्ट करदिया ॥ ९४ ॥ (२) मालकोशादिक, अथवा हिंडोल मेघादिक (३) जगत्के जीवों को (४) कोधसे ॥ ९५ ॥ (५) इकला वृषसेन दोनों नकुल और भीम. (६) घबरारहे हैं (७) तीक्ष्ण (८) इक्षेष से भाई और बहादुर ॥ ९६ ॥ (९) सात्यकि (१०) धनुष धारण करनेवाला (११) अश्वत्थामा ॥ ९७ ॥

विस्वांग[1] हस्यौ कृप हयन[2] वर्ग,
सर आसिष दैं ति[3]हिं दीन स्वर्ग ॥
आयो कुलिंदनृप भ्रात चाल,
कोप्यौ दुरजोधन अपर[4] काल ॥९८॥
गजजुक्त हन्यौं गजपुरप[5] गाज,
सुत कुपि कुलिंद लिय क्राथ साज ॥
वृषसेन धनुष धरि पकरि बान,
नृप लप नर[6] भीमहिं दीन्ह तान ॥९९॥
द्वादस हरि[7] नकुलहिं सप्त दीन,
करनसुत करनसम समर[8] कीन ॥
सजि पत्थ कहिय सुन पुत्रसूत[9],
हौं होन उहां तित हनिय पूत[10] ॥ १०० ॥
तूं लखहु सुयोधन द्रोनि सर्व,
तव पुत्र पछारौं याहिपर्व[11] ॥
सुन सकुनि दुसासन कपटसूर[12],

(१) नाम (२) कृपाचार्य के घोड़ों के समूह को मारा (३) विश्वाङ्गको (४) मानों दूसरा यम ॥ ९८ ॥ (५) हस्तिनापुर के स्वामी दुर्योधन ने (६) अर्जुन के लिये ॥ ९९ ॥ (७) श्रीकृष्ण के (८) युद्ध (९) हे कर्ण! (१०) मेरा पुत्र अभिमन्यु ॥ १०० ॥ (११) इसी समय (१२) हे दुःशासन के जैसे कपटी वीर! दुःशासन को अभी

कलिजुग दुरजोधन अतिहि क्रूर ।१०१।
बड कलह मूल तूं चहुँन बीच,
निरखि सुतमृत्यु जल लेहु नींच ॥
तब सेज स्वर्गमें करि तयार,
वर पुत्र सुवावहिं करि बयार ॥१०२॥

॥ दोहा ॥

तव देखत तव पुत्र हनि, तोहि पछारहुँ फेर ॥
भीम भमावहिं भूपतव, हसहिं भूप मम हेर१०३

॥ छन्दनिशानी ॥

इम कहि पत्थ कबान गहि धर धूजि धँसक्की,
हूर हरख कातरतती कारि कूक कसक्की ॥
दैं द्वै सर वृषसेन कंर काटे मति चैंकी,
दैंश्रुति सर उरमांहिं सिर कट्टिय छबिथक्की१०४

फल मिला है (१) कलिका अवतार (२) निर्दय ॥१०१॥ (३) पूर्वोक्त चारों में (४) हे नीच! तू:पहले ही जलांजलिकेलिये जल ले. यहां मरण रूप कारण से जल लेने रूप कार्य पहले कहा जिस से अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ १०२ ॥ (५) राजा दुर्योधन को (६) युधिष्ठिर ॥ १०३ ॥ (७) कुछ नीचेको गई (८) अप्सराओं के (९) भगगये. यहां हूरोंके हर्ष रूप प्रतिबंध होने पर भी कायरों का भगना होने से तृतीय विभावना अलंकार है (१०) हाथ (११) अस्थिर हुई. वृष सेनकी वा कर्णकी ॥१०४॥

कर्न पूतको मर्न तकि पत्थ सुछवि तक्की,
आयौ अतिबाजे बजे खुल्लिय वहरक्की ॥
कन्ह कढ़िय स्वेतध्वजा गजकक्ष पैरक्की,
सोर अपार सतांगकी जांझें झननक्की॥१०५॥
घोरेंन गॅल पद घोरॅरव गुघरालि घमक्की,
ढोल नगारन ध्वानतैं कातर धॅकधक्की ॥
गजघंटा घननाटतैं घनपंति दॅबक्की,
हेर पीठ आयो करन हुव दल हकवक्की ।१०६।
अग्ग भगें पंचाल भट थिरता मति थक्की,
पत्थ जुरयौ न मुरयौ करन पोलाद[११]ति पक्की ॥
हरें बर मम जय अक्खि नर हॅरिजोरी हक्की,
त्यौं नर कर्नहु परस्पर चंचलता तक्की॥१०७॥
भिरि बॉरिधि द्वै बीरॅरस वडवाग्नि भभक्की,

(१) छोटी झंडियें (२) हाथी की वरत्रा अर्थात् तंग उसका है चिन्ह जिस ध्वजा में (३) ध्वजा का फलफलाहट हुआ (४) रथकी ॥ १०५ ॥ (५) घोड़ों के (६) कंठ और पैरोंमें (७) भयंकर शब्दवाले (८) शब्द से (९) धूजने लगे (१०) तिरस्कृत हुई. यहां पांचवां प्रतीप है ॥ १०६ ॥ (११) वे दोनों अर्जुन और कर्ण (१२) महादेव का (१३) घोड़ों की जोड़ी को ॥ १०७ ॥ (१४) समुद्र (१५) परिपूर्ण उत्साह. जलतुल्य. यहां उपमा

कृपाल लखैं दल द्वै खरे लग्गिय इकटक्की ॥
हत्थीरथ हय ध्वांत धुंनि घंन आर्पुन हक्की,
अच्छर बरमाला कढी बरमाला तक्की ॥१०८॥
फटकारे दोहून भुज कटु बातैं बक्की,

॥ कर्णवचन ॥

नच्चिंय नच्च विराटछबि सुचि रसिकन तक्की ॥

॥ अर्जुनवचन ॥

तितहूं भर्गलै आप हुव रुद्द बीर रसक्की,
करन रु नर निजवान तकि गुनवांनहिंतक्की१०९
उभयं भट्टथटं पिट्ठि पर आगैं नरं अक्की,
मच्चि दुहूं रनभूमि विच किटिं तुंड मचक्की ॥
चौंप लखैं रनदल दुहूं देवांली चक्की,
किते सराहैं करनकौं रनमति छबिछक्की११०

अलंकार व्यंग्य है (१) अंधकार ने (२) शब्द ने (३) मेघको (४) आपन श्रीकृष्ण और अर्जुन को (५) वरने की माला (६) पतियों की पंक्ति ॥ १०८ ॥(७)तू विराट नगर में नाचा था (८) उस विराट में भी (९) भाग नेवाला (१०) धनुष को ॥ १०९ ॥ (११) दोनों के (१२) योद्धाओं के समूह (१३) अर्जुन(१४) कर्ण (१५) वराह के मुखके अग्रभाग ने (१६) देवताओं की पंक्ति (१७) आ-श्चर्य को प्राप्त हुई ॥ ११० ॥

पत्थ सराह सुराह[1]तैं असुरालिं[2] अटक्की,
सक्कहिँ[3] बंदि[4] सुवक्क[5] काहि सुक्क[6] सुभ्भर सक्की ॥
अक्कँ[7] सुडोल[8] अलोल नमि इसहीं[9] हुव अंक्की[10],
वक्कै[11] वंक्क[12] विहु थंक्कारे बेला बहु वक्की।११।

॥ छप्पय ॥

महि[13]मनिनिधि[14]उपनिसँद[15]वासुक्कियतक्षकवसुगाहि
विस्वेदेव रु मरुत रुद्र अस्विनिकुमार काहि ॥
ऋषि चारन सुचि[16] सिद्धालि द्विज खँग[17] वरसा-
गर ॥
वेद पुरान रु जज्ञ सरित[18] पर्वत दस दिस वर ॥
ससि[19] पितृ रु देवऋषि राजऋषि ब्रह्मऋषि रु
गंधर्व वर ॥

---

(१) अर्जुन की प्रशंसा रूप अच्छे मार्ग से (२) दैत्यों की पंक्ति (३) इंद्रको (४) नमस्कार करके (५) अच्छे वाक्य कहकर (६) अग्नि की ज्वाला के जैसा दीसिमान् अर्जुन इन्द्रको नमस्कार कर अच्छे वाक्य बोला (७) सूर्य को (८) अच्छे आकारवाला (सूर्य) (९) अग्नि सदृश(१०)कर्ण(११)वाक्य कहने में(१२)दोनों वक्र थे॥१११॥(१३)पृथिवी (१४) पद्म आदि नव निधान (१५) ईश, कठ, इत्यादि (१६) पवित्र (१७) पक्षी (१८) नदी (१९) चन्द्रमा

श्रीद[1] यम[2] वरुन[3] औषधि विटपि[4] अच्छर इन क-
हि वाह नेर ॥ ११२ ॥
राक्षस दानव दैत्य जातुधान रु पच्छी औहि ॥
अच्छर गुह्य नच्छत्र पिसाच रु भूत प्रेत कहि ॥
आदित्य रु विस[5] सूद्र[6] पलाहारिय[7] जिय जलचर
पक्षपात[8] कर कहत करन सम[9] नर न संमरधर[10]
समटि सब सुभट थट थटिय रन या सम कौ
पौरुष[11] करिय ॥
सरकहिं[12] न बिजय लंगर[13] सरिस पेखहु इहिं पैरन[14]
परिय ॥ ११३ ॥

॥ दोहा ॥

पच्छपाति जे पत्थके, कहत धन्य तूं पत्थ ॥
विजयछांहज्यौं[15] जगविदित, सदा रहत तव सत्थ ११४
विद्याधर हरि[16] हर[17] रु विधि[18], आये देखन जुद्ध ॥

(१)कुबेर(२) यमराज (३) वृक्ष(४)इन सबोंने अर्जुनको वाह वाह दी ॥ ११२ ॥ (५) सर्प (६) वैश्य (७) मांस खानेवाले जीव (८) तरफदारी (९) कर्ण जैसा अन्य पुरुष या अर्जुन नहीं है (१०)युद्धको धारण करनेवाला(११) बल(१२)नहीं जावैगी(१३)जहाज ठहराने की लोह की सांकल तुल्य (१४) कर्ण के पैरोंमें पड़ी है ॥ ११३ ॥(१५) छाया के जैसे॥११४॥(१६)विष्णु(१७)महादेव(१८)ब्रह्मा

कोउ कहत नर उद्व नहिँ, करन उद्ध द्वेउद्ध११५
अग्ग भयो नहिँ व्है नदी, यौं यह अद्भुत जुद्ध ॥
जुद्ध छोडकैं परसपर, कौतुक इक्खहु उद्ध११६
सहस्रार्जुन रु राम सिव, विष्णु ज्यौंहि द्वै वीर ॥
इन बिच न्यूनाधिक न इक, ज्यौं तटनीकी तीर

॥ छंदनिशानी ॥

भाखि इन्हैं हुव परसपर आनंदित भारी,
दोहूँ उद्भट देखि सुर कुसुमावलि डारी ॥
कूदि करन रत्थपै परयौ दोनाचलधारी,
फिरकीलौं फिर नखनतैं ताकी ध्वज फारी११८
करन कह्यौ ज्यों मैं मरूं तैं कौन विचारी,
सल्य कहिय मैं इनहुँ नर व्है कैं धनुधारी ॥
मारैं जो तुहि पत्थ तो कहि कत्थ मुरारी,
मैं व्है कैं रथि करनकौं मारहुँ मर्म वारी ११९
देख्यौ कन्हहिँ सल्यनैं दृष्टी विषवारी,
धरि हरि दृष्टिय सल्यपैं का सुसुधा धारी ॥

(१) बढ़कर ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ (२) नदी के तीर के जैसे ॥ ११७ ॥ (३) पुष्पवृष्टि (४) हनुमान् (५) बालक के खिलौने के जैसे ॥ ११८ ॥ (६) श्रीकृष्ण (७) अब मेरी बारी है ॥ ११९ ॥ (८) ज़हरवाली (९) क्या अच्छी अमृत से भरी हुई. यहां वक्रोक्ति अलंकार से बहुत

निरखें सुर इत असुर इत दुहुघां सुरनारी,
भल्लजाति नर करनके चले सर भारी ॥१२०॥
बीते हय गय गेइ१ भगि सेना दुहुँवारी;
कृप द्रोनी सकुनी करन कोपे२ बलकारी ॥
बरबीरनकी थान दै नर३ सौंज बिगारी,
सर दस दीने बच्छमैं४ हुव करन सुखारी५॥१२१॥
सत्तै६ रथी७ रु निसादि सत्त केतक हयधारी,
आये नरकौं मारवैं किय सार्स८ भिखारी ॥
उत द्रोनी कुरुराजसौं यह बत्त उचारी.
भीस्म द्रोन दोनौं नरे तक९ करन तयारी॥१२२॥
यह सलाह पंडूनसौं कर प्यार अँनारी१०,
मानहिंगे मम बच्च विजय धर्मज११ नरकारी१२ ॥
अर्द्धौ१३ धर तुहि अपिहैं धरक्षै मतिधारी१४,

बुरे जहर से भरी हुई समझना ॥ १२० ॥ (१) भग गई (२) पराक्रम करनेवाले (३) अर्जुन की सामग्री बिगाड़ दी (४) छाती में (५) सुखका शत्रु अर्थात् मिटानेवाला ॥ १२१ ॥ (६) सौ संख्यावाले (७) हाथी पर बैठनेवालों का सैकड़ा (८) स्वास की भिक्षा मांगनेवाले करदिये (९) देख ॥ १२२ ॥ (१०) हे गँवार (११) युधिष्ठिर (१२) श्रीकृष्ण (१३) आधी राज्य भूमि (१४) हे बुद्धिमान्

चिरंजीवी कृप हौं वनेंहिं[1] तव राज रुखारी१२३
जियतरहे तिनपै दया कर ठ्हैं सुखकारी,
अंगीकार करायहैं कर नहिं[2] मृति टारी ॥
तित नृप भाखिय द्रोनितैं हित वत्त तिहारी,
दूसासन हिय हुल्लदैं[3] रतधार[4] निकारी ॥ १२४ ॥
कटुबातैं कहि दबि[5] उर अरु लत्तामारी,
पीनौ[6] रत नच्चिय जथा नच्चैं जंगनारी[7],
भीम[8] वक्त्र सूक्यौ न रत पिय छत्तिय फारी ॥
हैं हौंनी सो होयहैं नीकैं निरधारी ॥ १२५ ॥
पै[9] पांडुनसौं प्रीति तो स्वप्नहु न हमारी,
खुसी मान द्रोनी[10] खरो यह करन खिलारी ॥
वरैं[11] नर विजय बिगारिहैं ज्यौं बंस कुनारी[12],
दावकरैं दोहौं खरे बधि वारी वारी ॥ १२६ ॥
कुक्कुट[13] है उपमान लघु खिजि जुग्म[14] खिलारी,

(१) वनैगी. यहां निर्बलता व्यङ्ग्य है ॥ १२३ ॥ (२) मरना (३) खड्ग के अग्रभाग को देकर (४) रुधिर की धारा॥१२४॥(५)छाती को पैर से दबाकर(६)रुधिर पिया और नाचा (७) वेश्या(८)भीमसेन का मुख ॥१२५॥ (९) परन्तु(१०)हे अश्वत्थामा (११) विजयलक्ष्मी को वरने वाला(१२) व्यभिचारिणी स्त्री ॥ १२६ ॥ (१३) मुर्गा (१४) जोड़ा

सस्त्र अस्त्र इत उत सरे कति दल संहारी ॥
अग्नि अस्त्र अति पत्थसो प्रजरयो दल भारी,
भीम कह्यो ललकारकैं सुन गांजिवधारी१२७।
तूं वह नहिं का वाटिका जिहिं खंडिव जारी,
निरखहु जारी करन तो वारी जसवारी ॥
मेरी वीरं हकारकैं सब सेना भागी,
देकर चिंबुक रु प्यार करकहिवत्तनिहारी१२८
वर नर कोन अभाग्यतैं यह रीति तिहारी,
कल्पवृक्ष दीनों न फल सूलैं कित डारी ॥
भाग्यहीन ते हों लियें जोरी हयवारी,
एतेहूपैं भंगिनी मम लख तव गृहनारी॥१२९॥

॥ छप्पय ॥

करनमुच्छकरिकैंरनसकुनिसुभसकुनविचारत,
सब भ्रातनमैं समटि सुयोधन दृष्टि न टारत ॥
तूं नृप पंडु सुपुत्र पृथा स्तनको पैंय पीनो,

(१) बहुत जला (२) हे अर्जुन ॥ १२७ ॥ (३) फुलवाड़ी (४) जलाया था (५) वाटिका (६) हे भाई वा बहादुर. यहां श्लेष से वीर शब्द के दोनों अर्थ प्रकृत होने से शाब्दी उपमा व्यङ्ग्य है (७) ठोढ़ी पर (८) श्रीकृष्ण ने ॥ १२८ ॥ (९) घोड़ों की जोड़ी (१०) मेरी बहिन (सुभद्रा) ॥ १२९ ॥ (११) हाथों को (१२) दूध

सब बिधि धर्मज समुझि कलह भटभूखन कीनौ
संबंधि मुकुट मित्रनमुकुट सत्रुमुकुट जय सी-
स लौं ॥
लौवाह आह अच्छर अरिन अब बड भ्रात अ-
सीस लौं ॥ १३० ॥

॥ छंद मनहर ॥

आज कुरुनाह ओर आज जयचाह ओर
आज उरदाह ओर अनुज मरनकी ॥
आजको अरन ओर सूरन भरन ओर,
बानन सरनि ओर करन करनकी ॥
बीरता छई है जग बोरिवेके बद्दरलौं,
धीरता भई है ध्वंसै धरनीधरनकी ॥
ऐसो ना निसंक होहु अंकै धरि मारैं अरि,
ऐसो ना ससंक होहु बंक है परैनकी।१३१।

(१) युधिष्ठिर ने (२) युद्ध (३) योद्धाओं में भूषण किया (४) शत्रुओं में मुकुट सदृश (कर्ण) को (५) यहां क्रमसे अप्सराओं की वाहवाह और शत्रुओं की हाय हाय ॥ १३० ॥ (६) छाती की जलन और ही है (७) छोटे भाई (दुःशासन) के (८) भिड़ना (९) बाणों की पंक्ति (१०) जगत् को डुबानेवाले (११) नाश (१२) शेष की (१३) गोदीमें (१४) तेरा बांकापन शत्रुओंके चलाजाय।१३१।

॥ अर्जुनवचन ॥

अश्व[1] सप्तआस्य[2] वरवार[3]क रवीसो हैपै,
मेष[4] वृष[5] पै है फेर मिथुन[6] पै जावै है ॥
कर्क[7] सिंह[8] कन्या[9] तुला[10] वृश्चिक[11] पै है कै धनु[12],
मकर[13] पै है कै कुम्भ[14] मीन[15] हू को ध्यावैहै ॥
द्वादशको वासी वासा स्वामि सिंह रासियको,
तू है ति[16] हिं पुत्र यों कहूंक सुनि पावैहै ॥
हांसीको न भी[17] ति स्यार रासीपै सिधावै सठ[18],
यह सिंहरासी खासी इतै क्यों न आवैहै॥१३२॥

(१) घोड़ा (२) सात मुंहवाला जो कभी ब्रह्मा की सृष्टि में सुनाहि नहीं (३) अच्छा सवार सूर्य जैसा (४) यहां मेषादि शब्दों में श्लेष होने से सर्वत्र दो २ अर्थ जानना जैसे राशि, विशेष और मीढ़ा, इस पर जाना अनुचित है. इस तरह सब जगह जानना. (५) राशि और बैल (६) राशि और स्त्री पुरुष का जोड़ा (७) राशि और जलचर कैंकड़ा या हड्डियों का पींजरा (८) राशि और गो आदि पशुओं को मारने वाला (९) राशि और कुमारी (१०) राशि और तराजू. यहां तुलादान के सिवाय चढ़ना अनुचित है (११) राशि और बिच्छू [बड़ा जहरीला जन्तु](१२)राशि और कमान. जोकि स्वभाव से ही कुटिल है. (१३) राशि और मगर (१४) राशि और घड़ा (१५) राशि और मछली (१६) उस सूर्य का (१७) डर (१८) हे मूर्ख ॥११२॥

॥ छंद त्रुमिला ॥

इम तत्थे कही हरि चित्त लही,
धर पत्थ [1]अकत्थ [2]अमर्ष भर्यो ॥
तित प्रेरिय [3]अस्त्र लख्यौ तिहिं कर्न,
स्वअस्त्र चलाय न अस्त्र कर्यो ॥
सर तीन नवीन प्रवीन लये,
कर भीम हरी नर हीय दिये ॥
कुपि पत्थ समत्थ सपत्तिय हत्तिय,
पत्तिय कत्तिय चूरकिये ॥१३३॥
किय सल्य हिये अति सल्य दिये,
सर कर्नजकै उर सल्य भरे ॥
कुपि कर्न कँराल सराल अचाल,
सुख्याल पंचाल विहाल करे ॥
खित तंत्रन मंत्रन जंत्रनतैं,
गत आप युधिष्ठिर भूप तितैं ॥
लखि सत्रु थरत्थर [10]देह भयो,
डर आय खरो वर भूप कितैं ॥ १३४ ॥

(१) वहां (२) नहीं कहने योग्य (३) क्रोध (४) अस्त्र रहित अर्जुन को (५) घोड़े ॥ १३३ ॥ (६) बहुत घाव (७) भयंकर (८) व्याकुल (९) घाव (१०) बड़ा ॥ १३४ ॥

हसि सूतज हट्टिय बान उछट्टिय,
ज्यों कुपि कट्टिय पत्थ लही ॥
हरिकौ नरकौ उंर ह्वाँ सरसौं,
भर ना सरसौं भर ठौर रही ॥
जनु पारथ जानिय सूतज दानिय,
तेज अमान सुथान भयो ॥
रथि ह्वै जिहिँ रीत तथाविधि सारथि,
सल्यहु दारिददीप्ति छयो ॥१३५॥
कुपि पत्थ समत्थ दयो सर अत्थ,
दुकर्न रु सल्य धनाढ्य छिपैं ॥
सर कर्न दिये मनु पत्थ हरी,
उर ऊर्भ्भर नग्र बजार दिपैं ॥
ललकार ककैं नर कोरुनके,
नर जुग्म हजार प्रहार हरे ॥

(१) अर्जुन की प्रत्यंचा (२) छातीको (३) बाणों से भरदिये (४) सर्षप मात्र (सरसों जितनी) भी ठौर न रही (५) कोश (खजाना) और दण्ड (सेना) रूप (६) घोड़ों को चलाने रूप दरिद्रपन की शोभा से ॥ १३५ ॥ (७) बाण रूप धन ऐसा दिया कि जिस से धनवान् भी छिपजावैं, (८) उजड़ हुए नगर के मानों बाजार शोभते हैं (९) दो हजार मनुष्य.

जिम भद्र[1] सिखा तिम जुद्द[2] सिखा,
तित कर्न रह्यो तजि दूर खरे ॥ १३६ ॥
छकि रोष कह्यौ बकि जोस खरो,
इक हौं इक तूं नर आव इतैं ॥
रन रत्थहिं रोकिय नाथ[3] इतैं,
कुपि पत्थ कही रुक जात कितैं ॥
गुनवान[4] दुहूँ दुहूँ पान[5] गहैं,
दुहुँ ज्वान दुहूँ दुहुँ बान गहैं ॥
निज[6] थान तज्यो नभ[7] आन खरे,
सुर आन विमान पिछान लहैं ॥१३७॥
कहि चैन[8] अचैन न नैनन नैनन,
बैनन बैनन जोरि लरी ॥
इत पत्थ सुगत्थ[9] समरत्थ उतैं,
रन कर्न समीरन[10] पर्न अरी ॥
हसि अक्खहु कट्टिय सल्लहु कट्टिय,

(१)जैसे मुंडन कराये हुए आदर्मीकी चोटी(२)युद्ध करने वालों में मुकुट (कर्ण)॥१३६॥ (३) श्रीकृष्ण ने [४] धनुष (५)हाथों में लिये (६) स्वर्ग (७) आकाश ॥ १३७ ॥ (८) सुख और दुःख (९) अच्छा है पक्ष (यश) जिसका (१०) कर्ण रूप वायु से शत्रु रूप पत्ते उड़े.

वख्रहु दोहूँ दाव करे ॥
नभयानन[1] जाल सराजि परे,
मनु जाल परे[2] कति पच्छि मरे ॥१३८॥
जगको बुस[3] अंधिय मांझ उडैं,
जिमि बान अमान सुप्पाप्ति जमी ॥
दुहुँ सूर लरैं रन सूरं लखैं,
दुहुँ सूर ढके दुख देह दमी ॥
हलकारनकी हलकारनसौं,
भल[6] कारन पैं किन गैन फुट्यौ ॥
वलकारनकी ललकारनतैं,
छलकारनकौ सब छोह छुट्यौ ॥ १३९॥
रनप्रीति रुपे जिय प्रीति कुपे,
धवं कांन छुपे भैंव भीति भगी ॥
तियैं भौन अगौन ति गौन किये,

---

(१)विमानों का समूह(२)मानों फंदे में पड़े हुए मरे हुए कितने ही पंखेरू ॥१३८॥ (३) भूला(४)सूर्य को देखते हैं और अर्जुन शत्रु भाव से ढकता है और कर्ण स्नेह से "घाव न लगजाय" इस भय से ढकता है (५)जली(६) अच्छा हेतु (७) आकाश (८) कपटियों का (९) क्रोध ॥ १३९ ॥(१०)स्वामि की मर्यादा (११) संसार का भय चलागया (१२) जिनके स्त्री और घर प्रधान थे उन्होंने

पति नौंनहिमैं[1] निजप्रीति पगी[2] ॥
असमान जमी विच बान अरे,
पवमान[3] प्रयान न ठानसकैं ॥
परप्रान[4] प्रयान पिछानन आवन,
प्रान गयैं गिरबान[5] बकैं ॥ १४० ॥
भटवार[6] किते नँटवार[7] करैं,
कटवार[8]नके कटि[9] वार परैं ॥
मृध[10] आमिष[11]मत्तिय श्रोनसं[12]कत्तिय,
कातर छत्तिय फार करैं ॥
कति सेलन झेल रु पार करैं,
कति पेल अरातिन पीर करैं ॥
कति वीर लगे उर तीर कढे,
तनु चीरैं[13] ति नीरहिनीरैं[14] करैं ॥ १४१ ॥
कति बालपनैं तजि ख्याल लही,

गौण किये (१) मालिक के लूणसें ही (२) पकगई (३) वायुकी गति [४] दूसरों के प्राण निकलने को पिछानने के लिये है आना जिनका ऐसे देवता [५] देवता "हमारे प्राण गये" ऐसे बकने हैं ॥ १४० ॥ [६] योद्धाओं का समूह [७] नटों के जैसे प्रहार [८] कुंभस्थलवाले [६] हाथियों का समूह (१०) युद्ध [११] मांस से पुष्ट [१२] भाल वरछी [१३] फाड़ [टुकड़ा] [१४] जलही जल ॥ १४१ ॥

रनचाल सुढालन रोक लरैं ॥
सुरतीयन तीरन सोक हरैं,
कति तीय सती पतिसोक करैं ॥
कति देहन गेहन नेह करैं,
सरमेईन वेहनं हेर हटैं ॥
करि जेर अरीन उखेरलये,
कर गेरदये कर घेर कटैं ॥ १४२ ॥
कति बाजिय बाजियमैं बिरमैं,
सर राजिय आजियमैं सहिकैं ॥
कति आजिय काजिय राजिय ठहैं,
गजराजिय राजियकौं गहिकैं ॥
कति दंत उखारि प्रहार करैं,
कति सेलन वारन टार करैं ॥
कति धारि धरीक विचार करैं,
कति डारि परैं ललकार करैं ॥१४३॥
दुव सुंडियकौं गहि घुंडियं दैं,

---

(१) अप्सराओं के [२] पतिव्रता पति के साथ जलने-वाली) (३) घरोंसे स्नेह (४) बाणों की वर्षा (५) छिद्र (६) दबाकर ॥ १४२ ॥ (७) घोड़ों की गति विशेष में लीन होरहे हैं (८) युद्ध में(९)प्रसन्न होकर(१०)हथनियों की पंक्ति ॥ १४३ ॥ ११ गांठ देकर.

हसि झूलत हौंस हिंडोरनकी ॥
रवि[1] ओर कहें नहि तोर जथा,
गहि जोरि उछारत घोरनकी ॥
कति स्यंदन[2] चक्र उठाय कहैं,
लख भास्कर[3] रावर एकहि हैं ॥
गहि बाजिय[4] सीस उडै कहिकैं,
इक देहु हमैं तुव केक हिहैं ॥१४४॥
तननाहट बजि तबल्लनके,
थननाहट बायन[6] हत्थ परैं ॥
गननाहट अच्छरि गैंन जुरैं,
झननाहट जेहर ज्यौंहि करैं ॥
भननाहट भूरिय भेरि भये,
घननाहट नोबत घ्रात घने ॥
खननाहट वज्जिय खग्गनके,
धननाहट खोपरि कट्टि भने ॥ १४५॥

---

(१)सूर्य की तरफ (२)रथका पहिया(३)हे सूर्य तू देख(४) घोड़े का मस्तक ॥ १४४॥ (५)स्याही लगाया हुआ वाद्य विशेष (६)गीला आटा लगाया हुआ (७) आकाश में मिलते हैं (८) आभूषण (९) बहुत (१०) नगारों के(११) समूह ॥ १४५ ॥

हननाहट भो घनघोरनकौ,
ठननाहट कातर[2] बच्छ ठयौ ॥
छननाहट श्रोनन[3] बान छुवैं,
फननाहट टोपन भूरि भयौ ॥
कटि लुंत्थनपैं[4] कति लुत्थ परी,
वर बुत्थन बुंत्थन[5] ब्रात बढे ॥
अनयास[6] चढैं गिरि[7] व्यूढनपैं,
हर्य[8] व्यूढनव्यूढ प्रयास[9] चढे ॥ १४६ ॥
भुवं[10] चाक भ्रमैं तिहिं भांति भ्रमैं,
करि[11] भाजन कोल[12] कुलाल भयो ॥
हयलौं[13] हय व्हाँ नरलौं[14] नर व्हाँ,
भल कोपं[15] सु इंधन भाय भयो ॥
दुहूँ वीर धनंजय[16] धीर धनंजय[17],

(१)बहुत से घोड़ों का (२)कायरों की छाती(३)रुधिर से (४) मस्तक रहित शरीर (५) मस्तक सहित शरीरों का समूह (६) विना परिश्रम से (७) बड़े पहाड़ पर(८) जो घोड़े बड़े नहीं हैं उन पर (९) बड़े परिश्रम से॥ १४६ ॥ (१०) पृथिवी में(११)हाथी रूप पात्र (१२) यमराज रूप कुम्हार(१३)घोड़े जैसे घोड़े(१४)मनुष्य जैसे मनुष्य (१५) अच्छा क्रोध रूप जलाने लायक लकड़ी(१६)दोनों वीर (कर्ण और अर्जुन) धनको जीतनेवाले. पहिलेने दुर्योधनके पक्षमें, दूसरे ने पाण्डवोंके पक्ष में(१७)दोनों धीर

धूमधनंजय रूप धर्यौ ॥
जदुवीर विचार बयार जहाँ,
वह आहवरूप अवाह कर्यौ ॥ १४७ ॥
हय सैल्य उडावन कर्न सुआवन,
सावन मेघविभा सरस्यौ ॥
धनु रूप धर्यौ तित इंद्रधनू,
वर बानन बूंदनलौं बरस्यौ ॥
अतिरोहित रोहित खग्ग अवंक सु,
रोहितकी रुचि राजरह्यौ ॥
घन पाज अरीगन लाज गई,
घनगाज सुयोधन गाज रह्यौ ॥ १४८ ॥

पुरुषों में धनंजय नामक शरीर के वायु समान हैं वह धनंजय वायु तो मृत शरीर को नहीं छोड़ता परन्तु ये जीते हुए भी धीर पुरुषों को नहीं छोड़ते॥ (१) धूम सहित अग्नि समान दोनों हैं. क्योंकि धूमसे व्याकुल करके अन्यको अग्नि जलाती है ऐसे ही ये दोनों घपराहट से अन्धे करके अन्य शत्रुओ मारते हैं (२) श्रीकृष्ण का विचार रूप पवन (३) युद्ध रूप कुम्हार का अवाह [वर्त्तन पकाने की जगह] ॥ १४७ ॥ (४) शल्य के घोड़े (५) श्रावण महीने की वर्षा की शोभा (६) इन्द्र का धनुष (७) नहीं छिपा हुआ (८) लाल तलवार (९) सीधा (१०) सीधे इन्द्र धनुषकी (११) बद्दलोंकी गाजके जैसे ॥१४८॥

वढि वात[1] कही नहिं जात कथा,
हित गात[2] सु धीरज भाजगयौ ॥
जल खग्ग अथग्ग रनार्नव[3] पोतँ[4],
सु कर्न सुजोधन काग भयौ ॥
वल वारनके[5] कति पार गये,
जयकार किते भय पार करैं ॥
अपमान[6] सिला सिर आन परी,
कवि जान कहैं सु पिछान परैं ॥१४९॥
वरवीरनकी वरधीरनकी,
वरतीरनकी छवि हीय धरैं ॥
तजि छद्म[7] कहैं कवि पद्म यथा मति,
सेस महेस सुकीर्ति करैं ॥
चहुँओरन घोर अँधार मच्यौ,
चल वान मनों जिंगनू[8] चमकैं ॥
भट कर्न अथर्वन[9] वर्ननसौं,

---

(१) वायु (२) शरीरों से (३) युद्ध रूप समुद्र (४) जहाज (५) हाथी के वलस (६) द्रौपदी का सभा में तिरस्कार रूप शिला ॥ १४९ ॥ (७) कपट को (८) आगिया [खद्योत] (९) अथर्ववेद के अक्षरों से

नेरवर्म दये सर के जमकैं ॥ १५० ॥

॥ छप्पय ॥

इंद हुकम सकुटुंब रहिव तत्तक खांडव जव ॥
गयवें वहैं कुरुत्तेत्र पत्थ खांडिव जारिय तब ॥
अस्वसेन तिं हिं पुत्र उडिग जर्ननी गहि वाकौं॥
मरिलागि सर जिहिंमात तचियं क्रोधानल ताकौं
सुन अत्त कर्न अर्जुन समर आपउ जर्ननी वय रहित ॥
वर सर तनु धर तूनीरंविच पैठिय कर्न सु पिट्ठि थित ॥ १५१ ॥

॥ दोहा ॥

परसुरामसर सर्पमुख, दीन करन तिहिं तान ॥
यह अंहि योगाभ्यास बल, तितधसलघुतनुमान
सरको मुख बांको भयो, सल्ल निहारिय ताहि ॥
कह्यौ करनकौं चिंतकर, संरलकरहुतूंयाहि१५३
सर उतार मुख लखि सजहु, कहिय कर्नकौं सूंत[12]

(१) अर्जुन के कवच पर ॥१५०॥(२) गया था (३) तक्षक का लड़का (४) माता (५) तपाया (६) क्रोध रूप अग्नि ने (७) युद्ध में (८) माता का वर लेने के लिये (९) भाते के बीचमें घुसगया ॥ १५१ ॥ (१०) सर्प अश्वसेन नामक ॥ १५२ ॥ (११) सीधा कर॥ १५३ ॥ (१२)सारथि [शल्य]

॥ कर्णवचन ॥

परबल लौं है बेर इक, सर न सजैं रविपूत।१५४।

॥ छप्पय ॥

करन खबर विनु तजिय बान हुव भुव हाहारव
अहि कहि पत्थहि कोरि जतन कर मरनहि
आयव ॥
हरि दब्बिय रथ हरिन मुकुट हनिबान सिधायव
पत्थ स्वेत उष्णीस सजिव अहिसर फिर आयव
आजलौं उलटि आयव न सर क्यौं आयव इ-
हिं कहि करन ॥
कहि अस्वसेन तव मम अरिहिं मारन इहिं
आयव मरन ॥ १५५ ॥

सर्व पूर्ववृत्तांत कर्नकों सर्प सुनाइय,
कर्न कहिय नहिं सजहुँ प्रतिज्ञा जग मम छाइय

॥ सर्पवचन ॥

सब सुर होहिं सहाय वचहिं नहिं पत्थ सजहु मुहि

(१) सूर्य का पुत्र (कर्ण) ॥ १५४ ॥ (२) पृथिवी में हाहाकार हुआ(३)सर्प ने(४)चाहे करोड़ों यत्न कर (५) श्रीकृष्णने (६) घोड़ोंको (७) अर्जुन के मुकुट को हरण कर (८) सुफेद मुकुट या पगड़ी (९) सर्प रूप वाण ॥ १५५ ॥(१०)मैं नहीं चलाऊंगा(११ अगर सब देवता

॥ कर्णवचन ॥

मैं मम हत्थन हनहुँ पत्थकौं सजहुँ नहिन तुहि॥
सुनि अस्वसेन सर बनि चल्लिय हरि कहि नर
यह सर नहिन ॥
सर रूप धरैंहैं सर्प तिंहिं छस्सर छेद्यो ताहि
छिन ॥ १५६ ॥

॥ छंददुर्मिला ॥

सज कर्न गुमानिय मंत्र न मानिय,
बानहिं ठानिय ज्हां गुनपै ॥
धुकि देवनधानिय मेरु बखानिय,
भूँ खिसलानि फनी फनपै ॥
करतैं सर चल्लिय कातर चल्लिय,
मानहुँ कैंवच पैर परी ॥
मन कैं सरसो सर लैं करसौं,
नर सिंजिनिपैं धरि छत्ति भरी ॥ १५७ ॥

भी मददगार हो जावेंगे (१) उस अश्वसेनको छः बाणों से काट डाला ॥ १५६ ॥ [२] अभिमानी [३] अश्वसेन की दी हुई सलाह [४] प्रत्यंचा पर [५] झुकगई (६) देवताओं की राजधानी [७] पृथिवी [८] शेष के फण पर [९] प्रत्यञ्चा पर ॥ १५७ ॥

किय दाव उपाव बचावनकौं,
न चले सब पंगुलपैरन ज्यौं ॥
गुनहीन भयो धनु अर्जुनकौ,
गति यौं गुनहीन गुनीगन ज्यौं ॥
फिरकैं गुन सज्जिय झूट अरज्जिय,
आय गरज्जिय लैं गुनही ॥
सर पारथ जावत औ फिर आवत,
हैं उपमा यह चित्त चही ॥ १५८ ॥
नरकौं कहि मारहु कर्नहिं टारहु ,
यौं कहिकैं फिर आवतहैं ॥
कहि चोरहिं तूं धस जाग धनी,
उनकौं मनु रीति सिखावतहैं ॥
तनु जुग्म जवान समान पिछानहु,
पीर अमान समान तितैं ॥
मदपाँन कियैं जिय मत्त भये,
रिपु प्रान हरे सु पिछान कितैं ॥ १५९॥

---

(१)लंगड़ेके पैर जैसे(२)गुणवानोंका समूह. यहां "रन-ज्यौं गनज्यौं" अन्त्यानुप्रास जानना(३)गर्जवाला॥१५८॥
(४)हे स्वामी वा धनवान्(५)दोनों(६)प्रमाण रहित(७)मदिरा पीये हुए मनुष्यों के जैसे(८)शत्रुओं के प्राण आप हरते हैं वा शत्रु अपने प्राणों को खोते हैं ॥ १५९ ॥

सब ठौरहिँ व्यापक[1] हैं हरि[2] त्यौं,
सबही तनु[3] व्यापक तीर सहैं ॥
नित चेतन[4] चेत न कर्न रखैं,
सुखरूप महादुख रूप चहैं ॥
जगके जड[5] जीव महादुख छीव[6] ति,
चेतन व्हैं जि[7]हिँ बांह धरी ॥
किय ताहि[8] अचेतन दैं तनुमैं,
घन बानन कर्न संधान[9] करी ॥ १६० ॥
हसिकैं सर लैं नर सिं[10] जिनिपै,
धरि टक्कर कर्न किरीट[11] हर्यौ ॥
पटु बान अमान दये धनु तानि,
जु हो धनु पानि[12] सु छूट पर्यौ ॥
जिहिँ रीति भजैं सुहि रीति सजैं,
किय जीति अचेतन कर्न भयो ॥
नर बान सँधान पिछान[13] तज्यौ,

---

(१)सब जगह रहनेवाला(२)परमेश्वर(३)शरीर (४)सदा ज्ञानवाला(५)चेतन रहित(६)बडे दुःखसे मतवाले (७) जिस श्रीकृष्ण ने हाथ पकड़ाउसं(८) सचेतन को भी [९] स्थापाप ॥ १६० ॥(१०)प्रत्यञ्चा पर(११)मुकुट (१२) हाथ से(१३)मूर्छित जानकर

कहि कान्ह लयो कित धर्म नयो॥१६१॥
सुनि तानि दये सर भानुजकौ,
उर फोरि धसे धर लीन भये ॥
सुधकैं भट कर्न लग्यो सर भर्न,
सु पत्थ हरी रथ छाय लये ॥
ब्रह्मास्त्र विथारिय पत्थ सँभारिय,
वासवं अस्त्र प्रयोग ककैं ॥
कुपि कर्न प्रहारिय सस्त्र रु अस्त्र,
अपार सिखावनहार छकैं ॥ १६२ ॥
सुरबानि भई रथचक्रँ गिलैं,
महि विप्र कही वह वेर बनी ॥
द्विजरामहु शाप दयौ वहहू,
विधिं आन बनी हुव सेल अनी ॥
गति कर्मनकी धँन धुजिय स्पंदन,

॥ १६१ ॥ (१) कर्ण की छाती (२) पृथिवी में छिपगये (३) चलाया (४) इन्द्रके अस्त्र का प्रयोग करके (५) जिस से सिखानेवाले (परशुरामजी) प्रसन्न होजावैं ॥ १६२ ॥ (१) देवताओं की वाणी हुई (७) रथके पहिये (८) पृथिवी (९) रीति (१०) बहुत (११) रथ.

भू तिहिं बाम सु चक्र गिल्यौ ॥
कहि रोष उदास तजी जिय आस,
सुपास लियैं मैम काल मिल्यौ॥१६३॥

॥ सल्यवचन ॥

सुन कर्न सुवर्नगिरी वनिकैं,
कित रोइ प्रभाहतपर्न बनैं ॥

॥ कर्णवचन ॥

सुन सल्य कही ठिक पै मम आसय,
की सुन तो मन सर्म सनैं ॥
अरिसौं लरनौं रनमैं मरनौं,
इँहिं कारन छत्रिन देह धरी ॥
पर हाय बुरी हुव याहि घरी,
सगरी दुरजोधनकी बिगरी ॥ १६४ ॥

॥ दोहा ॥

ठहै अवक्र भाखी करन, ईखिं सक्रसुत ओर ॥

---

(१) पृथिवी ने उस रथ के बाएं पहिये को निगला (२) मेरी मृत्यु आगई ॥ १६३ ॥ (३) सुमेरु पर्वत (४) नष्ट हुई है कान्ति जिसकी ऐसा पत्ता हो जाय (५) परन्तु मेरा अभिप्राय (६) सुख से भीगजावैं (७) इस हेतु से (८) क्षत्रियों ने शरीर धारण किया ॥ १६४ ॥ (९) सीधा (१०) देखकर (११) अर्जुन की तरफ

जबलौं हेरौं चक्रकौं, वंक न ह्वै कुल मोर॥१६५॥

॥ छप्पय ॥

खुल्ले केस भगि जाय विप्र हौं कहि जोरैं कर,
धरैं सस्त्र अरु टूट जाय कैं लेत सरनैं वर॥
सर न रहैं फिर विरथ होय मूर्छित ह्वै जावत,
महासूर धर्मज्ञ श्रेष्ठ तिहिं सर न चलावत॥
पत्थ तव बीच सब गुन परे या विरुदहि उर आनिये॥
तव डर न तृनहु हरि डर न तृन मोहि करन वह मानिये॥१६६॥
चक्र गिल्यौ तव कर्न धर्मकी निंदा कीनिय,
दिय सर्वस्वहि दान आज इत खबर न लीनिय
कृष्णा कहिय सबहि बंध करन अधमही कीनौं
दुरजोधन तव मंत्र मानि पंडुन दुख दीनौं॥
दिय भीमहिं विख जतुगेह बिच विनु ठिक जारनकी करिय,

---

(१) देखो॥१६५॥ (२) "मैं ब्राह्मण हूं" ऐसा कहकर हाथ जोड़े (३) उत्तम शरण्य (४) तुरति ॥ १६६ ॥ (५) पहिया (६) जय वन (७) अवस्था में (८) जहर (९) लाख के घरमें

अकुसल[1]हो भूपति द्यू[2]तमैं तिहिं खिलाय संपति
हरिय ॥ १६७ ॥

॥ कर्णवचन ॥

॥ छंद मनहर ॥

तैंनैं दि[3]व्यनारी बर[4]बसनविहीन कीनी,
मैंहौं दि[5]व्यनारिनके बसन[6]बरनिकौं ॥
तैंनैं[7] पयपाँन कीनौं ताको पुनि प्रान लीनौं,
मैंहौं पयपान[8] कीनौं ताहि[9]त भरनिकौं ॥
ससकत सेस[10] सिटि कसकत कंपि किटि[11],
चसकत यान[12] लख धसकि धरनिकौं॥
तेरो अवतार भुव[13]भारकौं हरन कान्ह[14],
मेरो अवतार भुव[15]भारसौं भरनिकौं ॥१६८॥

॥ छप्पय ॥

---

(१) होशियार नहीं था (युधिष्ठिर) (२) जुआ खेलने में ॥ १६७ ॥ (३) गोपिकाओं के (४) अच्छे कपड़े चोरे (५) अप्सराओं के (६) कपड़ा और पति के लिये हूं (७) जिस (पूतनाका) दूध पिया (८) लूण पानी ग्रहण किया (९) उस (दुर्योधन) के लिये (१०) शेष नाग दबकर सिसकता है (११) सूअर घुजकर जमीनके नीचे से निकलना चाहता है (१२) रथ (१३) जमीनका बोझ उतारनेके लिये है (१४) हे श्रीकृष्ण (१५) जमीन में भार भरनेकेलिये है ॥ १६८ ॥

भुजगं[1] न मो भुज भीरु[2] गोपिछद[3] न उरच्छद[4] यह
आज्यं[5] न आजिय[6] आज गैंद नहि गयँद[7] घटा गह
धेनुछन[8] चारन नहिन वछछ फारन[9] विधि बजिय,
वेनुवाद्य[10] नहि विदित छांह वेनुक[11] छिति छज्जिय
तिय कुच[12] न कठिन तित परिय कर[13] हठ कर
कचपर[14] डारिहौं ॥
राधिकापदन[15] पर परिरहिय वह सिर सरन उ-
छारिहौं ॥ १६९ ॥

---

[१] कालिय नामक सर्प नहीं है किन्तु मेरी भुजा है. यहां भ्रान्तापन्हुति अलङ्कार है. एवं इस छन्द में सर्वत्र जानना. "भुज" को "भुजग" समझनेवाले [२] हे डरपोक यहां 'भीरु' शब्दके संबोधन से तीसरे गकार अक्षर पर बुद्धि नहीं गई किन्तु दो अक्षर भकार जकार पर ही रही. एवं सब जगह छन्द में जानना (३) गोपिओं का वस्त्र नहीं (४) किन्तु कवच है (५) घी (माखन) नहीं (६) किन्तु युद्ध है (७) किन्तु हाथियों की पंक्ति है (८) गायों के बछड़ों का चराना नहीं (९) किन्तु छाती फाड़ना है (१०) बांसुरी का बजाना नहीं (११) किन्तु भालों की छाया से पृथिवी का ढांकना है. मालवदेश में भाले को "बांस" कहते हैं (१२) स्त्रियों के कठिन स्तन नहीं हैं (१३) मेरे कठिन हाथ (१४) तेरे केशों पर पटकूंगा (१५) जो तेरा सिर राधिका के चरणों में पड़ा था ॥ १६९ ॥

॥ छंद मनहर ॥

विप्रनकौं[1] दीह्ने दान विप्रनके कीह्ने मान[2],
स्वामिधर्महीन न्यूनप्रानतैं पिछानी नां ॥
दीननकी[3] दीनताकौं चीन्ह चित्त खीन कीनौं,
कीनो सुख पीनं[4] ठिक चान धृति ठानी नां॥
कान्ह इत कान दै अपानता[5] न आन अब,
सर्व सुभ ठानी तीन वृत्ति[6] मन मानी नां ॥
ज्येष्ठभ्रात[7] व्याही त्यों कनिष्ठभ्रात[8] व्याही त्यौंही
जादोकुलजाही विनुव्याही[9] तियजानी नां१७०

॥ कृष्णवचन ॥

भास्कर[10] करन बल ऐंचत सरन जल,
खलभल होत जग ग्रीष्मके[11] सु गाने हैं ॥
[12] कालहू कराल चाल मारैं विनु काल[13] वाल;
जअही पधारैं हाहाकार जूके आने हैं ॥

(१)ब्राह्मणों को (२) सत्कार (३) गरीबों को (४) पुष्ट (५) मूर्खपना (६) व्यापार (७) बड़ेभाई (८) छोटे भाई (९)विना परणी हुई को स्त्री न जानी (जैसे तुम्हारे मित्र अर्जुनने सुभद्रा को जाना) ॥ १७० ॥ (१०)सूर्य किरणों के बल से तालावों के पानी को खैंचता है (११) गरमी के (१२) यमराज भी भयंकर गमन वाला है (१३) विना समय में

मंद[1] महाराज पितु[2] काजहू गहन[3] ठानैं,
कविन न मानैं मानैं महिषके[4] माने हैं ॥
कस्यपको पुत्र दोनों पौत्र[5] तीनौं तीन काने,
तीन दाने[6] कहों तो कहों क तीन दाने[7] हैं१७१

॥ छप्पय ॥

कान्ह कहिय सुन करन स्यारको मरन जु आवैं
चिंत करि चारु विचार धीर वनि नग्रहिं धावैं ॥
वह गति लेरिय आज गाजि इहिंछिन रन आइय
काहत अंकृतके[10] काज कुंवच[11] मन धरि कुटि-
लाइय ॥
वर रावर गुन सब जग विदित[12] जानत सुर[13] नर
नाग जिम ॥

---

(१) शनैश्चर (२) पिता (सूर्य) के ही (३) ग्रहण (राहुकी पीड़ा) (४) भैंसेका सत्कार (यम और शनि का वाहन होने से) (५) पोते (यम और शनि) (६) यदि इन को तीन दाने कहदूं, क्योंकि कहीं कहीं तीन कानों (जो चौपड़के खेल में प्रसिद्ध है) को तीन दाने भी कहते हैं (७) तो तीनों बड़े आदमी हो जावैं "दाने" शब्द के श्लेष से ॥ १७१ ॥ (८) मनमें (९) सुन्दर (१०) कुकर्म (११) कटु वचन (१२) प्रसिद्ध (१३) देवता

नित निकट रहत पटु संग लिय कहहु पत्थ
जानैं न किम ॥१७२॥

॥ कवित्त ॥

लाक्षा गृह कीनौ थितपाण्डव जराय दीनौ,
चीनौ उपदेस चले अब न चलैंहीगे ॥
द्रौपद रु द्रौपदीके पुत्र द्रौपदीके पति,
दलके दलैये दीह दुर्हद दलैंहीगे ॥
छलिनके छैल पत्थपुत्र छैल मार्यौ छलि,
पत्थ रनछैल हम तुहि न छलैंहीगे ॥
मोरि मूढमोरहिं चंडालचोकरीके मोर,
थोर न अकृत कानैं फोरन फलैंहीगे ॥१७३॥

॥ छप्पय ॥

पांडव वनकौं चले कहिय तैं सीघ्र पधारहु,
वन रु नरक सम द्रोपदि ह्यां रहि परपतिधारहु
वन वसि आये पांडु राजतैं दैन न दीनौं ॥
महारथी खट मिलि रु पत्थसुतको जिय लीनौं।

(१) समीप ॥ १७२ ॥ (२) लाखका घर (३) बड़े शत्रुओं को (४) अभिमन्यु (५) धोखा देकर (६) मूर्खों में मुकुट जैसे (दुर्योधन) को मोड़ कर ॥ १७३ ॥ (७) जल्दी (८) बराबर (९) दूसरे पति को अंगीकार करै (१०) अभिमन्यु का जीव लिया

अबलौं[1] तुम जीवत सुकृत बस आय पहूँचे अब कुकृत[2] ॥
कालं[3] सिर भ्रमत हुअ मरन तुव धर्महिं निंदत भ्रष्टहित ॥ १७४ ॥

दोहा ॥

नग्न[5] घसीटी द्रौपदिहिं, हनि अभिमन्यु अचेतु ॥
उभय[6] बताये पत्थ स्मृति[7], करि दिय हरि[8] तिहिं हेतु ॥

॥ सप्तमयाम सूची ॥

॥ छप्पय ॥

शकुनि भीमरनसजिय भीम अरुकरनकजहं हुव
अर्जुन करन सु अरन भीमनर मन्त्र[9] मिलन[10] दुव
भीम दुशासन भिरन तांहि[11] हनि भीमनचि[12]गीतित
समरं[13] नकुल वृषसेन[14] भीम वृषसेन अरन[15] चित॥

(१)पुण्य के बश से(२)पाप(३) मृत्यु (४) भाग्य से नष्ट हुई है बुद्धि जिसकी॥१७४॥(५)वस्त्र रहित (नंगी) (६) दोनों (७) यादगीरी करादी (८) श्रीकृष्णने ॥ १७५ ॥
(९) युद्ध(१०)पीड़ित युधिष्ठिर से मिलकर अर्जुन का उस विषम वेला में भीम के साथ भावी युद्ध की सलाह करना। यहां सलाह लेनेवाला बड़ा भारी उपदेश है (११)दुःशासन को(१२)उसी जगह छाती से रुधिर पीकर दुर्योधनादिकों का तिरस्कार करके भीम का अद्भुत नांचना(१३)युद्ध[१४]कर्ण के पुत्रका नाम [१५] सचे

वृषसेन रु वासवि रनविषम करन रु अर्जुन
कलह किय ॥
सुचिंद्रोनि नृपहिं सुसलाहदिय करन रु औहि
बातें करिय ॥१७६॥

॥ दोहा ॥

विप्रलाप हरि करनको, बरन्यो जुत विस्तार ॥
प्रहर सप्तमी पद्मकवि, संचिय आहवसार॥१७७॥

इतिश्रीमच्चंडीचरणारविन्दचित्तचंचरीकचार-
णावासाभिधेयचारुसंवसथवास्तव्यचारणचक्रच-
क्रवाकचंडांशुजाज्वल्यमानकाव्याज्ञत्वज्वाला—

दिल से अड़ना (१) अर्जुन (२) दुःसह (३) पवित्र अ-
श्वत्थामा. यद्यपि यह अतिक्रोधी था तथापि उस समय
देश काल को समझकर क्रोधको रोककर सुयोधन को
सन्धि रूप अच्छी सलाह दी (४) अपनी माताका
वैर लेने के लिये आये हुए अश्वसेन नामक सर्प और
कर्णका प्रश्नोत्तर।१७६। [५]श्रीकृष्ण और कर्ण के परस्पर
कटु वचनों से प्रश्नोत्तर(६)महाभारत की अपेक्षा स्वल्प
अक्षरों से युद्ध का सार वर्णन किया ॥ १७७ ॥

इति श्रीमती चंडी के चरणारविंद में है चित्त रूप
भ्रमर जिसका, चारणवास नामक सुन्दर ग्राम का नि-
वासी, चारण समूह रूप चकवों के लिये सूर्य रूप, जा-
ज्वल्यमान काव्यकी अज्ञता रूप ज्वलाओं से जलते

ज्वलज्जगज्जीवजुष्टजयजीवनवलूंदाख्यग्रामठक्कुर जीवनसिंहप्रतोलीपात्रवंशभास्करप्रबन्धप्रणेतृ-मिश्रणकुलोद्भूतश्रीसूर्यमल्लशिष्यपातावतशाखा प्ररूढजगरामात्मजपद्मसिंहप्रभाषितकर्णपर्ववि-भाविभूषितवीरविनोदे सप्तमयामसंपूर्णम् ॥७॥

हुए जीवों करके सेवित, विजय के जीवन रूप बलूंदा नामक ग्रामके ठाकुर जीवनसिंह का पोलपात, वंश-भास्कर ग्रंथ के रचयिता मिश्रण कुल में प्रकट हुए श्री सूर्यमल्लका शिष्य, पातावत शाखावाले जगराम का पुत्र श्री पद्मसिंह उस से रचे हुए कर्ण पर्वकी शोभा करके विभूषित वीरविनोद में सप्तम याम का युद्ध स-म्पूर्ण हुआ ॥ ७ ॥

॥ इति सप्तमयाम सम्पूर्ण ॥

॥ अथ अष्टमयामप्रारम्भः ॥

॥ दोहा ॥

कलह[1] अष्टमी[2]जामको, कलही करिहैं क्रूर ॥
आठि आठि इक्खहिं अष्टग्रह[3], देखहिं दुरि[4] रविदूर[5]१
जाम अष्टमीकौ कलह, कविहीके दुखगेह ॥
रुधिर[6]मेह फीकौ रुचिर[7], नीकौ अंसुन मेह ॥२॥

॥ छंदवैताल ॥

हरिबैन[8] सुनतहि पत्थहिय, अचैन हुव इहिंचाल
दृग[9] श्रुति रु नासारंध्रतैं, कढि क्रोधज्वाल कराल
उतर्यो स्वं[10]चक्र निकारवैं, रविपुत्र[11] नर रिसहेरि
ब्रह्मास्त्र प्रेरिय कर्ननैं, ब्रह्मास्त्रकौं दिय प्रेरि॥३॥
दुहुंअस्त्र भिरि चढि गैनमैं, सर बरखि जरहुव सांत
पुनि पत्थ पावक[12] अस्त्र प्रेरिय, भटजरैंजिहिंभांत
साजिकर्नवारुनअस्त्रसौं, सिखि[13]अस्त्रलीन्हसँभार
घन[14]मेघ तम दिन घोरह्वनि, नरवायुअस्त्र बिहार[15]४

---

(१) युद्ध (२) आठवीं (३) आठों ग्रह सूर्य रहित चन्द्रादिक (४) छिपकर (५) सूर्य ॥ १ ॥ (६) लोहूकी बारिस (७) सुन्दर ॥ २ ॥ (८) श्रीकृष्ण के वचन (९) नेत्र, कांन और नाकके छिद्रों से (१०) अपने रथका पहिया (११) कर्ण ॥ ३ ॥ (१२) अग्नि के अस्त्रको फैंका, (१३) अग्नि अस्त्र (१४) बहुत बद्दलों से अन्धकार (१५) चलाने से

कुपि कर्न श्रोनितवर्न[1] ह्वैं, सरलीन्हकर[2] जुतज्वाल
धरं[3] धूजि हाहाकार हुव, उलका परे तिहिंकाल
सरडरि युधिष्ठिर सँमर[4] तजि, भजिगयउडेरनवीच
सर कर्न नर उर फोरि पिठ्ठिहिँ, फोरि किय ध-
र कीच ॥ ५ ॥
ध्वजदंड[5] स्थित सिरपत्थमूर्छित, परिग धनु जि-
हजानि ॥
तित करन लरन अजोग जानिय, बान तजि
धनुपानि[6] ॥
रथचक्र[7] ऐंचिय सेससंजुत[8], भूमि डिगिग कुघात
पर वंक[9]वेला[10] का परी, रथचक्र वाहिर न आत ॥६॥
लघुवंक[11]सौं वडवत्तकहनी, जोग नहि यह जानि
श्री[12]व्यासनैं कहदीन मैं, लिखदीन्ह रोचक वानि

॥ कर्णवचन ॥

---

(१) लाल रंगवाला होकर (२) हाथमें (३) पृथिवी (४) युद्ध को ॥ ५ ॥ (५) ध्वजादण्ड के पास स्थित है शिर जिसका ऐसा (अर्जुन) (६) हाथ से धनुष को छोड़कर (७) रथका पहिया खैंचा (८) शेष सहित पृथिवी कम्पित हुई (९) खोटे पेचसे (१०) बुरा वक्त ॥ ६ ॥ (११) छोटे मुँह से (१२) श्रीवेदव्यासजी ने

वडभ्रात तात[1] पितृव्य[2] मातुल[3], गुरु गिनिय इ-
करीति ॥

इनतीय औ ममभात बिच, अनु भेद[4]गन न अनीति[5]
लघुभ्रात[6] पुत्र रु सिष्य सम, इनतीय पुत्रिपिछानि
निजमित्ततैंनहिचित्तटारिय, जियविपत्ति[7]हिंजानि
मम आसकरि ममपास आइ, निरासगौ नर[8]कौन
कहि दान दैहौं कान दैं, नहि आन वहवह हौं न८
निजतीय[9]कौं तजि जीयमौ, परतीय सेवन गौ न
ऐंच्यौ न आवैं चंक[10] बाहिर, पाप पहुँच्यौ कौन
अवधूत[11]ज्यौं उत हूल[12]धर्महि, द्यूतसौं लियजीति,
तिहिं मंत्र[13]मैं परतंत्र[14]ह्वैं, दियमंत्र कौन अनीति९
पुनि द्रोपदिहिं तिहिं[15]धां करी, जतुगेह[16] पंडुनजारि
अभिमन्यु हो छल[17]हीन वह, छलकीन्ह मिलि
षट मारि ॥

---

(१)पिता(२)चचा(३)मामा(४)फर्क(५)अन्याय ॥ ६ ॥ (७) छोटा भाई (७) दुःखमें पड़े हुए मित्र को अपने जीमें जानकर (८) मनुष्य ॥ ८ ॥ (९) अपनी स्त्री को(१०) पहिरा (११) अलमस्त के जैसे (१२) बुलाये हुए युधिष्ठिरको (१३) सलाह में (१४) पराधीन होकर ॥ ९ ॥ (१५) वैसी सभा में वस्त्र रहित(१६)लाख का घर (१७) कपट रहित

सितसेसनैं सितकीर्त्तिकौं सुनि रुष्टह्वै गहि चक्र
अब धर्मधर्म जिहाजकेहुव उदित कर्मअवक्र१०
बहुचारु कीन्ह बिचार मैं जगबीच है सबसार,
पर गोरसौं इहिठौर मोमन और उठिग बिचार
बिनमान ह्वौ गिरिमान गुनिमुहिबकताहिअबक्र
रहि सेस ऋन तिहिं स्वामिकौ रिपुबेस गहि
तिहिं चक्र ॥११॥
यौं चित्तबीच अनेक कीन्ह विकल्प धूनिपसीस
भिरवेरइहिं हरिनरहिंकहि इहिं गेर पुनि कुरुईस
फिर चेत हुव नरध्यानहरि धरिपढिअथर्वनमंत्र,
कहिबहुतगुरुकिय तुष्टमैंजपतपहिंसजियतंत्र१२
परतीयमैं मम जीय गो नहि तौ रिपुहिं संघार,
कहि पत्थ सर न तज्यौ बै ठहै हैं कुजस हाहा
कार ॥

(१) सफेद वर्णवाले शेषने (२) श्वेत यशाको (३) अथ युधिष्टिर के सीधे कर्म उदय हुए ॥ १० ॥ (४) बहुत से सुन्दर (५) सत्कार रहित (६) पर्वत के जैसे प्रमाण वाला (७) कर्जा बाकी रहा [८] शत्रुका स्वरूप धारण करके (९) उस (ऋण) ने रथका पहिया पकड़ा॥११॥ (१०) संदेह पुर्वक विचार (११) श्रीकृष्ण (१२) दुर्योनध को [१३] प्रसन्न ॥ १२ ॥(१४)मार(१५)अब[१६]अपजस

मुहि जान मूर्छितकर्न बान चलान तजिइहिंवार
हौं करौं नहि रन कर्न जोलौंचक्रलैंहिनिकार१३
उत पत्थके धनु बान गुन, कछु करैं वत्तसहास
वरवीर कर्न अधीर उरनिच, वढिगकछुविश्वास
बड तीरतोम अपार माए, पत्थ इषुधी मांहि,
पैं पत्थको जस कर्नमनदधिवीचमायोनांहि १४

॥ कर्णवचन ॥

॥ छंद्मनहर ॥

वदरी बंबूर वट बांस बेत वंजुल का,
जीवनजरीपैं परी निजर निहारौं मैं ।
विंध्याचल अस्ताचल उदयाचलादि कौन,

॥१३॥(१)अर्जुन के धनुष, बाण और प्रत्यंचा ये तीनों कुछ हास्य सहित बात करते हैं (यहां छल से कर्ण को मारनेका पाप किसको लगैगा? प्रत्यञ्चाने कहा, भालको क्योंकि यह शरीर के भीतर घुसकर प्राण हरण करने वाला है. भालने कहा. प्रत्यञ्चा को, क्योंकि इसने मुझकोफैंका, प्रत्यञ्चाने कहा धनुषको, क्योंकि इसने मुझ को सिर पर चढा रक्खी है. धनुषने कहा तूने मेरा कहना क्यों माना?) (२) बाणों का समूह (३)भातेमें (४) मन रूप समुद्र में माया नहीं. यहां दोनों जगह अधिक अलङ्कार है ॥ १४ ॥ (५) बेरका वृक्ष (६) वड़ (७)अशोक (८) अस्त पर्वत.

चिंतामनिकनिका लौं तिनकासे धारौं मैं ॥
बोरैं गिरि केक लैं हिलौं रैं ऐसे सातोंसिंधु,
अमृतकी अंजलितैं जाहर बिसारौं मैं॥
प्यारतौ परैं हीपैं मवीन पत्थ रार पर,
सल्य सठ प्यारसौहजार वार डारौं मैं॥१५॥

॥ दोहा ॥

सल्य सार्थि तूं मित्रहै, अर्जुन वहैं अमित्र ॥
तूं दुखकृत सुखकृत वहैं, चित ममदोहुनचित्र१६

॥ सल्यवचन ॥

हौं दुखकृत सुखकृत वहैं, जानहु कतिछिन जाय
अमर्र करहिँ हरि आपकौं,पार्थ पीयूषपिवाय १७

॥ छंदवैताल ॥

कहि कान्ह अंरिपै दया आनतकौनयह अज्ञान
रथसल्लजुत ह्वैं करन तौ का जैमहु लौं इहिंमान
रथचकृथितचित सल्लगत मरसकै तौ इहिंमार
नहि तौ त्रिलोकियबीच कौँनसुजोलरैंललकार

(१) तृण समान (२) डुबोदेवैं पहाड़ों को (३) समुद्र (४) भूलजाऊं (५) लाखदफा ॥ १५ ॥ (६) शत्रु [७] आश्चर्य ॥ १६ ॥ (८) नहीं मरनेवाला (९) अमृत ॥ १७ ॥ (१०) शत्रु पर (११) यमराज भी ॥ १८ ॥

सुनि पत्थ गत्थ समत्थ सर दियकर्नकेतुगिराय
जिहिं साथही कुरुनाथ जिय जयआस परिग
कुभाय ॥
कछु करन साजिकबानकौंसरसीसकट्टियकर्न
सिंसुगैंदकी गति ऊर्द्धरक्खियधरनिगिरियनसर्न
मुख करनको रनभूमिनभ विचदिपतचंदसमान,
बरवीरकीछबिछाकिभनिभटजियतकोजयौंभान
अर्थीन तुण्डनकौं तकैं दिपतो रवतुण्ड सुनूर,
तिहिं वार तेज विथांरतैं छविवारत्यों सुतसूर २०
सिर गैनमैं थितसेनदुहुँथितचकितराहियनिहारि
सुनिहार सुर सुरनारि देकर तारि सुमगनडारि
अति सरन लाघव धन्य नर नभ वजिगवाद्यन

(१) बाण (२) ध्वजा (३) हाथों से (४) बालक की गैंदके जैसे(५)ऊपर आकाश में (६) बाणों से पृथिवी पर न गिरनेदिया ॥ १९ ॥ (७) युद्ध भूमि और आकाश में।(८)दूसरे योद्धा उसको मानों जीता हुआ जानते हैं (९) याचकों के मुखोंकी तरफ (१०) अपना (कर्ण का) मुख (११) तेज के फैलाव से (१२) सूर्य पुत्र (कर्ण) ॥ २० ॥ (१३) आकाश में ठहरा हुआ (१४) देवता और अप्सराएं (१५) ताली दे दे कर (१६) पुष्पों का समूह (१७) आकाश में बाजे बजे

छंद ॥

कुरु रुदनजल छिरकाव किय दल पांडु नचिय स्वछंद ॥ २१ ॥

नर स्यामहो भटकर्नमारि सुकीर्ति भोसितबाम
सश्रन विहीन रु श्रमितमारघोश्रपसस्सौं भोस्याम
जित करन स्पंदन पीठ दैं थित जियतबैठोजानु
दिपपत्थसरजबपरियधरतबछांहपुरुषहिंमानु २२
पंचत्व रिपुकौ पत्थ पेखिय देवदत्त बजाइ,
हरि पांचजन्य युधिष्ठिरादिक स्वस्व संख सुनाइ
सब सत्थ भेटिय पत्थसौं रथजुक्त हरिहिं बधाइ
उहिंथानहीनर ज्वानकेअभिमानउबक्योश्राइ२३
वर मुच्छ तानिय ह्हां गुँमानियभाखवानियबीर

(१) आंसुओं के जलसे (२) अपनी इच्छा से ॥२१॥ (३) पहले अर्जुन काले वर्ण वाला था (४) सफेद और सुन्दर हुआ (५) पसीना युक्त थका हुआ [६] फिर श्याम वर्ण हुआ. यहां प्रथम पूर्वालङ्कार है [७] रथ [८] धड़ [९] मानों कर्ण का छायापुरुष पड़ा. यहां छाया पुरुष का सूर्य के साथ संबंध होने से शिर रहित देहके पड़ने में छायापुरुष की उत्प्रेक्षा है ॥ २२ ॥ (१०) मरना [११] देवदत्त नामक शंख (१२ श्रीकृष्ण [१३] अपने ॥ २३ ॥ [१४] अभिमानी

जमराजकौं तृनराज जानिय ताहि हानिय तीर
थिर[1] लक्ष भेदे केक मैं विन टेक बान विहार ॥
घट[2] सीस लिय चक्र[3]सज्यौ लौं चक्रतैं घटसार
अभिमानकी यह बातमान रु कान्ह जंपि[4]जबान
जिन मिलि रु मार्यौ कर्नकौं तिन नाम सुन-
हु सुजान ॥२४॥

॥ छंदमनहर ॥

टेढी भूल[5]जैहैं विद्या भूमि[6]मूल जै हैं चक्र,
जामदग्नि विप्रसाप[7] वक्र व्हैबौ भार्यौ रे ॥
भीमकौं जहर दैनें सुवसुसहर[8] लैनें,
द्रौपदी चिकुरच्वैनें[9] एवज विचार्यौ रे ॥
लाखागृह दाह[10] दैनें सकुनिकौ वाह दैनें,
अद्भुत उछाह व्हैनें दुक्खदाय धार्यौ रे ॥
द्रोनकौं कुज्ञान[11] दैनें बालक[12] धनुख लैनें,

---

(१) स्थिर निशान (२) घड़ा रूप सिर (३) चाक से कुम्हार के जैसे (४) कही।२४। (५) विपत्ति में भूल जायगा शस्त्र विद्या को (६) जमीन में गड़ जावेगा रथका पहिया (७) परशुरामजी का शाप (८) अच्छा है धन जिसमें ऐसा शहर (इन्द्रप्रस्थ) (९) केशों के देखने ने [१०] जलादेने ने [११] कुबुद्धि (१२) अभिमन्यु.

मैंनैं अरु तैंनैं मिलिवीर कर्न मार्यौ रे॥२५॥

॥ छंदवैताल ॥

जिहिंबेर हरिमुख हेर हुव नर जेर सीस नवाय
तिहिंबेर आपहिकर्नरथकोचिक्रनिकर्यौआय॥
रथहाकिलज्जित सल्य गो थित हो सुजोधनतत्र,
बिन कर्न रथ लखि सल्यकौं किय कूक म-
नहुँ कलत्र ॥२६॥
जिय आस तजि जय आस तजि कुरु आस्य
देखिय कर्न ॥
पूर्नाहुती मखं पूर्न त्यौं रन पूर्न रविसुत मर्न ॥
नृपसुयोधनकौं करन रनकी कथा सल्यसुनाइ

॥ दुर्योधनवचन॥

हा कर्नगति लख मेरे हम जय पाण्डवन लि-
य पाइ ॥ २७ ॥
फिर कही संजय अंधसौं वर वीर कर्न विलाय
दुस्सासन रु दुस्सुन तव वर गये संग कुभाय ।

॥ २५ ॥ (१) श्रीकृष्ण का मुख (२) पहिया स्वयं निकला (३) मानों स्त्रीने ॥ २६ ॥ (४) मुख [कर्ण का] (५) यज्ञकी पूर्णाहुति रूप (६) कर्ण का मरना ॥ २७ ॥ (७) धृतराष्ट्र से

वदि अंध बूडिय नाव जित परिवारथितनरव्रात[1]
सुनिताहि रोवै ताहिविधि[2] किय याहि विधि
विधि[3] घात ॥ २८ ॥
रन उदधि[4] पारथ मच्छनैं सरपुच्छ प्रेरि[5] बुडाय,
सुनि मरन घनभटकरनको[6]सुअनाथ[7]ममसमुदाय
वपु ज्यौं न भात[8] करेजवाविनुवक्र[9]ज्यौंविनुनाक
विनु दिप्ति नैन कनीनिका[10] विनु अमृत थित
घट[11] पाक ॥ २९ ॥
धम्मिल्ल[12] विनु तिय मल्लसरविनुवास[13]नासुमव्रात
मनु कीन्ह विधि[14] विधिहीननैं स्तनहीन कृशसि[15]-
सु मात ॥
गुनग्राम[16] गुनिज्यौंवीसरैंदुखधाम[17]भिरिविजखात

(१)जैसे परिवार सहित बैठाहै मनुष्योंका समूह जिसमें ऐसी(जहाज)(२)इसी रीतिसे(३)ब्रह्माने प्रहार किया।२८। (४)समुद्र(५)बाण रूप पूंछ चलाकर(६)बेमालिक(७)मेरा परिवार (८) शरीर कलेजे के विना नहीं शोभताहै(९) "न भात" इस पदका सबके साथ अन्वय करना चाहिये [१०]मुख(११)आंखका तारा(१२)घड़ा॥२९॥(१३)केशपाश (१४) सुगन्ध के विना पुष्पों का समूह (१५) मानो ब्रह्माने (१६) दुबले लड़के की माता को स्तन हीन किया (१७)गुणों का समूह (१८) दुःखका घर

छवि वाम मम दल वाम की इहिं जाम यौं म-
न आत ॥ ३० ॥
विनु शृंग वृषभ रु दंत विनु द्विपं अमनि मनि-
धर त्यौंहि ॥
विनु करन मम सुत लरनकी छवि आज दी-
खत यौंहि ॥
दुहुँ दलन देखत करन तनु तजि तेजगोरविबीच
षट् घरी दिन हो काल यह गति कौन अति
मति नीच ॥ ३१ ॥
दुखसाथकौं इक साथदीखतपाथभजिकुरुफौज
कुरुनाँथ मूछहिं हाथ कैं कहिवातअद्भुतओज
नरभीम कृष्णहिं मारि लैहौ कर्न वैर निकारि,
पञ्चिससहस्र अत्रान लैधनुवानालियकरधारि३२
कटुवेष रोष असेषैं लखि भनिभीमरहहिंनएक

॥३०॥[१]सींगके विना वैल(२)हाथी(३)मणि विना सर्प(४) मेरे पुत्र (दुर्योधनादिक)(५) सूर्य मण्डल के मध्य में [६] छः घड़ी दिन अस्त होने में बाकी था ॥ ३१ ॥ (७) दुर्योधन ने (८) आश्चर्य करनेवाला है पराक्रम जिसका (९) अर्जुन (१०) हजार ॥ ३२ ॥ (११) तीखा या भयंकर भेष और क्रोध जिसका (१२) सबको (१३) भीमसेने कहा.

तित धृष्टद्युम्न पचीससहस्रन प्रान लियधरिटेक
सात्यकि रु माद्रिजनैं कर्यौ गंधार सेनानास
वनि निठुर मारे सत्रु घन रन नरेन्द्र लिय मुख
घास ॥ ३३ ॥

फिर पत्थनैं बहु हत्थि मारिय मत्थं दंतन फारि,
फिर साथसौं कुरुनाथ भाखिय हाथउंद्ददकारि
मत मुरहु रनतें लरहु हौं अब करहुं पंडुननास
घनखितनलैं तन जीर्नउदूघनघटतकेतक स्वास
फिर अरि सुयोधन अरिनसौं अहि भांत लेत
उसास ॥

सर जोरि धनुष उठाय कहि जयमोरमूर्द्धनपास
नर भीम सुनियैं निबल हतवै प्रवलतानगनाइ,
डरें जोरतौसर जोरकैं इहिं ओरजुट्टहु आइ ३५

---

[१] नकुल और सहदेव (२) मनुष्यों ने मुख में तृण लिया (भयसे) ॥ ३३ ॥(३)मस्तक (४) ऊंचा कर और पुकारकर (५) युद्ध से मत हटो (६) बहुत घावों से जीर्ण जो शरीर था (७) वह मानों खाती का उद्‌घन था (जिस पर लकड़ी रखकर छोलताहै वह सछिद्र काष्ट विशेष) ॥ ३४ ॥ (८) शत्रुओंसे (९) सर्प के जैसे (१०) मेरे मस्तक के (११) यदि छाती में बल है ॥ ३५ ॥

कुरुनाथ कोप प्रकासनासन कीन सूतजनास
कुरुनाथ कोप प्रकास सो भो पूर्वरूप प्रकास॥
त्रेहुँ समहिँ जुट्टिय हुहुनदलपैं त्रियही परि तत्थ
नरँ हत्थि घोरन लुथ्थ लुथ्थन भूँ भरी सह
मत्थ॥३६॥
कति परे घायल मरे सिरपर परे घोरनँ पाय॥
गिरिपैं चलैं त्यौं उदर ओरन चले डेरन आय॥
सौभाग्यधारी नंठपनारी ओनैंसारी सीस॥
हुव लाल भुव तिहिँ चालकी उपमा सु व्यास
कवीस॥३७॥
गुनैं बिंदु पद्म कविंद तो इहिँ छंद उपमा गात
सुतवारँ सोक अपारतैं रविवार तेज प्रपात॥
सुर असुर चारन सिद्ध हाहाकार करि गगथान

(१)कर्ण का मरना(२)दुर्योधन के क्रोध का प्रकाश हुआ इसलिये यहां पूर्व रूप अलङ्कार हुआ (३) तीनों अर्जुन, भीम और दुर्योधन एक साथ भिड़े [४] मानों तीनों ग्रह राहु, केतु और शनि पड़े(५)मनुष्य (६) जमीन भरगई॥३६॥ (७) घोड़ों के पैर पड़े (८) पहाड़ पर (९) दुलही (१०) लाल रंग की साड़ी है सिर पर जिसके॥३७॥ (११) अल्प गुणवाला (१२) पुत्र संबन्धी शोक से मानों सूर्य का तेज पड़गया

थित सरित रोवत सरितपति गिरि फटिग छि-
गि असमान ॥ ३८ ॥

उलका परे धरधूजिदिसजरिब्रच्छसुक्कजिहान
मृत करनकी हग जरनि लखि अरि अरनित-
जि प्रिय प्रान ॥

बनि चक्र धावत उत न आवत सर्बपांडवसूर,
जिम पूर कातर व्है तिन्हैं तजि दूर हेरतहूर ३९
जब प्रान छंडिय ज्वान कर्नप्रयोनकियसुरथान
तिहिं जानि घनघबरानसौं दलचलिगडेरनजान
कहि सल्य नृपकौं जुद्ध भो भलचलहुडेरनमाहि
छुभिलरैंनरसौं लोभधरसौं छिनकमैंमरिजाहि४०
ध्वजरहित रथ ले कर्नको इत हौं खरोहौं एक
अरु एक तू धरि टेक जुट्टत अरिन थट्ट अनेक
लैं फौज हत्थिहजार लैं गो सकुनित्यौंनृपचाल

(१)नदियां बहनेसे ठहर गईं(२)समुद्र(३)पर्वत फटगये।३८।
(४)पृथिवी(५)वृक्ष सूख गये(६)मरे हुए कर्ण के नेत्रों का जलना देखकर (७) शत्रुओं ने प्राणों जैसे प्यारे भी भिड़ने को छोडदिये (८) गोल होकर (९) अत्यन्त कायर (१०) अप्सरा ॥ ३९ ॥ (११) स्वर्ग में गमन किया (१२)पृथिवी का क्षोभ ॥ ४० ॥ (१३) समूह (१४) हे दुर्योधन.

करि समर फुरकत अधर[2] गो फिर द्रोनसुत[3]
विकराल ॥ ४१ ॥
सुनि सल्य वाक्य न पेलिं[4] रन अरि पेलि आ-
यौ सांझ ॥
मृति करनतैं[5] सुतराजसुखजयजसभयेसुतबांझ[6]
दानिय गुमानिय सत्यबानिय स्वामिमानियसूर
तिहिं करन मरन भयो सु तौ धृतराष्ट्र मति म-
रि मूँर[7] ॥ ४२ ॥
गिरि पर्यौ[8] नृपअतिकूकिकियगंधारजाउत[9]आइ
लखि नाँहकौं[10] करिं आहपीटियसीसउँर[11]घबराइ

॥ छंद घनाच्छरी ॥

करनमरनबारे बैंरन[12] करन परे,
आई घबराई व्हां गंधारजाई भूपमात[13] ॥
गिरत उठत उठि रहत लुठत लुठि,

(१) युद्ध करके (२) होठ (३) भयंकर अश्व-
त्थामा ॥ ४१ ॥ (४) उल्लंघन नहीं किया किन्तु माना
(५) कर्ण के मरने से (६) पूर्वोक्त चारों बांझके पुत्रके
जैसे हो गये (७) तेरी बुद्धि मूल अर्थात् जड़ से नष्ट हुई
॥ ४२ ॥ (८) धृतराष्ट्र पड़गया (९) गंधार राजाकी बे-
टी (गांधारी) (१०) पति को (११) छाती और मस्तक
॥ ४३ ॥ (१२) अचर कानों में पड़े (१३) दुर्योधन की माता

रहत चहत लख्यौ कनँहिं कहां लखात ॥
तकत रहत लकि बकत रहत बकि,
चकत रहत चकि झुकत स्वसित[1] गात ॥
जावत दसहुँ दिस रोवत दसहुँ दिस,
धोवत बदन[2] तन वहत रुदनव्रात[3] ॥ ४४ ॥

॥ छंदबैताल ॥

मिलि करनमरनउछाहतैं जदुनाहपारथबीर,
फिर कान्ह फेरिय पाँनिनरमुखबानिकहिगंभीर
तुवजन्म हुव नभबाँनि हुवसिंसुहुवअनूपमअच्छ
वह बानि लोकन जानि रक्खिव सत्य हुव सु
प्रतच्छ ॥ ४५ ॥

॥ छंद मनोहर ॥

जहरसलाह अरु लाखागृह दाह अरु,
द्रोपदीकी आहसौं क्रोंह जिय जारयौ तैं ॥
छहौं फिरि फेर सुत जेरकर मारयौ हेर,

(१) श्वास युक्त है शरीर जिसका (२) मुख (३) आंसुओं का समूह ॥ ४४ ॥ (४) श्रीकृष्ण (५) अर्जुन के मुख पर हाथ फेरा (६) आकाशवाणी (७) बालक (अर्जुन रूप) (८) अच्छी तरह प्रत्यक्ष ॥ ४५ ॥ (९) लाख के घरका जलाना (१०) छिलकर (११) अभिमन्यु.

दीन सबबैर दाव बिद्दद बिचार्‌यौ तैं॥
मूलग्रंथ धार्‌यौ कै सटीकग्रंथ धार्‌यौ धीर,
प्रत्यनीकालंकृतिकौं प्रगट पसार्‌यौ तैं॥
भीमपन पार्‌यौ कुरुभूपकौं न मार्‌यौ वाको,
प्रानप्रिय भार्‌यौ रन करन पछार्‌यौतैं ।४७।

॥ छंदवैताल ॥

नरनाथ देखत पाथकौं सुख नैन आनँदनीर,
सब पांडुसात्यकिआदिदे मिलिभीरिभीरिसरीर
उत सूर गत अस्ताद्रि इत कृष्णादि डेरन आय
भीमादिभटनसुव्रातकौं श्रीकृष्ण कहिसमुझाय
जो हुते तुमसे वीर तो जय कीन्ह अरिदलजेर
अब सजहु निसि पुनि जुद्ध व्है है करन मरन करेर ॥
नरनाथसाथ सलाहकैं हम आयहैं चलचाल ॥
निजजोरखग्गनजोरसौं सरजोर डोलहुलाल४९

(१) सुनकर (२) भीमसेन की प्रतिज्ञा (३) दुर्योधन को (४) प्राणों का प्यारा था ॥ ४७ ॥ (५) हर्ष के आंसू (६) उधर सूर्य अस्त पर्वत पर गया (७) योद्धाओं के समूह को ॥ ४८ ॥ (८) शत्रुसेना (९) रात में (१०) क्रूर (भयंकर) (११) हे प्यारे! तुम फिरो ॥ ४९ ॥

नरहरि रु नर नृपपदनमैं परिकरनमरन सुनाय

॥ कृष्णवचन ॥

जय रहत तितही रहत जितही धरम धरम
सहाय ॥

दिय जहर भीमहिँ कहर जँतुघर लहर जारन
कीन्ह ॥

लियराज छीन रु दीनद्रोपदिदाह वहउरदीन्ह५०

कटुबानि आनिय द्रौपदिहिँ पटु पुत्र छद्मसराय

ललकारि तिहिँ रन मारि आयव परत नर तुव
पाँय ॥

नृप हेरि हरिमुख फेरि करपुनिहेरिहरिनसुभाय

अति स्वचितव्है स्तुतिकीन्ह तव अवतार व्या-
स बताय ॥ ५१ ॥

॥ अथ युधिष्ठिरकृत श्रीकृष्णस्तुति ॥

॥ दोहा ॥

---

(१) श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों युधिष्ठिर के चरणोंमें पड़कर (२) जहां धर्म की सहायता वाला धर्म (युधिष्ठिर) है (३) भयंकर (४) लाख का घर ॥५०॥ (५) कपट से (६) अर्जुन तेरे पैरों में पड़ता है (७) घोड़ों को (८) अत्यन्त निश्चिन्त हो कर ॥५१॥

मलिन मोर मन स्वच्छ तूं, व्यापकतूं विसरीर
कहि न सकौंनहिंरहिसकौं,विनतीयौंजदुवीर ५२

॥ छंद् वैताल ॥

अवतार विंस रु च्यार रावरचारुमतिकृतिव्यास
तिहिं कहे मैं सुनि गहे तिनकौ कहौं कछुक
विलास ॥

जिहिंभांति स्वर्नादिकनके कटकादिभूखनहोत
आकृति उपाधि उठायलैं स्वर्नादि इकहिंउद्योत
इहिंभांति मायाकी उपाधियतैं भये अवतार,
हठदुष्टतारन भक्ततारन वेदमत विस्तार ॥
धृतध्यान अतिमतिमान कहत बखान जे ऋ-
षि धीर ॥

---

[१] मेरा मन मैला है पूर्व पापों से (२) निर्मलता (३) शरीर रहित ॥ ५२ ॥ (४) आपके बीस और चार अर्थात् चौबीस अवतार हैं [५] श्रेष्ठ बुद्धिवाले और पण्डित श्रीवेदव्यासजी ने [६] प्रवृत्ति [७] जिस तरह आकृति उपाधि से सोना आदि धातुके कड़े वगैरः गहने होते हैं [८] प्रकाश ॥ ५३ ॥ [८] इसी तरह माया रूप उपाधि से आपके वराह आदि अवतार हुए हैं (१०) दुष्टों को ताड़न अर्थात् दण्ड के लिये (११) भक्तों की रक्षाकेलिये (१२) वेदका मत फैलाने के लिये (१३) धारण किया है ध्यान जिन्होंने ऐसे और अत्यन्त बुद्धिमान्

मायाउपाधियकोमिटैंजुहि सेस सुहि जदुवीर५४

सनकादि हरिपैं जातहे जय बिजयरोकिकुवाँन,
तिन साप हुव हिरनाक्ष भ्रात हिरन्यकशिपु सु
आन ॥
हरिसौं मिलन त्रय जन्मसौं हरिनाक्ष हरि लि-
य भूमि ॥
तिहिं मारि रक्खिय डंष्ट्रपैं भ्रुव ताहि वंदौं
घूमि ॥ ५५ ॥

वर ब्रह्मचारिय विधिज सनक सनंदनहुहरिअंस,
तपतोमंमूर्ति सनत्कुमार सनातनहु सुप्रसंस॥
वयं पंचवर्ष रु नष्ट व्याप्यो आत्मज्ञान सु फेर,

---

(१)अन्त में जो बाकी रहता है वह आप ही हो ॥५४॥ (२) वैकुण्ठवासी विष्णु के पास (३) जय और विजय नामक द्वारपालों ने रोके (४) कटु वचनों से (५) उन के शाप से ये दोनों दैत्य हुए (६) फिर नम्रता करने पर तीन जन्म से विष्णु के दर्शन होजावैंगे ऐसा सनकादिकों ने वर दिया (७)डाढ पर पृथिवी को(८)उस वराह अवतार को परिक्रमा देकर नमस्कार करता हूं. ॥ ५५ ॥ (९) ब्रह्मा से पैदा हुए (१०)विष्णु के कला रूप (११) तपस्या का समूह रूप है मूर्ति जिनकी (१२) अवस्था.

मानसिय सुष्टिय कीन मोरे प्रनाम वेरहिवेर५६
मनुकी सुता आकूतिकौं रुचि नाम ऋषि लि-
य व्याहि ॥

तिनतैं भये हरि जज्ञनाम ललाम भक्तन चाहि
पति जज्ञ त्यौं तिय दच्छना जग कीन मख
विस्तार ॥

किय पुष्ट सुर संतुष्ट किय तिहिंसुष्टुपदनतिवार
पितु मात धर्म रु मूर्ति नर नारायनहु तपधाम,
बदरिकाश्रम हुव सुखित जनडरिइंद्रप्रेरियकाम
हुव विफल मारुत सर रु अच्छर पंचसरपरिपैर
दिय अभय इंद्रहिंडरवसीनंत इंद्र हौं गुनवैर५८
देवहुति कर्दम मात तात जुकपिलसांख्यकतीस

(१) मन से पैदा होने वाली (२) मेरा प्रणाम बारम्बार है ॥ ५६ ॥ (३) स्वायंभू मनु की बेटी [४] यज्ञ नामक विष्णु (५) भूषण रूप (६) यज्ञ का (७) अच्छे चरणों में बारम्बार नमस्कारों का समूह है ॥ ५७ ॥ (८) तपस्या का घर (९) बेर के वृक्षों में इनका आश्रम हुआ (१०) निष्फल (११) पवन (१२) कामदेव (१३) इन्द्र ने नमस्कार किया (१४) मैं पद्मसिंह कवि. मेरे गुणों का विरोध हो अर्थात् दुर्गुणोंवाला हूं ॥ ५८ ॥ (१५) सांख्य शास्त्रका आचार्य.

दे बोध[1] मातहिं गये सोरौं[2] करन तप जगदीस॥
क्रतुअस्व[3] हेरत हे सगरसुत[4] लखिकपिलकेपास
वदि कुवच सुनि ऋषि भस्म कीने जरहिं मम[5]
दुख खास ॥ ५९ ॥

अत्रि पितु अनुसूया सुमाता पुत्र दत्तात्रेय,
अवतरे[6] हरि नृप सहस्रार्जुन[7] सेवि पायो श्रेय[8] ॥
आन्वीक्षिकी[9] विद्या लई प्रहलाद[10] आदिकध्यान,
जिहिंचतुर्विंसतिगुरु किये[11] तिहिंमोर[12] प्रनतिअमान
नाभि नृप मेरुदेवि सुत हुव ऋषभ ब्रह्मविचार[13],
इंद्रजित[14] क्षत्रिय धर्म[15] सजिय तीन आश्रमसार॥
भो भरत ज्येष्ठ सुपुत्र तातैं भरतखंड सुनाम,

---

(१) ज्ञान (२) सोरौं नामक तीर्थ पर (३) यज्ञ का घोड़ा (४) साठ हज़ार सगर के पुत्र (५) मेरे दुःखों की खाई वा मुख्य दुःख जलेंगे ॥ ५९ ॥ (६) विष्णु ने पृथिवी पर जन्म लिया (७) कार्त्तवीर्य राजा ने जिनकी सेवा करके (८) मोक्ष (९) न्याय शास्त्र रूप विद्या (१०) प्रह्लाद आदि शिष्यों ने (११) जिसने चौबीस गुरु किये उस दत्तात्रेय को (१२) अनेक प्रणाम ॥ ६० ॥ (१३) पर ब्रह्म का ज्ञान अपने सौ पुत्रों को दिया (१४) इन्द्र को जीतनेवाला (१५) क्षत्रियों का धर्म प्रकट किया.

सुत[1] आठ आठौं खंडपति नवसंहित[2] दशम प्रनाम ६१
उत्तानपाद सुनीति सुत ध्रुव सुरुचि नाम विमात[3]
पितुगोद बैठत हठकदिय गोजहांगुंनिजखिमात
कहि[5] हरिहिं भज सुख होयगो वन[6] दीन नार-
द मंत्र ॥
तिहिं[7] जप्यौ हरि वर दीन्ह वांछित ताहि[8] प्रन-
ति स्वतंत्र[9] ॥ ६२ ॥
नृप वेनको कर[10] मथ्यौ दच्छिन भयो पृथुअ-
वतार ॥
करें[11] बामके मथनैं सुप्रगटी अर्चितीय सुप्यार॥
पदं[12] पद्म रेखा हस्त संख गदा रु चक्र सजोर,

(१) ऐरावत आदि आठ पुत्र (२) भरतादि नौ पुत्रों के साथ दशवें ऋषभदेवजी को ॥६१॥ (३) दूसरी माता (४) समझ कर "जहां माता बैठी थी" वहां गया (५) माता ने कहा विष्णु की सेवा कर (६) वन में नारदजी ने मंत्र दिया (७) उस द्वादशाक्षर रूप मन्त्र को (ओं नमो भगवते वासुदेवाय) (८) उस ध्रुवकेलिये (९) स्वतन्त्रताकेलिये ॥६२॥ (१०) राजा वेन का दक्षिण हाथ ऋषियों ने मथा [११] और साथ ही बायें हाथ के मथने से अर्चि नामक स्त्री प्रकट हुई (१२) चरणों में.

निष्फल[1] मही मथि नाम पृथ्वी कीन तिहिं[2] न-
ति मोर ॥ ६३ ॥
विधि द्योस बीतैं[3] प्रलय[4] भो जल लीन हुव स-
ब जीव ॥
बाढ्यो[5] जु फेनन[6] समल[7] जल उपज्यौ असुर[8] ह-
यग्रीव ॥
विधि[9] सुप्तके वेदन हरे तिहिं जोर इच्छित सिद्धि
विधिहूंतदीनेआनि[10] है हयग्रीव[11] तिहिंनतिवृद्धि ६४
दधि[12] मथनकौंसुरअसुरमिलिवासुकियनेताकीन
मंद्राचलहिं मंथान[13] किय नांखतहि भोजललीन
हरि[14] कमठ हुव तिहिं पीठ लिय निकसे चतुर्द-
सरत्न[15] ॥
दसदीह ओरन च्यारलीन्है सुनति पद्मसयल[16] ६५

(१) फल रहित पृथिवी को (२) उस पृथु अवतार के लिये ॥ ६३ ॥ (३) ब्रह्मा का दिन बीतने पर (४) नैमित्तिक प्रलय हुआ (५) बढ़ा (६) झागों से (७) मैल सहित (८) हयग्रीव नामक दैत्य (९) सूते हुए ब्रह्मा के (१०) ब्रह्मा के बुलाये हुए भगवान् ने (११) उस हयग्रीव नामक अवतार को ॥६४॥(१२)समुद्र (१३) बिलोने का दण्ड (रई)(१४)विष्णु कच्छप रूप हुए (१५) चौदह रत्न (कौस्तुभ आदि) (१६) पद्म कवि की साष्टाङ्ग प्रणाम है ॥ ६५ ॥

नृप सत्यव्रत सुचरित्रसौं अतितुष्ट हुव श्रीकांत,[1]
तुहि प्रलयवारि[2] बचायहौं व्है मत्स्य[3] कहिवृत्तांत
जे चराचर[4] नृप बैठि नौका बांधि मत्स्यविसान[5]
सब बचे तिहिं[6] बल ताहि विनु छल[7] पद्म कीन प्रनाम ॥ ६६ ॥

प्रहलादभक्तहिं त्रास[8] प्रेरि हिरन्यकस्यपु पीन,[9]
गुरुपत्निगन[10] गुरु मात मन वचहृतनपनहिप्रवीन।[11][12]
जलबोरि गिरि गज ज्वाल[13] दनुज[14] अनेक मरन उपाय ॥
इतिनटारिकैंप्रहलादरक्खिय श्रीनृसिंहसुभाय[15] ६७

सुरराज[16] दानवराज व्है बलिराज कीह्न विचार,
नवनवति[17] क्रतु कृति कीने कीन त्रिलोकि हा-

(१) विष्णु (२) तुमको प्रलय के जलसे (३) मच्छ अवतार धारण करके (४) स्थावर (पर्वतादि) और जंगम (मनुष्यादि) (५) सींग में (६) उस मच्छ के बल से (७) कपट रहित होकर ॥ ६६ ॥ (८) भय किया (९) वरदान से पुष्ट (१०) गुरु की स्त्रियों का समूह (११) आरैगा (पिता) (१२) प्रतिज्ञा में चतुर (प्रह्लाद) (१३) अग्नि की ज्वाला (१४) दैत्यादि (१५) अच्छी चेष्टावाले विष्णु ने श्रीनृसिंह अवतार करके ॥ ६७ ॥ (१६) इन्द्र होकर (१७) निनानवे यज्ञ.

हाकार ॥
जित कीनजावन दीन[१] पावन वनिग वामनविप्र[२]
कहि तीनपद भुव ली नहीं छललीन बलिकौं
छिप्र[३] ॥ ६८ ॥
झखराज[४] उग्र इलाजतैं गजराजकौं गहि लीन
किय जेर जलबिच गेरकैं तिहिंबेर[५] हे[६]हरि कीन
वह बानि कान पिछानिकैं तजि यान[७] ठानि
प्रयान ॥
प्रिय[८] पद्मजाहि परै रख्यो पक्षीसरक्खियप्रान[९]।६९।
किय प्रश्न नारद बुद्धिबारद[१०] मुक्सव सनकादि
त्यौंही विधाता[११] विपतज्ञाता विदिततत्व अनादि,
सुप्रसंस हरि[१२] हुव हंस उत्तर कीन संसय[१३] नास।

---

(१) गरीबों को पवित्र करनेवाला (२) ब्राह्मण रूप छोटे शरीर वाला [वामन अवतार] (३)जल्दी ॥ ६८ ॥ (४) ग्राहों के राजा ने (५) उस विपत्ति काल में (६) "हे हरि मुझको बचाओ" ऐसा शब्द किया (७) सवारी (गरुड़) को (८) प्यारी लक्ष्मीको भी (९) गजराज के प्राण ॥ ६९ ॥ (१०) बुद्धिका मेघ रूप (ज्ञान रूप जल देनेवाला) (११) ब्रह्मा के दुःखको जाननेवाला (विष्णु) (१२) विष्णुने हंस का अवतार लिया (१३) संदेहों का नाश किया ॥ ७० ॥

माया सु छाया ब्रह्म वृत्त सुपासहैंनहि पास७०
सनकादि सृष्टि न कीन कुपि विधि संभु भृ-
कुटी जात ॥
मानसी सृष्टि पिसाचआदिक कीन हॅरउतपात
नभवानतैं विध आनतनु लिय पूर्वतनु दुवअंग
स्वायंभु मनु दच्छिन रु उत्तर सत्यरूपा संग ७१
दधिमथनतैं हुव फेन कन कफ१वात२पित्त३त्रि
रोग ॥
हरितेजमय तनु हुव सुधाघट हस्तव्याधिविजोग
सर्वविधि ओसधिमंत्र तंत्र उपाय कीनें च्यार,
तिहिं वारवार प्रनाम मम धन्वंतरिजुअवतार७२

(१)जब कि सनकादि ऋषियों ने ब्रह्मज्ञानी होने से सृष्टि पैदा न करी (२) तब ब्रह्माने क्रोध किया (३)उन के भ्रू मध्य से महादेव पैदा हुए (४) महादेव ने (५) आकाश वाणी से(६)दूसरा शरीर धारण किया (ब्रह्माने) (७) पहिले शरीर के दो अंग हुए यानी दक्षिण अंग से स्वायंभुव नामक मनु और वाम से शतरूपा स्त्री हुई ॥ ७१ ॥ (८) समुद्र मथने से (९) झागों के कण हुए (१०)दोष(११)विष्णु के अंग रूप(१२)अमृत का घड़ा है हाथ में जिस के (१३) रोग दूर करनेकेलिये (१४) नस्तर आदि (१५)गारुड़ आदि(१६)टोटका आदि॥७२॥

हनि मात भ्रातन तातवचहिततातवचहिजिवाय
तिहिंवेर हैहय हनिय पितु हनि हैहयहिंजयपाय;
पितुवैर भुव इक्कीसवेर निछत्रि कीनिय हेर,
दिय राम विप्रन होहु भिक्षुक सापदीनोफेर७३
जिहिं मच्छगंधा मात तात सुपरासर्य पिछान,
जिहिं आठदसहिपुरान कीन्हे फेर भारतजान॥
वेदांतसूत्र बनाय उनसौं ब्रह्मबोध विचार,
श्रीव्यासमुभगुनरासिकौंनलिरौंसिवारहिवार७४
रिषिचाह रिषितिय चाहत्यौं सियचाह उपकृति
धाम॥
दिय पूर्न राज विसार गुहकौं तार हनिमृगबाम

(१) माता रेणुका और भाइयों को मारे (२) पिता के वचन के कारण (३) सहस्रार्जुन ने पिता जमदग्नि को मारा (४) पिता का वैर लेनेकेलिये पृथिवी को इक्कीस दफा (५) क्षत्रिय रहित (६) परशुराम ने (७) भीख मांगनेवाले होओ यह शाप दिया॥ ७३॥ (८) मत्स्यगंधा नामक माता (९) जिस वेदव्यास अवतार ने (१०) जिसमें ब्रह्मज्ञान का विचार है (११) नमस्कारों का समूह॥ ७४॥ (१२) सीता की इच्छा से [१३] उपकार का घर (१४) पूरे अयोध्या के राज्य को छोड़दिया (१५) प्रतिकूल या सुंदर नारीच को

सियहरन कोंपिहितकरन दधिप्लुंति जरन लं-
का नाम ॥
हनि कुंभ रावन सींप पावन अँवध आवनँ
राम ॥ ७५ ॥

वसुदेव देवकि तात मात रु नंदघर धरवास,
पूतनाँ सकट बकादि नासन कंसकोरुननास॥
पांडवनपालन पंत्थलालन मधुपँपालनपान,
कुलहानि कीन बिलान तिय लुटजान नरवि-
नुमान ॥ ७६ ॥

विंनुमख सुरनलौं पुष्ठहैं हम सुंक जज्ञकराय,
सुनि सुरन स्व स्तुतिकीन स्तुति धरि बौद्धहुव
[12]ब्रजराय ॥

---

(१) बाली को मारकर उसका राज्य देने रूप सुग्रीव का हित करनेवाले (२) सेतु बांधकर समुद्र को उल्लंघन करनेवाले [३] अग्नि में सीता को पवित्र करनेवाले (४) अयोध्या ॥ ७५ ॥ (५) पूतना नामक राक्षसी (६) अर्जुन को लडानेवाले (७) मदिरा का पान कराकर यदु वंश का संहार किया (८) अर्जुन का मान रहित होना ॥ ७६ ॥ (९) दैत्योंने शुक्र से कहा कि हम यज्ञ रहित हैं सो[१०]शुक्राचार्य ने यज्ञ कराया[११]यह बात सुन कर देवताओं ने विष्णु की स्तुति की(१२)विष्णुने भी

सितवसेन केस न पट्टि आनन नारकेलियपात्र
श्रीपूज्यसूरि जु नाम निंदकवेदश्रावकछात्र७७
चहुँवर्न छोरहिं धर्म तबकलिअंतकृतकेआदि,
संभलनगर विष्णुजस द्विजघरप्रगटिहैंजुअनादि
सितबाजि पर थित खग्ग धरकर कल्किनाम
ललाम ॥
उत्थपि अधर्महि धर्म थप्पहिंताहिमोरमनाम७८
तथविंसही अवतार लीन्हैं कल्कि व्हैहो फेर,
जन औपुनन हित जानकैं जनदुःख करिहोजेर।
स्तुति का करौं मतिमंद मैं रतिअमितरावरिहेर
नरकौं बचायो अरिनसौंबनि कौचकेतकबेर७९
तुम भये सारथि ताहिछिन हुव विजय उर

पांच अवतार लिया (१) सफेद कपड़ा (२) मुख पर कपड़े की पट्टी रखना (३) नारियल के वर्त्तन (४) वेदों की निंदा करनेवाले (५) श्रावक नामक शिष्य हुए ॥ ७७ ॥ (६) कलियुग की समाप्ति में (७) सत्य युग के प्रारम्भ में (८) सम्भल नामक नगर (९) सफेद घोड़े पर बैठे हुए (१०) हाथ में धारण की है तलवार जिसने ऐसा कल्कि (११) भूषण रूप (१२) अधर्म को उठाकर (१३) धर्म स्थापन करेंगे ॥७८॥ (१४) अपने जन [भक्त] (१५) अल्प बुद्धिवाला (१६) बहुत प्रीति (१७) कवच तुल्य हो कर ॥ ७९ ॥ (१८) उसी वक्त (१९) अर्जुन के हृदय में

सुख छाय ॥
नर भीस्ममारन द्रोनमारन तो कृपा जदुराय ॥
गहिलीन द्रोपदि दीन जानिय कीन्हि वह कं-
ति क्रूर ॥
तिहिँ पीरगनि मंजारकीरसुचीर न घटियमूर८०
ऋषि क्रुद्ध दीवै सापउद्व सुःसुद्ध तोर प्रताप,
पित आनदेस कुभेस पार्थ सुवेस जीते आप ॥
भीस्म द्विज कर्न त्रिदोषिभा नरभयोआतुरभूरि
धन्वंतरियतितंआपह्वव दियविजय जीवनमूरि८१
हम खँयात सुद्ध रु तात सुद्ध रु मात सुद्धहमार,
मम तीय सुद्ध रु जीय सुद्ध रु सुद्ध सवव्यवहार
सब मंत्र उत्तम तंत्र उत्तम भूलिगो इकभाँय,
प्रभुपूर्व कर्मप्रभावतैंजियँ सरनलिय जदुराय८२

(१) गरीब (२) द्रौपदी की पीड़ा (३) बिल्ली और तोते के बराबर (४) कपड़ा थोड़ा भी कम न हुआ ॥ ८० ॥ (५) दुर्वासा ऋषि (६) वह दुर्वासा शान्त हुआ आपकी कृपा से(७)द्रोणाचार्य(८) वात पित्त कफ के जैसे (९) अर्जुन बड़ा रोगी होगया था (१०) वहां आपने धन्वन्तरि रूप होकर अर्जुन को संजीविनी औषध दी ॥ ८१ ॥(११)प्रसिद्ध(१२)एक क्रिया(१३) हे स्वामी![१४]प्राणी ने श्रीकृष्ण का शरण लिया. यहां

करें जोर विनवो सोरिकें इक ओरभल्लपनजोर
ह्वैं स्वप्न घोर कुठारमैं तव सपथ तोरहि मोर
कुरुनाथ मुहि कहिहैं किते हारिकपांडुननाथ
हरिहाथआपगह्यौ तवैं भोनाथअतिहिअनाथ८३
का पत्थ बपुरो हौं कहा यह गत्थसहित सपत्थ
गोलक रु गो दुहुँ रावरे दिय मंत्थ पदलियवत्थ
बरव्यास बरवल्मीक वेदहु करसकैं स्तुतिकौन
पदमेसकवि का करसकैं मन गुनि रह्यो लिय
मोन ॥ ८४ ॥

॥ कविवचन ॥

॥ दोहा ॥

नृपकृत स्तुति संक्षेपसौं, कवि कृतकछुविस्तार
बड पापन विस्तार हित, समझ लेहुश्रमसार८५
कीनौ नरहर सुकविनैं, बड अवतारचरित्र ॥

व्याजस्तुति अलङ्कार है ॥ ८२ ॥ (१)हाथ जोड़कर नमस्कार करता हूं(२)कोलाहल करके(३)सोगंद (४) दुर्योधन (५) श्रीकृष्ण (६) नाथ होगया ॥८३॥(७)धात (८) नौकर (९) गाय (१०) मस्तक हमारा आपके चरणों में (११)चारों वेद भी ॥ ८४ ॥ (१२) राजा युधिष्टिर की कीहुई (१३) पापों के विस्तार होने से (१४) प्रधान परिश्रम॥ ८५ ॥

य कीन्ह ॥

जब नृपति रथ[1] थित बंधु[2] हरि जुत करन देखि-

य जाय ॥

कहि आज सब नव[3] जन्म आये जय परियम-

मैं[4] पाय ॥ ९० ॥

नर करन मरते के[5] उबरते छै[6] चंपकके ताल,

यह जुद्ध तो बेताल[7] भो इम छंद भो बेताल ॥

जिहिं सुत मरैं चलि अंसु श्रोनित वंक श्रोनि-

त नैन ॥

अस्तादितैं रवि उतरिगो[12] दधितांहिअंजलिदैन९१॥

॥ छंद मनोहर ॥

अमित[13] अकाज सुरराज[14] द्विजराज[15] साजि,

शाप से नाश किया (१) रथ में बैठकर (२) भाई भी-मादिक और श्रीकृष्ण सहित (३) नये जन्म में (४) मेरे पैरों में ॥ ९० ॥ [५] अथवा दोनों जाते रहजाते तो (६) चंपक नामक लड़के दो लाख हो जाते (७) ताल चूक हुआ. इसी हेतु से कविने भी बैताल नामक छन्द किया (८) जिस कर्ण रूप पुत्र के मरने पर (९) किरणों रूप आंसुओं की धारा (१०) मुख और नेत्र लाल होगये (११) अस्ताचल से सूर्य उतर कर (१२) पश्चिम समुद्र को गया ॥ ९१ ॥ (१३) अपार (१४) इन्द्र (१५) ब्राह्मण बनकर

जानी अंगराज[1] नरकाज[2] छद्म छायेकी ॥
कौच जयकाज जियकाज जोरी[3] कुंडलन,
दीने जसकाज राखी लाज लोभभायेकी ॥
अर्जुन असावधान जानि न चलायो बान,
कीनी नहि कान अरि जान अहि[5] आयेकी ॥
दानी कौन मानी कौन करद[6] कृपानी कौन,
जानी कविपक्ष ज्यों कहानी रविजायेकी९२
स्यंदन[8] अभूत ध्वज[9] सूत[10] धनु[11] पूत[12] हय[13],
तोन[14] गुनि[15] सिष्य[16] छवि सात्यकी सुहायेकी

(१) कर्ण ने (२) "अर्जुन के लिये कपट किया" यह जान लिया (३) कुण्डलों की जोड़ी (४) लिहाज नहीं की (५) आये हुए सर्प अश्वसेन की (६) युद्ध में खड्ग धारण करनेवाला कौन है? अर्थात् कोई नहीं (७) कर्ण की ॥ ९२ ॥ (८) जिस की गति न रुके ऐसा अर्जुन के जैसा रथ कर्णके न हुआ(९)पताका जहां कि हनुमान्‌जी थे (१०) सारथि श्रीकृष्ण जैसे, जिनका अत्यन्त प्रीति पात्र अर्जुन है(११)धनुष गांजीव जो कि अग्नि ने प्रसन्न होकर दिया.(१२)पुत्र अभिमन्यु जैसा (१३) घोड़े मृत्यु रहित अग्नि के दिये श्वेत वर्ण वाले(१४)भाथा अक्षय जिसके तीर कभी क्षीण न होवैं (१५) गुणवान् [१६]शिष्यों के जैसी कान्तिवाला शिष्य सात्यकि.

भीस्म जयभौन हढ द्रोन द्रोनी कर्न कृप,
कोन गौन कीर्ति ना बिराट जीति आयेकी॥
तात सुखव्रात कीनौं बरन निवांत बध,
वीरता बिख्यातहै किरीटी नाम पायेकी ॥
दानकी नहरकीतो लहर हुलई देखी,
प्रातकी ठहरगी पहर रविजायेकी ॥९३॥

॥ दुर्योधनवचन॥

हहरि हहरि मैंने अहितुहि मान्योहितु,
हितुको मरन भो अहितु बस परतैं ॥

---

(१) जय का घर भीषन "जय भौन" यह पद द्रोणादि सब पदों के साथ अन्वित करना (२) अश्वत्थामा (३) कौन से गमन से कुल की कीर्ति न हुई? अर्थात् हुई (४) विराट नगर में गोग्रह निमित्त हुए युद्ध में सब को जीतकर आने की (५) इन्द्र को सुख का समूह (६) निवातकवच, कालखंज आदि दैत्यों के मारने से वीरता प्रसिद्ध हुई. (७) उस समय प्रसन्न होकर इन्द्र ने अपना मुकुट दिया तब से अर्जुन का नाम "किरीटी" हुआ (८) कठिनता से करने योग्य तर्क देखी गई है (९) उस में हेतु यह है कि प्रातःकाल (सुबह) की प्रहर (१०) कर्ण के नाम से ठहर गई ॥ ९३ ॥ (११) घबरा २ कर [१२] शत्रुओंने भी शल्यको मित्र जाना [१३] कर्ण का मरना हुआ (१४) अर्जुन के

अर्थिवृंद केतक अनर्थि भये ऐ हैं इत,
पैं हैं दुख दीह अर्थि भये वाके करतैं ॥
स्वामिधर्मधाम दीह देसिक स्वकर्म नाम,
करनी रहित कहा कहिनीके वरतैं ॥
मित्रमरैं मित्रनकों सोक व्है सु मानौं मन,
सोक भो अमिलनकौं मित्रपुंज मरतैं ॥९४॥

॥ छंद घनाचरी ॥

मंत्र मंनि वन्हि मिटैं परत अंधेर पेर,
मिहिरैं विहरि सुरैं मचत अंधेर मोर ॥
दावबन्ही जारैं जबैं जंतुनके जुत्थ जरैं,
कल्पवन्ही जारैं जबैं जगत जरन सोर ॥
कूपादिकैं नीर नसैं मच्छादिक पीर फसैं,
वाँरिनिधि नीर नसैं घेर दुख तोम घोर ॥

वश पड़ने से (१) याचकों के समूह(२)धन रहित हुए (३) इधर आवेंगे (४) बड़ा दुःख पावेंगे(५)उस कर्ण के हाथ से धनवान् हुए थे (६) मालिक के धर्मों का घर(७) बड़ा उपदेश देनेवाला (८) कहने के बल से क्या(९) उदासीनोंको भी(१०)कर्ण के मरने पर ॥ ९४ ॥(११)मणि (१२)अत्यन्त(१३)सूर्य के अस्त होने पर(१४)वन की अग्नि[१५]प्रलयकाल की अग्नि[१६]कूआ तालाव आदि का जल नष्ट होने पर[१७]समुद्र का जल नष्टहोने पर

बंधुनमरनवारो टोटाहैं न छोटा पर,
करन मरनवारो टोटा यह टोटा ओर॥९५॥
॥ छंदमनोहर ॥
बागनमें पिकन चिराती पिकबैनी तिन,
तारथांम हाहा त्रस्त चित्तन तिरावैंगे ॥
गहर्न गिरातैं गुनगाये धनपाये गुनि,
गाहकविहीन गहि गहैन गिरावैंगे ॥
फिरि फिरि सेरैंसे अराती फेरे फेरुसम,

बड़ा भयानक दुःखका समूह होता है (१) भाई दुःशासनादिकों के मरने का (२) परन्तु[३]यह कर्ण का मरना रूप टोटा अद्भुत ही है. यहां भेदकातिशयोक्ति अलङ्कार है ॥ ९५ ॥ [४] जिन योद्धाओं की स्त्रियां अपने स्वरसे पहिले बागों में कोयलों को चिड़ाती थीं [५] कोयल के जैसे वचन वाली ऐसी उन स्त्रियों को [६] अत्यन्त ऊंचे स्वर से किया हुआ जो पतियों के मरने पर हाहाकार शब्द (७) उस से डरे हुए चित्तों को अपने स्वरसे [कोयल] दुःखित करैंगी (८) गूढ़ वाणी से (९) कर्ण के गुण गाये हुए और धन पाये हुए गुणवान् जो पुरुष हैं(१०)कर्ण रूप ग्राहक के विना उनको पकड़ कर(११)दुःख अपने वश पटकैंगे(१२)इधर उधर घूमकर सिंह के जैसे जिन शत्रुओं को कर्णने घुमाया था अर्थात् युद्धसे भगाया था(१३)स्यार के जैसे वे शत्रु कर्णके मरने पर पीछे लौटकर.

फिरके फिराकी फिरकीनलौं फिरावैंगे ॥
कर्न वर्नवारे वर्न कर्नन सिरातैं अब,
कर्नमर्नवारे वर्न कर्नन पिरावैंगे ॥ ९६ ॥
स्वामिधर्मधारी व्है रु त्यक्तपरनारी है रु,
सत्यव्रतवारी है तो ताकौं तृप्त ताकनौं ॥
मित्रदुक्ख दुक्ख व्है रु मित्रसुख सुखव्हैरु,
मित्ररुख रुख व्है तो पूर्नपन पाकनौं ॥
अन्य उपकारी उद्ध सुद्धगुरु भक्ति सुद्ध,
विदितै गुनैन वृद्ध हेरि हिये हाकनौं ॥
वीर व्है रु धीर व्है रु त्रस्त परपीरव्है रु,
छत्रिय सरीर व्है तो ताके जस छाकनौं ९७

(१) फिकरवाले बालक के खिलौने के जैसे हमको घुमावैंगे (२) कर्ण की स्तुतिवाले (३) अक्षर कानों को ठरढे करते थे (४) अब कर्णके मरनेवाले अक्षर (५) कानों को पीड़ा देवैंगे ॥ ९६ ॥(६)छोडी है पराई स्त्रियां जिनोंने (७) सत्यव्रत के वाड़ी (बगीचा) रूप (८) मित्रों को दुःखी देखकर दुःखी होते हैं (९) मित्रों की रुचि की तरफ रुचि करनेवाले (१०)पूरी प्रीति में पकजाना(११)दूसरोंकी भलाई करनेवाले(१२)प्रसिद्ध(१३)गुणोंमें वृद्ध ऐसे पुरुषों को देखकर(१४)चित्त चलाना (१५) पर पीड़ा से जिनका मन डरजाताहै (१६) तृप्त होना ॥ ९७ ॥

दोहा ॥

ए गुन लीन्हैं करनसौं, करन काव्यकवि[1] टोहि
वरननहित[2] दीन्हे वरन, मात[3] अपरना मोहि॥९८॥

॥ छप्पय ॥

गिरवर१ दुरगादत्त२ आरहट सांदू गिरवर३,
महरू राजाराम४ सिवा कविया५ अरु सागर६
वरकवि बंक७ हमीर रत्नु८ वनसूर चैनवर९,
ऐंते घस्मर[4] अच्छ स्वच्छ रक्ख्यौ छिपाय घर॥
मोदकप्रिय[5] मात सुमोदसौं[6] मोहि मंत्र मोदक
दियव॥
मुहु[8] मोद मानि मन मोर मैं करनपर्व भाषा
कियव ॥ ९९ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे मोदक अर्पनी,[9] मन मोदित भो मोर ॥

---

(१) पद्मसिंह ने ढूंढकर (२) स्तुति के लिये अक्षर दिये (३) माता देवीने ॥ ९८ ॥ (४) ये पूर्वोक्त नौ बड़े चटोकड़े थे (५) लड्डू है प्यारा जिसको ऐसे (गणेश) की माता ने (६) बहुत प्रसन्नतासे (७) ग्रंथ को बनाने की सलाह रूप लड्डू मुझको दिया (८) बारम्बार मेरे मन ने खुशी मानकर ॥ ९९ ॥ (९) देनेवाली

कियस्तुतिमोदितेहोहिँकवि,मोदकछंदमरोर१००
केतिक बानकवींद्रकी, उक्तिय धरिय अँवेरि॥
केतिक हैं मेरी धरी, हरखंहिं कविगन हेरि१०१

॥ छंद भुजङ्गप्रयात ॥

गुनातीत चित्सक्ति तूं जोगमाया,
अहोनी सुहोनी करैं तोर दाया ॥
गुनग्रामयुक्ता रचे देव तीनौं,
विधाता रु विष्णू विरूपाक्ष चीनौं ।१०२।
रचैं सृष्टि पालैं हरैं रंगभा ज्यौं,
तनू राजसी सात्विकी तामसी त्यौं ॥
भये भूत भूम्यादि भा पंच भासे,

---

(१) खुशी होवेंगे (२) खुश करनेवाली छन्द की मरोड़ (टेढ़ी चाल) ॥ १०० ॥(३)कल्पना(४)संभाल कर ॥१०१॥ (५) सत्व आदि गुणों को उल्लंघन करके रहनेवाली (६) ज्ञानमय शक्ति स्वरूप (७) चित्त में ध्यान मात्र से माया को प्रकट करनेवाली (८) तेरा हिस्सा (९) सत्व आदि गुणों सहित (१०) ब्रह्मा (११) महादेव इन तीनों को मैंने जाना ॥ १०२ ॥ (१२) सृष्टि को पैदा करते हैं (१३) संहार करते हैं (१४) अन्य संप्रदाय से रक्त, श्याम, श्वेत; और कवि सम्प्रदाय से रक्त की जगह पर पीत जानना (१५) पंच महाभूत पृथिवी १ जल २ तेज ३ वायु ४

गुनग्राम[1] गंधादि पांचौं प्रकासे ॥ १०३ ॥
भले कारु[2] जे लोहकारादि भारी,
सजैं स्वीय[3]कूटादिसामग्रि सारी ॥
कला[4]तैं कटाहा[5]दिवस्तू बनावैं,
तथा सर्व[6] अंबा[7] जनैं औ[8] जनावैं ॥१०४॥
भये तोर ध्यानी त्रिहौं[9] देव भारी,
भज्यौ स्त्रीत्व[10] औ पुंस्त्व[11] सोभा विसारी ॥
द्विधा[12] हास्यकैं आपने पुंस्त्व दीनौं,
इहा हौं धरौं ध्यान का बुद्धिहीनौं[13] ।१०५।
लुलाप[14] क्रुधाली[15] कस्यौ वैर लीबै,
फस्यौ व्यूढ[16]पापी धँरा व्योम पीबै[17] ॥

आकाश ५ (१) गुणों का समूह गन्ध १ रस २ रूप ३ स्पर्श ४ शब्द ५ ये पांचों शोभते हैं ॥ १०३ ॥ (२) कारीगर लोहार कुम्हार आदि (३) अपने अहरन आदि (४) चतुराई से (५) कड़ाह आदि वस्तुओं को (६) माता (७) स्वयं पैदा करती है (८) और दूसरों से पैदा कराती है ॥ १०४ ॥ (९) तीनों देवता ब्रह्मादिक (१०) स्त्रीपना (११) पुरुषपना (१२) दो तरह से हाँसी करके (१३) मैं बुद्धि रहित हूं ॥ १०५ ॥ (१४) महिषासुर (१५) क्रोधों की पंक्ति से निकला (१६) बड़ा पापवाला (१७) पृथिवी और आकाश को पीने के लिये.

टरै टोकिं तूं ना टरी टेरि टेकैं,
नटीनां नटी[3] तूं भई शृंग लेकैं ॥ १०६ ॥
भयो भेटि मैंडा[5] विभा भूरि भागी,
नचे नच्च[6] नाना ज्वलज्जोत[7] जागी ॥
लगी लत्त[8] ग्रां कैं बहिंर्जीह[9] डारी,
कढी[10] क्रूरकी गूढ[11] मानौं कटारी ॥१०७॥
तनू स्याम[12] ऊंचौ करयौ वक्त्र[13] तैसैं,
जगछूमतैं[14] नीसरी ज्वाल जैसैं ॥
इतैं तीसरी ओपमा चित्त आवैं,
जनौं[15] व्यासकौं पूछकैं भौम[16] जावैं ।१०८।
भली उक्ति[17] चोथी मिली चित्त भावैं,
जनौं प्रेत[18] यौं जानिकैं रौद्र[19] जावैं ॥

---

[१]पलखाकर(२)तू नहीं टली अर्थात दूर न हुई(३)नृत्य करनेवाली (४) महिषासुर का सींग लेकर ॥ १०६ ॥ (५) भिड़कर विना सींगवाला हुआ (६) नृत्य [७] अनेक देदीप्यमान ज्योति (८) लात के लगते ही (९) आँ आँ ऐसा शब्द करके जीभ को बाहिर निकाली (१०)दुष्ट की निकली(११)छिपी हुई ॥ १०७ ॥ (१२) काले वर्णवाला शरीर(१३)मुख (१४)समस्त जगत् के घूमसे (१५)मानौं कृष्ण वर्णवाले वेदव्यासजी को पूछकर (१६) मङ्गल (ग्रह) जाता है ॥ १०८॥(१७)कल्पना (१८) मराहुआ (१९) चौथा रौद्र नामक रस जाता है.

विभा बीजके घोस श्री[२]मात नहीं,
झुक्यौ छुद्र[३] ठहां रक्तकी[४] कीन्ह छर्दी[५]१०९
चली अंगुरीपंचतें बूंद[६] चीनी,
सह्यौ[७] भार भूकों मनोभार[८] दीनी ॥
नमी दुष्टकौ रक्त नीकैं निहारयौ,
झरी सीकरालीं[९] झटितू पैर झारयौ११०
प्रभा तर्क[१०]की त्यौं कृती[११] पद्म पेलैं,
अमां[१२] मातनू मानु खद्योत[१३] खेलैं ॥
हरैंहींहरैं[१४] अच्छरी हास्य हेरे,
करे ऊँजरे[१५] आस्य कृष्णादिकेरे ॥१११॥
चकै[१६] विष्णु वेधा भये कृष्ण चीन्हौं,
तहां रुद्र[१७] हू नामकौं सार्थ कीन्हौं ॥

---

(१)बिजुली के शब्द के जैसे (२) श्रीदेवी ने शब्द किया (३) नीच (महिषासुर)(४) रुधिर का (५) वमन ॥ १०६ ॥ (६) लोहू की बूंद (७) पृथिवी ने बोझ सहा (८) इसलिये इनामकेलिये मानों लाख मणियों की माला दी (९) जल कणों की पंक्ति ॥ ११० ॥ (१०) उपमा की शोभा (११) कवि पद्मसिंह भेजता है (१२) अमावास्या रूप माता के शरीर पर (१३) जिगनू (१४) धीरे धीरे अप्सरायें हांस करती हैं (१५) कृष्णादिकोंके मुख सफेद किये ॥ १११ ॥(१६)विष्णु आश्चर्य को प्राप्त हुआ और ब्रह्मा श्याम हुआ(१७)महादेवने भी अपना

भर्यो रक्तअ्लक्तभा अंघ्रि भारी,
दिपी[2] अंब त्यौं अन्य दीपी न नारी।११२।
सुपर्न्नी[3] नख स्त्रीतनू[4] सत्रु मारो,
भयो नारसिंघ[5] क्रुधा पीत[6] कारो ॥
पर्यौ[7] अंस उस्नीस सत्रू पछार्यौ,
त्रिलोकी[8] त्रपाने मनो थान धार्यौ।११३।
वियत्[9]सूल प्रोतद्विसतु गो सु[10] गौरी,
लुलायध्वजी[11] गोध्वजी[12] भर्ग जोरी ॥
दिपी तर्क दूजी हृदै[13] ल्हाद दैहैं,
छली दुष्टवंसी[14] ति सक्रादि[15] छैहैं॥११४॥

नाम सार्थ किया अर्थात् रोनेलगा (१) रुधिर रूप ला-क्षारस की शोभा से पैर भरगया (२) जैसी माता शोभती है वैसी दूसरी स्त्री नहीं शोभी ॥ ११२ ॥ (३) नख रूप अच्छे बाण (४) स्त्रीका शरीर (५) क्रोध से नरसिंह अवतार (६) पीला और काला, यहां निरुक्ति अलङ्कार का आभास है (७) कांधे पर मुकुट पड़ा (८) तीन लोक की लज्जाने ॥ ११३ ॥ (६) आकाशमें त्रिशू-ल में पिया हुआ शत्रु (महिषासुर) गया (१०) देवी (११) महिषकी ध्वजावाली (देवी) (१२) बैलकी ध्वजा वाले महादेव इन दोनों की यथार्थ जोड़ी मिली (१३) मनको सुख देती है [१४] कलंकित वंशवाले कपटी (१५) इन्द्रा-दिकों को स्पर्श करेंगे ॥ ११४ ॥

उड्यौ गैन ताटंक[1] आतंक[2] अर्दी,
मनौं मंत्र[3] दीवै महामंत्रिमर्दी[4] ॥
सुरारी[5] कुरारी[6] भिरैं रोस सानौ,
वहै[7] ब्रध्न हौं ब्रध्न नां जंपि[8] जानौ ॥११५॥
गिरी छूटि बेंदी[9] गरैं[10] उक्कि फूलैं,
जनौं बक्क दासेरं[11]की वंक झूलैं ॥
क्रुधा क्रूर काली रमा[12]रक्त रत्ती,
गिरा[13] स्तोत्र गौरी महामोदमत्ती[14] ॥११६॥
विरूपा[15] भई तत्र मत्तारि[16] मारयौ,
धियाँ[17] हत सु देवत्रयी नर्म धारयौ ॥
धरयौ ग्लौ कपर्दी[18] कहूँ ध्वांतध्वंसी[19],

---

(१)कर्णभूषण(२)भयसे पीड़ा देनेवाला(३)सलाह देनेको (४)बड़ी सलाह देनेवालोंका तिरस्कार करनेवाला(५)महिषासुर(६)खराब लड़नेवाला(७)वह ताटंक सूर्य है(८) कहकर ॥ ११५ ॥(९)कर्णभूषण विशेष(१०)गले में(११) भक्त की (१२) लक्ष्मी (१३) सरस्वती स्तुति से श्वेतवर्णवाली है (१४) बड़े हर्ष से उन्मत्त॥ ११६ ॥(१५)महाकाली १ महालक्ष्मी २ महासरस्वती ३ रूप (१६) उन्मत्त शत्रुको(१७)बुद्धिसे हरण किये तीनों देवोंकी हाँसी धारण की (१८)महादेव ने चन्द्रमा को धारण किया(१९ अंधकार को दूर करनेवाला.

नखग्लौ[1] दुष्टहा सदा सुप्रसंसी ॥११७॥
जुटे जुद्ध जिष्णवादि[2] ना जुट्टि जैसैं,
पियैं तू जथा रत्त[3] जिष्णवादि कैसैं ॥
कृती पद्मनैं छद्मसौं[4] नर्म कीनौं,
तन्यौ छद्म नीकौ छले देव तीनौं ॥११८॥
भिरी भूक भारी अरी त्यौं उदन्या[5],
करी स्वीय तृप्ती[6] नमो अद्रिकन्या[7] ॥
गिरी गैन व्है मेखला[8] जुक्ति जंपैं,
गिरी गैनगंगा[9] लुलाय प्रकंपैं ॥११९॥
कढी नोगरी तूटकैं अंगैं फूलैं[10],
कढी नोग्रहीकी[11] मनौं दुक्ख सूलैं ॥
परी तूटि चूँरीतती[12] जेबैंपूर्ती[13],

(१)देवीका नख रूप चन्द्रमा सदैव दुष्टोंको नाश करने वाला है इसीसे तारीफके योग्य है॥११७॥(२)इन्द्रादिक (३)रुधिर (४) कपट से ॥ ११८ ॥(५) वैसेही आकर निश्चल हुई (६) तृषा (प्यास) (७) हे पार्वति तुझको नमस्कार होओ (८) कटिभूषण विशेष (९) मानों सपत्नी होनेसे शत्रु के सहायार्थ आकाशगंगा गिरीहै (१०)भय से महिषासुर के कांपने पर ॥ ११९ ॥(११)हर्ष से अंगों के फूलने पर(१२)नव ग्रह [सूर्यादिक] (१३) चूड़ियों की पंक्ति [चूड़ा] (१४) शोभा से भरी हुई

मचावै इतै उक्ति साहित्यमूर्ती ॥१२०॥
भलो भार भूनैं सह्यौ भाव भीनी,
कृपाकैं मनौं चेडि भू तीय कीनी ॥
करे पुंपती के परचौ नाहि पूरो,
चरचौ दुक्ख तोकौं यहैं मोर चूरो ॥१२१
कुमार क्रुधा तार्कको नास कीन्हौ,
यहै ह्यां भयो ह्यां रह्यौ यांहि पीन्हौ ॥
हैयो शृंग फट्टे त्रिहूँ शृंग दोनौं,
दये पुत्रकौं दंतकाजें न रोनौं ॥१२२॥
लसैं हस्तफुल्ल प्रहस्त प्रलाल्ली,

[१] साहित्यके मूर्तिरूप [कवि] ॥१२०॥ [२] पृथिवी ने [३] पृथिवीको देवीने स्त्री नौकर (दासी) करली (४) इसने कितने ही पुरुष पति किये परन्तु (५) दुःखने तुझको खाई (दुबली हुई) (६) इससे मेरा चूड़ा पहिर ले॥ १२१ ॥ (७) स्वामिकार्तिक ने क्रोधसे तारकासुर को मारा था (८) यह कुमार इस उदर में हुआ (९) इस छाती पर रहा (१०) इन स्तनों को पिया (११) इन हेतुओं से ईर्ष्याके साथ महिषासुर ने सींगका प्रहार दिया (१२) जिस से तीनों उदर-हृदय, स्तन फटगये (१३) माता ने दोनों सींग उखाड़कर (१४) पुत्र गणेश को दिये और हे पुत्र तू एकदन्त होनेसे रुदन मत कर ऐसा कहा॥१२२॥ (१५) हथफूल नामक भूषण शोभते हैं (१६) फैली हुई आंगुलियोंवाला हाथ (१७) बहुत है अलता जिसमें. क्योंकि हाथ से लगाया करते हैं.

तमस्तोम[1] भीरयौ ससी[2] सूर साक्षी,
अटी[3] दुष्टकी शंग कोटी[4] अतुल्या[5] ॥
कढी कालिका अंघ्रिके[6] श्रोनकुल्या[7]॥१२३॥
धुनी[8] कृष्णापज्जा[9] सुनी तीनि[10] धारैं,
सिवा[11] नाम कृष्णा[12] तुला क्यौं बिसारैं ॥
कटाक्षौलि[13] नेत्रंत्रयीतैं[14] कढी क्यौं,
तकैं फेर ना फेरु[15] लोकत्रयी[16] त्यौं॥१२४॥
मरोरी[17] क्षुधा भ्रूलतौं[18] युद्ध मत्ती,
कवी दुष्टके शृंग है रोसरत्ती[19] ॥
सजे भेजि[20] मुक्ता न त्यौ मांग सूनी,
दिपी रक्त[21] सिंदूर जेबास[22] दूनी ॥१२५॥

---

(१) अंधकार का समूह (२) चन्द्रमा और सूर्य सबूत देनेवाले हैं (३) चली (४) सींगों का अग्रभाग (५) अपार (६) पैर से (७) रुधिर की नहर ॥ १२३ ॥ (८) नदी (गंगा) (९) विष्णु के चरण से पैदा हुई (१०) तीन धारा स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में बहनेवाली (११) दुर्गा (१२) काला वर्ण वा विष्णु के सादृश्यको क्यों भूले (१३) कटाक्षों की पंक्ति (१४) तीनों नेत्रों से (१५) श्रृगाल के जैसा शत्रु (महिषासुर) (१६) तीन लोकों को ॥ १२४ ॥ (१७) मरोड़ी (टेढ़ी करी) (१८) दोनों भृकुटियों को. युद्ध में मतवाली (१९) क्रोध से लाल (२०) भेजी रूप मोती (२१) रुधिर रूप सिन्दूर (२२) द्विगुण शोभा॥ १२५ ॥

स्तुती आँ[1] प्रकासी परयौ पुच्छ फेरैं,
करयौ चौरं[2] नीकौ भलौ अंत[3] हेरैं ॥
वृहत्कुक्षि[4] कौमार[5] आखू[6] विलासी,
विसादी[7] सु सूली[8] स्मसानस्ववासी॥१२६॥
भवानी भुजारेन्यभ्रामी[9] संभीती[10],
रु नेत्राग्नि[11] दुर्दाव त्रासी कुनीती ॥
दई लत्त दुर्गा सु दुष्टासुचाही,
गयो पंक[12] पाताल भो भेदग्राही[13] ॥१२७॥
षडास्य[14] त्रसें क्यौं कहैं क्रुद्ध छाक्यौ,
तृषा तो प्रसू[15] श्रोन त्यौं तोहि ताक्यौ ॥
मुधा[16] मात तैं शत्रुकौं विध्य मान्यौं,

(१)"आँ" इस शब्द से स्तुति प्रकट की (२) चामर किये (३) मरने के समय (४) गणेश (५) स्वामिकार्त्तिक (६) चूहे से खेलते हैं वा भय से चूहे के बिल में छिपने की आशा करते हैं (७) जहर खानेवाला (८) महादेव ॥ १२६ ॥ (९) देवी के भुजा रूप वनमें फिरनेवाला (१०) भय सहित (११) नेत्र रूप अग्नि (१२) कीचड़ (१३) भेद नामक उपाय का ग्रहण करनेवाला ॥ १२७ ॥ (१४) हे स्वामिकार्त्तिक (१५) माता के रुधिर से (१६) वृथा.

खस्यौ सत्रु तो अंघ्रिसौं विंध्य जान्यौ१२८
अनन्यप्रभा अन्य अन्योन्य ईख्यौ,
संभारौं तुला हौं गुरूसौं ज्ञु सीख्यौ ॥
भिस्यौ दुष्ट तो भीतिभानैं भमायौ,
भवा स्त्रीत्विभा भ्रांत्यलंकार भायौ।१२९।
लखे सँस्य पूरे हरित् अस्व लीले,
सजातिस्पृही सौरि यूं कीन ढीले ॥
गिन्यौ कृष्ण जंबाल कांसार पासी,
खस्यौ थांनुसौं ह्यां महानींद भासी १३०
धर्यौ ध्यान धाता धनाधीस पासी,
वृषा वन्हि माहू वृथा आयुनासी ॥

(१) शत्रु ने तेरे पैर से शरीर रगड़ा इससे विन्ध्याचल जाना ॥ १२८ ॥ (२) नहीं है दूसरे के साथ कान्ति जिस की (३) सादृश्य (४) भय की शोभा ने (५) देवी (भवकी स्त्री) (६) तेरी स्त्री पनकी शोभा ॥ १२९ ॥ (७) घास के पूले (८) हरे वर्णवाले घोड़ों को लेलिये (९) शनैश्चर के वाहन महिष होने से ईर्ष्याकरने वाला (१०) शनैश्चर (११) विष्णुको कीचड़ समझा (१२) वरुण को तालाव (१३) महादेव रूप ठूंठ से अपना शरीर रगड़ा(१४)थककर बड़ी नींद में सोगया अर्थात् मरगया ॥ १३० ॥ (१५) ब्रह्मा (१६) कुबेर (१७) वरुण (१८) इन्द्र (१९) यमराज

खिसे लोकपालत्व[1]सौं पंच खाली,
लयौ लोकपालत्व काली[2] नखाली १३१
डसे ओठ[3] क्रुद्धा असूवाँ[3] अरीके,
उठ्यौ अंघ्रि[4] कै सल्य गिर्वानहीके ॥
भयो नूपुर[5] व्यूढ वाचाल भारी,
सुभा हेरि हृष्टा[6] त्रिलोकी मुरारी[7] ॥१३२॥
कलंकी हुहो फेर है[8] क्यों कलंकी,
नसैं तू हरी[9] क्यों लुलायंपसंकी[10] ॥
तजैं अप्पती[11] धैर्य तूं चन्ड धावैं,
डरैं युग्य दंडी[12] कुकासु डरावैं ॥ १३३ ॥
धुजातो अनेकान क्यौं वात[13] धूजैं,

---

(१)लोकपालपना लिया(२)देवीके नखोंकी पंक्तिने॥१३१॥ (३)प्राणोंको(४)देवीका पैर क्या उठा मानों देवताओंके हृदयका कांटा निकलगया(५)पांयजेब (नेउर) (६) तीन लोक प्रसन्न हुए (७) विष्णु ॥ १३२ ॥ (८) हे चन्द्र! तू गुरुपत्नी के साथ व्यभिचार करने से कलङ्की हो चुका फिर युद्ध से भागना रूप कलङ्कवाला क्यों होता है (९) हे सूर्य तू क्यों डरता है (१०) भैंसे की शंका करनेवाला (घोड़े का शत्रु होने से) (११) हे वरुण (१२) हे यम! निन्दित भैंसेको वाहन माननेवाला ॥ १३३ ॥ (१३) हे वायु!

जपैं चंडि जो पै परे पैर पूजैं ॥
हनौं सूलतैं दंडतैं चक्रतैं क्यौं,
बकैं सूलिनी दंडिनी चक्रिनी त्यौं॥१३४॥
धरौं खग्गकी तो अहै पानिधारी,
महाजोगमाया तबैं पाँर्ष्णि मारी ॥
लरैं नारि मो सूल त्यों सूल लीनौं,
बडी आश्रवा लत्त दैं जीव लीनौं।१३५।
जटी तुष्टहैंहैं दसा वृद्ध जो हैं,
त्रसैं क्यौ षडास्य प्रसू अन्य तो हैं ॥
वन्यो विघ्नराजा वनौं विघ्नि विन्नौ,
खिलीअंबैं भो लत्तसौं प्रान खिन्नौं।१३६।
कृपाकैं न कंपैं करैं विश्वकर्मा,

(१) देवी कहती है (२) शूल धारण करने वाली ॥ १३४ ॥ (३) जल को धारण करनेवाला (खड्ग) (४) एडी (५) मेरे हृदय में यह शूल है कि स्त्री मुझ से लड़ती है (६) कथन मानने वाली ॥ १३५ ॥ (७) महादेव (८) हे स्वामिकार्त्तिक तेरे माता अन्य (गंगा) है (९) गणेश (१०) क्रुद्ध होकर देवीने लात से प्राणों का नाश किया ॥ १३६ ॥ (११) दया करके (१२) देवताओं का कारीगर यदि बनावे.

सजैं शृंगभू सार्ङ्ग सार्ङ्गी सुसे[2]र्मा ॥
जंटी जुस्य नव्य त्वचा पूर्व जीर्णा,
कहैं कालिका देखि हँनूमेदकीर्णा॥१३७॥
वली[5]ध्वस्त मध्यांग भो चापं[6] तान्यौ,
कढ्यौ बान कौकौ कक्कैं कालँ[7] जान्यौ॥
सप्र[8]ल्हाद भो स्वस्थ[9] प्रत्यर्थि[10] पायो,
गिर्यौ सैलजा[11] गर्जि पद्मेस[12] गायो ।१३८।
नहीं वह्नि[13] निर्वानं[14] निर्बान[15] विष्णु,
सुनासीर[16] नासीर[17] ना पीर[18]जिष्णु ॥

(१) विष्णु भी सींग से पैदा हुए शार्ङ्ग नामक धनुष को यदि धारण कर लेवें (२) अच्छा है आनन्द जिस के (विष्णु) (३) हे महादेव तेरे इस महिषासुर की चर्म सेवा करने योग्य है क्योंकि पहिली गजासुर की चर्म तो पुरानी पड़गई (४) महिषासुर के टूकड़े और चरबी सहित (देवी) ॥ १३७ ॥ (५) देवीके कमर की त्रिवली (तीनों रेखाएँ) मिटगईं (६) जिस वक्त धनुष चढाया (७) उस बाण को देखनेवालों ने या महिषासुर ने यमराज जाना (८) वह शर आनन्दित हुआ (९) स्थिर (१०) शत्रु (११) देवी ने महिषासुर के गिरने से गर्जना की (१२) पद्मसिंह कवि ॥ १३८ ॥ (१३) महिषासुर कहता है हे अग्नि तू (१४) निर्वाण नहीं अर्थात् बुझा नहीं (१५) विष्णु बाण रहित हुआ (१६) हे इन्द्र (१७) तेरा सेनापति (१८) पीड़ा को जीतनेवाला नहीं है.

न दीन ग्रहैं दीनता कौन अब्धिं,
कहूं ना लई तैं लई जीतलब्धि ॥१३९॥
विधीसाम ऐरावती दान रोक्यौ,
झुक्यौ भेद चक्री रु ना चक्र जोक्यौ,
धरयौ दंड दूरो सदा दंडधारी,
हर्रा च्यारहूँ हेरि पार्ष्णि प्रहारी ॥१४०॥
सिटायौ महासांबरी सत्रुसांता,
मची मारिनी मृद्ध हेरम्बमाता ॥

(१)तू दीन नहीं है किन्तु (नदीइन) नदियों का पति है और कौनसी दीनता ग्रहण करता है [२] हे जल के भडार समुद्र अर्थात् हे वरुण(३)तूने कहीं भी जीतकी लब्धि न पाई अथवा तू ने जीत पाई यह मैं कह नहीं सकता ॥ १३९ ॥ [४] ब्रह्माने सामवेद और साम उपाय को छोड़ा [५] इन्द्र ने दान उपाय और अपने हाथी के मद जल को रोका [६] विष्णु भेद उपाय से अथवा महिषासुर सम्बंधी सींग के प्रहार के भेद (फन्दे) में झुकगया और अपना चक्र (सुदर्शन) न चलाया(७)यमराज ने भी दंड उपाय और अपने शस्त्र दण्डको दूर रखादिया(८)देवी ने चारों देव (ब्रह्मादिक) और चारों उपाय (सामादिक) देखकर एडी का प्रहार किया ॥ १४० ॥ (९) बड़ा ऐन्द्रजालिक(१०)शत्रुओं को मारनेवाली (देवी) (११) युद्ध में देवी

भलो[1] सुभ्र भो भूरि भाखी[2] भवानी,
भयो वृद्ध[3] भृंगी जुरयौ नव्व[4] जानी।१४१।
बडी [5]वज्रिता [6]चक्रिता हू विराजै,
[7]सुसाक्तीकता [8]सूलिता वास साजै ॥
तहां [9]पार्ष्णिाता [10]ईसिता [11]कोटिधाभा,
[11]उमा आपके अंघ्रिकी अब्ज आभा १४२
जुरयौ एकही [12]चक्रको चक्रि जाकौं,
[13]हरी जोरि [14]हीने कहैं [15]पंगु हाकौं ॥
टरयौ [16]टोकतैं [17]अर्क संपर्क टारयौ,
[18]भवा भूख भारी भक्यो [19]भक्ष्यभारयौ १४३
कितैं वज्रनिर्मान[20]कारी कुकाया,

---

(१)भयसे महिषासुर सफेद हुआ(२)देवीने बहुतकहा(३) नंदिकेश्वर बैल बुड्ढा हुआ(४)हे पतिनवीन बैल मिलगया ॥१४१॥(५]इन्द्रपना(६)विष्णुपना(७) स्वामिकार्त्तिकपना (८) महादेवपना (९) देवी के एडीपने ने स्वामिपना पाया(११)करोड़ प्रकार की है कान्ति जिसकी(११)हे देवी आपके चरण की शोभा कमल सदृश है ॥ १४२ ॥(१२) एक पहिये का रथ(१३)घोड़े(१४)जोड़ी से विषम अर्थात सात हैं(१५)पांगला अरुण नामक सारथि(१६)बतलाते ही टल गया(१७)सूर्य ने महिषासुर का सम्बन्ध छोड़दिया(१८)देवी के(१९)महिषासुर रूप खाने योग्य पदार्थ खाया ॥ १४३ ॥(२०) वज्र का अनादर करनेवाला है

महा कोमलांघ्री कितैं जोगमाया ॥
भलो का भलो है भमैं भाग्य भारी,
सथ्यो कोमलांघ्री नमो भंगनारी ॥१४४॥
जुरे शृंग जलांगं पत्रांग जैसे,
लसे लोन लोने तिलब्रातै तैसे ॥
कही भोजि मपूर कपूरकारी,
भलो होम भावो भलो भीमभार्या ॥१४५॥
वडी जुद्धकों क्रुद्धकें उद्धंगीग,
भई गोनभा श्रोनतैं श्रोन भीगै ॥
ठई ठीक संध्या पढ़ै चित्त ठान्यौ,

कुत्सित शरीर जिस का ऐसा कठोर शरीर महिषासुर कहाँ? (१) और बड़े कोमल चरणों वाली श्रीदेवी कहाँ! (२) सब और अच्छे का क्या अच्छा होना है (३) जब कि भाग्य इकट्ठे हो जाते हैं (४) कोमल पैरसे ही मारा (५) महादेव की स्त्री (देवी) को मेरा नमस्कार है ॥ १४४ ॥ (६) जिस अंगमें सींग था (७) लाल चंदन के जैसे (८) सुन्दर रोम रूप (९) तिलोंके समूह के जैसे (१०) यह कपूर का काम देनेवाली है (११) अच्छा होम पाया (१२) हे भीमभार्या महादेव की स्त्री ॥ १४५ ॥ (१३) बड़ी वीर (देवी) (१४) आकाशकी शोभा रुधिर से लाल हो गई (१५) भय को देनेवाली.

जटीनैं[1] जहां नंच्चनो[2] जोग्य जान्यौ ।१४६।
लगी उच्चसौं मुंड्मैं[3] लत्त लीनी,
छुयो[4] ओठनै पेट त्यौं पेट छीनी ॥
जनौ हस्त[5] जोरैं दुहूं अंघ्रि ऐसे,
कह्यौ काल[6] पीछैं बन्यौ नम्र कैसे।१४७।
जुड्यौ जुद्ध इंद्रादि संवर्त[7] जान्यौ,
महाजोगमाया सुधार्मन्यु[8] मान्यौ ॥
फस्यौ नूपुरं[9]प्रान्तमैं शृंग प्रेर्‌यौ,
हंस्यौ[10] रत्न जान्यौ भर्‌यौ हर्ष हेर्‌यौ १४८
जुरी जुद्ध जीर्नौ[11] जथा रोस जाकौ,
तक्यौ अंघ्रिउर्गेस[12] आपूज्य ताकौ ॥

---

(१)महादेवने(२)नृत्य करना॥१४६॥(३)(महिषासुरके) मस्तकपर कोमल लात मारी (४) जिस से होठने पेट का और पेट ने पृथिवी का स्पर्श किया (५) जो दोनों अंगोंड़ी के पैर हैं वे तो दोनों हाथ जोड़े हुए हैं (६) समय गये पीछे कैसा नम्र हुआ ॥ १४७ ॥ (७) प्रलयकाल जाना (८) निष्फल है क्रोध जिस का ऐसा (महिषासुर को) माना (९)नूपुर के अग्रभाग में उसका चलाया हुआ सींग फसगया (१०) जो मानों हरे रंगवाला रत्न जाना और महिषासुर ने आनन्दित होकर देखा ॥१४८॥(११)वृद्ध (१२) देवीके चरण को वासुकि ने सब

जथा नूपुरीजुग्मकी जेब जग्गी,
मनों कीह्न पारिक्रमा धर्ममग्गी ॥१४९॥
अक्ष्यो बान अर्दी अमा अर्क ऊग्यो,
प्रभा पीत पक्षालि पाताल पूग्यो ॥
जम्भक्यो जु नागेस नागारि जान्यौं,
पुँरारी मुरारी सुरारी पिछान्यौं॥१५०॥
हसीकेस तो चक्र का केस मोरे,
तरूसूलसो सूल सूली न फोरे ॥
· त्रिभा बज्र बंजी जथा दन्तबज्जा,

तरह पुज्य समझा (१) शोभा प्रकट हुई (२) मानों धर्म के मार्ग में चलनेवाले ने परिक्रमा दी ॥१४६॥ (३) पीड़ा देनेवाला [४] अमावास्या में उदय हुआ मानों सूर्य है (५) पीली है कान्ति जिसकी और पांखों की पंक्तिवाला (६) वासुकि चमका और उस को गरुड़ जाना(७)पहले महादेव का, तदनन्तर विष्णु का और पीछे महिषासुर का क्रम से पहिचाना हुआ था (वो बाण)॥ १५० ॥ (८) हे विष्णु! तेरा सुदर्शन चक्र तो मेरा क्या एक केश भी मोड़सकता है? अपितु नहीं (९) हे शूलवाले महादेव तेरा त्रिशूल तो बंबूलके शूलके जैसा है (यहां शूलके संबन्धसे तरुसे बंबूल का ग्रहण करना) इसलिये मेरा शरीर नहीं फोड़ सकता (१०) हे इन्द्र! तेरे बज्रकी शोभा तो बज्रदन्ती औषधिके समान अल्प

त्रिसूलाग्र जीहैं लहूं बैर ध्रज्जा ॥१५१॥
तुही सारदा सारदा पारदात्री,
तुही तारदा हारदा दारदात्री ॥
तुही तारदा पीरदा छीरदेनी,
तुही धीरदा हीरदा भीरदेनी ॥ १५२ ॥
कहूँ सोहनी मोहनी कोसकर्त्री,
कहूँ तारनी पारनी तोसकर्त्री ॥
तुही तंत्रिके तंत्रकों तानदैनी,
तुही मंत्रिके मंत्रकों मानदैनी ॥१५३॥

सुखकारी है (१) पाया है त्रिशूल जिस ने ऐसी देवी (२) तीनों देव अर्थात् विष्णु, महादेव, इन्द्र, इनका वैर लेनेकेलिये (३) ध्रज् नाम ज्ञानको रा नाम देनेवाली अथवा लेनेवाली॥१५१॥ (४) सरस्वती (५) उत्कृष्टको देनेवाली (६) संसार रूप समुद्रसे पार देनेवाली (७) चांदी देनेवाली (८) (हार) जो कण्ठभूषण मोतियों का उसको देनेवाली (९) स्त्रीको देनेवाली (१०) बाण देनेवाली (११) पीड़ा देनेवाली (१२) दूध देनेवाली (१३) धैर्य्य का देनेवाली (१४) हीरी देनेवाली (१५) लोटा अथवा सहायता देनेवाली ॥ १५२ ॥ (१६) खजाना करनेवाली (१७) संसार समुद्रसे भक्तों को तिरानेवाली (१८) प्रसन्नता करनेवाली (१९) सिद्धान्तवालों के सिद्धान्त को खैंचनेवाली (२०) सलाह करनेवालों की सलाह को सत्कार देनेवाली ॥ १५३ ॥

सुभा[1] सूर[2] सूरी सु[3]सौरी सँवारे,
रचे रासि[4] नच्छत्रि[5] नच्छत्र[6] न्यारे ॥
रचे रोहिनी[7] रोहिनीनाह रम्या[8],
नचे ज्यौं रचे त्यौं सचीनाह नम्या[9]॥१५४॥
बनौं[10] औ बनी वन्हि स्वाहा बनाये,
जमं[11] त्यौं जमी है जथा जोग जाये ॥
तनै नैर्रुती[12] नैरूत न्युब्जनीती[13],
उँये[14] वारुनी[15] वारुन स्वस्थईती[16] ॥१५५॥
समारी समीरी[17] समीर स्वसर्मा[18],

---

(१)हे सच्ची शोभावाली देवी! तूने ही(२)सूर्यको और सूर्य की स्त्री छाया को (३) अच्छे उनके बेटे शनैश्चर को भी तैयार किया(४)मेष आदि द्वादश राशियों को (५) नक्षत्रवाले आकाशादिक (६) अश्विनी आदि नक्षत्रों को पैदा किया (७) रोहिणी नामक चन्द्रमा की स्त्री (८) हे सुन्दरी! चन्द्रमा को बनाया (९) हे इन्द्र और इन्द्राणी के नमस्कार करनेयोग्य! ॥ १५४ ॥ (१०) दुलहा और दुलहन(११)यम और उसकी स्त्री यमी दोनों को (१२)राक्षसी और राक्षस(१३)कुटिल है नीति जिनकी (१४)उत्पन्न हुए (१५) दोनों वरुण और वरुण की स्त्री (१६) अतिवृष्टि और अनावृष्टि रूप ईतिको शान्त करनेवाला ऐसा वरुण ॥ १५५ ॥(१७)तूने ही पवन की स्त्री और पवन को सँवारे (१८) अपने सुख के वास्ते.

करे त्यौं कुबेरी कुबेर प्रकर्मा ॥
बडो लोकध्वंसी वदैं बेद वातैं,
कह्यौ लोकपापद्धती लो कृपातैं॥१५६॥
कँपाली पसूपाल भूतेस कैसो,
जटी कृत्तिवासा विरूपाक्ष जैसो ॥
सिवा संकरी स्वीय संज्ञा सजाई,
भरी भाव भारी करी भाव भाई॥१५७॥
प्रभा पूर्न पेखे स्तन द्वै धँनपा,
तकैं होन इंद्रादिदेव स्तनंपा ॥
हँरो आय भौ आपपै पँद्म हेरे,
त्रिलोकी चढ़ैं सीस हस्ताब्जं तेरे॥१५८॥

---

(१) प्रकृष्ट है कर्म जिसका (२) जगत् को नाश करनेवाला (शिव) (३) लोकपालों के मार्ग में ॥ १५६ ॥ (४) कपाल (खप्पर) धारण करनेवाला, (५) पशुओं की रक्षा करनेवाला (६) भूतों का स्वामी (७) जटावाला (८) गजासुर का चर्म है वस्त्र जिसके (९) डरावने तीनहैं नेत्र जिसके (१०) कल्याण रूप (११) कल्याण करनेवाली (१२) अपना नाम (१३) भावना से भरी हुई तू (१४) अभिप्राय में आया जैसा किया॥१५७॥ (१५) बहुत पीने के वास्ते (१६) इन्द्रादिक बालक होना चाहते हैं (१७) हे देवी आपके पास आकर मैं प्रसन्न हुआ (१८) पद्मसिंह कवि (१९) तीनों लोकों के सिर पर

कहूँ हूँ कवैं हूँ कछूहू न कीनी,
स्तुती काहुकी भो भवा[1] भावभीनी[2] ॥
हेरेहूँ जहांहूँ सुभा[3] वृत्ति हेरी,
स्तुती कीन्ह विधयादि[4] कृष्णादिकेरी॥१५९
जथारामकै[5] रामकै क्रोध जग्यो,
न अन्योन्य[6] श्रीमूर्तिपैं[7] पौन पग्यो ॥
जु कृष्णादिनै[8] न्यूनवृत्ती जमाई,
उमा[9] आपमैं स्वप्नहूँ[10] मैं न आई ॥१६०॥
विरूपाक्षनी[11] तू विरूपाक्षैं[12] वीखैं,
अपांगालि[13] आयो चतुर्वर्ग[14] ईखैं ॥
कैहैं[15] ना रहैं ना बनैं काव्यसुद्धी,

तेरा हस्तक कमल है॥१५८॥(१)हे देवी!(२)भक्तिसे भरी हुई स्तुति किसी की भी न की (३) जहां मैंने अच्छी भाववाली वृत्ति देखी (४) ब्रह्मा आदि देवों ने कृष्ण आदिकों की स्तुति की है॥१५९॥ (५)जैसा श्रीरामचन्द्र और परशुराम के आपस में क्रोध उत्पन्न हुआ (६)वैसा आपस में (७) आपकी मूर्ति [देवियों के] ऊपर क्रोध रूप पवन न पड़ा (८) माखन की चोरी आदि (९) हे देवी!(१०)स्वप्नमें भी॥१६०॥(११)हे विरुद्ध तीन नेत्रवाली (देवी) तू(१२)विषम तीन नेत्रों से देखे(१३)कटाक्षों की पंक्ति में हुआ(१४)चार वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को देखते हैं (१५) यदि कुछ भी न कहैं और चुप

वन्यौं पंर्व औरैं रु हौं खर्व बुद्दी॥१६१
छिलैं ना छितीं छोंकिकैं छद्म छीजैं,
कृती पद्मँ हीपद्मको सद्म कीजैं ॥

॥ दोहा ॥

कृपा अतुल पा अंबकी, पायो पद्म सुपंथ ॥
ताके प्रबल प्रतापतैं, पूर्न भयौ यह ग्रंथ ॥१६२॥

॥ छंद मदनर ॥

वात महाभारतकी भारतकवींद्र करी,
भूरि बालभारतकौं विविधं विचार्यौ मैं॥
चौंपकरि चारु पूचभारतकौं चाह्यौ चित्त,

लेकर बैठजावैं और रचना न करैं तो काव्य नहीं बनता यदि रचना करैं तो शब्द शुद्धि नहीं आती अर्थशुद्धि तो दूर रही(१)समय तो और ही बना अर्थात् बड़े बुद्धिका समय है(२)और मैं अल्प बुद्धिवाला हूं ॥१६१ (३) यदि घमंड न करे (४) पृथिवी पर (५) इन्द्रियों विषयों से उन्मत्त होकर (६) तो कपट का क्षय होजा (७) कवि पद्मसिंह के (८) हृदय रूप कमल का करलीजिये ॥ (९) बहुत (१०) देवी की (११) पद्मसिंह कविने यह अच्छा मार्ग पाया ॥ १६२ ॥ (१२) कविराज भारतदानजी ने (१३) बहुत बार (१४) अनेक तरह से (१५) सुन्दर भारतचंपूको

कुलपतिविप्रको संग्रामसार धार्यौ मैं ॥
चारन स्वरूपदास बुद्धिखास कीनी चाहि,
पांडवयसेंदुचंद्रिकामैं पैन पार्यौ मैं ॥
बूंदीवासी चारनसूर्यमल्लनैं बनायौ बर,
ग्रंथ वंसभास्कर सु निर्पट निहार्यौ मैं१६३

॥ दोहा ॥

पंचग्रंथ पूरब परखि, बीनी बेर बर बत्त ॥
ग्रंथवंसभास्करहिकी, रचना रीति सुरत्त॥१६४॥
नगर जोधपुर उदधिनर, मरू मुल्लक जुतमोद ॥
जाहर नृपजसवंत जित,बन्यौं जु बीरविनोद१६५

॥ सवैया ॥

अंष्ट जु जाम ति ऊमर अंब्द हैं,
अर्थ जु क्लिष्ट दिठोना धरैंगौ ॥

---

[१]कुलपति नामक ब्राह्मणका बनाया हुआ संग्रामसार नामक भाषाग्रंथ (जोकि द्रोणपर्व की छाया से बनाहै) [२]बुद्धिका भंडार(३)प्रतिज्ञा(४)खूबदेखा ॥ १६३ ॥ (५) अच्छी अच्छी बातें (६) खूब आनन्द होकर ॥ १६४ ॥ (७) मनुष्यों का समुद्र (८) मारवाड़[६] हर्ष सहित ॥ १६५ ॥(१०)कवि ग्रन्थमें बालकपन का आरोप करके सत्पुरुषों से अपने अभीष्ट की प्रार्थना करता है कि जो इस में आठ याम हैं (११) वे ऊमर के आठ वर्ष हैं १२)जो गूढ अर्थ है वह दिठौना धारण करैगा.

हर्षित[1] हेरन वाह[2] प्रपेरन,
दुग्ध[3] सिता परि पुष्टि भरैंगो ॥
भूषन[4] भूषन छंद[5] झगा वर,
व्यंग[6] सु ताज लिये विहरैंगो ॥
च्यारहुँ[7] कोद कृती मतिगोदमैं,
वीरविनोद[9] विनोद करैंगो ॥ १६६ ॥

॥ दोहा ॥

दधि[10] दधि निधि[11] रु कलानिधी[12],संवत्सर[13]पहिचान

माता बालकों के आँख में काजल आंजकर उस के ललाट वा कपोल पर दृष्टिदोष (नजर) न लगने के लिये कुछ काजल का काला चिन्ह करदेती है उसको दिठौना कहते हैं (१) श्रोतृजनों का प्रसन्न होकर देखने रूप (२) और उनके प्रशंसा की प्रेरणा रूप (३) क्रम से दूध और मिश्री से अपने शरीर को अत्यन्त पुष्ट करैगा. (४) यहां उपमादि जो अलङ्कार हैं वे कड़े आदि गहने हैं (५) सोरठा, मनोहर, मुक्तादामादि छन्दों रूप कुड़ता (झगा) को धारण करके (६) उत्तम उत्तम जो ध्वनि है उस टोपी को धारण करके खेलेगा (७) चारों दिशा रूप (८) चतुर पुरुषों की बुद्धि रूप गोद में (९) वीरविनोद नामक ग्रन्थ (कर्णपर्व) रूप बालक खेलैगा ॥१६६॥ (१०)चार और चार(११)नौ (नव) (१२) और चन्द्र नाम एक (१३) सँवत् १६४४ विक्रमादित्य के राज्य से

श्रावनसुक्कासप्तमी, मंगलवासर मान ॥१६७॥

॥ अष्टमयाम सूचीपत्र ॥

(*) अरजनने करणातणों अत आहव, जुजठल गो रिणु भगैं जियार ॥
रथपेंडो काढत क्रन रटियो, वर वर चिरतांरो विसतार ॥ १६८ ॥

(१)श्रावण सुदि७सातम(२) और मंगलवार के दिन यह ग्रंथ समाप्त हुआ ॥ १६७ ॥ (३)बहुत युद्ध (४) युधिष्ठिर जिस वक्त युद्ध मे भग गया (५) रथका पहिया जमीन मे बाहिर निकालते कर्ण ने अपने अच्छे चरित्रोंको याद किया ॥ १६८ ॥

॥ दोहा ॥

(*) मंरुवाणी मांहे सुणू, नाम वेलियो नेक ॥
सुणेंही चारण जात मम, कँवियण सुण सुण केक॥१॥

(वेलिया नामक गीतका लक्षण)

पैंहली झड़ मात अढारह पुणजे, रुच दूजी झड़ पनरह राख ॥ तीजी झड़ सोलह मात्रा तव, भल बीजी

(१) मारवाड़ देशकी भाषा में कहता हूं (२) नाम इस छंद का "वेलिया" है (३) अच्छे वेलियादिक छन्दों को कविलोक गीत कहते हैं. (४)मेरी चारण जाति भी कहेगी(५)कितनेही कविजन सुन सुन कर॥१॥ (६) पहले चरण में अठारह मात्रा कहनी (७) अपनी रुचि से दूसरा चरण पंद्रह मात्रा का रखना (८) तीसरा चरण सौलह मात्रा का कह (९) अच्छे दूसरे चरण के जैसा चौथा चरण जानना.

केही करण अकारज कीधा, सह वे उठै सि-
वँरिया सूर ॥
इद विदिया पथ क्रननूं हणियो, कहर गरब
पथ कीध करूर ॥१६९॥
करण मरणरा कारण कहिया, उठै किसन
पख छोडै आप ॥
करण मरणरो शोक कहर, किय बुध धृतरा-

(१)अकार्य(२)अर्जुन ने कर्ण को मारा(३)कर्णको मारकर अर्जुनने बड़ा क्रूर गर्व किया॥१९१॥(४)वहां श्रीकृष्णने पक्ष छोड़कर कर्णके मरनेके कारण कहे(५)बुद्धिसे धृतराष्ट्र

जम चोथी भाख ॥ १ ॥ आहिज रीत समझणी आगै
अगै दुहा पहली झड़ एम ॥ सोलह मात्रा तणी सँवारै,
जेपजे त्रिण पहली तिण जेम ॥ २ ॥ इणविध दुहा थि-
यांसह आखे, बीजी चोथी अंतनिचाल ॥ गुरू एक लघु
एक उठै गुण, मनमोहर इण विधिसूं भाल ॥ ३ ॥ मो-
हरो सुरवाणीरै मांहे, छै अन्त्यानुप्रास अनेम ॥ पुण प-
हलड़ा कविअणां पुणियो, मरुवाणी मांहे जुतनेम ॥४॥

(१)अगाड़ी(२)अगाड़ी के शेष तीन चरण पहले तीन चरणोंके जैसे जानना(३)चार चार तुकोंका एक एकवाक्य अन्त तक सब कहे जाना(४) दूसरे और चौथे चरण में यह विचार करना(५)अन्तमें पहले गुरु१पीछे १ लघु जानना.(६) अन्त्यानुप्रास इसतरह जानना (७) देववाणी (संस्कृत) में (८) उस मोहरे का(९)संस्कृत में अन्तमें मोहरा करने का नियम नहीं कवि की इच्छानुसार है (१०) पहली के कविजनों ने मरुभाषा मों नियम से मोहरा लाना कहा है सो तू नियम से कह.

छ्र दुर्जोण विलाप ॥१७०॥
अजण भीमथी नृप आफळियो, मरिया क्रन विलाप नृपमाय ॥
पथ सनमान कान्ह हद परठै, जुंजठल कीन कान्ह स्तुति जाय ॥ १७१ ॥
करण तणां मरसया कहिया उसड़ो भड़ बांको कुण आन ॥
कलह कथा पूरण कहदी धी, सुकव पदम पायो सनमान ॥१७२॥
इतिश्रीमच्चंडीचरणारविन्दचित्तचंचरीकचार-

और दुर्योधन ने कर्ण के मरने का शोक और विलाप बहुत किया॥१७०॥(१)दुर्योधन राजा अर्जुन और भीमके साथ शक्ति के सिवाय लड़ा(२)गान्धारीने कर्णके मरने पर विलाप किया (३) श्रीकृष्ण ने अर्जुन का सन्मान किया(४)युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण के पास जाकर स्तुति की॥१७१॥(५)कर्णके मरण सूचक पद्य (मरसया)कहे गुणग्राहियों ने(६)वैसा (कर्ण सदृश) भट बांका कौन था (७)युद्ध कथा सम्पूर्ण कहदी(८)पद्मसिंह कविने सत्कार पाया अर्थात् श्रोतृजनों से और, मुख्य महाराज रामसिंहजी से ॥ १७२ ॥

इति श्रीमती चंडी के चरणारविंद में है चित्त रूप

णावासाभिधेयचारुसंवसथवास्तव्यचारणचक्रच-
क्रवाकचंडांशुजाज्वल्यमानकाव्याज्ञत्वज्वाला-
ज्वलज्जगज्जीवजुष्टजयजीवनबलूंदाख्यग्रामठकुर-
जीवनसिंहप्रतोलीपालवंशभास्करप्रबन्धप्रणेतृ-
मिश्रणकुलोद्भूतश्रीसूर्यमल्लशिष्यपातावतशाखा
प्ररूढजगरामात्मजपद्मसिंहप्रभाषितकर्णपर्ववि-
भाविभूषितवीरविनोदे अष्टमयामयुद्धं संपूर्णम्॥

अमर जिसका, चारणवास नामक सुंदर ग्राम का नि-
वासी, चारण समूह रूप चकवों के लिये सूर्य रूप, जा-
ज्वल्यमान काव्यकी अज्ञता रूप ज्वालाओं से जलते
हुए जीवों करके सेवित, विजय के जीवन रूप बलूंदा
नामक ग्रामके ठाकुर जीवनसिंह का पोलपात, वंशभा-
स्कर ग्रंथ के रचयिता मिश्रण कुल में प्रकट हुए श्रीसू-
र्यमल्लका शिष्य, पातावत शाखावाले जगराम का पुत्र
श्रीपद्मसिंह उस से रचे हुए कर्ण पर्वकी शोभा करके
विभूषित वीरविनोद में अष्टमयाम का युद्ध सम्पूर्ण
हुआ ॥ ८ ॥

॥ इति वीरविनोद समाप्त ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ वीरविनोदका शुद्धिपत्र ॥

पृष्ट	पं०	अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ट	पं०	अशुद्धि	शुद्धि
१	२०	दपताहै	डरताहै	४५	१२	वीर	धीर!
२	५	चोरीका	चोरीको	४८	८	हान	होन
३	७	ऐसं	ऐसे	४६	६	भंप	भूप
४	२५	केश	केशव	४९	११	भूप	—भूपं
६	१७	यथासुंख्या-	यथासंख्य	५०	११	चाक्र	चक्रि
१३	११	वह	वेह	५४	१०	चक्रो	चक्यो
१७	१२	पोत्रोंके	पौत्रोंके	५५	१३	सुर	सुर
२२	१	सजय	संजय				
२३	१२	कवित्त	मनोहर	६१	२१	समूहक	समूहका
२३	१५	कण	कर्ण	७५	१८	धर	घर
२७	१५	कल्पोंम	कल्पोंमें	७८	३	विन हिय	विन हिंय
३०	११	पलटमें	पलटेमें	८१	१७	सनाके	सेनाके
३०	२०	चाहियगी	चाहियेगी	८१	१८	विंद्और अनुर्विंदरूप	दण्डऔरद दण्डधार रूप
३१	१७	कदेगा	करदेगा	८२	२१	पगमें	पैरमें
३१	१६	मगारूप	मरगारूप	८३	१३	कर	क्रूर
३१	२०	काना	कानों	८९	२	असिष	आसिष
३४	१३	हत्यौ	हन्यौ	९४	१६	फड़े	फड़
३७	१४	लिन्हे	लीन्हे	६५	२१	जलाकर	बुलाकर
३७	२०	दोनों	दानियों	६८	११	कित	किंत
४०	१	व्हा	व्हाँ	६६	२१	पासनहींथा	पासथा
४५	७	मतिमान	मतिमान!	१०३	१७	(६)एक	(६)पृथिवीमेंएक
				१०८	९	साधु	सीधु

१०९ १ धराक्खियहाटक धराक्खियहाटकं
१०९ २ उपमा न उपमान १९९ १७ फरड़े(५) फरड़े२
११० १७ होत्रा होत्रो २०० १२ निजाहृय निजाहृवे
१११ ५ लोगे लोग २०० १३ पौवनसौं थौवनसौं
१११ १५ भाजूम थाजूमें २०८ २ चंडाशु चंडांशू
१२२ ७ वहहू वहहूँ २०९ ५ हुवकोन२ हूवकोन
१२८ १७ कंदोईको कंदोईकी संजयवचन
१२९ १७ चिढाते चिड़ाते २११ १२ खंड पंड
१३१ २१ वहां यहां २१२ ८ दुवर्चन दुर्वचन
१३५ २ सेनावचन संजयवंचन २१३ २ रीछ रींछ
१३५ ८ यत यत्त २१५ १५ सुफदे सुफेद
१४० २० दैत्यका दैत्यको २१५ १० (७१) (१७)
१४१ १२ हिमे हिमें २१६ २ गति गीत
१५० १७ पीडाका पीडाको २२५ २१ श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण-
१५१ १८ अर्जुनने अर्जुनके भी बाकी
१५१ ४ शृंलख शृंखल २३८ १० हस्तन छ हस्तनेंछअ-
१५४ ११ सूर्यका सूर्यको अहिं हिं
१६६ १३ मिट्टीकी मिट्टीका २४० १२ सुरापी सुरापी
१७८ २२ देवोंकी वेदोंकी २४४ १५ भीमको भीमकी
१९४ ८ रैंट रहैं २४८ १५ अधमपने अधमपने-
१९५ १९ राजा राजी से सेप्रश्नकरैं
१९८ २० जैसेवेश्या (१०)जैसे कियुद्धमेंऊंट
कामन(१०) वेश्याका कहांसेआयेतब
मन २५० २ वेदं वेद
२५५ ९ कृपानि कृपानिपा
पानि नि

२११ १ कौरवेन्द्र- कौरवेन्द्र ३२५ १४ नम (१४) नन(१४)
३३० १५ देशा दशा
२१२ २ नरेशाने नैरेशाने ३३१ ८ केकयकी कैकय्यकी
२६३ १ फरीक्कव्हां फरक्कि्व्हां ३३२ ३ घरयो घरयो
२६४ १ तिगर्त्त -त्रिगर्त्त ३३६ १२ दुःशासन दुःशा-
के सनको
१५७ १ भुमि भूमि ३३७ ६ तरा तेरा
२७४ ६ झुकपो झुकयो ३३७ २२ चौथा ग- चौथाघ-
२७८ २ सोरठादोहा सोरठा फार फार
३४० ८ इक २ इक
२८४ १ लागिनय लगिगय ३४२ १६ बहुत से- बहुत से
१८८ १० सर्गजिवकों लु गंजि- घाव घाव
यको ३५८ ४ अँख्न अख्न
२६७ १५ भगवान्की भगवान्भी ३५८ ५ न अञ्ज अनञ्ज
३०३ ७ प्रीतिप प्रीतिपैं ३६१ १ दोहूं दोहुँन
३०३ २२ शरीरका शरीरको ३६१ १५ तिर्यभौन तिर्यभौन
३०८ १५ ऊंचवचन ऊंचेवचन ३६१ २१ (१२) (१०)
३०८ १५ पिताकी पिताकी ३६७ १७ हाथीकेव- हाथीके
की बल बलसे
३१२ २२ बड़ा बड़ी ३६८ १६ माताका- माताका
३१३ १ प्रपात् प्रपात् बर बैर
३१६ १८ दो कर्षों- दो कंधों- ३७५ १८ तुस्ति स्तुति
वाला वाला ३७७ १ गोपिछद गोपीछद
३१६ १६ (८) (६) ३७८ १५ गरीबोंको गरीबों
३१७ १६ (११) ग- (११) वाक्यों की
ति कीगति ३८४ १० बह्माख्न ब्रह्माख्न
३२३ १६ धंजेढ़ी धूजेढ़ी ३८७ २० दुर्योनध दुर्योधन

जमराजकौं तृनराज जानिय ताहि हानिय तीर
थिर[1] लच्छ भेदे केक मैं विन टेक बान विहार ॥
घट[2] सीस लिप चक्रीसज्यौ लैं[3] चक्रतैं घटसार
अभिमानकी यह बातमान रु कान्ह जंपि[4]जबान
जिन मिलि रु मार्यौ कर्नकौं तिन नाम सुन-
हु सुजान ॥२४॥

॥ छंदमनहर ॥

टेढी भूलजैहैं[5] विद्या भूमिमूल[6] जै हैं चक्र;
जामदग्नि विप्रसाप[7] वक्र ठहैंवो भार्यौ रे ॥
भीमकों जहर दैनें सुवसुसहर[8] लैनें,
द्रोपदी चिकुरच्वैनें[9] एवज विचार्यौ रे ॥
लाखाग्रह दाह[10] दैनें सकुनिकौ वाह दैनें,
अद्भुत उछाह ठहैनें दुक्खदाय धार्यौ रे ॥
द्रोनकौं कुज्ञान[11] दैनें बालक[12] धनुख लैनें,

(१) स्थिर निशान (२) घड़ा रूप सिर (३) चाक से कुम्हार के जैसे (४) कही।२४। (५) विपत्ति में भूल जायगा शस्त्र विद्या को (६) जमीन में गड़ जावेगा रथका पहिया (७) परशुरामजी का शाप (८) अच्छा है धन जिसमें ऐसा शहर (इन्द्रप्रस्थ) (९) केशों के देखने ने (१०) जलादेने ने [११] कुबुद्धि (१२) अभिमन्यु.

मैंनें अरु तैंनें मिलिवीर कर्न मार्यौ रे॥२५॥

॥ छंदवैताल ॥

जिहिंवेर हरिमुख हेर हुव नर जेर सीस नवाय
तिहिंवेर आपहिकर्नरथकोचक्रनिकर्यौआय॥
रथहाकिलज्जित सल्य गो थित हो सुजोधनतत्र,
विन कर्न रथ लखि सल्पकौं किय कूक म-
नहुँ कलत्र ॥२६॥
जिय आस तजि जय आस तजि कुरु आस्य
देखिय कर्न ॥
पूर्नाहुती मख पूर्न त्यौं रन पूर्न रविसुत मर्न ॥
नृपसुयोधनकौं करन रनकी कथा सल्यसुनाइ

॥ दुर्योधनवचन॥

हा कर्मगति सब मरे हम जय पाण्डवन लि-
य पाइ ॥ २७ ॥
फिर कही संजय अंधसौं वर वीर कर्न विलाय
दुस्सासन रु दुस्सपुल तव वर गये संग कुभाय ।

॥ २५ ॥ (१) श्रीकृष्ण का मुख (२) पहिया स्वयं निकला (३) मानों स्त्री ने ॥ २६ ॥ (४) मुख [कर्ण का] (५) यज्ञकी पूर्णाहुति रूप (६) कर्ण का मरना ॥ २७ ॥ (७) धृतराष्ट्र से